लेबेदेव की नायिका

लेबेदेव की नायिका

प्रतापचन्द्र 'चन्द्र'

लेबेदेव की नायिका

लेबेदेव की नायिका

एक

वह डोमतला अब नहीं रहा। उसके पच्चीस नम्बरवाले घर में जो बँगला थियेटर निर्मित हुआ था, वह बहुत दिन पहले खत्म हो गया। अब वहाँ बड़ी-बड़ी सड़कें निकल आयी हैं, बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी हैं। उस जगह की धूल को क्या अब भी उस थियेटर की याद है जहाँ पहले-पहल बँगला भाषा के नाटक खेले गये थे, बंगाली अभिनेताओं और अभिनेत्रियों की टोली ने अभिनय किया था?

वह बहुत दिन पहले की बात है। १७९५ ई०। पालवाले जहाज तब सात समुद्र पार करके कलकत्ता शहर के घाट में आ लगते थे। डगर-डगर पर पालकी ढोनेवाले कहारों की सुरीली हुहुकारी गूँजती रहती थी। बग्घी-टमटम-फिटिन घूमते-फिरते रहते। मोमबत्ती और रेंड़ी के तेल से जलनेवाली रोशनियाँ जुगनुओं की आभा को लजाती होतीं। गंगा में भरी नौकाओं में दास-दासियों का विक्रय चलता। वेश्याओं के गान और नूपुर-झंकार से हवा मुखरित रहती। अपराधियों को बेंत मारना, यातना देना, यहाँ तक कि फाँसी देना भी लाल-बाजार के चौराहे पर खुलेआम सबके सामने होता। गोरी मेम के अभाव में साहब लोग इसी देश की रमणियों के साथ घर बसाते।

कलकत्ता शहर में उस समय कम्पनी शासन का दौर था; वहाँ से पाश्चात्य हवा बहने लगी थी, अनेक जातियों के लोग—अंग्रेज, फ्रांसीसी, पुर्तगाली, डच,

डेन, इटालियन, अर्मीनियाई, चीनी, हब्शी—शहर की धूल-भरी गलियों में चक्कर काटते रहते। साहब लोग संस्कृत, बँगला, हिन्दी, फारसी सीखते थे; देशी व्याकरण, आईन-कानून, धर्मग्रन्थ लिखते थे; कोर्ट-कचहरी, छापेखाने खोलते थे। देशी लोग पढ़ते थे यूरोप की भाषा, पहनते थे विलायती पोशाक, और विलायती सभ्यता और संस्कृति को अपनाते जा रहे थे।

वह एक विलक्षण आदान-प्रदान का युग था—सिर्फ वस्तुओं का नहीं, मन का भी।

बँगला थियेटर इसी तरह के एक आदान-प्रदान का परिणाम था, एक गुमनाम बंगाली भाषा-शिक्षक ने जिसकी परिकल्पना की थी और एक स्वप्नदर्शी रूसी वादक के प्रयास से जिसे प्रतिष्ठा मिली थी।

जुगनू की चमक की तरह उस थियेटर की ज्योति जलते ही बुझ गयी। लेकिन इतिहास के पन्ने पर अपने निशान वह छोड़ गया।

कौन था वह भाषा-शिक्षक, कौन था वह वादक—इतिहास कुछ-कुछ इसकी जानकारी देता है, किन्तु कौन थे वे अभिनेता, कौन थीं वे अभिनेत्रियाँ, इतिहास इसके बारे में मौन है।

हो सकता है, ऐसे अनेक लोग हों जिनकी बात अभी कही गयी है।

गेरासिम लेबेदेव तेज निगाह से स्त्री के रूप को परख रहा था। श्रीमान गोलोकनाथ दास ने आज जिस स्त्री को हाजिर किया है उसे सहज ही अनदेखा नहीं किया जा सकता, काफी रौनकदार चेहरा। देह का रंग अखरोट के समान, जरीदार साड़ी में वह और भी खूबसूरत लगती थी। उसकी लम्बी नाक पर झिलमिलाती वस्त्राभा, गोलाकार आँखों में काजल, माथे पर लाल टीका, पैरों में आलते की छाप, पान खाने से लाल-लाल हुए पतले होंठ, काले बालों में सूर्यमुखी के फूल—उसके पूरे शरीर पर यौवन के उभार का आकर्षण छाया हुआ था। वह नृत्य की मुद्रा में एक बार लेबेदेव के सामने घूम गयी, नितम्बों की रंगीन आभा ने शुभ्र परिधान की बाधा नहीं मानी। हाथ की डिबिया से जरा-सा सुवासित जरदा मुख में डालते हुए तनिक आँख मारते हुए रमणी बोली, "क्या है साहब! आँख की पलक तो गिरती नहीं। मैं पसन्द आयी कि नहीं?"

उसका कण्ठस्वर मधुर होने पर भी तेज था। वह सुन्दरी थी, किन्तु जरा छोटे शरीरवाली।

गोलोक दास ने भर्त्सना के स्वर में कहा, "कुसुम, बेअदबी मत करो।"

"मरण और क्या !" कुसुम ने छूटते ही कहा, "बेअदबी फिर कहाँ की मैंने, गोलोक बाबू ? सिर्फ जानने की इच्छा हुई कि साहब 'हाँ' कहकर मुझे निगल जायेंगे या नहीं ?"

स्त्री खूब रोबवाली है, लेबेदेव ने मन-ही-मन सोचा। उसके स्वर में तेजी है, काफी दूर तक सुनायी देगा।

"आ मृत्यु", कुसुम अपने-आपमें बोली, "बोलो बाबू, पसन्द आयी कि नहीं ? साहब होने से क्या होगा, एक साँड़ के सामने क्या काठ की मूरत की तरह खड़े रहा जा सकता है ?"

कुसुम एक क्षण भी चुप होकर खड़ी नहीं रह सकती। वह हरिणी की तरह चकित है। लेबेदेव तन्मय होकर मन-ही-मन रमणी के रूप की विवेचना करने लगा।

कुसुम गाल पर हाथ धरे बोली, "अच्छी मुसीबत ! देखती हूँ साहब मेरा रूप देखकर विभोर है !"

"आह कुसुम, कहता हूँ चुप रहो !" गोलोकनाथ ने सतर्क स्वर में कहा।

"एक धाकड़ अपनी मतवाली आँखों से मुझे निगलेगा। लेकिन बाबू, मैं चुप नहीं रह सकती।"

कुसुम तेज कदमों से लेबेदेव के निकट बढ़ गयी। रोबभरे स्वर में प्रश्न किया, "बोलो न साहब, मैं पसन्द हूँ कि नहीं ?"

अबकी लेबेदेव ने पूछा, "ठाकुरानी गाना जानती है ?"

जीभ काटते हुए कुसुम बोली, "यह निकला ! साहब बँगला जानता है ? छि:-छि:, छि:-छि:, तौबा ! गोलोक बाबू, पहले क्यों नहीं बताया ? अन्यथा मैं इतनी रसीली बातें नहीं कहती।"

लेबेदेव ने फिर गम्भीर स्वर में कहा, "ठाकुरानी, एक गीत गाओ।"

कुसुम बोली, "क्या गाऊँ, ठुमरी या टप्पा ?"

लेबेदेव बोला, "भारतचन्द्र राय का गीत गाओ।"

"इस्," कुसुम खिलखिलाकर हँस पड़ी, "देखती हूँ साहब रसिककुमार है। विद्यासुन्दर गाये बिना मन जागेगा नहीं। तो वही गाऊँ।"

कुसुम ने गान छेड़ दिया। लेबेदेव साथ-साथ वायलिन बजाते हुए सुर का अनुसरण करने लगा। कुसुम ने गाया—

कि बलिलि मालिनि फिरे बल बल।
रमे तनु डगमग मन ढल ढल॥

शिहरिलो कलरवे, तनु काँपे थर थर
हिया हैलो ज्वर ज्वर आँखि छल छल।
तेयागिया लोकलाज, कुलेर माथाय बाज
भजिबो से ब्रजराज लये चल चल॥

रहिते ना पारि घरे, आकुल पराण करे
चित न धैरज धरे पिक कल कल।
देखिबो से श्यामराय, बिकाइबो राँगा पाय
'भारत' भाविया ताय छल छल॥

उसका अनवरुद्ध कण्ठस्वर तेज होने पर भी मधुर था। गाना समाप्त होने पर कुसुम बैठती हुई बोली, "गाना तो सुना, मुजरा देंगे न?"

गोलोक ने कहा, "मुजरे के लिए उतावली मत मचा, साहब अगर तुझे एक बार थियेटर में पहुँचा दें तो कितने ही बड़े-बड़े धनी-मानी मुजरे के लिए तेरे चरण धरकर आग्रह करेंगे।"

"सच!" कुसुम उल्लसित होकर बोली, "तब तो मदन मल्लिक यदि मुजरे के लिए आये तो झाड़ू मारकर उसे सजा दूंगी। अपने बिलौटे के विवाह में उसने सिन्धुबाला को गाने के लिए बुलाया, और मुझे खबर देना जरूरी नहीं समझा। जबकि मर्दुआ रात-रातभर मेरे घर में गाना सुन गया। साहब, बताओ न, मैं थियेटर के लिए जँची या नहीं?"

लेबेदेव ने संक्षेप में कहा, "नापसन्द।"

"अयें! मैं पसन्द नहीं?" कुसुम सबके सामने रो पड़ी। रुदन-भरे स्वर में बोली, "गोलोक बाबू, अभी एक डोली मँगाओ। मुझे अभी घर पहुँचा दो।"

गोलोक दास हताश हो बोला, "साहब, कुसुम भी तुम्हें पसन्द नहीं आयी? ऐसी सुन्दरी!"

रुदन के बीच ही कुसुम बोली, "सुना न? नापसन्द! मर गयी और क्या!"

"ठाकुरानी," लेबेदेव हल्के हँसकर बोला, "हठात् गुस्सा मत करो। तुम अपूर्व सुन्दरी हो, तुम चंचल हो। किन्तु अपने मनोभाव का दमन करना नहीं जानतीं। मनोभाव पर काबू नहीं रहने से अभिनय में सफलता सम्भव नहीं। अभिनय की प्रवृत्ति तुम्हारे अन्दर नहीं है। तुम्हें भारतचन्द्र के गीत के लिए पसन्द किया।"

कुसुम ने आँचल से आँखें पोंछीं, कुछ सन्दिग्ध स्वर में प्रश्न किया, "सिर्फ गीत ?"

लेबेदेव अबकी उत्साह से बोला, "तुम गाओगी, मैं और मेरे दल के लोग देशी और विलायती वाद्ययन्त्र बजायेंगे। सारंगी, बाँसुरी, वीणा, तानपूरे के साथ वायलिन, चेलो, क्लारियोनेट आदि विदेशी वाद्य बजेंगे। सोचता हूँ वह सुनने में सुखद प्रतीत होगा। इण्डियन सेरिनेड्।"

गोलोक ने कहा, "हाँ कुसुम, साहब बड़े भारी वादक हैं। राजा सुखमय राय के यहाँ दुर्गापूजा के समय विलायती सुर में देशी गान का आयोजन हुआ था। अरे छिः-छिः, एकदम बेकार, बिल्कुल नहीं जमा। साहबों ने अखबार में कितनी निन्दा की। लेकिन साहब की वायलिन ने जैसे तेरे सुर में सुर मिलाकर बात की है। सुना नहीं, कुसुम ?"

कुसुम आश्वस्त होकर बोली, "वह तो कहा, लेकिन गाऊँगी कहाँ ?"

लेबेदेव ने कहा, "स्टेज पर।"

कुसुम ने बात समझी नहीं, एकटक ताकती रही।

लेबेदेव ने गोलोकनाथ दास से पूछा, "बाबू, स्टेज का बँगला क्या होगा ?"

"स्टेज, स्टेज," जरा सोचकर गोलोक बोला, "मंच—माँचा !"

"नहीं, नहीं, गोलोक बाबू," क्षुब्ध होकर कुसुम बोली, "बलिहारी है तुम लोगों के शौक की ! घर में कहो, बाहर कहो, नाट्य-मन्दिर में कहो, मैं गा सकती हूँ। मुझे काटकर फेंक डालो तब भी माँचा के ऊपर खड़ी होकर नहीं गा सकती। मैं क्या गुड की गुड़िया हूँ !"

"अरी बेवकूफ," गोलोक ने कहा, "वह माँचा (मचान) नहीं, मंच—रंग-मंच है। ठीक जैसे बड़े लोगों के घर का मर्दाना दालान, तू उसी ऊँचे दालान से गायेगी और लोग सुनेंगे जैसे कान पाथकर, पीछे की तरफ बैठने के लिए सीढ़ीनुमा गैलरी, ऊपर बरामदे में बाक्स; जैसा अंग्रेजी थियेटर होता है वैसा ही होगा बँगला थियेटर।"

कुसुम ने खुश होकर हाथ से ताली दी, "खूब मजा आयेगा, मैं तब गोरी मेम लोगों की तरह स्टेज पर खड़ी हो स्टेज पर ही गाऊँगी न ?"

"अवश्य ठाकुरानी," लेबेदेव ने कहा, "तुम्हारे संगीत से इण्डियन सेरि-नेड् खूब जमेगा। मैंने तुम्हें भारतचन्द्र के गान के लिए पसन्द किया।"

"मेरा मुजरा लेकिन खूब अच्छा करके देना होगा।"

"अवश्य। मैं तुम्हें खुश कर दूँगा।"

कुसुम गुनगुनाती, गाती चली गयी।

गोलोकनाथ दास ने कुसुम का परिचय पहले ही दे दिया था। कायस्थ घराने की बालविधवा, आठ वर्ष की आयु में विवाह हुआ था। लेकिन यौवन के आगमन से पहले ही वह पतिहीना हो गयी। उतनी छोटी लड़की थी, इसलिए समाजपतियों ने उसे सती नहीं होने दिया। चिता में नहीं मरने पर भी समाज के लिए वह मर गयी। उसका तन-भरा रूप, मन-भरा रस। वैधव्य का बन्धन वह क्यों सहती ? कुल को कलंकित करके कुसुम एक दिन दूर के रिश्ते के एक रसिक देवर के साथ घर से निकल गयी। वह पुरुष संगीतविद्या में पारंगत था। देहदान के विनिमयस्वरूप कुसुम ने उससे ठुमरी, ठप्पा, कीर्तन तथा और भी कितने ही गान सीख लिये। उसके रूप और गुण की चर्चा रसिक-समाज में फैल गयी। उसके चहेतों की संख्या भी बढ़ गयी। साथी को त्याग कुसुम ने यौवन के ज्वार में अपने को छोड़ दिया। कुछ-कुछ दिनों के लिए कितने ही घाटों से बँधी, लेकिन हमेशा के लिए नहीं। चितपुर में ही उसका डेरा है, गायिका के रूप में ख्याति व्यापक न होने पर भी अच्छी-खासी है। गोलोक दास ने ठीक ही कहा, कुसुम ने सुर पाया है। लेबेदेव ने देखा, कुसुम की आँखों में भाषा है। इण्डियन सेरिनेड् उससे जम उठेगा। कुसुम को पाकर लेबेदेव की एक दुश्चिन्ता खत्म हुई। बँगला गीत गानेवाली गायिका खोजने के लिए अब और भटकना नहीं होगा।

लेबेदेव नाटक की पाण्डुलिपि लेकर बैठा। पास-ही-पास तीन भाषाओं में लिखी —अंग्रेजी, रूसी और बँगला। खूब हाशिया देकर सज्जित लिखावट। खुद उसके ही हाथ की लिखी, साफ-साफ।

किन्तु नाटक उसका अपना नहीं। डोरेल साहब द्वारा लिखित अंग्रेजी नाटक, 'दि डिस्गाइस' उसका शीर्षक। लेबेदेव ने मुख्य रूप से उसे बँगला में रूपान्तरित किया था। बिलकुल अनुवाद नहीं, उसमें अंग्रेजी और मूर भाषा भी कुछ-कुछ छोड़ दी थी। अच्छा जमा हुआ नाटक। तीन अंकों में समाप्त। मूल नाटक की घटना स्पेन में घटित हुई थी, पात्रों के नाम यूरोपीय, जैसे—डान पेड्रो, क्लारा आदि; लेबेदेव ने नाम बदल दिये थे, 'क्लारा' हो गयी सुखमय। प्रथम दृश्य में क्लारा पुरुष-वेश में उपस्थित। नाटक वहीं से जमने लगता है। जो सब घटनाएँ मेड्रिड और सेविल में घटी थीं, वे सब कलकत्ता और लखनऊ में घटती हैं। घटनाएँ कितनी करीब चली आयीं ! जैसे सबकी जानी, सबकी पहचानी हों।

नाटक का अनुवाद करने के बाद लेबेदेव ने देशी पण्डितों को पढ़कर सुनाया था। उन्होंने सराहा, संशोधन सुझाये। लेबेदेव इस देश के लोगों को जानता है। ये लोग गर्जन-तर्जन और प्रहसन पसन्द करते हैं। इसीलिए नाटक में चोर ढूँढ़नेवाले चौकीदार की व्यवस्था थी।

उसके भाषा-शिक्षक गोलोक दास ने कहा, "साहब, अभिनय किये बिना नाटक का रस नहीं जमता। नाटक तो हुआ, अब अभिनय हो।"

लेबेदेव ने कहा था, "थियेटर कहाँ है ? तुम्हारे बंगाली अभिनेता-अभिनेत्री कहाँ हैं ?"

गोलोक दास बोला था, "तुम थियेटर की व्यवस्था करो। मैं अभिनेता और अभिनेत्रियों का जोगाड़ करता हूँ।"

लेबेदेव को बात हल्की नहीं लगी थी। बँगला थियेटर—लेबेदेव का बँगला थियेटर। एक बढ़िया और नयी बात होगी।

"बहुत अच्छा," लेबेदेव ने कहा, "तीन महीने, मात्र तीन महीने के भीतर मैं बँगला थियेटर खोलूँगा। तुम बंगाली अभिनेता-अभिनेत्रियों का जोगाड़ करो।"

लेकिन काम दोनों ही का सरल नहीं था। तीन मास के भीतर थियेटर की व्यवस्था करनी होगी। बहुत-सा रुपया लगेगा। लगे भले ही बहुत-सा रुपया। लेबेदेव भाग्य से जुआ खेलेगा। चाहे रोजगार करना पड़े, कर्ज-उधार लेना पड़े, वह तीन मास के भीतर एक ऐसे थियेटर का निर्माण करेगा जिसका जोड़ इस कलकत्ता शहर के देशी-विदेशी लोग कभी न पायेंगे। थियेटर के लिए अब गवर्नर जनरल की अनुमति चाहिए। सर जान शोर अवश्य ही सुप्रसिद्ध वादक को निराश नहीं करेंगे।

मगर बंगाली अभिनेता-अभिनेत्री ! वह दायित्व गोलोक दास का है। इसी लिए गोलोक दास नट-नटी की खोज में निकला था। कलकत्ता शहर में रामलीला, कवियों का दंगल (पेशेवर तुक्कड़ों के वाग्युद्ध का खेल), कृष्ण-यात्रा आदि चल ही रही थी। गोलोक दास ने अभिनेता जुटा लिये। हरसुन्दर, विश्वम्भर, नीलाम्बर तथा और भी कइयों ने लेबेदेव के सामने परीक्षा दी। हरसुन्दर करघा चलाने का जातिगत धन्धा छोड़कर यात्रादल में आ मिला है। विश्वम्भर हलवाई-सन्तान है। नीलाम्बर ब्राह्मण-पुत्र है। उनके घरों की स्थिति अच्छी है, किन्तु नाटक-दल में शामिल होने के लोभ के चलते वे अपने पिता से लड़-झगड़कर भाग आये हैं। इनमें साहस है, स्वर की शक्ति है और भाषा-अभिनय का कुछ ज्ञान भी है। सीख-पढ़ जाने पर ये थियेटर का ढर्रा अपना ही लेंगे। गोलोकनाथ ने एक के बाद एक कितनी ही रमणियाँ दिख-

आयीं—नर्तकी, गायिका, वेश्याएँ। नारी-चरित्र की छोटी-मोटी भूमिकाओं के लिए लेबेदेव ने उनमें से कइयों को पसन्द किया। छोटी हीरामणि, आतर, सौदामिनी आदि को थियेटर के काम के लिए बहाली की गयी। निम्न जाति की लड़की आतर बड़े लोगों के घरों में दासी का काम करती है। स्वर में जोर खूब है। झगड़ा करने में उस्ताद। और छोटी हीरामन वर्णश्रेष्ठ ब्राह्मणों में भी श्रेष्ठ कुलीन ब्राह्मण की कन्या। वह अपने पति की उन्नीसवीं पत्नी है। उसके बाद भी लगता है उसके पति ने दो 'गण्डा' (गण्डा=चार) शादियाँ की थीं। हीरामणि के विवाह के क्रम में उसके पिता की सम्पत्ति स्वाहा हो चुकी थी, विवाह के पाँच वर्ष के दौरान मात्र एक बार हीरामन का पति उसके साथ रहने आया था, सो भी एक मोटी रकम लेकर। दरिद्र पिता अपनी बेटी की साध मिटाने के लिए बार-बार रुपया कहाँ से लाते ? इसीलिए हीरामणि वहाँ आ पड़ी जहाँ कुल की कद्र नहीं, रूप-यौवन की कद्र है। हीरामणि में रूप भले न हो, यौवन था। वह नाटी, मोटी किन्तु युवती थी। ये ही हुए अभिनेता-अभिनेत्री। किन्तु ब्लासा अर्थात् सुखमय की भूमिका में कौन अभिनय करे ? लेबेदेव ऐसी बंगालिन युवती चाहता है जो जरा मरदानापन लिये होने पर भी कमनीया, दीर्घांगिनी और स्फूर्तिमयी हो तथा सिर्फ मातृभाषा नहीं, बल्कि अंग्रेजी और मूर भाषा में पारंगत हो। ऐसी चौकस बंगाली रमणी कहाँ मिलेगी ?

लेबेदेव ने कहा, "बाबू, तीन मास के भीतर मुझे नाटक प्रस्तुत करना है। ब्लासा अर्थात् सुखमय की भूमिकावाली अभिनेत्री का जोगाड़ नहीं करने पर थियेटर तो बन्द हो जायेगा।"

गोलोक दास जानता है कि बंगाली अभिनेत्री का जोगाड़ करना सहज नहीं।

इस देश की रमणियाँ नाचगान में पारंगत होती हैं। बंगभूमि की 'यात्रा' में पुरुष ही नारी-भूमिका में अभिनय करते हैं—राधा, वृन्दा, मालिन मौसी या सखी का वेश सजाकर। कलकत्ते में विलायती कायदे के स्टेज पर थियेटर चलाना साहबों ने ही शुरू किया था। देशी समाज में तब भी वह प्रचलित नहीं हो पाया था। उन विलायती थियेटर में भी कुछ समय पहले तक साहब लोग ही मेम की भूमिका में उतरते थे। दाढ़ी-मूँछ साफ कर, गाउन पहनकर मेम के वेश में हँसी-मसखरी और छकाने की कला दिखाते। लेकिन वनकुवेर विस्त्रो साहब की मेम ने शौक से अभिनय कर पहले-पहल मार्ग दिखाया। मेमें अभिनय करके पुरुषों को मात करतीं, यहाँ तक कि पुरुष-वेश में भी स्टेज पर उतर पड़तीं। इनकी देखादेखी रेंडेल साहब 'कलकत्ता थियेटर' के लिए इंगलैण्ड से कई अभिनेत्रियाँ ले आये। कलकत्ते की साहबी कोठियों ने असली मेमों का अभिनय देखने के

लिए पेशेवर मंच पर भीड़ जमा दी।

सर विलियम जोन्स ने कालिदास की 'शाकुन्तल' का अंग्रेजी में अनुवाद किया। वह नाटक भी कलकत्ता थियेटर में सफलतापूर्वक अभिनीत हुआ। तो फिर प्रयास करने पर अंग्रेजी नाटक को बँगला में नहीं खेला जा सकता? अवश्य ही खेला जा सकता है। लेकिन मुसीबत है बंगाली अभिनेत्री को लेकर। लेबेदेव ने पाण्डुलिपि लेकर जिस नायिका की फरमाइश की, उसे ढूँढ निकालना ही समस्या थी।

कुछ देर सोचकर गोलोक दास बोला, "एक स्त्री की बात मन में आती है। उसका चेहरा बहुत-कुछ तुम्हारे वर्णन के अनुसार है। वह बँगला लिख-पढ़ सकती है। कामचलाऊ सूर भाषा भी बोल लेती है। साहबों के घर में काम करके मोटामोटी अंग्रेजी का भी अभ्यास कर लिया है। बहुत बुद्धिमती, बहुत अच्छी स्त्री, लेकिन उसकी देह का रंग उतना साफ नहीं है।"

"देह के रंग में क्या आना-जाता है?" लेबेदेव ने कहा, "वह यदि मुँह खोलकर बोल सकती है तो मैं उसको तालीम दे दूँगा। क्या नाम है उसका?"

"चम्पा, चम्पावती।"

"बड़े काम का नाम। कहाँ रहती है?"

"मलंगा में।"

"आज ही उसको लाने की व्यवस्था करो। उसका चेहरा देखूँ, कथा-वार्ता सुनूँ, चलने-बोलने की जाँच करूँ।"

"आज तो उसे नहीं पा सकते।"

"क्यों?"

जरा इतस्ततः करके गोलोक दास बोला, "वह अभी लालबाजार के जेल में है।"

"जेल में? क्यों, क्यों?"

"चोरी के अभियोग में।" गोलोक दास ने कहा, "मैं जानता हूँ वह बिल्कुल मिथ्या आरोप है। उसने कुछ भी अपराध नहीं किया, वह सर्वथा निर्दोष है।"

"तब भी उसे जेल हो गया?"

"अंग्रेजों के विचार में कभी-कभी मिथ्या आरोप पर फाँसी तक हो जाती है। सुना नहीं कि उतने बड़े श्रद्धापात्र महाराजा नन्दकुमार को जालसाजी के अपराध में फाँसी पर लटका दिया! किसने कहूँ? न्यायालय में अन्याय का बसेरा! उस दिन घृणा के मारे हम लोग तड़के ही उठकर कलकत्ता से दूर चले गये थे। गंगाजल में डुबकी लगाकर शुद्ध हुए थे। चम्पावती को सिर्फ जेल नहीं, और भी

के लिए वे लोग बड़ी देर से प्रतीक्षा कर रहे थे। अंग्रेजी हुकूमत में कैदियों को सजा सिर्फ दी ही नहीं जाती है, लोगों को दिखाकर दी जाती है। कोड़ों से पिटाई, सूली, फाँसी आदि देने की सब क्रियाएँ जनसाधारण के सामने खुले तौर पर सम्पन्न की जाती हैं। लोग भीड़ लगाकर देखने आते हैं। अपराधी दण्ड पाते हैं। अपराध फिर भी खत्म नहीं होते। आज बहुत दिनों के बाद फिर 'खाँचा-रथ' के बाहर निकलने की बात है। उस पर भी युवती कैदी। सड़कों पर, नुक्कड़ों पर, घरों की छतों और बरामदों पर इसीलिए लोगों की भीड़ है। और भी कितनी देर तक खड़े रहना पड़ेगा, कौन जाने!

थोड़ी देर बाद ही जनसमुद्र उद्वेलित हो उठा। दूर से ढाक-ढोल-शहनाई की ध्वनि कानों में पड़ी। आवाज धीरे-धीरे पास आ रही थी। लोगों के सिरों पर दो-चार चलते-फिरते लाल निशान दिखायी पड़े।

करीब दसेक सिपाही हाथ की लाठी से प्रहार करते हुए भीड़ को हटाने की कोशिश कर रहे थे। 'हट जाओ', 'अबे उल्लू, हट जाओ' की चीखें सुनायी दे रही थीं। रास्ता छोड़ दो। लोग जरा पीछे हटे, फिर आगे खिसके। दो-चार लोग लाठी से आहत हुए। ढाक-ढोल-शहनाईवाले नाचते हुए आगे आ रहे थे। कैदी को लेकर जैसे महोत्सव हो। पीछे लाल निशानधारी लाल वरदी-वाले घुड़सवारों का दल। तेज अरबी घोड़े छटपट कर रहे थे। इस बार लोग भयभीत हो पीछे हट गये। रास्ता बना दिया।

"वो रहा खाँचा-रथ, खाँचा-रथ, वो," उत्सुक जनता में शोर मचा।

गोलोक दास का विवरण ठीक था। करीब चौदह फीट ऊँचे बड़े-बड़े चक्के सिरों के ऊपर से दिखायी दे रहे थे, बीच की लकड़ी से झूल रहा था पालकी की तरह एक पिंजड़ा। दो कैदी उसमें किसी तरह बैठ सकते थे। पिंजड़े में जगह-जगह फाँकें थीं ताकि कैदियों की आँखों को हवा लगे। गाड़ी को सिपाहियों की एक टोली घेरे हुए है, हाथों में हथियार। कुछ सरकारी अर्दली कन्धे लगाकर 'खाँचा-रथ' को खींचे जा रहे थे।

ढाक-ढोल-बाजों ने कान हिला दिये। निशानधारी घुड़सवार बड़े गम्भीर थे। सिपाही लोग कतार में चल रहे थे। इधर किसी की दृष्टि नहीं है। लोग उत्सुक होकर पिंजड़े की फाँकों में देख रहे हैं। कैसी है वह महिला कैदी, जिसको दण्डित करने के लिए इतनी धूमधाम है!

"वही तो, दिखायी देती है फाँकों से होकर!" एक दर्शक बोला।

एक और आदमी ने कहा, "अहा, कच्ची उमर है! देखते हो, कैसा चाँद-सा चेहरा है!"

"ऐसी औरत चोरी कर सकती है, मुझे यह विश्वास नहीं होता।" कोई राही बोल उठा।

"मुझे भी विश्वास नहीं होता।" लेबेदेव ने कहा।

पिंजड़े में जिस तरुणी को जानवर की तरह लटका रखा गया था, उसका शरीर दीर्घाकार और सुगठित था। सौम्य-सुन्दर मुख पर लालिमा। तैलाभाव के कारण रुखाये हुए काले केश, फटी गुलाबी साड़ी किसी तरह लज्जा को ढँक रही थी। उसकी दृष्टि कोमल थी, नेत्रों में था दबा हुआ अभिमान। उसके स्निग्ध यौवन की सुषमा मन पर छाप छोड़ जाती थी।

गोलोक दास सिर झुकाकर बोला, "साहब, यही चम्पा है—चम्पावती।"

लेबेदेव ने कहा, "सच! मैं इसी तरह की एक ठाकुरानी को कलारा अर्थात् सुखमय की भूमिका में देखना चाहता हूँ। इसे जल्दी मुक्त करना होगा।"

"सचमुच, चोरी नहीं कर सकती," गोलोक बोला, "तुम जैसे भी हो उसे छुटकारा दिलाओ।"

"तुम चिन्ता किये बिना अपने घर जाओ।" लेबेदेव ने निश्वास छोड़ते-छोड़ते कहा, "मैं एटर्नी डान मैकनर से सम्पर्क स्थापित करता हूँ। वह इसके बारे में झटपट व्यवस्था करेगा।"

डान मैकनर की टोह में लेबेदेव 'हारमोनिक टैवर्न' आ पहुँचा। उस समय साँझ लगभग घिर आयी थी। कलकत्ता शहर का सर्वोत्तम विश्राम-स्थल। यहाँ साहब-मेम नाचते-गाते और खाते-पीते हैं। लालबाजार की एक सुन्दर इमारत में यह टैवर्न है। यहाँ का बचा हुआ या जूठा खाद्य पदार्थ जेलखाने में चला जाता है, गरीब कैदियों के भोजन के लिए।

हारमोनिक टैवर्न इसी बीच में जम उठा था। द्वार के निकट बग्घी, फिटिन, चेरियट आदि खड़े थे, दो-चार कीमती पालकियाँ भी थीं। सेवकों की मजलिस आसपास ही जमी हुई थी। गाँजा-चरस की गन्ध उधर से नाक में घुसी आ रही थी। पालकी ढोनेवाले हाथ-पैर सीधे कर रहे थे। बाहर थोड़ा अन्धकार था, लेकिन टैवर्न के भीतर झाड़-फानूसवाले लैम्पों का समारोह था। मशालची दौड़धूप कर रहा था, पंखा खींचनेवाला पंखे की डोरी को खींचते-खींचते झूम रहा था। भीतर से पीकर मदमत्त लोगों की चीख-पुकार आ रही थी, बीच-बीच में विलायती वाद्यों की झंकार सुनायी दे जाती थी।

लेबेदेव को टैवर्न के सेवकगण पहचानते हैं। एक सेवक को अपनी बग्घी सौंपकर उसने टैवर्न में प्रवेश किया। एक भोजपुरीभाषी दरबान ने सलाम् ठोका।

टैवर्न में एक ओर ताश खेलने की अनेक मेजें थीं। लैम्प की मद्धिम रोशनी में कलकत्ता शहर के गोरे बासिन्दे जुआ खेल रहे थे— 'ह्विस्ट', पाँच ताशोंवाला 'लू'। बहुत-से रुपयों का लेन-देन होता है। कम्पनी के उच्च अधिकारी भी जुआ खेलते हैं। औरतें भी पीछे नहीं रहतीं। एक ओर कक्ष में खाना शुरू हो चुका था। सान्ध्य-पार्टी—'सपर'। भुना गोश्त, ठण्डी मछली की डिश, चेरी ब्राण्डी, लाल मदिरा—और भी कितना-कुछ! बावर्ची लोग दौड़धूप कर रहे थे।

डान मैकनर ताश के अड्डे पर नहीं, भोजन-कक्ष में भी नहीं। लेबेदेव बिलि-यर्ड-रूम में घुसा। कमरा सुगन्धित खमीरी तम्बाकू की गन्ध से भरा था। अनेक लोग बिलियर्ड खेल रहे थे, बीच-बीच में हुक्काबरदार के हाथ में थमे हुक्के की नली से तम्बाकू का कश ले लेते थे। वहीं मैकनर मिल गया। फूला-फूला मुँह, गोल चेहरा, पोशाक का दबाव ऐसा कि मानो चर्बी फट पड़ेगी किसी भी क्षण। हाथ में बिलियर्ड का डण्डा लिये मैकनर ने जिज्ञासा की, "हलो गेरासिम, हाउ गोस् योर ब्लडी बेंगाली थियेटर ?"

लेबेदेव मन-ही-मन जल उठा। बोला, "ब्लडी कौन, बंगाली या थियेटर ?"

मैकनर ने कहा, "बाइ जोव्, दोनों ही। चन्द्रलोक के पीछे दौड़ो-भागो नहीं। सुना है, दायें-बायें कर्ज ले रहे हो। अन्त में विपत्ति में पड़ोगे।"

"विपत्ति में पड़ने पर तुम बचाओगे, मिस्टर मैकनर," लेबेदेव ने कहा, "मैं तब तुम्हारा मुवक्किल होकर आऊँगा।"

"हम हैं भाड़े के गुण्डे," मैकनर बोला, "जो पहले फीस देगा उसकी तरफ से हम लड़ेंगे।"

लेबेदेव ने कहा, "क्राइस्ट कहते हैं कि जो तुम्हारे कोट के लिए दावा करे उसे लबादा भी दे डालो, नहीं तो कानूनजीवी आकर देह पर से कमीज तक उतार लेंगे।"

मैकनर तमककर बोला, "तुम भी क्रिश्चियन हो ? डोंट ब्लेस्फेम्।"

लेबेदेव ने झट जवाब दिया, "मैं पहले मनुष्य हूँ, फिर क्रिश्चियन।"

इसी बीच टामस रावर्थ आ धमका। वह एक नीलामदार है। 'कलकत्ता थियेटर' के जरा कमजोर पड़ जाने पर रावर्थ ने उसे नये सिरे से चलाने का

निश्चय किया था। लेबेदेव को वह शक्तिशाली प्रतिस्पर्धी मानता था। उसने व्यंग्य से कहा, "क्यों मिस्टर लेबेदेव, क्या अब भी तुम्हारे मगज में बंगाली थियेटर का कीड़ा कुलबुला रहा है ? कीड़ा मगज को खोदकर खा जायेगा, तब भी बंगाली थियेटर नहीं होगा।"

"क्यों ?"

"हम किसी भी हालत में तुम्हें कलकत्ता थियेटर भाड़े पर नहीं देंगे। जानते हो, मैं अब उस थियेटर का संचालक हूँ ?"

'मैं मोटी रकम दूंगा।"

"उस रकम पर मैं लात मारूंगा।"

"मैं नया थियेटर बनाऊँगा।"

"हिज एक्सेलेन्सी गवर्नर जनरल तुम्हें नया थियेटर बनाने की अनुमति कभी नहीं दे सकते।"

"मैंने उनसे दरख्वास्त की है, अनुमति पाऊँगा।"

"हम बाधा डालेंगे। तुम एक बजनियाँ हो, बाजा लेकर रहो। हर काम में दखल मत दो। तुम थियेटर को क्या समझते हो ?"

डान मैकनर ने टिप्पणी की, "उस पर भी बंगाली थियेटर !"

"मेरी सलाह सुनो, मिस्टर लेबेदेव," रावर्थ ने कहा, "थियेटर खोलने की वह सब बदगुमानी छोड दो। तुम रूस से आये हो, हम—अंग्रेजों—ने दया करके बाजा बजाने का धन्धा करने दिया, यही काफी है !"

मैकनर बोला, "इंगलिश होते तब भी कोई बात थी। खुद रूसी हो और खोलना चाहते हो बंगाली थियेटर !"

मैकनर और रावर्थ बिलियर्ड खेलने में जुट गये।

दोतरफा आक्रमण से लेबेदेव जैसे कुछ स्तम्भित हो उठा। क्लारेट का पात्र हाथ में लिये, बीच-बीच में लाल मदिरा की घूंट भरते हुए वह सोचने लगा।

गेरासिम स्तेपानोविच लेबेदेव। उसका जन्म रूस के यूक्राइन में हुआ। उससे क्या हो गया ? इसी कलकत्ता शहर में कितनी ही जातियों, कितने ही देशों-धर्मों के लोग रहते हैं। काम-धन्धा करके खाते हैं, भाग्य को फिरा लेते या गँवा देते हैं। अगर लेबेदेव थियेटर खोलता है तो उससे अंग्रेजी थियेटर-वाले डरते क्यों हैं ?

डरने की ही बात है। लेबेदेव ने मन-ही-मन आत्मतोष का अनुभव किया। बात डरने की ही है क्योंकि गेरासिम लेबेदेव एक सुप्रसिद्ध वादक है। याजक-वंश में उसका जन्म हुआ किन्तु वृत्ति थी उसकी वादक की। पिता के अत्याचार

के चलते वह देश से भाग निकला। लिखाई-पढ़ाई अधिक दूर तक हुई नहीं थी, किन्तु ज्ञान की चाह थी विस्तारव्यापी। नवीन को जानने का, नया कुछ करने का आग्रह असीम था। पीछे न प्रभावशाली वंशों की सिफारिश थी, न ही स्वदेशी स्वजातिवालों का बढ़ावा। तब भी लेबेदेव कलकत्ता शहर में जाना-माना व्यक्ति है। अखबारों में रोज-रोज उसकी प्रशस्तियाँ निकलती हैं। सिर्फ कलकत्ता शहर ही क्यों, मद्रास में भी उसके नाम की ख्याति है। १५ अगस्त १७८५। 'रोदिना' जहाज मद्रास के समुद्र में लंगर डालने जा रहा था। साथ-ही-साथ लेबेदेव के संगीत की ख्याति मद्रास पहुँच गयी। लंगर डालने से पहले ही टाउन मेजर ने उसे सम्मानपूर्वक शहर में ले आने के लिए नाव भेजी। मद्रास में दो वर्ष वह रहा, देश-विदेश का गाना-बजाना सुनाया, वायलिन-चेलो बजाया। आर्केस्ट्रा तैयार की। मद्रास की अंग्रेजी कोठियों को मस्त कर दिया। वहाँ खाने-पहनने का कोई अभाव नहीं था, अभाव था नवीनत्व का। नवीन की चाह के चलते गेरासिम लेबेदेव ने मद्रास के छोटे साहबी समाज से बँधे रहना नहीं चाहा। उसने सिर्फ गाना-बजाना नहीं सुनाया, मलाबारी (मलयालम) भाषा सीख ली। वह देववाणी संस्कृत सीखना चाहता था, जिसमें ब्राह्मणों के धर्म-दर्शन-ग्रन्थ लिखित हैं। दक्षिण के पण्डित रूसी भाषा नहीं जानते थे, न अंग्रेजी पर उनका अधिकार था। इसीलिए १७८७ ई० में वह मद्रास छोड़कर कलकत्ता चला आया।

कलकत्ता शहर बड़ा अद्भुत है। गन्दा, अस्वास्थ्यकर। नाले-गड्ढों की रुकावटें। मियादी बुखार और दूसरे रोगों की आमदरफ्त। राह-घाट में फूली-सड़ी लाशें बदबू छोड़ती हैं। तब भी उस शहर में प्राण है, नवीन के प्रति आन्तरिक आकर्षण है। जज विलियम जोन्स ने १७८४ ई० में प्राच्य और पाश्चात्य विचारों के आदान-प्रदान के लिए रायल एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की। हालहेड ने बंगला छापाखाने में बंगला व्याकरण छपवाया। इस शहर में साहब लोग संस्कृत-फारसी-बँगला सीखते हैं और पण्डित लोग अंग्रेजी। इसीलिए नया कुछ जानने, नया कुछ सीखने और नया कुछ करने की इच्छा लेकर लेबेदेव इस कलकत्ता शहर में आया। यहाँ और भी अधिक धन वह कमा सकेगा, यह इच्छा भी उसके भीतर थी।

जहाज चाँदपाल घाट पर आ लगा। उस जहाज का नाम था—'स्नो'। मद्रास से कलकत्ता पहुँचने में पन्द्रह दिन लगे। छोटी-बड़ी-मँझली नौकाओं ने मद्रास के जहाज को घेर लिया। हुगली नदी में बजरों की भीड़ थी। तिहरे ऊँचे पालवाली नौका धीरे-धीरे बही जा रही थी। प्रखर धूप में फोर्ट के घर-

बँगले नदी-किनारे झकाझक कर रहे थे। किले की लाल पत्थरोंवाली प्राचीर गंगा के वक्ष पर उभर आयी थी। नया शहर, अनजाना देश, अपरिचित आगन्तुक, सिर्फ संगीत में निपुणता का सम्बल।

एक नाव पर बक्स-पिटारे लादे गये। वाद्ययन्त्रों को सँभालना कठिन है, खासकर वायलिन-चेलो का विशाल बक्स। सब-कुछ सँभालकर लेबेदेव घाट पर उतरा। डेरे-मकानों के दलाल और टैवर्न के लोगों ने उसे घेर लिया। पालकी-कहारों और घोड़ागाड़ीवालों ने भीड़ लगा दी। और भी कौन-कौन तो आये थे, उघरे बदनवाले साँवले बंगवासी जिनकी बातें समझ में नहीं आयीं। सहसा कहीं से गोरा सन्तरी आ गया, वह चुन-चुनकर उन्हें बेंत मारने लगा, बूट की जमकर ठोकरें लगाने लगा। लेबेदेव उसका कारण नहीं जान पाया, सामने जगह बन गयी। एक गाड़ीवान ने अनुमति की अपेक्षा किये बिना बक्स-पिटारों को फिटिन पर लाद दिया। ऐसे ही समय में सफेद धोती और मिर्जई पहने, पैन-केक की तरह सपाट काली टोपी माथे पर डाले और छाती पर चादर लपेटे एक प्रौढ़ देशी सज्जन ने अंग्रेजी में प्रश्न किया, "डू यू वाण्ट दोभाष, सर? आइ स्पीक इंगलिश, बँगाली, मूर···"

उसका चेहरा जरा भारी था, रंग साँवला, आँखों में बुद्धिमत्ता की झलक। उसने अंग्रेजी में आवृत्ति की।

उच्चारण उसका शुद्ध नहीं, फिर भी उसकी बातों से जाहिर था कि वह शेक्सपियर की पंक्तियाँ बोल गया। लेबेदेव ने जिज्ञासा की, 'डू यू स्पीक रशियन ?"

"रशियन !" वह आदमी सकपकाते हुए बोला, "वह कौन-सी भाषा हुई ? संसार में कितनी ही तो भाषाएँ हैं !" फिर आश्वस्त हो बोला, "नो सर, आइ स्पीक सँस्कृट, लिटिल्, लिटिल्, थोड़ा-थोड़ा।"

"सँस्कृट ?" लेबेदेव उल्लास के साथ बोला, "यू स्पीक सँस्कृट, स्पीक इंगलिश ? यू विल बी माइ लिंग्विस्ट। व्हाट्स योर नेम ?"

"श्रीयुत बाबू गोलोकनाथ दास, टीचर एंड लिंग्विस्ट।"

गोलोक दास के साथ लेबेदेव का यही प्रथम परिचय था। और यही परिचय कुछ ही दिनों में प्रगाढ़ हो गया, क्योंकि गोलोकनाथ दास नवीनता का पुजारी है।

गोलोक की एक छोटी-सी पाठशाला है। वहाँ वह लड़कों को लिखना-पढ़ना सिखाता है। उससे उसे सन्तोष नहीं होता। समय-समय पर साहब लोगों को भाषा सिखाने का काम करता है। इसमें जीविका का समाधान है,

फिर नवीनता का रस भी है। गोलोक इतने पर भी धर्मनिष्ठ हिन्दू है। फिरंगियों के स्पर्श से जो पाप लगता है, वह प्रतिदिन गंगास्नान से दूर हो जाता है। संगीत के प्रति गोलोक का झुकाव उसी प्रकार है। ध्रुपद, ख़याल, तराना और हाफ़-आखड़ा तक ही उसका थोड़ा विस्तार है। व्यवस्था अच्छी हुई, लेबेदेव उससे देशी भाषा सीखेगा और गोलोक सीखेगा विलायती गाना-बजाना।

लेबेदेव ने गोलोक को फिटिन पर चढ़ा लिया, ४७ नम्बर टिरेटी बाजार आ पहुँचा। एक फ्रान्सीसी या वेनीसियन मिस्टर टिरेटी ने लालबाजार के पास एक बाजार बसाया था, चावल-दाल-सब्जी की आढ़त। शहर का प्रायः केन्द्र-स्थल। लेबेदेव का आवास गोलोक दास ने ही अपनी पसन्द से ढूँढ़ दिया।

उसने गोलोक दास से जानना चाहा, "अच्छा, बाबू, सन्तरियों ने तुम्हारे देश के लोगों को सहसा मारा क्यों?"

गोलोक बोला, "चाँदपाल घाट पर लाट साहब हवाखोरी के लिए आते हैं। वहाँ किसी काले आदमी का खाली बदन, खाली पैर आना मना है; सन्तरी वहाँ पहरे पर तैनात रहते हैं और उन लोगों को देखते ही मार-पीटकर भगा देते हैं।"

लेबेदेव जरा लज्जित होकर बोला, "मैं इंगलैण्ड नहीं, रूस देश का निवासी हूँ।"

गोलोक ने कहा, "मैंने पुर्तगाली, डच और डेन देखे हैं। फ्रांसीसी और इटालियन को देखा है, किन्तु इस शहर में रूस देश के निवासी को नहीं देखा।"

इसी रूसी का सिर्फ आना ही न हुआ बल्कि थोड़े ही दिनों में उसने कलकत्ता शहर को जीत लिया। बन्दूक-तोप के जोर से नहीं, संगीत के रसमाधुर्य से! वह हर तरह का गाना-बजाना जानता है। उसका अपना कण्ठस्वर भी मधुर है। वायलिन-चेलो वह बढ़िया बजाता है, एक आर्केस्ट्रा-दल भी उसने बना लिया है। उसका नायक वह स्वयं है। उसके दल में अंग्रेज, जर्मन, ईस्टइंडीज और नीग्रो वादक हैं। नाना जातियों के लोगों को तालीम देकर लेबेदेव ने इस आर्केस्ट्रा-दल का निर्माण किया है। ओल्ड कोर्ट हाउस और अनेक जगहों में लेबेदेव का संगीत लोकप्रिय हो उठा। समूह-के-समूह लोग उसका वाद्यसंगीत सुनने जाते, 'कैलकटा गजट' में उसके गाने-बजाने की सुख्याति मुद्रित अक्षरों में प्रकाश पाने लगी। पहले के यश में कई गुना वृद्धि हुई। साहब लोगों ने खुले हाथों उसे बढ़ावा दिया। ऐसा संगीतशिल्पी यदि अपना थियेटर खोले तो उससे रावर्थ जैसे अंग्रेज थियेटरवाले का जलना स्वाभाविक ही है।

'कलकत्ता थियेटर' जहन्नुम में जाये! —अपने-आप ही बोल उठा लेबेदेव।

लगता है यह बात उसने अन्यमनस्क हो जरा जोर से कही थी।

बात कान में पड़ते ही रावर्थ बिलियर्ड खेलना छोड़कर लेबेदेव के सामने आ खड़ा हुआ, एकबारगी तमतमाकर पूछा, "क्या कहा ?"

लेबेदेव सकपकाया नही, इस बार वह स्वेच्छा से बोला, "जहन्नुम में जाये कलकत्ता थियेटर ! उसकी तो लाल बत्ती जलने-जैसी अवस्था है ! इस बार नीलाम पर बेच डालो। मैं उसे खरीद लूँगा।"

भद्दी गाली-गलौज करते हुए रावर्थ गरज उठा, "तू एक विदेशी है, तेरी हिमाकत तो कम नहीं ?"

"तुम क्या इस देश के हो ?" लेबेदेव ने प्रश्न किया।

"शट-अप, कुत्ते के पिल्ले ! भूल मत जा कि कलकत्ता शहर हमने बसाया है, सेट्लमेंट के मालिक हैं हम। हम जो चाहें वही कर सकते हैं। जज, बैरिस्टर, एटर्नी, पुलिस, सब हमारे हैं। तू एक घृणित कीड़ा है।"

"देखता हूँ तुम गला फुलाकर मुरगे की तरह सूरज को निगलने का गौरव पाना चाहते हो।"

"फिर बात पर बात !" रावर्थ बिलियर्ड का डण्डा लेबेदेव पर दे ही मारता यदि ऐन वक्त पर डान मैकनर ने बाधा नही दी होती।

मैकनर ने कहा, "गेरासिम, भद्र व्यवहार करना सीखो। हो सकता है तुम अच्छे वादक हो, हो सकता है तुम श्वेतांग हो, तब भी भूल नहीं जाओ कि तुम रूसी हो।"

रावर्थ गरजने लगा, "डान, मैं आज ही कोशिश करूँगा कि यूरोप जाने-वाले अगले जहाज में उस श्वेत भालू को बरफ के देश में भेज दिया जाये।"

गुस्से से थरथराता वह बाहर चला गया।

मैकनर बोला, "गेरासिम, तुम नाहक अपनी विपत्ति को बुला लाये हो। रावर्थ जालिम आदमी है। उसे हाकिमों का बल है। नीलाम की अच्छी-अच्छी वस्तुएँ जज साहबों की बीवियाँ सस्ते दामों में उससे पा जाती हैं। उसको छेड़-कर तुमने अच्छा नही किया।"

"मेरा क्या दोष है ?" लेबेदेव ने कहा, "मैंने तो झगड़ना चाहा नहीं। वही तो पीछे पड़कर मारपीट करने आया।"

"खत्म हो वह अवांछित प्रसंग," मैकनर ने कहा, "थियेटर तो तुम खोलने जा रहे हो, बंगाली थियेटर ! अभिनय के लिए सुन्दर मादक बंगालिन छोकरियाँ जुटायी हैं कि नही ? अच्छा माल हो तो मुझे भेज दो न ! एक बार बजबज के बगीचेवाले घर में दो-चार दिन मस्ती काटी जाये।"

"तुम्हें अब छोकरियों का क्या अभाव है ?" लेबेदेव बोला, "सुनता तो हूँ कि तुमने हर तरह की स्त्रियों को घर में डाल लिया है।"

"दो-चार दिन बाद ही सब जाने कैसे बासी हो जाती हैं," मैकनर ने कहा, "मैं ऐसी रमणी चाहता हूँ जिसका मजा लेते समय सारे शरीर में सिहरन जाग उठे।"

"अर्थात् जल की तरह देखने में, किन्तु भँवर की तरह शक्तिवाली।"

"ठीक कहते हो," मैकनर कौतूहल के साथ बोला, "मिला है क्या वैसा माल ?"

लेबेदेव ने कहा, "मैं एक शिल्पी हूँ। लड़की-लड़के का दलाल मैं नहीं। तुम्हारा बेनियन खबर करने पर अनेक रमणियों का जोगाड़ कर देगा। लेकिन आखिरकार एक युवती को पाने के लिए मैं तुम्हारी सहायता चाहता हूँ।"

"कहते क्या हो ?" मैकनर उत्साह से भरकर बोला, "कौन है वह भाग्यवती ? कितनी उम्र है ? देखने में कैसी है ? जाति क्या है ?"

"इतनी सूचना की जरूरत क्या है ?" लेबेदेव ने कहा, "मैं तुम्हें दलाल के रूप में नहीं चाहता। एटर्नी के रूप में चाहता हूँ।"

"किसी की वहू को घर से बाहर लाना होगा ?" मैकनर ने कहा, "जैसे हेस्टिंग्स ने मिसेज इमहोफ को किया था ?"

"उतनी दूर का साहस मुझे नहीं है," लेबेदेव बोला, "एक युवती को जेल से बाहर निकाल लाने के लिए तुम्हें नियुक्त करता हूँ।"

"यह तो बड़ा जटिल विषय है।" मैकनर ने कहा, "घर की बहू को बाहर लाना सहज है, किन्तु जेल की कैदी को बिल्कुल ही नहीं। चेष्टा कर सकता हूँ, अगर मोटी फीस दो।"

"कितनी फीस ?"

"बीस मुहरें। आधी अग्रिम।" मैकनर ने कहा।

लेबेदेव ने पाकिट से दस मुहरें निकाल दीं। मैकनर गिनकर पाकिट में रखते हुए बोला, "कौन है वह आसामी जिसके लिए एक बात पर इतनी सोने की मुहरें झनझनाकर फेंक दीं ?"

"वह मेरे बँगला थियेटर की नायिका है।"

"एक कैदी युवती !" नुक्ताचीनी करते हुए मैकनर बोला, "तुम्हारी पसन्द इतने नीचे चली गयी ?"

"उसका चेहरा मेरी 'क्लारा' अर्थात् सुखमय की भूमिका के लिए पूर्णतः उपयुक्त है।" लेबेदेव ने कहा, "वह युवती मुझे चाहिए।"

"लेकिन कैदी युवती की बात लोग सुनेंगे तो तुम्हारे थियेटर में किलौट्ट चीख़ेंगे।"

"कैदी के रूप में जानेंगे क्यों ?" लेबेदेव ने कहा, "हाँ, तुम अगर इस गोपनीय बात को फैला न दो ! मैं उसका नाम बदल दूंगा। चम्पा से गुलाब हो जायेगी। गुलाब की तरह उसका कला-जीवन खिल उठेगा। देखो, तुम कहीं भेद न खोल देना।"

"मुवक्किल की गोपनीय बातों को दबा रखना ही हमारी शिक्षा है। चलो, जेलखाना चलें। पहले यह पता कर लूं कि उसके विरुद्ध क्या अभियोग है, क्या सजा है। लालबाजार का जेल सड़क के उस पार है। अभी वहाँ पहुंचकर तुम्हारी विरह-यन्त्रणा को कम करने का प्रयास करूँ।"

दीपक-तले ही अँधेरा। जेलखाने के निकट ही पाप का अड्डा। लालबाजार के आसपास सस्ते होटल बहुत हैं। इटालियन, स्पेनिश, पुर्तगीज लोग उनके मालिक हैं। नजदीक ही वेश्याओं की बस्ती है। देश-देश के गोरे नाविक सस्ती देसी शराब पीकर यौन-क्षुधा को चरितार्थ करने के लिए वहाँ जाते हैं। रास्ते के कीचड़, नाले-गड्ढों से बचकर अँधेरी रात में रास्ता पार करना ही कठिन है। तब भी लेबेदेव के आग्रह ने किसी बाधा को नहीं मानना चाहा।

जेल में पता लगाकर चम्पा को ढूंढने में कठिनाई नहीं हुई। आज ही वह 'चाँचा-रथ' में शहर घूम आयी है। किन्तु उसकी मुक्ति असम्भव प्रतीत हुई।

वह युवती मिस्टर रावर्ट मेरिसन के घर में दाई का काम करती थी। मेरिसन चाँदनी के पास एक छोटी-सी मदिरा की दूकान चलाता है। दूकान पर स्वामित्व उसकी मेम का है। मेम के गले का तुलसीदाना (स्वर्णहार) चुराने का दोष। चम्पा ने आरोप को अस्वीकार किया था।

पुलिस ने जानना चाहा, "लेकिन तुम्हारे लड़के के गले में तुलसीदाना कहाँ से आया ?"

आसामी बोली, "तुलसीदाना मेरा है, मुझे दिया है।"

"किसने दिया है ?"

आसामी निरुत्तर !

"किसने दिया है, जल्दी बता।"

आसामी ने सिर्फ यही कहा, "मेरा तुलसीदाना है, मेरा, मेरा।"

न्यायालय में वह दोषी साबित हुई, साबित होने की बात ही थी। होल्वेल्

केस ! 'खाँचा-रथ' और दस बेंत की सजा।

मैकनर ने मन्तव्य जाहिर किया, "अत्यन्त सुन्दरी तरुणी, इसीलिए न्यायाधीश ने द्रवित होकर हल्की सजा दी। किसी पुरुष के वैसा अपराध करने पर जरूर उसका हाथ काट देने का हुक्म दे दिया जाता।"

पहली सजा वह भोग चुकी है, दूसरी बाकी है। पता लगाकर मैकनर ने जान लिया कि कल सुबह लालबाजार के चौराहे पर तरुणी को खुलेआम बेंत मारी जायेगी।

"अपील नहीं हो सकती ?" लेबेदेव ने जानना चाहा।

"समय बीत चुका है।"

"जस्टिस हाईड को पकड़ोगे ?" लेबेदेव ने कहा, "जज साहब की तरुणी मेम गाने-बजाने की बड़ी भक्त है। मेरा बजाना उसे बहुत पसन्द है। बीबी को पकड़ने पर जज साहब अवश्य कोई सुव्यवस्था कर देंगे।"

"वह क्या करेंगे ?" मैकनर ने कहा, "उनका हुक्म आते-आते तक सवेरे बेंत मारना हो चुकेगा। चौराहे पर हजारों लोगों के सामने तुम्हारी प्रेयसी को बेंत मारी जायेगी। शोक मत करो, उसे अच्छा सबक मिलेगा; पीठ का चमड़ा सख्त होगा जिससे अगली दफा बेंतों को सहना सहज हो सके। मेरी बाकी फीस ?"

"तुम एक पूरे जानवर हो," लेबेदेव ने कहा, "तो भी तुम्हारी फीस कल भेज दूंगा। आज उतनी रकम साथ नहीं।"

"फीस पाने पर तुम्हारी बेवजह झिड़की को हजम करूँगा," मैकनर बोला, "नहीं तो अदालत में तुम्हारे साथ मुलाकात होगी।"

तड़के ही लालबाजार की सड़क के किनारे जैसे मेला लग गया था। भोर की किरण फूटते-फूटते अपराधियों की सजा शुरू हो गयी। खुले तौर पर सजा। उसीको देखने के लिए दल-के-दल नाना जातियों के स्त्री-पुरुष आ जुटे थे। कील ठोंकना, बलि के बकरे का गला जिस प्रकार लकड़ी में फँसा देते हैं उसी प्रकार अपराधी के गले और हाथ को अटका दिया गया था। पूरे दिन-भर धूप में उसी तरह अटके रहना होगा। दूर से दुष्ट छोकरों के एक दल ने कैदियों के मुंह पर कीचड़ फेंका था। कोई रोकनेवाला नहीं, एक-दो कैदियों ने क्षुब्ध हो न बोलने योग्य गालियाँ देकर शरीर की जलन को मिटाना चाहा था। दूसरे ही क्षण सन्तरी रूल लेकर आ गया था। आँख-मुंह बन्द कर अपमान सहते जाने के सिवाय कोई चारा नहीं।

लेबेदेव सुबह होते ही आ गया था। सारी रात उसे [illegible] नींद नहीं आयी। युवती कैदी चम्पा की बात बार-बार मन में आ जाती थी। ख्याल आया था कि अगर चम्पा सज-धजकर स्टेज पर खड़ी हो जाये तो कैसी सुन्दर लगेगी ! सामने के लैम्प के प्रकाश में उसकी दीर्घ-सुगठित देह और चमकती मुखछवि अवश्य ही दर्शकों का मन जीत लेगी। लेबेदेव तड़के ही लालबाजार के चौराहे पर आ उपस्थित हुआ था।

और आ गया था गोलोकनाथ दास। उसके मुख पर आज हँसी नहीं। कैसी तो भावहीन मुद्रा है। उसने सुन लिया था कि चम्पा को मुक्त करना सम्भव नहीं।

लेबेदेव ने डान मैकनर को साथ ले आना चाहा था। [illegible] दिया—एक सौ मुहरें देने पर भी वह आठ बजे से पहले बिस्तर नहीं [illegible]।

ऊँचे तख्त पर एक-एक करके अपराधियों को लाया जा रहा था। [illegible] कर अपराधी का नाम और उसका अपराध बताता। उनके दण्ड [illegible]। किसी को पाँच बेंत, किसी को दस बेंत, किसी को पन्द्रह बेंत। [illegible] आर्तनाद कर उठते, दर्शकों में से अनेक लोग हाथ से [illegible]

इस बार प्रहरी चिल्लाया—"चम्पावती, मिस्टर [illegible] मिसेज मेरिसन के गले का तुलसीदाना चुराने की दोषी। [illegible] बेंत।"

प्रहरी चम्पा को तख्त पर ले आये। उसकी आँखों [illegible] था। मानो कोई भय ही नहीं। फटे [illegible] को उज्ज्वल कर दिया था। दर्शकों में [illegible]

चम्पा के हाथ पीछे बँधे थे। दीर्घ-सुगठित शरीर [illegible] आकाश की पृष्ठभूमि में अत्यन्त स्पष्ट था। [illegible] उपाय नहीं।

सन्तरियों ने सख्त हाथों से चम्पा को [illegible] यमदूत की तरह एक आदमी बेंत लिये खड़ा था

तैयार। उस आदमी ने चम्पा को [illegible] गिरा दिया। दर्शकों में [illegible]। कोई एक [illegible] उठा।

यमदूत की तरह उस आदमी ने [illegible] से चम्पा की पीठ पर बेंत मारी। उसकी देह जरा ऐंठ गयी लेकिन मुख पर वही कठोरता। उसने कोई चीत्कार नहीं की।

फिर…फिर…फिर…

एक कोई मेम साहिबा तेज स्वर में चिल्ला उठी, "और जोर से, और जोर से।"

लेबेदेव चीखा, "रुको, रुको।"

दर्शकों में से बहुतों ने चिल्लाना शुरू किया, कोई उल्लास से, कोई क्षोभ से। उनकी सम्मिलित चीख में लेबेदेव की अकेली चीख डूब गयी। सिर्फ गोलोक दास की आँखों से अविराम आँसू झर रहे थे। बेंत का आठ प्रहार होने के बाद चम्पावती की देह लुढ़क गयी। सन्तरियों ने पाँव सीधे कर उस देह को देखा। वे एक-दूसरे का चेहरा देखने लगे! लगा, वह युवती बेहोश हो गयी थी। स्त्रियों के छल का कोई अन्त नहीं, हुक्म टलेगा नहीं। बेंत लगाओ। दस प्रहार पूरा होना चाहिए।

सजा पूरी होने के बाद सन्तरियों ने चम्पा के शरीर को घसीटकर तख्त के किनारे किया और वहाँ से उठाकर निकट की धूल-मिट्टी पर छोड़ दिया। हाथ का बन्धन और पाँव की बेड़ी वे खोल चुके थे।

गोलोक दास पागल की तरह भीड़ को ठेलकर उधर बढ़ा जहाँ चम्पा की संज्ञाहीन काया पड़ी हुई है। लेबेदेव भी उसके पीछे हो लिया। गोलोक दास ने नीचे जाकर चम्पा का सिर अपनी गोद में रख लिया। उसकी आँखों का जल बहकर चम्पा के मुख पर जा गिरा।

गोलोक ने लेबेदेव से कहा, "साहब, तुम इसको बचाओ, इसको बचाओ। यह मेरी नतिनी है। मेरी नतिनी!"

रुदन के आवेग में गोलोक दास संज्ञाहीना के वक्ष पर गिरकर बिफर उठा।

दो

लेबेदेव के घर में चम्पा ने उसी अवस्था में आश्रय पाया।

डाक्टर आया था। गोरा डाक्टर। प्रयास में लेबेदेव ने कोई कसर नहीं रखी। 'विजिट' के सोलह रुपये देकर डाक्टर जैक्सन को लाया गया। किन्तु उसने जो उपचार किया, वह तो कोई वैद्य-हकीम भी कर सकता था। युवती की पीठ पर बेंत के आघात से काले निशान पड़ गये थे। कितनी ही जगह जख्म के चिह्न। पूरे शरीर में असह्य यन्त्रणा। डाक्टर ने आकर रक्त साफ कराया,

शरीर में शक्ति लाने के लिए लाल शराब पीने का निर्देश दिया। चम्पा ने शराब नहीं ली। वह कुछ स्वस्थ हुई। साथ ही वह अपने घर जाने के लिए आतुर हो उठी। लेकिन लेबेदेव ने उस समय उसे जाने नहीं दिया।

बगल के कमरे में लेबेदेव ने गोलोकनाथ दास से बातचीत शुरू की, चम्पा के बारे में।

"बाबू, तुम्हारी जो नतिनी है उसके बारे में पहले सुना नहीं। फिर ऐसी सुन्दरी नतिनी?"

गोलोक बोला, "साहब, वह मेरी अपनी नतिनी नहीं है। मेरी पालिता नतिनी। यह जैसे एक कहानी है।"

गोलोक पुरानी स्मृतियों में भटकने लगा।

माघ का भोर। गोलोक रोज की तरह चितपुर घाट पर गंगास्नान के लिए उतरा था। कँपकँपाते जाड़े का ठण्डा जल। ज्यादा लोगों की भीड़ नहीं थी। भोर के कुहासे में थोड़ी दूर से आगे दृष्टि नहीं जाती थी। जरा बाद ही एक बड़ी नौका सामने से गुजर गयी। गोलोक दास इस नौका को पहचानता है। इसका नाम 'भरा' है। यह दास-व्यवसायियों की नौका है। छोटे-छोटे लड़के-लड़कियों से भरी हुई। दो-तीन विशालकाय हब्शी नौका की रखवाली कर रहे थे। कुहासे में भी काले पत्थर-सी उनकी काया स्पष्ट नजर आ रही थी। दास-व्यवसायी पकड़ लाते हैं लड़के-लड़कियों को। अकाल पड़ने पर बहुतेरे माँ-बाप अपने लड़के-लड़कियों को बेच देते हैं। व्यवसायी उन्हें खरीद लेते हैं और नौका पर लादकर कलकत्ता ले आते हैं। गंगाघाट पर गाय-बछड़ा-भेड़-बकरे की तरह उन्हें बेच दिया जाता है। कीमत भी सस्ती।

नौका के कुहासे में विलीन होते-न-होते सहसा छपाक् की एक हल्की आवाज आयी। कुछ जैसे जल में जा गिरा। उसके बाद कर्कश स्वर में चीखें सुनायी पड़ीं। 'पकड़ो, पकड़ो, भागा, भागा।' 'लड़की भाग गयी।' साथ-साथ कहावर लोगों के जल में कूद पड़ने की आवाज कानों तक आयी। 'कहाँ गयी रे?' गोताखोर की आवाज। कुछ लोग जैसे सारी गंगा को छानकर खोज रहे थे। बीच गंगा से कोई चिल्लाया, 'राम-राम, एक साला मुर्दा! अरे छिः!' गंगा में लाशें बहती रहती हैं। लगता है खोजनेवाले ने किसी सड़ी लाश का आलिंगन कर लिया था।

क्षण-भर में गोलोक के सामने तैर उठा एक सुहाना मुखड़ा, आठ-नौ बरस की एक लड़की, ढलमलाता रूप, घिसे ताँबे-जैसा रंग, सिर के काले केश जल में भीगकर मुख पर लिपटे हुए। आँखों में आतंक। लड़की साँस लेने के लिए

तड़फड़ाकर फिर जल में समाने लगी, लेकिन समा नहीं पायी। गोलोक दास ने उससे पहले ही उसे थाम लिया था।

हाँफते-हाँफते लड़की अस्फुट स्वर में बोली, "मरने दो। मुझे डूब मरने दो। इन दैत्यों के हाथ से मुझे बचने दो।"

गोलोक दास ने उसको बचा लिया।

उस कुहासे में भीगे वस्त्र के आँचल से ढँककर वह उसे गलियों से होकर सीधे अपने घर ले आया।

वही लड़की चम्पा है। आठ-नौ वर्ष की रुग्णा लड़की अब सुगठित-सुन्दर तरुणी है।

गोलोक दास ने आत्मीया की तरह उसका पालन-पोषण किया, लिखना-पढ़ना सिखाया। छिप-छिपकर वह पढ़ती थी। लड़कियों का लिखना-पढ़ना उस समय चालू नहीं हुआ था। गोलोक ने उसे गाना भी सिखाया।

लेकिन गोलोक उसे रख नहीं पाया। दो-एक वर्ष उसने चम्पा को सावधानी से रखा था, राह-बाट यों ही निकलने नहीं देता था। दास-व्यवसायी बड़े हिंसक होते हैं। अपने मुँह का कौर निकल जाने पर वे दिग्दिगन्त को छान डालते हैं। उनके दूत चारों तरफ घूमते रहते हैं। उस पर कलकत्ता शहर में अंग्रेजी कानून उनका सहायक है।

चम्पा की दाहिनी भौंह के पास का तिल एक वैष्णवी की पकड़ में आ गया, जो उन दास-व्यवसायियों की भेदिया थी। थाने से सिपाही आकर मुहल्ले-भर के लोगों के सामने से चम्पा को पकड़ ले गये। हुकूमत की ताकत के साथ गोलोक क्या लड़ पाता? चम्पा की मुक्ति के लिए उसने एक-दो गोरे छात्रों की सिफारिश चाही। उन्होंने कहा, "बाबू, हम कानून के दास हैं। पैसा हो तो खरीद लो।"

गोलोक के पास पैसा कहाँ! मामूली अध्यापकी से क्या उसकी ऐसी आय है कि कलकत्ता शहर में एक सुन्दरी षोडशी क्रीतदासी को खरीद सके? उसे खरीदा एक अफीमची खोजे ने जो टिरेटी बाजार का एक नामी व्यवसायी था। उसने सबसे अधिक कीमत चुकायी। आदमी वह पकी उमर का था। और पाँच लोग मना करें, ऐसा भी नहीं। चम्पा को वह जतन से रखता। चम्पा भी उसे अपने पिता की तरह मानती, सेवा करती, गाना सुनाती। सहसा वह आदमी कलकत्ते के मियादी बुखार से चल बसा। वह एक वसीयत कर गया था। वसीयत में उसने चम्पा को कुछ रकम दी थी, और दासता से मुक्ति भी।

लेबेदेव ने जानना चाहा कि गोलोक ने लड़की को अपने घर में क्यों नहीं

लौटा लिया।

समाज। कठिन समाजव्यवस्या। दास-व्यवसायी जिसे पकड़ ले गये, अर्मीनियाई फिरंगी के घर में जिसने रातें गुजारीं, उसे अपनी नतिनी होने पर भी गोलोक दास अपने घर में शरण नहीं दे पाता। किसी हिन्दू के घर में उसके लिए जगह नहीं। इसीलिए चम्पा ने फिरंगी के घर में दासी का काम करना शुरू किया।

"क्यों नहीं किसी फिरंगी के साथ ब्याह दिया?" लेबेदेव ने जिज्ञासा की।

"ब्याहना चाहा था," गोलोक दास ने कहा, "वह बड़ी जिद्दी लड़की है, साहब! उसने कहा कि मैं जीवन में शादी-ब्याह करूँगी ही नहीं।"

"क्या कहते हो?" लेबेदेव ने पूछा, "इतनी राहों में गुजरी और अब भी कुमारी है? फिर लालबाजार में तो सुना कि उसके एक लड़का है।"

"साहब," क्षुब्ध स्वर में गोलोक बोला, "वह कष्ट-कथा तुम्हारा न सुनना ही अच्छा है।"

"बाबू, अगर तुम्हें कष्ट हो तो मत कहो।" लेबेदेव सहानुभूति के साथ बोला।

"साहब, तुम अपने थियेटर में उसे काम देना। उसका चरित्र-स्वभाव तुम जान लो, यही अच्छा है।"

आगे की कहानी गोलोक दास सुना गया।

मलंगा इलाके के पंचमेल मुहल्ले में भाड़े पर एक डेरा लेकर चम्पा रहती थी। वयस्का, सुन्दरी युवती। मुहल्ले के छोकरों की नजर से उसको बचाये रखने की समस्या थी। तब भी समय पाते ही गोलोक दास निगरानी कर जाता। एक परिचित वृद्धा रात में उसके साथ सोती थी। दासीवृत्ति में भी मुसीबत थी। मालिकों की लालसा। एक के बाद एक चाकरी चम्पा छोड़ती गयी, अन्त में देख-सुनकर राबर्ट मेरिसन के घर में काम करने लगी। साहब का घर बैठकखाना में था। घर में लोग कम थे, मेम रुग्णा लेकिन बहुत कड़े मिजाज की। साहब के ऊपर तेज निगाह रखती। मेम की सेवा के लिए चम्पा ने दाई का काम पाया। मेम कड़ी है, साहब से बची रहेगी चम्पा। लेकिन वैसा हुआ नहीं।

"वही पुरानी कहानी।" लेबेदेव बोला।

"कहानी पुरानी, किन्तु घटना में नवीनता है।" गोलोक दास ने कहा।

मेरिसन मदिरा का व्यवसाय करता था। व्यवसाय बड़ा नहीं था, चौरंगी के पास दूकान थी। वह पैंतीस वर्ष का होगा, लेकिन उसकी मेम उससे पाँच वर्ष बड़ी है। मदिरा की दूकान मेम के पूर्वपति की थी। उस पति के मरने पर

मेम स्वामिनी हुई। मेरिसन उस दूकान में काम करता था, नौकरी को स्थायी बनाने के लिए उसने स्वामिनी से विवाह कर लिया। नहीं तो, क्या उस चिड़चिड़ी और निचुड़ी विगतयौवना से विवाह करता? मेरिसन वेश्याओं की वस्ती में आता-जाता था। नयी दाई पर उसकी नजर का गड़ना स्वाभाविक था। लेकिन चम्पा अपने को सँभाले रहती, जितना सम्भव होता साहव के संसर्ग से बचते हुए मेम के आसपास रहती। साहव के भय-प्रलोभन, किसी से भी विचलित नहीं हुई। चम्पा ठीके पर दासी का काम करती थी, रात में वह साहव के यहाँ नहीं रहना चाहती थी। उस वैठकखानावाले अंचल में डकैतों का उपद्रव था। मुहल्ले के साहव डकैतों को डराने के लिए शाम से ही रात-भर पारी-पारी से वन्दूक की हवाई फायर करते। इसीलिए रोज अँधेरा घिरने से पहले ही चम्पा अपने मलंगावाले घर में लौट आती। जिस दिन मेम की तवीयत ज्यादा खराव रहती, उस दिन मालकिन आग्रह करके चम्पा को अपने यहाँ रोक रखती।

एक दिन सन्ध्या में साहवों के नाच-गान का आयोजन था, किसी मित्र के घर में। साधारणतया मेम ऐसे आयोजनों में नहीं जाती थी। लेकिन उस दिन तवीयत दुरुस्त होने के कारण वह उत्साह के साथ तैयार हो गयी। वहाँ मुखौटे पहनकर सव नाचेंगे। पहचान पाने पर मजा-ही-मजा। नाच में छद्मवेश धारण करने के लिए अंग्रेजी दूकान से पोशाकें भाड़े पर मिलती हैं। मेम ने चम्पा से कहा, "हमारे लौटने तक रात हो जायेगी। आज तुम रह जाओ।" वह रह जाना ही उसका काल सिद्ध हुआ।

शाम को मेम जरा पहले ही अकेली लौट आयी। साहव आया नहीं, मेम सीधे सोने के कमरे में चली गयी, वहाँ चम्पा घर के काम में लगी हुई थी। कमरे में रोशनी तेज नहीं थी। कोई वात किये विना मेम ने कमरे का दरवाजा वन्द कर दिया। चम्पा ने समझा कि वह पोशाक वदलेगी, इसलिए पोशाक उतारने में मदद करने के लिए आगे वढ़ आयी। उस पोशाक के भीतर से मेम नहीं, स्वयं साहव मेरिसन निकला। उसने मेम के छद्मवेश में नाच में भाग लिया था, नाच खत्म होने से पहले ही वह पत्नी को छोड़कर उसी छद्मवेश में वुरी नीयत से घर लौट आया।

वह रात चम्पा के कौमार्य-जीवन के लिए कालरात्रि हो गयी।

"उस नरपशु के खिलाफ नालिश नहीं हुई?" लेवेदेव ने पूछा।

"दासी पर वल-प्रयोग। यह तो हमेशा ही होता है। कौन नालिश करे? करने पर क्या होता, नहीं जानता। लेकिन नारी का मन, समझना मुश्किल। चम्पा ने नालिश तो नहीं ही की, वल्कि उसके वाद से साहव को वढ़ावा दिया।

मलंगावाने डेरे में उसने आना-जाना शुरू कर दिया।"

"ठाकुरानी जरूर मिस्टर मेरिसन को चाहती है।" लेबेदेव ने कहा।

"पता नहीं," गोलोक बोला, "उसकी उम्र भी कच्ची ठहरी। मेरिसन देखने में अच्छा है, वह उसके जीवन का पहला पुरुष है।"

कहानी और सुनी न जा सकी।

चम्पा दरवाजे के पास आ खड़ी हुई। गोलोक दास की सफेद चादर पहनकर उसने अपनी लाज ढक रखी थी। श्वेत अलंकाररहित सज्जा में उसकी रूप-सुषमा जैसे खिल उठी थी।

दरवाजे पर खड़ी हो वह बोली, "दादू, घर चलूँगी। तुम एक डोली मँगाओ।"

गोलोक स्नेह से बोला, "यह क्या नतिनी, अभी भी तेरी देह काँपती है! ऐसे में घर जायेगी? मिस्टर लेबेदेव ने तुझे आश्रय दिया है।"

"मिस्टर लेबेदेव को धन्यवाद।" चम्पा आत्ममर्यादा के साथ बोली, "उन्होंने आज मेरा बहुत उपकार किया है। लेकिन मुझे घर जाना ही होगा।"

"ठाकुरानी," लेबेदेव ने आश्वस्त किया, "आप जब तक पूर्ण स्वस्थ न हो जायें, यहाँ आराम से रह सकती हैं।"

"सो नहीं होगा, साहब," चम्पा ने अनुनय किया, "मुझे अभी जाना होगा। पता नहीं, इन कई दिनों में मेरे बच्चे की क्या हालत हुई!"

"नतिनी अपने बच्चे के लिए व्यग्र है।" गोलोक ने कहा, "मैंने स्वयं पता किया है, बूढ़ी दीदी उसकी देखरेख करती है। मुन्ना अच्छी तरह ही है।"

"उसको देखने के लिए व्यग्र हूँ।" चम्पा बोली, "तुम अभी एक डोली मँगाओ, दादू।"

गोलोक डोली लाने चला गया।

"लेकिन ठाकुरानी, तुम चोर तो नहीं हो।" लेबेदेव बोला।

"आपने कैसे जान लिया?"

"ऐसी जिसकी कहानी है, वह कैसे चोर हो सकती है?"

"मेम ने कहा, गवाह ने कहा, सिपाही ने कहा, मजिस्ट्रेट ने कहा—तुम चोर हो। कलकत्ता शहर ने जाना मैं चोर हूँ। तब भी आप कहेंगे कि मैं चोर नहीं हो सकती?"

"ठाकुरानी, तुमने तो बताया नहीं कि तुम्हें किसने वह तुलसीदाना दिया था।"

"आपने कैसे जानी वह बात? आप क्या सुनवाई के समय उपस्थित थे?"

मेम स्वामिनी हुई। मेरिसन उस दूकान में काम करता था, नौकरी को स्थायी बनाने के लिए उसने स्वामिनी से विवाह कर लिया। नहीं तो, क्या उस चिड़चिड़ी और निचुड़ी विगतयौवना से विवाह करता ? मेरिसन वेश्याओं की वस्ती में आता-जाता था। नयी दाई पर उसकी नजर का गड़ना स्वाभाविक था। लेकिन चम्पा अपने को सँभाले रहती, जितना सम्भव होता साहव के संसर्ग से वचते हुए मेम के आसपास रहती। साहव के भय-प्रलोभन, किसी से भी विचलित नहीं हुई। चम्पा ठीके पर दासी का काम करती थी, रात में वह साहव के यहाँ नहीं रहना चाहती थी। उस वैठकखानावाले अंचल में डकैतों का उपद्रव था। मुहल्ले के साहव डकैतों को डराने के लिए शाम से ही रात-भर पारी-पारी से वन्दूक की हवाई फायर करते। इसीलिए रोज अँधेरा घिरने से पहले ही चम्पा अपने मलंगावाले घर में लौट आती। जिस दिन मेम की तवीयत ज्यादा खराव रहती, उस दिन मालकिन आग्रह करके चम्पा को अपने यहाँ रोक रखती।

एक दिन सन्ध्या में साहवों के नाच-गान का आयोजन था, किसी मित्र के घर में। साधारणतया मेम ऐसे आयोजनों में नहीं जाती थी। लेकिन उस दिन तवीयत दुरुस्त होने के कारण वह उत्साह के साथ तैयार हो गयी। वहाँ मुखौटे पहनकर सव नाचेंगे। पहचान पाने पर मजा-ही-मजा। नाच में छद्मवेश धारण करने के लिए अंग्रेजी दूकान से पोशाकें भाड़े पर मिलती हैं। मेम ने चम्पा से कहा, "हमारे लौटने तक रात हो जायेगी। आज तुम रह जाओ।" वह रह जाना ही उसका काल सिद्ध हुआ।

शाम को मेम जरा पहले ही अकेली लौट आयी। साहव आया नहीं, मेम सीधे सोने के कमरे में चली गयी, वहाँ चम्पा घर के काम में लगी हुई थी। कमरे में रोशनी तेज नहीं थी। कोई वात किये विना मेम ने कमरे का दरवाजा वन्द कर दिया। चम्पा ने समझा कि वह पोशाक वदलेगी, इसलिए पोशाक उतारने में मदद करने के लिए आगे वढ़ आयी। उस पोशाक के भीतर से मेम नहीं, स्वयं साहव मेरिसन निकला। उसने मेम के छद्मवेश में नाच में भाग लिया था, नाच खत्म होने से पहले ही वह पत्नी को छोड़कर उसी छद्मवेश में वुरी नीयत से घर लौट आया।

वह रात चम्पा के कौमार्य-जीवन के लिए कालरात्रि हो गयी।

"उस नरपशु के खिलाफ नालिश नहीं हुई ?" लेवेदेव ने पूछा।

"दासी पर वल-प्रयोग। यह तो हमेशा ही होता है। कौन नालिश करे ? करने पर क्या होता, नहीं जानता। लेकिन नारी का मन, समझना मुश्किल। चम्पा ने नालिश तो नहीं ही की, वल्कि उसके वाद से साहव को वढ़ावा दिया।

मलंगावाले डेरे में उसने आना-जाना शुरू कर दिया।"

"ठाकुरानी जरूर मिस्टर मेरिसन को चाहती है।" लेबेदेव ने कहा।

"पता नहीं," गोलोक बोला, "उसकी उम्र भी कच्ची ठहरी। मेरिसन देखने में अच्छा है, वह उसके जीवन का पहला पुरुष है।"

कहानी और सुनी न जा सकी।

चम्पा दरवाजे के पास आ खड़ी हुई। गोलोक दास की सफेद चादर पहनकर उसने अपनी लाज ढक रखी थी। श्वेत अलंकाररहित सज्जा में उसकी रूप-सुषमा जैसे खिल उठी थी।

दरवाजे पर खड़ी हो वह बोली, "दादू, घर चलूंगी। तुम एक डोली मँगाओ।"

गोलोक स्नेह से बोला, "वह क्या नतिनी, अभी भी तेरी देह काँपती है! ऐसे मे घर जायेगी? मिस्टर लेबेदेव ने तुझे आश्रय दिया है।"

"मिस्टर लेबेदेव को धन्यवाद।" चम्पा आत्ममर्यादा के साथ बोली, "उन्होंने आज मेरा बहुत उपकार किया है। लेकिन मुझे घर जाना ही होगा।"

"ठाकुरानी," लेबेदेव ने आश्वस्त किया, "आप जब तक पूर्ण स्वस्थ न हो जायें, यहाँ आराम मे रह सकती हैं।"

"सो नहीं होगा, साहब," चम्पा ने अनुनय किया, "मुझे अभी जाना होगा। पता नहीं, इन कई दिनों में मेरे बच्चे की क्या हालत हुई!"

"नतिनी अपने बच्चे के लिए व्यग्र है।" गोलोक ने कहा, "मैंने स्वयं पता किया है, बूढ़ी दीदी उसकी देखरेख करती है। मुन्ना अच्छी तरह ही है।"

"उसको देखने के लिए व्यग्र हूँ।" चम्पा बोली, "तुम अभी एक डोली मँगाओ, दादू।"

गोलोक डोली लाने चला गया।

"लेकिन ठाकुरानी, तुम चोर तो नही हो।" लेबेदेव बोला।

"आपने कैसे जान लिया?"

"ऐसी जिसकी कहानी है, वह कैसे चोर हो सकती है?"

"मेम ने कहा, गवाह ने कहा, सिपाही ने कहा, मजिस्ट्रेट ने कहा—तुम चोर हो। कलकत्ता शहर ने जाना मैं चोर हूँ। तब भी आप कहेंगे कि मैं चोर नहीं हो सकती?"

"ठाकुरानी, तुमने तो बताया नहीं कि तुम्हें किसने वह तुलसीदाना दिया था।"

"आपने कैसे जानी वह बात? आप क्या सुनवाई के समय उपस्थित थे?"

"वह वात वाद में। अभी यह वताओ कि वह तुलसीदाना तुम्हें दिया किसने था ? क्यों तुमने उसका नाम नहीं वताया ?"

चम्पा क्षण-भर के लिए चुप हो रही। उसके वाद माथा नीचा करके दवे हुए क्षोभ के साथ अस्फुट स्वर में वोली, "वही मेरे लिए वड़ी लज्जा की वात है ! वह हार उससे लिया क्यों ? क्यों उसको अपना सर्वस्व दे दिया ?"

यह मानो चम्पा का स्वगत चिन्तन था।

"समझ गया हूँ वह कौन है ! मिस्टर मेरिसन।" लेवेदेव ने कहा।

क्षोभ फट पड़ा क्रोध वनकर। चम्पा कठोर हो वोली, "वह झूठा है, वह ठग है, वह जुआवाज चोर है। उसी ने मेरे गले में हार डाल दिया था। वोला, हिन्दू-विवाह की भाँति तुम्हारे गले में यह हार पहनाता हूँ, सोने का हार, अपने पैसे से खरीदा हुआ। वाद में पता चला, उस हार को वह वीवी के गहने की पेटी से चुरा लाया है। वह हार एक हिन्दू व्यापारी ने उनके विवाह के समय मेम को दिया था।"

"ठाकुरानी, यह वात तुमने अदालत में क्यों नहीं कही ?" लेवेदेव ने जिज्ञासा की।

साथ-साथ चम्पा ने उत्तर दिया, "चोरी के कलंक से साहव अपनी प्रतिष्ठा खो दे, यह मैं सह नहीं सकती थी। लेकिन जज के सामने सारी वातें खोलकर रख देना ही मेरे लिए उचित था। नहीं कर पायी वैसा।"

"ठाकुरानी, तुम उसको चाहती हो ?"

"नहीं जानती।" कहकर चम्पा माथा झुकाये रही।

"क्या तुम उसके पास लौट जाओगी ?"

"मेरे घर में घुसने लगेगा तो निकाल वाहर करूंगी उसे।"

चम्पा की यह वात अन्तःकरण से निकली है या नहीं, लेवेदेव समझ नहीं पाया। उसने सहानुभूति के साथ पूछा, "तुम कुछ अन्यथा नहीं समझना, मैं सुनना चाहता हूँ कि तुम्हारा निर्वाह कैसे होगा ? निर्वाह के खर्च का दावा करना चाहो तो मैं सहायता कर सकता हूँ।"

घृणामिश्रित अभिमान से चम्पा वोली, "नहीं-नहीं, उस सवकी जरूरत नहीं। अपनी अवोध सन्तान को उसके पैसे से खिलाने की मन में चाह नहीं। फिर कोई नौकरी करूँगी। लेकिन चोर को चाकरी अव देगा कौन ?"

"मैं दूंगा !" लेवेदेव ने उसी क्षण कहा।

चम्पा सन्दिग्ध हो उठी। मानो पुरुषमात्र पर उसे विश्वास नहीं। वोली, "नहीं-नहीं, आपके यहाँ नहीं। आप मेरे दादू के मित्र हैं, छात्र हैं।"

लेबेदेव ने तरुणी का संकेत समझ लिया। वह आश्वस्त करते हुए बोला, "मुझ पर विश्वास करो, मैं तुम्हें सम्मानजनक काम देना चाहता हूँ। एक थियेटर मैं खोल रहा हूँ, बँगला थियेटर। तुम मेरे थियेटर की अभिनेत्री रहोगी।"

"थियेटर!" चम्पा अवाक् रह गयी, "वह तो सुनती हूँ, साहब-मेम लोग करते हैं। क्या मैं कर सकूँगी?"

"जरूर करोगी," लेबेदेव ने कहा, "तुम बँगला जानती हो, हिन्दी जानती हो, इतने दिन साहबों के घर में काम किया है, अंग्रेजी भी थोड़ा-बहुत जानती हो। सुना, कुछ-कुछ गाती भी हो। सबसे बड़ी बात कि तुममें साहस है। मेरे बँगला थियेटर की तुम ही नायिका होगी।"

चम्पा तब भी जैसे प्रस्ताव पर यकीन नहीं कर पा रही थी, वह बोली, "मुझे सिखा-पढ़ा तो देंगे न?"

"जरूर, जरूर।" लेबेदेव ने आश्वस्त किया।

चम्पा की आँखों से जैसे एक नया आलोक फूट पड़ा। लेकिन कुछ देर बाद ही वहाँ सन्देह की छाया उतर आयी। वह बोली, "लेकिन साहब, मैं बदनाम चोर हूँ। लोगों में आपके थियेटर की बदनामी होगी। माफ करें। मैं आपके थियेटर में भाग नहीं ले सकूँगी।"

वह बदनामी झूठी है, झूठी। फिर भी लेबेदेव जरा चिन्तित हुआ, मैकनर ने कल यही बात कही थी—'एक चोर स्त्री होगी तुम्हारे थियेटर की नायिका।' उसके बाद उसने अपने को सँभाल लिया। बोला, "चिन्ता मत करो ठाकुरानी, मैं तुम्हें बिलकुल एक नयी रमणी बना दूँगा, कोई तुम्हें पहचान नहीं पायेगा। तुम्हारा पुरातन खत्म हो जायेगा। तुम थियेटर में नवीन नाम, नवीन रूप और नवीन सज्जा के साथ अभिनय करोगी।"

तीन

गवर्नर जनरल सर जान शोर ने बँगला थियेटर खोलने की अनुमति दे दी है। लेबेदेव अपने खर्च से इमारत बनवायेगा, जहाँ चार सौ दर्शक बैठ सकें।

लेबेदेव को क्षण-भर का भी अवकाश नहीं। समय कम रह गया है, शीतकाल आते ही थियेटर चालू करना है। इस बीच इमारत का बनना, स्टेज

बाँधना, सीन आँकना, गाने-बजाने की व्यवस्था करना —कितने ही काम हैं, कितने ही काज।

टाउन मेजर अलेक्जेण्डर किड उसका सहायक है। मुनाफे का मौका देखकर जगन्नाथ गांगुलि ने थियेटर की इमारत बनाने का जिम्मा लिया। नक्शे में कितना-कुछ फेर-बदल हुआ। अन्त में जाकर भवन-निर्माण का काम शुरू किया गया। रुपया चाहिए, रुपया। कुछ जमा किया था लेबेदेव ने, उसका अधिकांश इसी बीच निकल गया। गाने-बजाने के चलते उसका नाम है, उधार उसे सहज ही सुलभ हो जाता है। अतः उसने रुपये उधार ले लिये। बेनियन की सहायता के कारण रुपये के चलते विशेष बाधा नहीं आयी। लेकिन मुश्किल हुआ सीन आँकने का काम। दक्ष चित्रकार मिलने की समस्या थी। टामस राबर्थ के थियेटर में जोसफ बैटल् काम करता है। चित्र आँकने में उसका हाथ मँजा हुआ है, लकड़ी-कपड़े पर रंग और तूलिका के खेल से ऐसे दृश्यपट उभर आते हैं जिनकी तुलना नहीं। बैटल् को यदि फोड़ लाया जाता तो बड़ी सुविधा होती। उसके सम्मानार्थ कलकत्ता थियेटर में एक विशेष अभिनय-रात्रि आयोजित हुई थी, उससे जो लाभ हुआ वह बैटल् को ही मिला था। लेबेदेव के प्रस्ताव पर वह राजी ही नहीं हुआ। अन्त में एक नौसिखुए चित्रकार के द्वारा ही दृश्य-पट तैयार कराये गये। लेबेदेव का मन धकमकाने लगा।

गाने-बजाने की तैयारी थी। गोलोक दास ने बढ़िया बँगला गीत जुटा दिये थे। सुर-ताल का बोध उसे था। उसने अपने-आप ही वायलिन बजाना सीखा था। लेबेदेव के साथ ताल मिलाकर वह चल पाता था। बँगला गान के साथ विलायती वाद्य का समन्वय खूब अच्छा बन पड़ा था। लेबेदेव खुद संगीत का निर्देशन करता था।

लेकिन मुसीबत थी नाटक की भाषा को लेकर। लेबेदेव ने पूरे नाटक को बँगला में रूपान्तरित किया। तब भी केवल बँगला में नाटक खेलने का साहस उसे नहीं हो रहा था। कलकत्ता शहर के दर्शक पँचमेल ठहरे। अंग्रेज, बंगाली, हिन्दुस्तानी (हिन्दीभाषी), मूर—कितनी ही जातियों के लोग कलकत्ता में रहते हैं। केवल बँगला भाषा का थियेटर खोलने पर यदि दर्शक नहीं जुटे तो सारा रुपया बरबाद! इसीलिए लेबेदेव ने एक नया प्रयोग किया। नाटक के प्रथम अंक के सारे दृश्य बँगला में रखे। द्वितीय अंक के तीनों दृश्यों में प्रथम दृश्य मूरों की भाषा में, दूसरा दृश्य बँगला में और तीसरा दृश्य अंग्रेजी में रहेगा। और शेष अंक रहेगा पूरा-का-पूरा बँगला में।

गोलोक दास बोला, "यह तो खिचड़ी हुई!"

लेबेदेव ने उत्तर दिया, "तुम लोग खिचड़ी खाते हो न ! तुम लोग बँगला में यात्रा-गान सुनते हो, यूरोपवाले अंग्रेजी में थियेटर देखते हैं। लेकिन मेरी खिचड़ी एक नये काव्य को उपस्थित करेगी।"

गोलोक ने कहा, "किन्तु इस अद्भुत सम्मिश्रण को रसिक लोग पसन्द करेंगे ?"

"यही तो मेरी परीक्षा है।" लेबेदेव ने कहा, "बाबू, यह बँगला थियेटर ही तो सम्मिश्रण है। तुम्हारा यात्रा-गान खुले में होता है, मंच पर नहीं। तुम्हारे यात्रा-गान में विचित्र परदे नहीं रहते। ये सब विलायती चीजें मैं बँगला थियेटर को दूंगा। बढ़िया बँगला गान के साथ विलायती वाद्य बजेंगे। और अगर भाषा में बँगला, हिन्दुस्तानी और अंग्रेजी हो तो कितना मजा आयेगा ! लोग हँसी से लोट-पोट होंगे। कामेडी।"

"किन्तु···" गोलोक दास ने कुछ कहना चाहा।

"किन्तु नहीं, बाबू, गेरासिम लेबेदेव किन्तु नहीं जानता।" लेबेदेव ने आत्मविश्वास के साथ कहा, "वह जो तुम लोगों का मजेदार खिचड़ी गाना है—'वह श्याम गोइंग मथुरा, गोपियों के पीछे दौड़ता। कहा अक्रूर ने, अंकल इज ए ग्रेट रास्कल।' तुम्हारे देशवासी तो मजा चाहते हैं, दिलबहलाव चाहते हैं—गोपाल भांड, रामलीला की संगति, कवियों का विवाद, खयाल, तराना। मैं भी एक नया उपयोगी काव्य प्रस्तुत करूँगा।

भाषा का तर्क-वितर्क यदि खत्म भी हुआ तो विशेष कठिनाई हुई चम्पा को लेकर। अब चम्पा उसका नाम नहीं। लेबेदेव ने उसको नाम दिया है, गुलाब। गुलाब की तरह सुन्दर। क्लारा की भूमिका लेबेदेव ने उसे दी है। प्रथम अंक में क्लारा वाद्यसंगीत के साथ डान पेड्रो के रूप में आयेगी। बँगला नाटक में क्लारा का नाम सुखमय हो गया है। अर्थात् प्रारम्भ में चम्पा सुखमय की भूमिका में उपस्थित होगी, पुरुष-वेश में। वह आकर वादकों से कहेगी, "महाशयो, वह भद्र महिला सुनकर सन्तुष्ट हुई हैं। और उन्होंने हम लोगों से जाने को कहा है—शुभ हो।"

चम्पा ने अभिनय के अंश याद कर लिये थे, रिहर्सल के समय ठीक-ठीक बोल नहीं पाती थी। मानो पाठशाला की पढ़ाई हो।

लेबेदेव स्वयं रिहर्सल करा रहा था और आवश्यकतानुसार निर्देश भी दे रहा था।

"फिर से बोलो।" लेबेदेव ने आदेश दिया।

चम्पा बोली, "महाशयो, भद्र महिला सुनकर सन्तुष्ट हुई हैं…"

"हुआ नहीं, हुआ नहीं।" लेबेदेव रोकते हुए बोल उठा, "तुम्हारी बात में सन्तोष का भाव नहीं जगा। इतनी रुष्टता क्यों ? वादकगण फिर बजायें। गुलाब फिर से कहेगी।"

वादकों ने फिर वाद्यसंगीत दिया।

चम्पा फिर से जल्दी-जल्दी बोली, "महाशयो, भद्र महिला सुनकर सन्तुष्ट हुई हैं और उन्होंने हम लोगों से कहा है…"

बमक उठा लेबेदेव, मानो कोई अरबी घोड़ा चारों पैर उठाकर उछल पड़ा हो। "इतनी हड़बड़ाहट किसलिए ? सुनने के बाद जरा रुको—पाज—एक, दो—और उन्होंने कहा…। फिर बजाओ।"

कुछ क्षोभ के साथ वादकों ने फिर बजाना शुरू किया।

चम्पा इस बार धीरे-धीरे बोली, "महाशयो, भद्र महिला सुनकर सन्तुष्ट हुई हैं…"

लेबेदेव की ओर ताका उसने, उसकी भौंहें टेढ़ी। चम्पा ने डरकर पूछा, "इस बार भी नहीं हुआ ?"

लेबेदेव बोला, "नहीं, ठाकुरानी, तुम क्लारा के चरित्र को ठीक से समझ नहीं पाती हो। क्लारा पुरुष के वेश में उपस्थित है, वह उत्साहित है, जीवन्त है, उसके मन का आनन्द उमड़ा पड़ रहा है…"

"मैं नहीं कर पाऊँगी, मैं अभिनय नहीं कर पाऊँगी।" चम्पा अपनी रुलाई को छिपाने के लिए बगलवाले कमरे में दौड़ गयी।

"ओपफोह, यह बंगाली ठाकुरानी इतनी भावुक है!" लेबेदेव हताश हो बोला।

गोलोक दास इतनी देर से चुपचाप देख रहा था। चम्पा की असफलता से वह भी हताश हो उठा। कुछ आतंकित स्वर में वह बोला, "गुलाब सुन्दरी जब पार्ट नहीं बोल पाती है तो फिर और किस स्त्री को देखा जाये!"

छोटी हीरामणि पान का डिब्बा हाथ में लिये, गाल-भर पान दबाये, आगे आकर बोली, "उस औरत पर इतनी कृपादृष्टि है साहब की। क्यों, मैं क्या वह नहीं कर सकती ? रूप बनाकर कितने मर्दों के साथ स्वांग किया है और थियेटर में अभिनय नहीं कर सकती ?" कहकर पान की पीक उसने पीकदानी में फेंक दी।

कुसुम मुँह बनाकर बोली, "और मैं ही किसी से क्या कम हूँ, हीरी ? मैं ही क्यों वह बड़ा पार्ट नहीं पा सकती ? मेरा ऐसा रूप है, तब भी क्या सिर्फ

गाना ही गाते रहना होगा ?"

"नहीं-नहीं," तनिक क्षुब्ध हो लेबेदेव ने कहा, "वह कर सकेगी, वह कर सकेगी। उसमें शक्ति है, किन्तु प्राण नहीं। मैं उसे सिखा-पढ़ा ही लूँगा, दूसरा अभ्यास चले।"

लेबेदेव पास के कमरे में गया। चम्पा धरती पर पड़ी हुई, मुँह छिपाये फफक-फफककर रो रही थी। जूते की आहट सुनकर भी उसने मुँह ऊपर नहीं किया।

लेबेदेव ने पुकारा, "ठाकुरानी।"

चम्पा हिली नहीं।

लेबेदेव ने फिर आवाज दी, "गुलाब ठाकुरानी।"

इस बार चम्पा ने रुआँसा चेहरा उठाकर देखा।

लेबेदेव ने जरा व्यावसायिक लहजे में कहा, "गुलाब ठाकुरानी! तुम्हें रोने की भूमिका नहीं दी गयी है, हँसने की भूमिका दी गयी है। आँखें पोंछ डालो।"

चम्पा ने आँचल से आँखें पोंछ लीं।

लेबेदेव ने शिक्षक की भाँति कहा, "मैं फिर कहता हूँ, क्लारा के चरित्र को ठीक से नहीं समझ पायी हो। क्लारा पुरुष के वेश में उपस्थित है। वह उद्धत है, वह जीवन्त है, वह आनन्दोन्मत्त है।"

"साहब, मैं नहीं कर पाऊँगी।" चम्पा हताश हो बोली, "मुझे छुट्टी दे दो।"

"गुलाब ठाकुरानी, तुम नहीं कर पाओगी तो कौन कर पायेगी ?" लेबेदेव ने कहा, "तुम बँगला, हिन्दुस्तानी, अंग्रेजी भाषाएँ जानती हो। तुम्हारा स्वर खूब तेज मगर मधुर है। समय मेरे पास कम है, क्लारा का पार्ट कौन करे ?"

चम्पा उठ बैठी। सन्दिग्ध स्वर में बोली, "क्या मैं कर पाऊँगी ? सच ?"

"अवश्य कर पाओगी," लेबेदेव ने कहा, "तुम्हारे भीतर शक्ति है, लेकिन प्राण नहीं।"

चिन्तित हो चम्पा ने सिर झुका लिया।

हठात् लेबेदेव ने पूछा, "मिस्टर मेरिसन तुम्हारे घर आता है ?"

चम्पा तनिक लज्जा के साथ बोली, "दो-तीन दिन आया था। मैं सामने नहीं गयी।"

"वह एक हरामजादा है!" लेबेदेव ने कहा, "लेकिन उसे आने दो, आने दो उसे।"

रिहर्सल समाप्त होते-होते काफी देर हो गयी। कलकत्ता शहर में सुबह और शाम के वक्त ही काम-काज चलते हैं। दोपहर विश्राम। पसीने से सराबोर कर देनेवाली प्रचण्ड गर्मी में खिड़की-दरवाजे बन्द कर पंखे के नीचे विश्राम। लेकिन लेबेदेव को विश्राम नहीं। दोपहर में जब सारा शहर ऊँघता रहता, तब वह अपनी धर्म-दर्शन-भाषातत्त्व की चर्चा लेकर बैठता। प्रयोजन के अनुसार ब्राह्मण पण्डित लोग आते हैं। वे लोग कुछ पारिश्रमिक के बदले में प्रवासी रूसी के साथ भारतविद्या की विवेचना करते हैं। आठ वर्षों में उसने बहुत-कुछ जान-समझ लिया है। संस्कृत भाषा थोड़ी-सी ही सीखी है, बँगला और उड़िया को अच्छी तरह सीख लिया है। रूसी भाषा और संस्कृत के बीच उसने एक अद्भुत साम्य पाया है। सारी दोपहर गम्भीर तत्त्वों की छानबीन करते-करते मन भारी हो उठा। लेबेदेव बग्घी हाँकते हुए हवाखोरी को निकला। आज डोमतला थियेटर का भवन देखने जाने की उसकी इच्छा नहीं। सावधान, जगन्नाथ गांगुलि कंजूस निकला तो हुआ सब गुड़ गोबर। उस तरफ भी उसकी नजर है, लेकिन आज उस तरफ माथा न खपाना ही अच्छा। गंगा किनारे 'कोर्स' जाने की इच्छा नहीं हुई। वहाँ यूरोपियन लोगों की भीड़ है। झुण्ड-के-झुण्ड साहब-मेम गाड़ी हाँकते हुए हवाखोरी कर रहे होंगे। अनेक जान-पहचानवाले निकल पड़ेंगे। शिष्टाचार निभाने चला तो बोर होना पड़ेगा। इसके अलावा वह हवा-खोरी की नहीं, धूल निगलने की जगह है।

निरुद्देश्य भाव से घूमते-फिरते चाँदनी चौक की परिक्रमा करता हुआ वह मलंगा अंचल में आ पहुँचा। हठात् मन में आया कि चम्पा के घर जाना है। सवेरे के रिहर्सल के समय वह बिफर उठी थी, उसे जरा उत्साहित करना है। और, चम्पा के घर पहले कभी गया भी नहीं है।

मलंगा पँचमेल इलाका है। मलंग लोग कब इस क्षेत्र में नमक बनाते थे, इसका कोई ठिकाना नहीं। इस समय नाना जातियों के लोग यहाँ रहते हैं। हिन्दू, मूर, चीनी, बर्मी और फिरंगी आस-पास रहते हैं। जाति-वर्ण-धर्म की विभिन्नता रहने पर भी शहर में कार्य-व्यापार के लिए साथ-साथ रहने को वे बाध्य हैं। कलह-विवाद उनमें नहीं होता, सो नहीं। दुर्गापूजा और मुहर्रम के मौकों पर कुछ वर्ष पहले दंगे भी हो चुके हैं, तब भी ये साथ-साथ ही रहने को बाध्य हैं।

गली सीधी है। छोटे-छोटे लड़की-लड़के रास्ते में खेल रहे थे। धूल-कीचड़ की उन्हें चिन्ता नहीं। घरों की छतों पर अनेक लड़के पतंग उड़ा रहे थे। पतंग की कलाबाजी के खेल में खूब उत्साह, किसी पतंग के कट जाने से

लड़के चिल्लाने लगे—वो गया, वो गया ! कटी पतंग को पकड़ने के लिए पेड़ की सूखी डालपात-बँधा लम्बा बाँस लेकर लड़के उसके पीछे दौड़ पड़े।

रास्ते के किनारे-किनारे नाली। कूड़े-कचड़े के ढेर। रुका हुआ गन्दा पानी। शहर के कोतवाल के अधीन हर थाने में मैला फेंकनेवाली गाड़ियाँ थीं, कर्मचारी थे, किन्तु मैला समय पर साफ नहीं होता।

बग्घीगाड़ी के पीछे छोटे लड़की-लड़कों का झुण्ड दौड़ पड़ा। कोई-कोई गाड़ी के पीछे लटक गया। लेबेदेव ने रोका।

चम्पा का घर ढूँढ निकालने में ज्यादा दिक्कत नहीं हुई। छोटा दुतल्ला घर, पुराना, बहुत दिनों से मरम्मत आदि हुई नहीं। दरवाजा खुलते ही चढ़ाई। पास ही ईंट की सीढ़ियाँ सीधे ऊपर गयी है। सीढ़ी के पास ही एक कुआँ। नीचेवाले घर में एक काला पुर्तगाली परिवार रहता है। चम्पा दूसरे तल्ले पर रहती है।

अप्रत्याशित आगन्तुक को देखकर चम्पा को सिहरन-भरा आश्चर्य हुआ। उसे वह कहाँ बिठाये, किस तरह आतिथ्य करे, इन्हीं बातों में वह व्यस्त हो उठी। अन्त में बैठने के लिए एक कुर्सी रख दी।

दोपहर की नींद के बाद दोनों आँखें फूली-फूली लग रही थीं, सिर के बाल उलझे-रूखे। उसका काफी-कुछ सौन्दर्य जैसे चला गया हो।

दो कमरे और एक बरामदा। फूल के गमले में खिले हुए फूल। पिंजड़े में काकातुआ (तोता) झूलता है, बोलता है, 'वेलकम, वेलकम।" खूब साफ-सुथरा आवास। कमरे में एक पालना झूल रहा था। उसमें बिछौने में लिपटा एक शिशु। धपधप गोरा रंग, चाँदी से चमकते केश। चम्पा के साथ रहनेवाली बूढ़ी-माँ पालने के पास बैठी हुई थी। नये साहब को देख कमरे से उठकर बाहर चली गयी।

लेबेदेव ने शिशु को दुलारा। शिशु रो उठा। चम्पा ने असीम लाड से उसे गोदी में उठा लिया, नाचते-नाचते बोली, "मुन्ने मेरे, लाल मेरे। ना-ना, और रो मत, और रो मत।" शिशु का रोना थमते ही चम्पा ने उसे फिर सुला दिया।

लेबेदेव ने जरा हँसकर कहा, "तुम्हारा बेटा यूरोपियन-जैसा दीखता है।"

चम्पा बोली, "यही तो काल हो गया। मेरिसन की मेम ने जिद की, *तुम्हारे बच्चे को देखूँगी। मैं उसे नयी पोशाक में सजाकर, गले में तुलसीदाना* पहनाकर उसके घर ले गयी। मेरे बच्चे को देखते ही वह आग-बबूला हो उठी। साहब को बुलाकर मेरे बच्चे के पास खड़ा कर दिया, कभी मेरे बच्चे की तरफ,

कभी साहब की तरफ। दोनों के माथे पर रुपहले केश ! और जाती कहाँ ! अकथनीय गाली-गलौज ! उसके बाद मेम की दृष्टि तुलसीदाना पर पड़ी। मेम दौड़कर गयी, सन्दूक खोलकर गहनों के बक्स को देखा। साथ-ही-साथ अस्वस्थ शरीर लिए ही दौड़ी चली गयी थाने में खबर करने के लिए।"

"और मेरिसन ने क्या किया ?"

"उसने कहा, मामला गरम है, भागो घर। मैंने कहा, थाने की पुलिस को कौन रोकेगा ? वह बोला, 'बेंत के कुछ प्रहार ही तो ? सह जाओगी। मैं अभी टैवर्न जाता हूँ।' यह कहकर वह धड़धड़ाते हुए चला गया। धड़कता हृदय लेकर मैं घर लौटी। मेरे लौटते-न-लौटते पुलिस आयी और मुझे पकड़कर थाने में ले गयी।"

"वे सब बातें रहने दो।" लेबेदेव बोला, "तुमने थियेटर देखा है ?"

"नहीं। देखती कैसे ? विलायती थियेटर ! सुनती हूँ टिकट का दाम बहुत होता है। हम गरीब लोग, थियेटर के लिए पैसा कहाँ से पायें ? हाँ, यात्रा-गान सुना है, विद्यासुन्दर का खेल। आपके नाटक की तरह उसमें भी नकली वेश। पुरुष ने विद्या का रूप सजाया, उड़ माँ ! क्या भाव ! क्या नखरे ! क्या छिनाल-पन ! नकियाते स्वर में गाता—

हाय करता है कैसे जिया,
जाने क्या मुझे हो गया !
हाय करता है जैसे जिया,
कहूँ किससे क्या हो गया !"

चम्पा नकल उतारते हुए अपने-आप ही खिलखिलाकर हँस उठी।

लेबेदेव मन-ही-मन खुश हो उठा। क्लारा की भूमिका के लिए इसी तरह की उत्फुल्लता चाहिए। उसने कहा, "तुम थियेटर देखोगी ?"

"मैं ?"

"हाँ, तुम थियेटर करोगी। और थियेटर देखोगी नहीं ?"

"दिखाने पर ही देखूँगी।"

"आज ही। चलो, आज कलकत्ता थियेटर में खेल है—'नेक ऑर नथिंग'। प्रहसन। खूब मजेदार।"

"लेकिन आज ही चलूँ ?"

"क्यों, तुम्हें कोई काम है ?"

"मुझे और क्या काम ? आपका रिहर्सल न रहने से मैं बेकार हूँ। सोचती थी आपके ही काम में खलल पड़ेगा।"

"तुम्हें थियेटर दिखाना भी मेरा एक काम है। एक थियेटर देखने से तुम जो समझ पाओगी, उसे मैं बार-बार कह भी तो नहीं सकूँगा।"

"तब तो आप जरा ठहरें, मैं झटपट कपड़े बदल आती हूँ।"

"अच्छा।"

साँझ घिर आयी है। हिन्दू-घरों में शंख बज रहे हैं। बूढ़ी-माँ एक तेल का दीपक जला गयी। दीवार में टँगे दुर्गा के चित्र पर रोशनी पड़ी। लेबेदेव की की दृष्टि उस तरफ खिंच गयी। अद्भुत यह देवी-परिकल्पना। ईश्वरीय शक्ति की प्रतीक मुकुटधारिणी दुर्गा। मानो कुमारी (मरियम) की भाँति विराज रही हो, पूरे विश्व की सारी शक्ति की आधारस्वरूपा यह दस भुजावाली दुर्गा।

चम्पा का बच्चा रो उठा। बूढ़ी-माँ बच्चे को लेकर चली गयी।

लेबेदेव ने दुर्गा की छवि को अनेक बार देखा है, किन्तु ऐसे शान्त परिवेश में देखने का सुयोग नहीं मिला था। लेबेदेव मन-ही-मन दुर्गा-तत्त्व का विश्लेषण करने लगा।

चोर की भाँति एक श्वेत युवक घर में घुसा, खाली पाँव घुसा था इसलिए लेबेदेव उसकी पगध्वनि नहीं सुन पाया। युवक सुन्दर था, सिर के बाल रूखे।

"चम्पा कहाँ है ?" रूखे स्वर में उसने जिज्ञासा की।

"आप मिस्टर मेरिसन हैं ?"

"मैं शैतान का शागिर्द हूँ।" दाँत पीसते हुए मेरिसन ने कहा। उसने एक बार शय्या की तरफ घूरा। विस्तृत शय्या। दोपहर की निद्रा के बाद उसे ठीक करने का समय नहीं मिला था। मेरिसन ने सन्दिग्ध आँखों से लेबेदेव की ओर देखा। उसके बाद कर्कश स्वर में बोला, "अब समझा, कि किस बूते पर यह औरत मुझे घर में घुसने नहीं देती!"

ऐसे ही समय में चम्पा दरवाजे पर आकर खड़ी हो गयी। वह सजधज कर आयी थी। हल्के पीले रंग की एक सुन्दर बेलबूटेवाली साड़ी पहने, माथे पर लाल बिन्दी, जूड़े में फूल। साज-सिंगार में अतिशयता नहीं, किन्तु मनोहारिता।

उसको देखते ही मेरिसन गरज उठा, 'ब्लडी होर! तेरी हिमाकत तो कम नहीं? तू मुझे खदेड़कर नया लवर ले आयी है!'

"छि:-छि:, क्या बोलते हो तुम, बाबू साहब!" चम्पा जीभ काटते हुए बोली, "मिस्टर लेबेदेव मेरे नये मालिक हैं। उनके थियेटर में मैं काम करती हूँ।"

"अरे वही सफेद भालू! चरित्रहीन वायलिनवादक ?" मेरिसन चिल्ला उठा, "सुना है, अंग्रेजी थियेटर के साथ होड़ करके एक बँगला थियेटर खोलना चाहता है! दो दिन में लाल बत्ती जल जायेगी।"

लेबेदेव इस बार तमक उठा लेकिन गम्भीर संयत स्वर में बोला, "मिस्टर मेरिसन, अनधिकार चर्चा न करें।"

मेरिसन ने झट जवाब दिया, "तुम भी इस घर में अनधिकार प्रवेश मत करो।"

चम्पा बोली, "बाँब साहब, क्यों मेरे मालिक का अपमान करते हो ?"

मेरिसन बोला, "अरी औरत, तेरा मालिक मैं—था, हूँ और रहूँगा। इस घर में किसी ब्लडी सफेद भालू को घुसने नहीं दूंगा।"

चम्पा बोली, "यह घर मेरा है। अपने घर में जिसे मर्जी होगी उसे आने दूंगी मैं। तुम बाहर जाओ, बाँब साहब !"

"औरत, इतना बड़ा तेरा साहस ?" चीखकर मेरिसन बोला। वह चम्पा पर झपट पड़ा, उसके एक ही थप्पड़ से चम्पा मेज पर लुढ़क गयी।

अबकी लेबेदेव का हाथ अचानक चल पड़ा, घूँसे पर घूँसे मारकर उसने मेरिसन को घर के बाहर कर दिया। मेरिसन मुकाबला करने के लिए आया था, लेकिन लेबेदेव के भारी बूटों के आघात से बरामदे में जा गिरा। लेबेदेव ने निर्ममता-पूर्वक ठोकर मारते-मारते उसे सीढ़ियों पर लुढ़का दिया।

मेरिसन अँधेरे में लुढ़कते-लुढ़कते नीचे जा गिरा।

कम्बख्त को सजा देकर लेबेदेव बहुत खुश हुआ। लेकिन चारों ओर शोर-गुल मच गया। मेरिसन की चीखों से डरकर बच्चे ने भी रोना शुरू कर दिया। चम्पा की बूढ़ी-माँ भी कछमछाने लगी। इतनी देर में चम्पा उठ खड़ी हुई। उसकी वेश-भूषा अस्तव्यस्त, ओठ के पास से रक्त बहने लगा है।

नीचे के अन्धकार में मेरिसन उछल-कूद मचा रहा था, "शैतान औरत, रूसी गुण्डे से मुझे पिटवाना ! मैं भी सबक सिखाऊँगा, तेरे पास से अपने लड़के को छीन ले जाऊँगा।"

मेरिसन सीढ़ियों से निकलकर बाहर चला गया। इस क्षेत्र में मारपीट चलती ही रहती है। इसीलिए कुछ ही देर में शोर-गुल ठण्डा पड़ गया।

चम्पा मूर्तिवत खड़ी रही।

लेबेदेव आगे आया। बोला, "उसकी धमकी से डर तो नहीं गयी हो ?"

चम्पा का स्वर काँप उठा, "अपने लिए नहीं डरती, लेकिन वह जो उसने कहा कि बच्चे को छीन ले जायेगा !"

"कहने से ही हो गया ?" लेबेदेव ने आश्वस्त किया, "इस देश में क्या सरकार नहीं है ?"

'सरकार तो उन्हीं लोगों की है," चम्पा डरी-डरी-सी बोली, "वह मदिरा का

व्यवसाय करता है, उसके पास अनेक गुण्डे-बदमाश हैं। मैं कभी काम से बाहर जाऊँगी, उसी बीच बूढ़ी-माँ को मार-पीटकर वह बच्चे को उठा ले जायेगा।"

इस बार सचमुच ही लेबेदेव चिन्तित हो उठा। कलकत्ता शहर में चोरी-डकैती-राहजनी होती ही रहती है। यही उस दिन तो चौरंगी-जैसी जगह से डकैत लोग एक स्त्री को उठा ले भागे थे।

"वही तो, सोचकर देखता हूँ," लेबेदेव ने कहा, "कल जैसे भी हो कोई व्यवस्था करनी होगी। लेकिन आज की रात कोई भय तो नहीं?"

"नहीं," साहस के साथ चम्पा बोली, "आज की रात के लिए मैं डरती नहीं। मेरे घर में हँसिया है, मैं सारी रात जागकर पहरा दूँगी। मेरी जान लिये बिना मेरे बच्चे को उठाकर कोई नहीं ले जा पायेगा।"

चम्पा ने घर में से हँसिया बाहर निकाली। कितने ही डाभ-नारियल काटने से उसकी धार गजब की तेज हो गयी है। लालटेन के आलोक में वह चमकने लगी।

लेबेदेव ने एक बार चम्पा की तरफ और एक बार दस भुजावाली दुर्गा के चित्र की तरफ देखा।

"खैरियत रहे," कहते हुए लेबेदेव ने विदा ली। जाते-जाते सोचता रहा कि चम्पा और उसके शिशु को सुरक्षित रूप से रखने की व्यवस्था कहाँ की जाये!

चार

किन्तु सुबह होने पर लेबेदेव चम्पा की बात भूल गया। उसकी वजह थी। भोर होते-न-होते ही श्रीमान् बाबू जगन्नाथ गांगुलि आ धमके। थियेटर के भवन के लिए ईंटों से भरी नौका गंगाघाट पर आयी थी। पुलिसवालों ने नौका को रोक रखा था। पता लगने पर जगन्नाथ ने आदमी भेजे थे, नौका खाली नहीं करायी जा सकी। कारण कुछ भी नहीं। पुलिस का सीधा जवाब, 'हुक्म नहीं है।' अतः ईंट नहीं आने से थियेटर का भवन बनेगा कैसे?

"अवश्य ही रावर्थ साहब की करतूत है।" जगन्नाथ ने कहा।

"सो हो सकता है," चिन्तित स्वर में लेबेदेव ने स्वीकार किया, "लेकिन अब किया क्या जाये?"

"कुछ घूस देने पर माल उतारा जा सकता है।" जगन्नाथ जानकार की तरह बोला।

"घूस मैं नहीं दूंगा।" लेबेदेव ने कहा।

"तब तो माल कब उतरेगा, पता नहीं।"

"मैं बल्कि टाउन-मेजर कर्नल अलेक्जेण्डर किड के पास जाता हूं।" लेबेदेव ने कहा। दूसरे ही क्षण चिन्ता से उसने भौंहें सिकोड़ लीं। टाउन-मेजर अच्छा-खासा रसिक आदमी है। लेबेदेव से उसने जब-तब करके लगभग दो हजार रुपये उधार ले रखे हैं। चुका देने का नाम तक नहीं। अबकी देखते ही रुपये माँग बैठेगा। अंग्रेज राजकर्मचारियों का ढंग ही अलग है। रुपये पाने पर ही वे बात करते हैं। लेकिन अभी रुपये माँगने पर टाउन-मेजर को खुश करना मुश्किल होगा। लेबेदेव पर अपनी ही बहुत-सी देनदारी चढ़ गयी है।

"जगन्नाथ बाबू, आपके पास पाँच-छः सौ रुपये होंगे?" लेबेदेव ने जिज्ञासा की।

"सोच तो मैं ही रहा था कि आपसे रुपये माँगूंगा," जगन्नाथ बोला, "आपके घर का भाड़ा चार मास से बाकी पड़ा है। चूने का दाम मैंने दिया था, वह भी आपसे वापस नहीं मिला मुझे।"

लेबेदेव ने टिरेटी बाजारवाला-घर छोड़ दिया था। वहाँ बड़ी भीड़भाड़ रहती। लोगों और दूकानदारों-पंसारियों का शोर। वहाँ संगीत-साधना में विघ्न होता। तीन नम्बर वेस्टन लेन पास ही है। मकानमालिक हैं जगन्नाथ गांगुलि। लेबेदेव किरायेदार हैं। वेस्टन साहब की आवास-भूमि के छोटे-छोटे टुकड़े करके छोटे-छोटे मकान बना दिये गये थे। उन्हींमें एक मकान है—तीन नम्बर। दोतल्ला मकान, कुछ ही वर्षों में नोनी लग गयी थी। मोटी दीवारें, गरमी के मौसम में भीतर खूब ठण्डा रहता है। सामने एक छोटा बागीचा। एक आउट-हाउस भी है। वह दुमंजिला है। भाड़ा लेते समय जगन्नाथ ने मकान की मरम्मत नहीं करवायी। मोटी रकम खर्च करके लेबेदेव ने मरम्मत करवा ली थी। मिस्टर गेरासिम लेबेदेव कलकत्ता शहर का चोटी का वादक है। उसके आवास में कुछ साज-सज्जा होनी ही चाहिए। जगन्नाथ के साथ उस रकम का कोई हिसाब-किताब अभी तक नहीं हुआ है।

लेबेदेव ने कहा, "सच है कि भाड़ा बाकी पड़ गया है, लेकिन मुझे भी तो मकान की मरम्मत के खाते में आपसे बहुत-से रुपये पाने हैं।"

जगन्नाथ थूक निगलते हुए बोला, "उसका अभी क्या? वे सब बातें बाद में होंगी। अभी तो ईंटवाली नौका को खाली कराने चलें।"

टाउन-मेजर के यहाँ जाने के लिए लेबेदेव अकेला ही बग्घीगाड़ी लेकर बाहर निकला। *कसाईटोला के कीचड़वाले रास्ते से होकर गाड़ी ने काठ के पुल* पर से चैनल-क्रीक को पार किया और एस्प्लेनेड आ पहुँची। उसके बाद धन-खेतों के पास से जो रास्ता भागीरथी के किनारे-किनारे गार्डनरीच चला गया है, उसीको पकड़कर वह आगे बढ़ने लगी।

किड साहब का घर गार्डनरीच में है। शहर के अनेक धनी-मानी साहब लोग वहीं रहते हैं। किड साहब की गृहिणी एक देशी महिला है। दो लड़कों के साथ सुखपूर्वक ही वे घर-गृहस्थी चला रहे हैं।

किड साहब के यहाँ पहुँचने में काफी समय लग गया। चढ़ती धूप में पसीना-पसीना। साहब लोग बिस्तर से उठ गये थे। प्रातःकर्म के बाद वे हुक्के को लेकर व्यस्त थे। ऐसे समय में उसी सुगन्धित खमीरी तम्बाकू के धूम्रजाल को भेदते हुए खिदमतगार के साथ लेबेदेव वहाँ उपस्थित हुआ।

कर्नल ने प्रसन्न भाव से उसको 'सुप्रभात' कहा। पारस्परिक कुशल-क्षेम पूछने के बाद लेबेदेव ने नौकावाली बात छेड़ी। किड को आश्चर्य बिल्कुल नहीं हुआ। बोला, "बाबू जगन्नाथ गांगुलि ने ठीक ही कहा है, यह सब उसी राबर्ट की शैतानी है। वह आदमी शुरू में ही तुम्हारे बंगला थियेटर के पीछे पड़ा हुआ है। गवर्नर जनरल से थियेटर का लाइसेन्स जारी किये जाने की कार्यवाही को उसने रोक ही दिया होता, यदि मैं और मिस्टर जस्टिस हाइड बीच में नहीं पड़ते। गेरासिम, तुम्हें खूब सावधानी से कदम उठाने हैं।"

जरा खुशामद करते हुए लेबेदेव ने कहा, "टाउन-मेजर जिसकी पीठ पर हों, उसे फिर भय क्या ?"

"नहीं-नहीं," किड बोला, "वह आदमी बड़ा धूर्त है। घूस देकर, औरतें जुटाकर उस आदमी ने बहुतों को हाथ में कर रखा है। ऐसा कोई काम नहीं जो वह कर नहीं पाये। जो भी हो, तुम्हारी ईंटवाली नौका खाली हो जायेगी। कोतवाली को मैं चिट्ठी लिख देता हूँ।"

खिदमतगार कलम-दावात ले आया। किड साहब ने उसी क्षण चिट्ठी लिख दी। लेबेदेव धन्यवाद देकर चलने ही को था कि उसी समय किड जरा हिचकते हुए बोला, "हाँ देखो, कुछ रुपये मुझे उधार दे सकते हो ? समझ ही पाते हो कि रुपये की बड़ी खींचतान रहती है।"

"कितने रुपये ?"

"ज्यादा नहीं, चारेक सौ होने से चल जायेगा। तुम्हारे पहलेवाले रुपये के साथ-साथ इसे भी चुका दूँगा।"

"मेरे पास तीन सौ रुपये हैं।"

"अच्छा, वही दे दो।"

लेबेदेव तीन सौ रुपये देकर चिट्ठी के साथ कलकत्ता लौट आया। पसीने से लथपथ लेबेदेव जब घर लौटा तब दिन ढल चुका था। आज दिन-भर भोजन नहीं। नौका खाली न होने पर थियेटर का काम बन्द हो जाता।

कसाईटोला के पास ही डोमतला है। उसी के पच्चीस नम्बरवाले प्लाट को भाड़े पर लेकर लेबेदेव ने थियेटर खड़ा किया है। कलकत्ता थियेटर तो भाड़े पर मिल नहीं सकता, राबर्थ ने साफ-साफ कह दिया है। ओल्ड कोर्टहाउस में नाच-गान-संगीत चलता था, वह भी कुछ वर्ष पहले ध्वस्त हो गया। नया थियेटर बनाये बिना कोई चारा नहीं। डोमतला जगह साहबों के मुहल्ले के पास है। कलकत्ता थियेटर भी अधिक दूर नहीं। पास ही चितपुर है। इस थियेटर को स्पर्धा के बीच खड़ा करना होगा। नया थियेटर। नयी ही उसकी शिल्प-चातुरी होगी। स्टेज को बंगाली ढंग से सजाना होगा, जैसे दुर्गापूजा-उत्सव के समय पूजा-मण्डप सजाये जाते हैं।

लेबेदेव अपने ही प्रयास से बैलगाड़ियों पर ईंटें लदवाकर पच्चीस नम्बर को पहुँचा आया। नक्शे के अनुसार भवन बहुत हद तक तैयार हो गया है। स्टेज, बाक्स, पिट बन गये हैं। चीनी कारीगरों ने गैलरी की पालिश का काम शुरू कर दिया है। पच्चीस नम्बर में जैसे कर्मयज्ञ हो रहा है। देशी ठेकेदार ने लेबेदेव के निर्देश पर राज-मजूरों से भवन खड़ा करवा दिया। जगन्नाथ गांगुलि भी देखरेख रखता है। जोसफ बैटल् के अभाव में दूसरे चित्रकार द्वारा जो दृश्यपट तैयार करवाये गये थे, वे लेबेदेव को पसन्द नहीं आये। उसने स्वयं रंग और तूलिका लेकर दृश्यपट पर पथ-दृश्य, विश्राम-गृह, सुसज्जित भवन आदि का अंकन शुरू कर दिया। मास्को की रंगशाला में अपने मित्र पयोदेर वोलोकोव को दृश्यपट का अंकन करते देखा था। उसी जानकारी को लेबेदेव ने काम में लाना चाहा। आहार-विश्राम भूलकर सारे दिन लेबेदेव ने कहाँ-कैसे गुजार दिये, इसकी उसे सुध न रही।

घर लौटते समय रास्ते में विचार आया, आज भी अपराह्न में रिहर्सल का आयोजन है। बहुत देर हो गयी, अभिनेता-अभिनेत्री-दल और वादकगण अवश्य ही उसकी राह देखते बैठे होंगे।

लेकिन घर लौटने पर मन खुशी से भर उठा। बाबू गोलोकनाथ दास ने इसी बीच रिहर्सल शुरू कर दिया है। नीचेवाले हॉल में नाटक का रिहर्सल चल रहा है। पास के कमरे में स्फिनर वाद्यसंगीत का रिहर्सल ले रहा है। स्फिनर

एक ईस्टइण्डियन युवक है। लेबेदेव के दल में क्लारियोनेट बजाना है। अच्छा तेज होशियार युवक। मालिक का बहुत ही प्रिय।

गोलोक दास ने कहा, "रिहर्सल के लिए सोचिए नहीं। साहब, आप जाइए, नहा-धोकर जरा मुस्ता आइए।"

वही अच्छी बात।

भिश्ती चमड़े की थैली में कुएँ का ठण्डा पानी लाकर गुसलखाने के बड़े टब में डाल गया। पसीने से भीगी पोशाक उतारकर टब में गले तक नग्न देह को डुबोये रखने से मन में स्निग्धता भर गयी। निचली मंजिल से वाद्यसंगीत की आवाज आती है। यह तो कुसुम का सुरीला कण्ठ है! 'विद्यासुन्दर' का गान।

उस बंगाली बाबू ने विलक्षण रचना की थी। जीवन का पूरा-पूरा उपभोग करना जानता था। कौन कहता है कि भारत के लोग सिर्फ धर्म को लिये रहते हैं? वे जीवन का पूरी तरह से उपभोग करना जानते हैं। इस काव्यरचना का अनुवाद करता है। यूरोप के लोग भारत के जीवनप्रेम को जान लें।

हँसी! वाद्य के स्वर को दबाकर हँसी-खिलखिलाहट कानों में आयी। अभिनय या रिहर्सल करते समय नाटक की मजेदार घटना पर वे हँस उठे हैं। नहीं-नहीं, वे हँसायेंगे, हँसेंगे नहीं। रिहर्सल करते-करते ठीक हो जायेगा। पुरप्रवेश में नारी—चम्पा—वही तो, दिन-भर उस लड़की की कोई व्यवस्था नहीं हो पायी। फुर्सत कहाँ मिली!

आज ही गोलोक बाबू से कहकर चाहे जो भी व्यवस्था करनी होगी। लड़की के मन में निर्भयता की स्फूर्ति नहीं रहने पर सुरसमय की भूमिका जमेगी नहीं। इतनी साध से रचा गया नाटक मारा जायेगा।

सहसा व्यावहारिक बुद्धि ने सिर उठाया। लगता है, अनेक नवीन अभिनेता-अभिनेत्रियों को लेकर पहले ही दिन पूरे नाटक को मचस्थ करना युक्तिसंगत नहीं होगा। यदि पूरा नाटक पहले दिन ही असफल रहा तो थियेटर को जमाना मुश्किल होगा। इसके अलावा गोलोक बाबू भी नाटक की खिचड़ी भाषा पसन्द नहीं करते। एक काम किया जा सकता है। लेबेदेव नाटक को काट-छाँटकर संक्षिप्त कर देगा। पहली रात उसी संक्षिप्त नाटक का अभिनय होगा, एकांकी के रूप में, पूरा-का-पूरा बँगला भाषा में। पहली रात वह चम्पा के द्वारा नाटक नहीं शुरू करवायेगा, संगिनी भाग्यवती के द्वारा करवायेगा। इस विशेष परिवर्तनवाले विषय पर सोच-विचार लेने की आवश्यकता है।

हठात् शिशु के रोने का स्वर कानों में पड़ा। निचली मंजिल से ही आ

रहा है न ! माँ जैसे उसको पुचकार रही है। यहाँ फिर शिशु कौन-सा अ
गया ?

गुसलखाने से निकलकर लेवेदेव नीचे उतर आया। सीढ़ी के पास ही चम्पा
उसकी गोद में शिशु।

उस शिशु का रोना ही लेवेदेव को सुनायी पड़ा था। रोना अब और नहीं
छाती का कपड़ा हटाकर चम्पा शिशु को स्तन-पान करा रही थी। शिशु उता
वली के साथ माँ का दूध पी रहा था। मेडोना का वह रूप उसे बहुत अच्छ
लगा।

लेवेदेव को देखकर चम्पा लजायी नहीं। स्तन-पान कराते-कराते ही बोली
"साथ लिये ही आ गयी। छोड़ आने की हिम्मत नहीं हुई। बहुत देर से अपनी
सौदामिनी मौसी की गोद में था। भूख लगते ही नटखट लड़का पूरे स्वर मे
चीखने लगा।"

"मिस्टर मेरिसन ने कोई और उपद्रव तो नहीं किया ?" लेवेदेव ने
जिज्ञासा की।

"दोपहर तक तो नहीं।" बोली चम्पा, "पता नहीं, रात में फिर कैसी मूरत
लेकर आता है। कल सारी रात सोयी नहीं।"

'रोज-रोज के रात्रि-जागरण से तुम्हारा शरीर टूट जायेगा। एक बार
मियादी बुखार ने जकड़ लिया तो फिर खैर नहीं। तुम एक काम करो।"

"क्या ?"

"मैं कहता हूँ कि जब तक सुविधाजनक घर नहीं मिल जाता, तब तक तुम
इसी घर में रह जाओ। मेरिसन यहाँ हमला करने का साहस नहीं करेगा।"

"नहीं-नहीं।" चम्पा ने लज्जा के साथ प्रतिवाद किया, "वह कैसे होगा ?"

"कोई असुविधा नहीं होगी।" लेवेदेव ने कहा, "मेरे उस आउट-हाउस का
दोतल्लेवाला कमरा खाली है। वहीं तुम रहो, और देरी करने से लाभ क्या,
आज रात से ही।"

"आज रात से ?"

"वही अच्छा होगा," लेवेदेव ने कहा, "तुम्हारा सामान वगैरह बाद में ले
ही आना होगा। गोलोकबाबू से कह देता हूँ, वही सारी व्यवस्था कर देंगे।"

चम्पा किसी तरह राजी नहीं हुई। बोली, "वह नहीं होगा मिस्टर लेवेदेव।
आपके सामने अभी बहुत-सारे कार्य हैं। ऐसे में आपके घर में आफत का आना
ठीक नहीं होगा।"

"लेकिन मिस्टर मेरिसन अगर उपद्रव करे ?"

"सो जो हो, सँभाल लिया जायेगा।" चम्पा बोली।

शिशु उतनी देर में तृप्त हो चुका है, माँ का स्तन छोड़ दिया है, चम्पा छाती पर कपड़ा खींचकर शिशु को नकली डाँट सुनाती है, "नटखट लड़के, फिर गाँय-गाँय करके रो नहीं पड़ना। भरपेट जो पी लिया है, सो रात होने तक मुँह बन्द रखना जब तक कि मेरा रिहर्सल न खत्म हो जावे।"

लेबेदेव के साथ-साथ शिशु को गोद में लिये चम्पा हॉल में घुसी जहाँ रिहर्सल चल रहा था।

गोलोकनाथ दास सामने रिहर्सल करा रहा था। खूनी, चौकीदार, गुमाश्ता—ये जोर-जोर से अपना-अपना संवाद बोले जा रहा था। दासी भाग्यवती की भूमिका में अंतर अच्छी ही लग रही थी। लेबेदेव के आ जाने पर भी उसने रिहर्सल बन्द नहीं किया। गोलोक दास के अनुशासन की शिक्षा बड़ी है। अच्छा हुआ, गोलोक बाबू ने स्वयं रिहर्सल का भार लिया है। लेबेदेव एक आसन खींचकर बैठ गया। चम्पा की भूमिका देखनी है, कैसी उतरती है वह।

जरा बाद ही चम्पा की भूमिका शुरू हुई। उसके बच्चे ने सौदामिनी की गोद में आश्रय लिया था। चम्पा ने छद्मवेशी सुखमय के संवाद बोलना शुरू किया।

आज जैसे एक दूसरी चम्पा है। पिछले दिनवाली उसकी वह जड़ता कहाँ गयी? खूब बेधड़क स्वर में वह अपने संवाद बोलती गयी। अब भी दो-एक जगह गलती उभर आयी थी, किन्तु गोलोक दास के बताते ही उसने उसे सुधार लिया।

रतनमणि की भूमिका में सौदामिनी थी। अच्छा मर्यादित भावबोध है उसका। अच्छी व्यक्तित्वसम्पन्न आकृति है। गोलोक दास उसे खूब पसन्द करते हैं। चम्पा के बच्चे को सौदामिनी छोटी हीरामणि की गोद में रखने गयी। किन्तु हीरामणि नाक-भौंह सिकोड़ती हुई बोल उठी, "इस्, क्या घिनौना, मैंने जीवन में दाई का काम किया नहीं! छोटे बच्चे का यह सब छूना-घिसना, घिन आती है मुझे। बदन से कैसे सड़े दूध की गन्ध आती है। डाल दो न माँ-बाप-बनी उस औरत की गोद में!"

हीरामणि ने बातें खूब जोर से ही कही थीं। कान में पड़ते ही चम्पा ने बच्चे को सौदामिनी की गोद से उठा लिया। शान्त स्वर में बोली, "हीरादीदी, मैं दाई का ही काम करती हूँ। इतने पुरुषों के साथ घर बसाने पर भी तुम्हें तो एक भी नहीं हुआ। तुम बच्चे का मर्म क्या समझोगी?"

हीरामणि उबल पड़ी। बोली, "फिर बढ़-चढ़कर बातें! चलनी कहे सूप

से कि तुम्हारे पीछे छेद क्यों ! तुम्हें तो एक भी हुआ नहीं ! अरी अँखफूटी, मैं अगर चाहती तो गण्डा-गण्डा बच्चे जन लेती।"

रिहर्सल का सिलसिला टूट गया। गोलोक दास धमकी दे उठा, "आह, तुम स्त्रियाँ ये सब अनर्गल बातें यहाँ मत बोलो। साहब अभी ही निकाल देगा।"

"निकाल दे," हीरामणि रुआँसी हो बोली, "उस दाई औरत को निकाल दे। मुझे बच्चा नहीं हुआ तो तुझे क्या ? मरे उसका बच्चा, लौंडा होकर मरे।"

चम्पा ने कोई जवाब नहीं दिया। सिर्फ असीम स्नेह से बच्चे को जकड़ लिया।

हीरामणि अपने-आप बड़बड़ाने लगी।

क्षणिक व्यवधान के बाद रिहर्सल फिर चलने लगा।

पास के कमरे से कुसुम दौड़ी आयी। उसका सुन्दर मुखड़ा रक्तिम था। जल्दी-जल्दी निश्वास छोड़ रही थी। क्रुद्ध स्वर में वह बोली, "साहब, क्या मैं यहाँ अपमानित होने के लिए आती हूँ ?"

"क्यों, क्या हुआ ?" लेबेदेव ने दबे स्वर में जिज्ञासा की।

"तुम्हारा वह मुआ फिरंगी मेरा हाथ पकड़कर खींचाखींची करता है।"

"मिस्टर स्फिनर !"

"हाँ, वही काठ का भोंपू बजानेवाला।" ओठ बिचकाते हुए कुसुम बोली, "फिरंगी बोलता क्या है कि मैं कृष्ण हूँ, तुम राधा हो। चलो साहब, फैसला करने चलो।"

लेबेदेव का हाथ धरकर खींचते-खींचते कुसुम उसे बगलवाले कमरे में ले आयी।

वादक-दल में एक दबी खुशी का माहौल था। लेबेदेव को अच्छा लगा। अपने मन में आनन्द न होने पर कैसे वे दूसरे को आनन्दित कर सकेंगे ?

कुसुम ने होंठ फुलाकर नालिश की, "साहब, पूछिए न ! वह मुआ फिरंगी मेरा हाथ पकड़कर खींचाखींची करता है कि नहीं ?"

"स्फिनर," लेबेदेव ने नकली गम्भीरता से पूछा, "बीबीजी का अभियोग सच है ?"

"हाँ सर।"

"क्यों तुमने ऐसा किया ?"

"मिस ने मेरे गाल पर चपत मारी।"

"क्यों ?"

कुसुम ने प्रत्यारोप किया, "वह क्यों बोला कि तुम राधा की तरह सुन्दर हो और मैं कृष्ण की तरह काला ?"

स्पिनर बोला, "मिस ने मुझे मुआ फिरंगी कहा है। मेरा रंग मिट्टी की तरह काला है, इन लोगों का कृष्ण भी तो काला है।"

कुसुम ठुनठुनायी, "खूब किया है, मुआ फिरंगी कहा है। अबकी कहूँगी कठमोंपू-बजनिया, वह क्या कहता नहीं कि मैं बेसुरा गाती हूँ!"

"सच है सर," स्पिनर ने कहा, "मिस ने बेसुरा गाया, तो मैंने भूल बता दी थी। इसीलिए मिस जो-सो बोलने लगी।"

लेबेदेव ने गम्भीर होकर अपना मत दिया, "तुम दोनों ने अपराध किया है। इसकी एकमात्र सजा होगी कि तुम दोनों एक-दूसरे का चुम्बन लो।"

वादकदल 'हो-हो' कर हँस पड़ा, स्पिनर सजा भुगतने के लिए आगे बढ़ा। कुसुम ने मुँह फिराकर स्वर-झंकार दी, "इस्, सबके सामने एक मुए फिरंगी का चुम्बन मुझे सहना होगा? मर गयी! तोबा, तोबा! यह क्या अत्याचार है!"

स्पिनर बोला, "सर, अदालत का यह अपमान है! मिस को गिरफ्तार करें।"

सहसा कुसुम लेबेदेव के गले में झूल गयी बोली "गिरफ्तार तो मैं होना चाहती हूँ, लेकिन साहब की नेक नजर में तो सिर्फ गुलाबसुन्दरी ही है।"

वादक लोग फिर 'हो-हो' करके हँस पड़े। लेबेदेव जैसे कुछ अकचका गया।

गर्दन पर से कुसुम का हाथ हटाते हुए लेबेदेव ने कहा, "मैं थियेटर का अधिकारी हूँ। अगर सुन्दरियाँ अपने-अपने कार्य करें तो मेरी दृष्टि में वे सभी समान हैं।"

इसी एक बात से वादकगण जैसे संयत हो उठे। स्पिनर तनिक लज्जित होकर बोला, "मिस, बहुत-सा समय नष्ट हो चुका है। आओ, हम लोग 'विद्या-सुन्दर' के तीसरे गाने का रिहर्सल करें।"

कुसुम गाने लगी।

गोलोक दास परामर्श करने आया। नाटक के द्वितीय अंक के शेष सारे ही दृश्य अंग्रेजी भाषा में हैं। उन्हें किनके द्वारा कहलाया जाये? गोलोक ने नीलाम्बर बन्द्योपाध्याय के नाम की विशेष रूप से सिफारिश की।

नीलाम्बर साहब बनना चाहता है। उसने अपने नाम तक को साहबी ढंग का बना डाला है। नीलुम्बुर बैण्डो। ब्राह्मण-पुत्र होने पर भी वह 'लाल पानी' और गोमांस खा-पी चुका है। पादरियों की सगत करके उसने अंग्रेजी भी कुछ माँज ली है। उसके पास दो-चार जोड़े कोट-पैण्ट और शर्ट हैं। साहबी दूकान के जूते और मोजे भी फैशन के मुताबिक हैं, उन्हें पहने ही वह अपना अधिकांश

समय गुजारता है। ढेंकी के बारे में अंग्रेजी की बात चलने पर वह यह नहीं कहता, 'टू मेन धापुस्-धपुस्, वन मैन भूनता है।' वह ढेंकी का प्रतिशब्द जानता है। नीलाम्बर ही अंग्रेजी बोल सकता है।

नीलाम्बर ने सारे वाक्य कण्ठस्थ कर डाले हैं। उसका अंग्रेजी उच्चारण शुद्ध नहीं। स्फिनर उसके उच्चारण को घिस-माँज देगा। कुछ भी हो, हास्य नाटक है, उच्चारण में कुछ त्रुटियाँ रहने पर अंग्रेज दर्शकों को मजा आयेगा।

आज रात का रिहर्सल तो पूरा हो गया। अभिनेता-अभिनेत्री और वादकों के दल में जिन्हें घर लौटना था, वे लौट गये। केवल गोलोक दास अभी तक गये नहीं। एकान्त होने पर लेवेदेव ने गोलोक के सामने एक नया प्रस्ताव रखा।

"देखो गुरु महाराज, मैंने बड़े नाटक को छोटा कर दिया है। पहली रात ही इतने बड़े नाटक को प्रस्तुत करना कठिन होगा। अगर छोटा नाटक जम गया तो पूरा नाटक खेला जायेगा।"

गोलोक ने कुछ हताश हो कहा, "क्यों, लगता है साहब को भरोसा नहीं ?"

"ठीक, वही बात है।"

"तो क्या बड़े नाटक का रिहर्सल बन्द रहेगा ?"

"नहीं, नहीं, रिहर्सल चले। इतने लोगों को सिखाने में समय लगेगा। एक बात है गुरु महाराज, इस बार के लिए तुम्हारी सलाह मान ली। प्रथम एकांकी पूरा-का-पूरा बँगला भाषा में ही होगा। क्यों, खुश तो हुए ?"

"बुरे से अच्छा।" गोलोक कुछ सन्तुष्ट हो बोला।

"हाँ, एक बात याद आयी," लेवेदेव ने कहा, "जानते हो, कल रात मिस्टर मेरिसन ने तुम्हारी नतिनी के घर पर हमला किया था।"

"चम्पा ने पूरी घटना मुझे बतायी है।"

"मेरिसन धमकी दे गया है कि बच्चे को उठा ले जायेगा।"

"सुना है।"

"एक व्यवस्था करने से अच्छा रहेगा। मैंने उस आउट-हाउस में रह जाने के लिए तुम्हारी नतिनी से कहा था, वह राजी नहीं हुई।"

"जानता हूँ।"

"इसी बीच उसने तुम्हें सूचना दे दी ?"

"चम्पा मुझसे कुछ भी नहीं छिपाती।"

"ओह ! उसकी रक्षा की क्या व्यवस्था की ?"

"स्फिनर उसके घर के पास रहता है। उसने कहा है कि वह देखता-सुनता

रहेगा।"

"हूँ।"

एक अव्यक्त कुण्ठा लेबेदेव के मन को कुरेदने लगी। चम्पा ने उसके आश्रय में आना नहीं चाहा। लेकिन उसी के कर्मचारी स्किनर की देखरेख स्वीकार कर ली। लगता है, लेबेदेव के मन की उद्विग्नता को गोलोक दास ने भाँप लिया। वह अपनी ओर से ही बोला, "मेरी नतिनी बहुत समझदार औरत है। उसने कहा, साहब के घर में चले आने पर लोग तरह-तरह की बातें करेंगे। उससे साहब के कार्य को क्षति पहुँचेगी।"

"तुम्हारी नतिनी बहुत अच्छी है, बहुत अच्छी!" लेबेदेव ने अस्फुट स्वर में कहा। उसके मन में तो भी एक काँटा रह ही गया। वह ईस्टइण्डियन चम्पा की देखभाल करेगा!

रुपये की समस्या ही लेबेदेव के सामने प्रबल हो उठी। सुना जाता है कि कलकत्ता थियेटर का निर्माण करने में लगभग एक लाख रुपया लग गया था। साहबों के चन्दे से रुपया जमा हुआ था। यहाँ तक कि गवर्नर जनरल तक ने चन्दा दिया था। लेकिन लेबेदेव ने बिल्कुल अपने बूते पर बँगला थियेटर खड़ा किया है। इसके लिए उसकी दुश्चिन्ता कम नहीं। फिर भी उस पर जैसे धुन सवार है।

कलकत्ता थियेटर में प्रवेश का मूल्य है—पिट एवं बाक्स के लिए एक सोने की मुहर अर्थात् सोलह रुपये और गैलरी के लिए आठ रुपये। लेबेदेव अपने थियेटर के प्रवेश-मूल्य को आधा कर देगा। इतने कम मूल्य पर अच्छे मनोरंजन का उपलब्ध होना इस कलकत्ता शहर में मुश्किल है। कलकत्ता थियेटर की भाँति ही बँगला थियेटर में भी लेबेदेव झाड़-फानूसवाले लैम्पों की भरमार कर देगा। कलकत्ता थियेटर प्रहसन के साथ-साथ गीतों का आयोजन करता है, वेस्टमिन्स्टर ब्रिज, तलवारबाजी की स्पर्धा आदि द्वारा दर्शकों को चमत्कृत करता है। लेबेदेव भी हास्य-नाटिका के अलावा इण्डियन मेनिरेड सुनायेगा, खेल के बीच-बीच में जादूगरी-लफ्फाजी दिखायेगा। लेबेदेव किसी भी मामले में कलकत्ता थियेटर से पीछे न रहेगा। लेकिन एक जगह वह मात खा जायेगा। वह है दृश्यपट के अंकन का मामला। इस मामले में कुछ भी लेबेदेव के मन के मुताबिक नहीं हो पाया था। जोसफ बैटल् को फोड़ ले आ पाने में वह बिल्कुल ही असमर्थ रहा। इस सेट्लमेंट में बैटल्-जैसा दृश्यपटशिल्पी मिलना कठिन

है। लेबेदेव ने बैटल् के पास फिर से आदमी भेजा था। यहाँ तक कि थियेटर का भागीदार भी बना लेना चाहा था, लेकिन बैटल् तब भी नहीं पसीजा।

बैटल् को अपने दल में खींच ले आने के लिए लेबेदेव को एक चाल सूझी। जगन्नाथ गांगुलि के यहाँ दुर्गापूजा का उत्सव है। मकान-भाड़े और ठीकेदारी के काम से जगन्नाथ ने पैसे खूब कमा लिये थे। उभरता हुआ धनी-मानी व्यक्ति। इसीलिए इस बार वह खूब धूमधाम से दुर्गा-पूजनोत्सव मना रहा था। अवश्य ही देव-भवन और मल्लिक-भवन के दुर्गापूजा-समारोह के सामने उसकी क्या बिसात थी! फिर भी जगन्नाथ के दुर्गा-पूजनोत्सव की अच्छी-खासी धूम रही। पूजा की ऊँची झाँकी, झाड़-फानूसवाले लैम्पों से बरामदा दिन की तरह आलोकित लग रहा था। आम्रपल्लव, कदली-स्तम्भ, नारिकेल, धूप-गन्ध—किसी भी बात में कमी नहीं थी। ढाक-ढोल, शहनाई, झांझ-घण्टे का शोरगुल ऊँचाई पर था। लोगों की भीड़। जगन्नाथ ने इस बार साहबों-अफसरों को आमन्त्रित किया था। उनके लिए लुभावने खाद्य पदार्थ और मधु-पान की व्यवस्था थी। बाईजी के नृत्य का आयोजन था। जगन्नाथ की ऐसी क्षमता नहीं थी कि खूब प्रसिद्ध बाइयों का मुजरा कराता, वे सब तो पर्व-त्योहारों के अवसर पर देवबाबू और मल्लिकबाबू के यहाँ के लिए रिजर्व्ड रहतीं। जगन्नाथ ने अन्य कुछ बाइयों के साथ-साथ कुसुम को बुलाया। वह विद्यासुन्दर-गान गायेगी और बहू-नाच करेगी। यह भी एक नवीनता। अवश्य ही जगन्नाथ ने लेबेदेव को आमन्त्रित किया था। आमन्त्रितों में अनेक परिचित साहब-मेम थे। एटर्नी डान मैकनर, बैरिस्टर जान शॉ और उसकी हिन्दुस्तानी रखैल, मिस्टर और मिसेज मेरिसन—ये सब लोग भी आये थे। और आये थे जोसफ बैटल् और टामस रावर्थ। जगन्नाथ ने कहा था कि उन्हें बुलाने का खास मतलब है। मदिरा-जाम के प्रभाव में आकर ये लोग यदि लेबेदेव के साथ आपसी मेल-मिलाप कर लें तो बहुत ही अच्छा हो। जल में रहकर मगर से बैर करने से चलेगा नहीं। अंग्रेज लोग सेट्लमेंट के प्रभु हैं। लेबेदेव रूस देश का आदमी। प्रभु-जाति के साथ प्रतिस्पर्धा कर पाना मुश्किल है। उससे अच्छा यह कि कुछ तय-निपटारा हो जाये। मदिरा की मस्ती और बाइयों की मोहिनी माया इसे सहज कर देगी। किन्तु सहज बिल्कुल ही हुआ नहीं।

बात यह हुई। सन्ध्या-आरती के बाद जगन्नाथ के हॉल में साहब-मेम लोगों का जमाव हुआ। वहाँ झाड़-फानूसवाले लैम्प का प्रकाश था, मेज पर भाँति-भाँति के देशी-विदेशी खाद्य-पदार्थ—इलशा-तपसी-भेटकी आदि मछलियाँ, भुना मांस, कॅरी-पोलाव, पावरोटी, लन्दन की विशिष्ट मदिरा, ब्राउन-एण्ड-

ह्वीटफोर्ड का बना क्लॅरेट, पुरानी लाल पोर्ट और शेरी—सबकुछ को गिनाना असम्भव। पहले सुरापान, फिर भोजन और खुली हँसी-मजाक, अजीबो-गरीब। जगन्नाथ ने आयोजन में कोई कसर नहीं रखी। इसके बीच-बीच में हुक्काबरदार लोग सुगन्धित भिलसा-आलियावादी तम्बाकू दिये जा रहे थे।

लेकिन मदिरा के कई पात्र खाली करने के बाद स्थूलकाया रमणी मिसेज लूसी मेरिसन खूब लाल हो उठी। नशे से ढलमलाते नैन। लेबेदेव के साथ परिचय होते ही मिसेज मेरिसन बोली, "ग्राइस्ट! तुम्हीं मिस्टर लेबेदेव हो?"

"हाँ, मैं ही हूँ वह विदेशी वादक, मैडम!" लेबेदेव ने हुक्के की नली निकालते हुए कहा।

"तुम स्वीट डार्लिंग हो! सुनती हूँ तुम्हीं ने उस काली दाई को मेरिसन के चंगुल से छुड़ाया है।"

उसके बाद लेबेदेव के हुक्के की नली को हाथ से खींचते हुए मेरिसन की गृहिणी बोली, "दो जरा, तुम्हारे निज के हुक्के में कुछ दम मार लूँ। तुम मेरे बहुत प्रिय हो।"

कलकत्ते के अंग्रेज-समाज में एक महिला का परपुरुष के हुक्के से दम खींचना एक बड़ी आपत्तिजनक बात थी।

लेबेदेव ने कहा, "मैडम, फालतू नली तो मैं लाया नहीं।"

"उससे क्या होता है?" मिसेज मेरिसन बोली, "तुम्हारी नली से तम्बाकू का धुआँ खींचने में मुझे बड़ा आनन्द आयेगा।"

लूसी मेरिसन ने दो-चार सुखद दम मारे।

"तम्बाकू कैसी लगी?" लेबेदेव ने पूछा।

"अच्छी, मगर खूब तेज।" मिसेज मेरिसन बोली।

"मैं जरा तेज तम्बाकू पीना पसन्द करता हूँ। खाँटी भिलसा तम्बाकू, सत्तर रुपये मन, मेसर्स ली एण्ड केनेडी की दूकान से खरीदी हुई।"

मैकनर की आँखें मदिरा के प्रभाव से खूब लाल हो उठी थीं। उसने कहा, "हैलो, गेरासिम, तुम्हारी वह चोर-नायिका कैसी सम्भ्रासंगिनी है? मैं उसके साथ एक रात सोना चाहता हूँ।"

लेबेदेव ने प्रतिवाद किया, "एक महिला के सामने ये सब बातें कहते तुम्हारी जबान में हकलाहट नहीं होती?"

"बाइ जोव," मैकनर बोला, "मजा लेते समय तुम्हारी जबान नहीं अटकती तो मेरी क्यों अटके? और फिर इस सुन्दरी महिला ने तो मेरे मधुर सम्भाषण का आनन्द ही लिया है।"

"यू आर ए नॉटी ब्वाय, मिस्टर मैकनर !" मिसेज मेरिसन ने कहा और मुखनली से मैकनर की गोल ग्रीवा पर हल्का आघात किया।

"यू आर ए क्लेवर गर्ल, मिसेज मेरिसन," मैकनर बोला, "मिथ्या चोरी का आरोप लगाकर कैसे तुमने अपने पति की रखैल को सजा दिलवायी ?"

मेरिसन हाथ में मदिरापात्र लिये आगे बढ़ आया, उसे देखकर मैकनर चुपचाप खिसक गया। मेरिसन नशे के झोंक में भी उस घूँसेवाली बात को भूला नहीं था। डगमगाते हुए आगे आकर उसने लेबेदेव की कालर को कसकर पकड़ लिया। बोझिल स्वर में बोला, "यू ब्लडी रशियन बेयर, मेरी चहेती को हथिया लिया और अब मेरी वाइफ को भी हथियाना चाहता है ?"

"वॉन्ट डियर," लूसी मेरिसन ने पति को अपने पास खींच लिया। बोली, "मैं तुम्हें छोड़ और किसी को नहीं जानती।"

मेरिसन ने लड़खड़ाते स्वर में लेबेदेव से करुण अनुनय किया, "यू डार्लिंग रशियन बेयर, तुम मेरी वाइफ को ले लो, मेरी चहेती को लौटा दो।"

नशे के झोंक में मेरिसन दहाड़ मारकर रोने लगा। उसकी पत्नी रूमाल से उसकी आँख पोंछने लगी।

लेबेदेव इस दाम्पत्य-परिवेश से परे खिसक गया। उधर शिल्पी जोसेफ बैटल् ने बैरिस्टर जान शॉ की हिन्दुस्तानी रखैल के साथ बातचीत जमा ली है। लेबेदेव धीमे कदमों से उसी दल में जा मिला।

बैटल् कह रहा था, "मैडम शॉ, बहुत दिनों से तुम्हारा एक पोर्ट्रेट आँकने की इच्छा है।"

पान के डिब्बे से पान का बीड़ा निकालकर मुंह में रखते हुए जान शॉ की हिन्दुस्तानी रखैल सिर्फ मीठा-मीठा हंसी।

बैटल् बोला, "तुम एक भीगी साड़ी पहनोगी। तुम्हारे शरीर से वह लिपटी रहेगी। वह चित्र मेरा मास्टरपीस होगा।"

जान शॉ ने बाधा डालते हुए कहा, "उस आनन्द से तुम वंचित रहोगे, अगर मेरे साथ द्वन्द्व-युद्ध के लिए नहीं राजी होते। आ जा मेरी जान !"

कमर में हाथ डालकर जान शॉ अपनी रखैल को बैटल् के अवांछित सान्निध्य से दूर कहीं और खींच ले गया।

बैटल् एक भरपूर घूंट मदिरा गले में उतारते हुए बोला, "क्राइस्ट, इस आदमी को कोई तमीज नहीं।"

सुयोग समझकर लेबेदेव कुछ अन्तरंग हो गया, बोला, "ठीक कहा तुमने, इस आदमी को सचमुच तमीज नहीं। तुम्हारे-जैसा इतना बड़ा कलाकार यदि

उस महिला का चित्र आंके तो वह चिरकाल के लिए विख्यात हो उठे।"

सन्तोष और आनन्द मे बैंटल् पिघला, बोला, "मुझे सद्यस्नाता ब्लैक गर्ल का चित्र नहीं आंकने दिया। सारे शरीर से भीगा वस्त्र लिपटे रहने पर वह नग्नता से भी अधिक आकर्षक होगी। सुनता हूँ तुम्हारे थियेटर-दल में ऐसी अनेक रमणियाँ हैं जिन्हें देखने पर दृष्टि हटायी नहीं जा सकती, या कि जैसा उनका चिकना चर्म है वैसा ही उनका परिपुष्ट यौवन है। क्या यह बात सच है?"

लेबेदेव ने अस्वीकार नहीं किया, यद्यपि यह प्रसंग उसे पसन्द नहीं।

"बाइ जोव्," बैंटल् ने कहा, "अब तो एक दिन तुम्हारे घर पर धावा मारना होगा!"

"तीन नम्बर वेस्टन लेन," लेबेदेव बोला, "तुम्हें तो कितनी ही बार बुला भेजा, तुम ही जो आना नहीं चाहते।"

"आऊँगा, एक दिन छिपकर आऊँगा।" बैंटल् ने कहा, "जानते तो हो ही कि रावर्थ के जानने पर···"

कहते-न-कहते जाने कहाँ से रावर्थ आ धमका। लगता है, दूर से प्रतिद्वन्द्वी को देख रावर्थ को सन्देह हुआ था। मदिरापात्र हाथ मे लिये आगे आकर वह कठोर स्वर में बोला, "तुम लोग किस बात का षड्यन्त्र कर रहे हो?"

बैंटल् बोला, "और किस बात का? हम नारी-देह के सौन्दर्य का विवेचन कर रहे हैं!"

"नहीं, वह स्मी एडवेंचरर तुम्हारा समवयसी नहीं हो सकता! उससे हमारा थियेटर बदनाम हो जायेगा। भूल मत जाओ कि मैं तुम्हें तनख्वाह देता हूँ!" खूब तेज स्वर मे रावर्थ बोला।

"मैं तुम्हें और भी ज्यादा तनख्वाह दूँगा।" दृढ़ स्वर में लेबेदेव ने कहा।

"यू ब्लडी स्वाइन," रावर्थ गरज उठा, "तू मेरे शिल्पी को फोड़ ले जाना चाहता है? तो यह ले।"

रावर्थ ने लेबेदेव के मुंह को लक्ष्य कर मदिरा का गिलास दे मारा। नशा और उत्तेजना के चलते उसका हाथ कांप रहा था। इसलिए लक्ष्य चूक गया। मदिरा का गिलास झनझनाकर टूट गया। लेकिन आगत अतिथियों में से किसी ने भ्रूक्षेप तक नहीं किया। इस तरह की वातें होती ही रहती हैं। जगन्नाथ के बेयरा-दल ने काँच के टुकड़े चुनकर उठा लिये।

बात अधिक दूर तक नहीं गयी। सारंगी और तबला, नर्तकी की नूपुर-ध्वनि ने उन्हें आकृष्ट किया। बाई का नाच शुरू हुआ। जीनतबाई का नाच।

घाघरा पहनकर घूँघट डाले बाई नाच रही है। मुसलमान बाईजी, मुसलमान वादकगण। कलकत्ता शहर के बाबू लोगों के दुर्गापूजनोत्सव के वे भी अंग हैं।

बाई-नाच में लेवेदेव की रुचि नहीं है, वह सिर्फ सोचता है कि कुसुम कब बहू-नाच नाचेगी। बैटल् के मन पर एक बार नशा सवार होना है। कलाकार आदमी, जरा सनकी होता है। काश, कुसुम एक बार उसकी आँखों की पकड़ में आ जाये। लेवेदेव दूर से ही बैटल् पर निगाह जमाये रहता है। इधर जगन्नाथ गांगुलि का नशा गहरा गया था। उसने भी बाई के साथ-साथ नाचना शुरू किया। जगन्नाथ के माथे पर मदिरा का पात्र। दोनों हाथों में क्लॅरेट की बोतलें। वह अदा के साथ भार-सन्तुलन रखते हुए बाई के साथ-साथ नाच रहा था। बाबू ठीक विदूषक की तरह लगता था। साहब-मेम लोग मजा लेते हुए बेहताशा हँसे जा रहे थे।

बाई-नाच खत्म हो गया। अबकी बहू-नाच। ढोल, मंजीरा और शहनाई के साथ बहू नाचेगी। कुसुम ने नाचघर में प्रवेश किया। आज वह पहचान में नहीं आती। उसने पीली किनारी की लाल साड़ी पहन रखी है। साड़ी की झलमलाहट में उसके शरीर का प्रत्येक अंग स्पष्ट हो उठा है। बैटल् ने कहा था, नग्नता से भी अधिक आकर्षक। यह भी वही। कुसुम की आँखों में काजल, गालों पर आलता, ओठों पर पान की लाली, गले में जूही के फूलों की माला है। कुसुम घूँघट डाले हुए है। कमर में कपड़ा खोंसे हुए। घूम-घूमकर बहू-नाच नाचती है और विद्यासुन्दर-गान गाती है। नृत्य की लय पर घूँघट गिर पड़ता है, छाती का कपड़ा हट जाता है। साहबों की आँखों में लालसा जाग उठती है। लेवेदेव उसी बीच बैटल् के पास आ बैठा। कुसुम देख पायी लेवेदेव को, आँखों में कटाक्ष। लेकिन लेवेदेव उस कटाक्ष के भुलावे में आनेवाला पात्र नहीं। बैटल् उठकर इस बार लेवेदेव के पास खड़ा हुआ। लेवेदेव ने धीमे-धीमे कहा, "वह नाचनेवाली मेरे थियेटर की प्रमुख गायिका है।" मदिरा से रक्तिम बैटल् की दृष्टि लोलुप हो उठी। कुसुम की दृष्टि बैटल् की ओर गयी। दोनों ही की आँखों में चुम्बक का आकर्षण। कुसुम ने दनादन कटाक्षों के तीर मारे जोसेफ बैटल् पर, शिल्पी चंचल हो उठा। लालसा से उसकी देह थर-थर काँपने लगी। कुसुम नाचती-नाचती आगे आयी शिल्पी की तरफ, अपने गले से जुही की माला उतारकर उसने शिल्पी के गले में डाल दी। शिल्पी ने लपककर कुसुम को कसकर पकड़ लिया। कौन जाने उस सभा-स्थल में ही एक केलि-क्रीड़ाकाण्ड घटित हो जाता, किन्तु जगन्नाथ ने चाहे इच्छा से हो या नशे के झोंक में, वातावरण को हल्का कर दिया। वह उसी क्षण लाल वस्त्रवाली कुसुम के पैरों के

पास घुटने टेककर बैठ गया और चीत्कार कर उठा, "माँ-माँ, अरी माँ, तुम साक्षात् महिषमर्दिनी दुर्गा हो, मैं तुम्हारा महिष हूँ, मेरा वध करो माँ, मेरा वध करो !"

जगन्नाथ के इस आकस्मिक कौतुक से बैठक् की लालसा का ज्वार उतर गया। हँसी और ठहाकों से नाचघर मुखरित हो उठा।

पाँच

पान के हॉल में रिहर्सल चल रहा था। इसी बीच एक बार नीलाम्बर बैन्डो ने लेबेदेव के सामने शिकायत की। द्वितीय अंक के अन्तिम दृश्य को अंग्रेजी में प्रस्तुत करना होगा, किन्तु बहुतेरे लोग अच्छी तरह अंग्रेजी नहीं बोल पाते हैं। नीलाम्बर बैण्डो को अहंकार है कि वह अच्छी अंग्रेजी बोलता है। गोलोक दास से नीलाम्बर ने यही बात कही, तो वह बोला कि उनके विचार में नाटक में अंग्रेजी कथोपकथन को छोड़ देना ही उचित है। गोलोक के विचारों का लेबेदेव को पता है। गोलोक आरम्भ से ही बेसुरा अलाप रहा है। नाटक की भाषा बँगला हो। बीच-बीच में अंग्रेजी या मूर भाषा की छौंक रहे। इसलिए कहता है कि एक दृश्य अंग्रेजी भाषा में हो, यह उसे बिल्कुल पसन्द नहीं है। लेबेदेव ने सिर्फ यूरोपीय लोगों का रुख देखकर व्यवसाय की खातिर अंग्रेजी को रख छोड़ा है। गोलोक ने साफ-साफ ही कहा था—"साहब, दो नावों पर पैर रखकर चलना ठीक नहीं होगा। तुम बँगला नाटक खेलना चाहते हो तो बँगला में ही खेलो। और अंग्रेजी चाहते हो तो अंग्रेजी नाटक में ही हाथ डालो।" किन्तु लेबेदेव ने गोलोक की उस सलाह को संक्षिप्त नाटिका के समय मान लेने पर भी पूरे नाटक के समय हँसकर उड़ा दिया है। क्योंकि थियेटर के पीछे उसे काफी रुपये लगाने पड़े हैं, सावधानी नहीं बरतने पर सारे रुपये डूब जा सकते हैं।

नीलाम्बर बोला, "अंग्रेजीवाले भाग में यदि किसी मेम को उतारा जाता तो बहुत अच्छा होता, सर ! मेम के साथ अभिनय नहीं करने पर क्या वह जमेगा ? बंगाली लड़के-लड़की भला अभिनय करेंगे क्या ?"

"तुमने मेम के साथ अभिनय किया है ?" लेबेदेव ने पूछा।

"और चान्स ही कहाँ मिला, सर ?" नीलाम्बर बोला, "एक बार चान्स

मिलने पर मैं चकित कर देता। साहब-मेम का नाटक देखने के लिए सबसे पहले टिकट कटाकर मैं कलकत्ता थियेटर जाता था, सर ! डैडी ने कितना ही मारा-पीटा। लेकिन वह एक नशा था, सर ! जब रुपये शार्ट पड़ गये तो उस थियेटर के गेटकीपर का काम धर लिया। ब्राह्मिन्स सन् दरवान ! यार-दोस्त मजाक उड़ाते। डैडी ने त्याज्य पुत्र करार दिया, लेकिन थियेटर को मैंने छोड़ा नहीं, सर, गेटकीपर होकर साहब-मेम लोगों के कितने ही नाटक देखे—मिड् नाइट आवर, बार्नवी ब्रिटल्, ट्रिप टु स्काटलैण्ड, क्रोनोनवाटम्थोलेगेस—लाफिंग-लाफिंग वेली ब्रस्ट। लाइन बाई लाइन कमिट मेमोरि। लिसिन्…"

नीलाम्बर कण्ठस्थ डायलाग धड़ाधड़ बोल गया।

लेवेदेव ने उसकी पीठ थपथपाकर कहा, "ब्रेवो, तुमने अभिनय करना सीखा क्यों नहीं?"

"सीखना चाहा था, सर!" नीलाम्बर बोला, "वह जो कलकत्ता थियेटर का मैनेजर मिस्टर स्विज है, उसको कितना ही फ्लैटर किया। उसके घोड़े की लगाम थामी, क्रिसमस में डाली भेजी। यहाँ तक कि फैन्सी स्कूल में उसकी खिदमतगारी की। साहब ने खुश होकर ऐक्टर के रूप में नहीं, स्टेजहैण्ड के रूप में स्टेज पर जाने दिया। फिर मैं भी क्लेवर चैंप ठहरा। विंग के छोर से मौका पाते ही थियेटरी पोज दिखा देता।"

"तुम कलकत्ता थियेटर को छोड़कर चले क्यों आये?"

"यह सोचा कि आपके यहाँ ऐक्ट करने का चान्स पाऊँगा।" नीलाम्बर बोला, "तो भी चुपचाप एक बात कहता हूँ, सर! उस नेकी-नेकी-वैकी गर्ल के साथ ऐक्ट करने में वैसी फीलिंग नहीं आती, सर! यदि गॉडेस-लाइक मेम ऐक्ट करती तो मैं चौंधिया देता।"

लेवेदेव को लड़का अच्छा-खासा मजेदार लगा था। हास्य-नाटक में तो ऐसा ही फर्राटेदार प्राणवन्त युवक चाहिए। लेवेदेव बोला, "तुम हताश मत हो, बैण्डो, शायद एक दिन तुम्हारी आशा पूरी होगी।"

"इसका मतलब?"

"मतलब यह कि एक दिन मेरे थियेटर में अंग्रेजी नाटक भी शुरू होगा। अंग्रेज ऐक्टर-ऐक्ट्रेस भी अभिनय करेंगे।"

"सच कहते हैं, सर?" नीलाम्बर बोला, "तो फिर नेटिव बंगाली फोर्स भंग कर देंगे? कब, सर, कब?"

"गवर्नर जनरल के पास अर्जी दी है।" लेवेदेव ने कहा, "बंगला अभिनय यदि अच्छा हुआ तो अर्जी अवश्य मंजूर होगी।"

"तब अपने अंग्रेजी थियेटर में मुझे ऐक्ट तो करने देंगे, सर ?" नीलाम्बर कातर कण्ठ से बोला, "कम-से-कम बेयरा-बावर्ची या हुक्काबरदार का पार्ट देंगे ?"

"तुम्हें निश्चय ही मैं अच्छा पार्ट दूंगा !"

खट् से जूता ठोककर मिलीटरी कायदे से सलाम बजाते हुए नीलाम्बर बोला, "आप मेरे रिलीजन-फादर हैं, सर ! धर्मपिता। मैं आज ही मिस्टर स्विज को सुना आता हूँ—तुम तो कोई ऐश-साहब, खाक-साहब हो, मिस्टर लेबेदेव वेरी-वेरी बिग् साहब है। ग्रेटेस्ट ऑव् ग्रेट साहब।"

"नहीं-नहीं, बँण्डो," लेबेदेव ने कहा, "अभी ये सब बातें किसी को मत बताना। यह बात गोपनीय है।"

"मदर ब्लैंकिस् ओय सर, माँ काली की सौगन्ध। मैं किसी को नहीं बताऊँगा।" नीलाम्बर प्रायः नाचते-नाचते बाहर गया।

जरा देर बाद ही गोलोकनाथ दास हड़बड़ाता हुआ आ धमका।

"मिस्टर लेबेदेव," गोलोक ने पूछा, "तुमने नीलाम्बर से क्या कहा है ?"

"क्यों, क्या कहता है वह ?"

"हॉल में बड़े आईने के सामने खड़े हो अपने-आप वह तरह-तरह के साहबी पोज देता है और आईने की प्रतिच्छवि में कहता है—मिस्टर लेबेदेव ने अंग्रेजी थियेटर खोला है और मुझे उसका हीरो बनाया है। मदर ब्लैंकिस् ओय, बँण्डो, यू विल बी ए हिरो विथ मेम हिरोइन ! फिर नया पोज देता है, फिर बोलता है।"

"लड़का पागल तो नहीं ?"

"पागल तुम हो।"

"इसका मतलब ?"

"और आदमी मिला नहीं। उसी नीलाम्बर से कह बैठे कि अंग्रेजी थियेटर खोल रहे हो।"

"उससे क्या हुआ ?"

"सर्वनाश हो सकता है।"

"क्यों, क्यों ?"

"मिस्टर रावर्थ के कान तक यह खबर गयी तो वह हिंस्र हो उठेगा। एक बँगला थियेटर खोल रहे हो, इसी पर उसको कितनी आपत्ति है, और अगर वह यह सुन ले कि तुमने अंग्रेजी थियेटर के लिए भी अर्जी दी है तो वह तुम्हारा सर्वनाश कर डालेगा।"

"मैंने इतनी गहराई में नहीं देखा। वैण्डो को रोक दो ताकि वह इस बात को और नहीं फैलाये ।"

"उससे अधिक तो टिरेटी बाजार में ढोल पिटवाने से बात गोपन रहेगी ।"

लेबेदेव का रूसी रक्त गर्म हो उठा । वह कुछ तेज हो बोला, "तुम सभी लोग रावर्थ से भयभीत होते हो । मैकनर ने कहा, रावर्थ धाकड़ आदमी है । कर्नल किड् ने कहा, यह आदमी भारी धूर्त है । तुम कहते हो, वह सर्वनाश कर डालेगा । आदमी अड़ियल है, इसमें सन्देह नहीं, किन्तु मैं क्या अबोध बालक हूँ ? मैंने भी क्या अपने प्रयास से इतना-सारा प्रभाव नहीं जमा लिया है ? मैं तुम्हारे साथ शर्त लगाता हूँ, तुम देख लेना, रावर्थ का कलकत्ता थियेटर जहन्नुम में चला जायेगा । लेकिन मेरा नया थियेटर जम उठेगा ।"

गोलोक बोला, "मिस्टर लेबेदेव, तुम वादक हो । तुम संगीतशिल्पी हो, भाषातत्त्वविद हो और हो स्वप्नद्रष्टा । किन्तु मिस्टर रावर्थ तो नीलामदार, व्यवसायी और धूर्त है । तुम रूस देश के निवासी हो, रावर्थ इंगलिस्तानी है । तुम अकेले हो, रावर्थ के पीछे कम्पनी-बहादुर है ।"

लेबेदेव का उत्साह जैसे उतार पर आया । उसने कहा, "बाबू, मैं रूसी हूँ, पीछे नहीं हटूँगा मैं ।"

गोलोकनाथ दास जितना भयभीत हो उठा था, लेबेदेव उसका उचित कारण ढूँढ़ नहीं पाया । रिहर्सल का काम निर्बाध रूप से चल रहा था । छोटी हीरामणि के मन में क्षोभ-भरा अभिमान था । उसकी धारणा थी कि क्लारा अर्थात् सुखमय का पार्ट वह गुलाबसुन्दरी से भी कहीं अच्छी तरह अदा कर सकती है । घूम-फिरकर वह बार-बार यही बात दुहराती है । किन्तु गुलाबसुन्दरी अर्थात् चम्पा ने सुखमय की भूमिका को इतना प्राणमय कर दिखाया कि गोलोक और लेबेदेव की पसन्द ठीक प्रमाणित हुई है । चम्पा ने सारे संवाद कण्ठस्थ कर लिये हैं । वाक्यों का वह स्पष्ट उच्चारण करती है । बोलते समय प्रत्येक भाव को साफ-साफ अभिव्यक्त करती है मानो कितने दिनों की अनुभवी अभिनेत्री हो । वह सबके साथ अच्छा निभा लेती है, केवल छोटी हीरामणि को छोड़कर । हीरामणि के मन में चम्पा के प्रति एक मलिन ईर्ष्याभावना थी । थियेटर के दल में इस तरह होना कोई विचित्र बात नहीं । इस मामले में संचालकों को कुछ कड़ा होना ही पड़ता है ।

चम्पा अपने घर में मेरिसन को अब और घुसने नहीं देती । और मेरिसन

भी महसा चुप लगा गया था। यह भी एक अच्छा लक्षण था कि वह चम्पा की मानसिक शान्ति को भंग करने नहीं आता। लगता है स्फिनर की पहरेदारी ने अच्छा रंग दिखाया था।

कुसुम का गाना अच्छा ही होता।

थियेटर का भवन प्रायः खड़ा हो गया। अब इसकी साज-सज्जा पर नजर दौड़ानी होगी।

अभिनय-क्रिया के बीच-बीच में दर्शकों को आनन्दित करने के लिए लेबेदेव ने जादू-करिश्मे की जो बात सोची थी, वह भी आश्चर्यजनक ढंग से सुलझ गयी। वह बहुत दिनों से एक अच्छे भारतीय बाजीगर की तलाश में था, किन्तु आसानी से कोई बाजीगर मिलता नहीं। गोलोक दास भी इस मामले में कोई खास सहायता नहीं कर पाया।

उस आदमी का नाम था—कण्ठीराम। लेबेदेव ने पहले-पहल उसे 'चड़क-उत्सव' में देखा था। चितपुर रोड पर असंख्य ढाक-ढोल आकाश को विदीर्ण कर रहे थे। सड़क के अगल-बगल पक्के मकानों के बरामदों पर नरनारियों का जो कोलाहल हो रहा था वह भी उसमें मिल गया था। कालीघाट से कसाई-टोला होते 'चड़क' के शैव संन्यासीदल की भीड़ आगे-आगे चल रही थी। बाणों से भिदा रक्ताक्त शरीर, शारीरिक कष्ट का जैसे चिह्नमात्र भी नहीं उन लोगों की आकार-भंगिमा में। स्वांग देखने के लिए भी लोगों की भीड़ उमड़ आयी थी। बाँस की तीलियों और कागज से पहाड़, मन्दिर, मयूरपंखी और जाने क्या-क्या तैयार किये गये थे। लेबेदेव को अब भी एक स्वांग की याद आती है। एक आदमी ने नकली तपस्वी का भेष सजाया था। वह विचित्र दण्डीधारी तख्त पर बैठा ध्यानमग्न था। कहार लोग उस तख्त को कन्धे पर लिये चल रहे थे और नकली योगी माला जपने के साथ-साथ स्त्रियों की ओर ताकते हुए जैसे उन्हें आँखों से निगले जा रहा था। वह कभी बरामदे में खड़ी देवियों को आँखों से निगलता और फिर मानो पकड़े जाने पर जल्दी-जल्दी माला जपते हुए सामने की देवप्रतिमा को झुक-झुककर प्रणाम करता। एक खुली जगह में 'चड़क-बाँस' खड़ा किया गया था। एक संन्यासी पीठ को जख्मी कर और दूसरा बाण से जाँघ को छेदकर शून्य में चक्कर काट रहा था। उनके आहत शरीर से झरता रक्त चारों ओर छिटक रहा था। कोई भी कष्ट ही नहीं जैसे उन्हें, भौंहों पर शिकन तक नहीं। उनका चक्कर खाना खत्म होने पर एक युवक और एक युवती चड़क-बाँस पर चढ़े। युवक बिल्कुल काला-कलूटा, युवती भी वैसी ही। लेकिन चेहरे पर रंग पोतकर युवक ने साहब का रूप बनाने की चेष्टा की थी—जूता-मोजा

पहने, लाल पतलून, नीला कोट, पीला टोप, हाथ में एक खाली थैली। युवती ने घाघरा-कमीज और ओढ़नी धारण कर रखी थी। युवक आवाज लगा रहा था : "लाग, भेलकी लाग। कण्ठीराम का ताग॥ भोज राजा का चेला। भानु-मति का खेला॥" वे जब चक्कर खा रहे थे, क्या ही उल्लास था दर्शकों में ! चक्कर के दौरान टोप उड़ा, ओढ़नी उड़ गयी। वेशभूषा अस्तव्यस्त। किन्तु थैली को युवक ने कसकर पकड़ रखा था। सहसा थैली से कुल छः कबूतर निकालकर उसने छोड़ दिये। आश्चर्यजनक करिश्मा। उस चक्कर के बीच ही वे कबूतर कहाँ से आ गये ! वे कबूतर झोंक में उस चक्र के चारों ओर चक्कर काटने लगे। दर्शक-समूह मारे आनन्द के चिल्ला उठा। किन्तु इसके बाद ही उनकी डरी हुई चीख। युवक ने थैली से एक जोड़ा साँप बाहर निकाला। दोनों साँप आकाश में कुलबुलाने लगे। युवक ने दोनों साँपों को दर्शकों के बीच में छोड़ देने का भय दिखाया। जन-समूह में धक्कमधुक्की और रेलपेल मच गयी, इसलिए कि कौन जल्दी वहाँ से भाग निकले। लेकिन युवक ने दोनों साँपों को छोड़कर गिराया नहीं, गप्‌गप् करके मानो उन्हें निगल गया। दर्शकगण भी आश्वस्त हुए। पसीने से लथपथ युवक-युवती चड़क-बाँस से नीचे उतर आये। घूम-घूमकर प्याला आगे किया। अच्छी-खासी आमदनी हो गयी। लेवेदेव भीड़ के बीच था, उसको देखकर युवक-युवती ने लम्बा सलाम ठोका। खुशी के मारे लेवेदेव उन्हें सोने की एक मुहर ही दे बैठा। उन दोनों के आनन्द को कौन देखता ?

"क्या नाम है तुम्हारा ?"

"कण्ठीराम। यह सरस्वती मेरी पत्नी है।"

"तीन नम्बर वेस्टन लेन ! मेरे इस पते पर मुझसे मिलो। तुम लोगों को खूब आमदनी होगी।"

कई महीने तक लेवेदेव ने उनकी प्रतीक्षा की, लेकिन वे आये नहीं। सहसा दुर्गापूजा-उत्सव के बाद वे दोनों हाजिर हुए। कण्ठीराम सस्वर चिल्लाया—"लाग, भेलकी लाग। कण्ठीराम का ताग॥ भोज राजा का चेला। भानुमति का खेला॥" खाली हाथ से उसने लेवेदेव के पेट पर टटोला, पलक मारते ही पेट के ऊपर से एक जिन्दा मेंढ़क निकल आया। बहादुर लड़का ! लेवेदेव के दल के सामने कण्ठीराम ने खेल दिखाये। मदिरा पीने के गिलास को कड़कड़ा-कर चबा जाने का खेल। लम्बी तलवार को उसने मुख में डालकर हिला-डुला दिया, मुँह से आग की चिनगारियाँ निकालीं। हैरत में डाल देनेवाले खेल।

लेवेदेव ने कण्ठीराम-दम्पति को बाजीगरी के खेल दिखाने के लिए बहाल कर लिया। अवश्य ही गोलोकनाथ दास को यह बाजीगरी वगैरह पसन्द नहीं।

उसने इतना ही कहा, "बाजीगरों का कोई भरोसा नहीं। वे कुछ भी कर सकते हैं। इसके अलावा, नाटक करना चाहते हो तो नाटक करो। उसमें बाजीगरी और खेल-तमाशों की क्या जरूरत है!"

लेबेदेव ने जानकार की तरह कहा, "दर्शक लोग यही सब चाहते हैं। देखते नहीं कि कलकत्ता थियेटर में प्रहसन के साथ-साथ वेस्ट मिन्स्टर ब्रिज और बैंच खेल की नकल उतारते हैं?"

गोलोक और भी कितना-कुछ कहना चाहता था कि कण्ठीराम सहसा चिल्ला उठा—"लाग, भेलकी लाग। कण्ठीराम का ताग।।" गोलोक के पास आकर उसके माथे पर हाथ फेरते हुए उसने चोटी में से एक छिपकिली बाहर निकाल दी। गोलोक समझ नहीं पाया कि वह हँसे या गुस्सा करे, अन्त में सबके साथ वह भी हो-हो करके हँस पड़ा। उसने फिर कोई आपत्ति नहीं की।

थियेटर की पोशाक-सजावट आदि की भी व्यवस्था हो चुकी है। देशी पोशाक-सजावट। इस मामले में अगुआ गोलोकनाथ दास ही है। निस्सन्देह वह लेबेदेव से अच्छा समझता है। फिर भी लेबेदेव के उत्साह के चलते कपड़ों के रंग चटकीले रखे गये थे। लेबेदेव का विचार था कि थियेटर वास्तव नहीं, वास्तव की नकल होता है। दरअसल यह पूरा-का-पूरा ही नकल है। इसीलिए वस्त्र-सज्जा में भी रंगों का बाहुल्य रहता है। लेबेदेव कहता है, "तुम लोगों की बंगाली साज-सज्जा में रंग नहीं। सबकुछ कैसा तो अधमैला, सादा-सादा। स्टेज पर तो रंग चाहिए। चटकीला रंग, जो तेल-लैम्पों के प्रकाश में भी आँखों को चौंधिया दे।"

एक दिन लेबेदेव चम्पा को साथ लेकर चीनाबाजार गया। उसके मन में आया कि अभिनेत्रियों में से सिर्फ चम्पा को ले जायेगा तो कुसुम की चुटकियाँ और हीरामणि की ईर्ष्या प्रबलतर हो उठेंगी, हो उठें। प्रारम्भ से ही चम्पा के प्रति कैसी तो एक स्निग्ध भावना रही है लेबेदेव की। उस रमणी की हँसी, चंचलता, वात्सल्य, आँसू—सबकुछ ही मानो लेबेदेव को अपनी ओर खींचते हैं। तो भी गोलोकनाथ दास की पालिता आत्मीया समझकर लेबेदेव कैसी तो एक दूरी चम्पा से बनाये रखता। चम्पा भी उस दूरी में कमी नहीं लाती। कुसुम जैसी देह से चिपकी रहनेवाली है चम्पा बिल्कुल ही वैसी नहीं। किन्तु कभी-कभी मन में आता है, चम्पा को पास खींच लाना कितना सहज है! मैकनर ने पूछा था, "चोर-नायिका किस तरह की शय्या-संगिनी है?" समय-समय पर वह प्रश्न भी लेबेदेव के मन में गुनगुनाता है।

चीनाबाजार की भीड़ के बीच चलते-चलते उन दोनों के शरीर कई बार

एक-दूसरे से टकराये। लेबेदेव को अच्छा लगा। नारी उसके लिए कोई नयी वस्तु नहीं। छियालीस वर्ष के लम्बे जीवनकाल में लेबेदेव ब्रह्मचर्य नहीं धारण किये रहा। तब भी इस विचित्र और कभी की क्रीतदासी ने लेबेदेव के मन में मानो एक नया कौतूहल जगा दिया है। चम्पा को उसने आउट-हाउस में आश्रय देना चाहा था। यह क्या सिर्फ एक विपन्ना की रक्षा करने के उद्देश्य से था ? चम्पा ने उस प्रस्ताव का प्रतिवाद किया था। गोलोकनाथ दास के मारफत उसने इसका कारण बताया था, लोगों की निन्दा से साहब के थियेटर की क्षति होगी। लेकिन लेबेदेव निन्दा से नहीं डरता। यदि डरता तो 'खाँचा-रथ' में बैठी चोरी के अभियोग से लांछिता नारी को वह नायिका का पद नहीं देता। लेबेदेव को पता है कि नायक-नायिका से सम्बन्धित कुत्सा-कथा बहुधा उपकार ही कर जाती है।

लेबेदेव के साथ बाजार आकर चम्पा भी बहुत खुश थी। कतारों में तरह-तरह की दूकानें। सिल्क, लेस, मिठाई, मछली, मदिरा, चीनी बक्से, पंखे, काँच के पात्र, घोड़े का साज—क्या नहीं उस बाजार में ! सुदूरवर्ती इंगलैण्ड, अमरीका, फ्रान्स, चीन से तिजारती वस्तुएँ ला-लाकर इन सभी छोटी-बड़ी दूकानों में लदी हुई हैं। सीधी-सीधी सड़क, नंगी, धूल-भरी, सीढ़ियाँ टूटी-फूटी किन्तु दूकानों के अन्दर सजे-सजाये कक्ष।

"यही दूकान सॅर—यही दूकान—वेरी फ़ाइन शू-ब्लैकिंग आइ गॉट सॅर !"

"सलाम सॅर। वेरी फाइन ब्लैक बीवर हैट आई गॉट। मास्टर, कम वन्स एण्ड सी !"

"माइ शॉप सर ! सिल्क लेस—प्लेट ग्लास—ओल्ड सर्वेण्ट सर—बाडिस, ब्लाउज, मैक्सर आइल। सिल्क स्टॉकिंग्स, योर ओल्ड स्लेव सॅर !"

दूकानदार मानो खींचाखींची करते हैं।

भीड़ को ठेलता लेबेदेव बाबूराम पाल की कपड़े की दूकान में चम्पा को ले आया। बहुत ही बड़ी दूकान। शीशे के आलोक में जगमगाती। रंगों की क्या ही छटाएँ ! कपड़ों का क्या ही निखार !

दासानुदास भाव से खुद बाबूराम ने लेबेदेव को आमन्त्रित किया। साथ-ही-साथ चम्पा को भी। उन्हें कहाँ बिठाये, किस प्रकार अभ्यर्थना करे, बाबूराम पाल मानो कुछ सोच नहीं पाता। अन्ततः पूरी गद्दी पर गलीचा बिछाकर उन्हें बिठाया। कर्मचारियों में से किसी ने गुलाबजल छिड़क दिया, इत्र लगा दिया, बड़े-बड़े सिगार और पान लाकर रख दिये। इतनी आवभगत, लगता है, चम्पा ने जीवन में कभी नहीं पायी थी। लेबेदेव पुलकित मन से चम्पा की

ग्रोर रह-रहकर ताक रहा था। आनन्द से भरपूर उस रमणी का चेहरा।

लेबेदेव को बाबूराम पहचानता है। भारी खरीदार। थियेटर के लिए लगभग सारे कपड़ों की आपूर्ति उसीने की है। चितपुर के दर्जी लोग पोशाकें तैयार कर रहे हैं। नये थियेटर का मालिक खुद एक देशी रमणी को साथ लेकर आया है। बाबूराम एकबारगी पुलकित हो उठा है।

बाबूराम ने मानो पूरी दूकान को उलट-पुलटकर रख दिया।

"सच कहती हूँ," चम्पा बोली, "इतने प्रकार के कपड़े मैंने जीवन में नहीं देखे। कितने रंग, कितनी डिजायनें। मेरी सारी अक्ल गुम हो गयी है। साहब, मैं कुछ भी पसन्द नहीं कर सकती। इच्छा होती है सबको ही पसन्द कर बैठूं।"

बाबूराम बोला, "मेमसाहब का जैसा सुन्दर चेहरा है, इस पीले रंग पर खूब खिलेगा।"

लेबेदेव ने कहा, "यह हल्का गुलाबी कैसा रहेगा?"

चम्पा को पहले-पहल फटी-मैली गुलाबी साड़ी में ही लेबेदेव ने देखा था, 'साँचा-रथ' में।

बाबूराम चापलूसी करते हुए बोला, "साहब की पसन्द की बलिहारी है! पीले रंग नहीं, उस गुलाबी रंग में ही मेमसाहब हजार गुना सुन्दर लगेंगी।"

लेकिन चम्पा ने गुलाबी रंग पसन्द नहीं किया। अन्त में फीके सब्ज रंग की साडी ली।

बाबूराम गद्गद् होकर बोला, "अहा, सब्ज रंग में मेमसाहब लाख गुना सुन्दर लगेंगी।"

लेबेदेव ने चम्पा के लिए पीले, गुलाबी और सब्ज रंग की तीनों ही साड़ियाँ काफी दाम देकर खरीद लीं।

घर लौटते समय रास्ते में चम्पा कृतज्ञता जताने लगी।

लेबेदेव ने कहा, "इतनी कृतज्ञता जताने की जरूरत नहीं। मैंने अपने ही स्वार्थवश तुम्हें यह सब दिया है। मेरी नायिका सस्ती साडी पहने, इससे मेरी ही बदनामी होगी।"

बात जैसे कुछ अनकही हो गयी। मेरी नायिका! लगता है, मेरे थियेटर की नायिका कहना अच्छा होता। मेरी नायिका। लेबेदेव को यह वाक्य बहुत अच्छा लगा, मेरी नायिका!

लेबेदेव ने गम्भीर भाव से चम्पा के चेहरे की तरफ देखा। उस तरुणी ने उस समय मुख घुमा लिया था। वह जैसे रास्ते की भीड़भाड़ देखने में ही मगन थी। लेबेदेव की विभ्रमित उक्ति जैसे उसके कान में पड़ी ही नहीं।

कई दिन बाद चम्पा ने बात उठायी, "साहब, एक दिन विलायती थियेटर दिखाने की बात कही थी, दिखा दो।"

सच ही, उसे थियेटर दिखाना खास तौर से जरूरी है। कामों की भीड़ में लेबेदेव इस जरूरी बात को बिल्कुल ही भूल गया था।

नीलाम्बर बैण्डो को उसने कलकत्ता थियेटर के बाक्स का टिकट खरीद लाने का हुक्म दिया। नीलाम्बर तो बहुत ही खुश। कलकत्ता थियेटर में वह गेटकीपर और स्टेजहैण्ड का काम करता था। वहाँ सभी उसके परिचित हैं।

वहाँ एक प्रहसन होता है। 'बार्नबी ब्रिटल्'। उसके साथ एक नया संगीत-आयोजन—'रूल ब्रिटानिया'। अंग्रेजों में देशाभिमान है। देशों पर हुकूमत करने का अहंकार उनकी रग-रग में पैठ गया है। अपनी हुकूमत के विस्तार की कहानी को भी संगीत के द्वारा वे प्रचारित करते हैं। अंग्रेज नर-नारियों का दल उसे सुनने जाता है और नया अहंकार लेकर घर लौट आता है। रूस भी क्षमता में पीछे नहीं, किन्तु लेबेदेव अपने देश की गुण-गरिमा स्वार्थ में डूबे इस क्षुद्र कलकत्ता सेट्लमेण्ट में किसको सुनाये ? बल्कि वह तो इस देश के असली निवासियों की कहानी, एशियाई ज्ञान-विज्ञान, साहित्य-धर्म-दर्शन की बातें पाश्चात्य जगत् को सुनाना चाहता है।

ठीक कुछ देर बाद नीलाम्बर खाली हाथ लौट आया। उसके कोट-शर्ट फट गये हैं। पतलून अस्तव्यस्त, आँखों के कोये सुर्ख, माथे पर कटने का निशान।

लेबेदेव ने कहा, "मिस्टर बैण्डो, तुम्हें टिकट कटाने को कहा था, माथा कैसे कटा लिया ?"

"वेरी बिग फिस्ट-फाइट, सॅर।" नीलाम्बर ने कहा।

"किसके साथ ?"

"उन गोरों के साथ," बोलते ही वह लज्जित हो उठा, "मतलब उस रॉटन थियेटर के गोरे गेटकीपर के साथ।"

"क्यों, क्यों ?"

"कहता है आप लोगों को कलकत्ता थियेटर में घुसने नहीं दिया जायेगा। एक भी टिकट उनके यहाँ नहीं बेची जायेगी।"

"किसने कहा ?"

"ह्वाइट गेटकीपर, सॅर !" नीलाम्बर तड़पकर बोला, "मैं डोण्ट केयर, सॅर ! पाँव में एक सीजर्स, सॅर, एक छिटकी मारी सॅर, गेटकीपर धड़ाम, फेल्। स्ट्रेट चला गया मैनेजर मिस्टर स्विज के पास। मैनेजर मुझे लाइक करता था। वह बोला, 'नीलूम, हमारे थियेटर में चले आओ। एक्सपीरियेन्स्ड स्टेजहैण्ड की

जरूरत है। तुम्हारी तनख्वाह बढ़ा दूंगा।' मैंने कहा, 'आइ नो स्टेजहैण्ड एनी मोर, आइ ए हीरो।' मैनेजर बौखला गया। मैं भी बौखला उठा। कहा, 'लूक मिस्टर स्विज, यू ए ऐश माहब। खाक साहब। मिस्टर लेबेदेव ग्रेटेस्ट ॲव ग्रेट साहब!' स्विज ने ऐशवाली बात को समझा, ऐश माने गधा। और जाता कहाँ! मेरे बैंक पोरशन में बूट की किक्। और व्हाइट गेटकीपर फिस्ट-फाइट।"

"छिः-छिः, वैण्डो, तुम मारपीट कर आये?"

"क्यों नहीं करता, सॅर!" नीलाम्बर बोला, "मेरा इन्सल्ट माने मोर इन्सल्ट। मैं भी कह आया हूँ, मदर ब्लैकिस ओय, माँ काली की सौगन्ध! मिस्टर लेबेदेव इंगलिश थियेटर खोलता है, तब तुम लोगों का रॉटन थियेटर एकबारगी ब्लाइण्ड माने काना हो जायेगा।"

"मदर ब्लैकिस ओय," लेबेदेव ने कहा, "तुम्हें फिर कभी ये सब बातें नहीं बतानी हैं।"

"जो आज्ञा, सॅर।" नीलाम्बर बोला, "आप मेरे रिलीजन फादर, धर्मपिता हैं। आप जो कहेंगे वही मानकर मैं चलूँगा।"

नीलाम्बर सलाम ठोककर चला गया। आज फिर थियेटर जाना नहीं हुआ। रावर्थ सिर्फ अड़ियल नहीं, कमीना भी है। लेबेदेव के दल को वह घुसने नहीं देगा। लेबेदेव पर जिद सवार हुई। कलकत्ता थियेटर जाना ही है। उसने कलकत्ता गजट के पन्ने उलटे। निकट की तारीख में उन लोगों का कोई अभिनय नहीं। वह जानता है कि उन लोगों की अन्दरूनी हालत खूब अच्छी नहीं। अधिकतर वे थियेटर को भाड़े पर देकर आय जुटाते हैं। मीटिंग, पार्टी, बॉल-डान्स आदि के लिए थियेटर भाड़े पर दिया जाता है। कोई नया शौकिया दल चन्दा जमाकर कितने नाटक खेलेगा कलकत्ता थियेटर के मंच पर! पहला अभिनय तीस अक्तूबर को है। एक हास्य नाटक 'ट्रिक अपॉन ट्रिक' या 'विण्टर्स इन द माइस'। उसके साथ एक परिचित संगीतायोजन 'द पुअर सोल्जर।' लेबेदेव ने आदमी भेजकर वहाँ के कर्मचारियों से बाक्स का एक टिकट खरीद लिया।

शुक्रवार, तीस अक्टूबर। रात आठ बजे कलकत्ता थियेटर में सद्स्क्रिप्शन को लेकर अभिनय है। साहब के साथ थियेटर देखने जायेगी, यह बात चम्पा गोपन नहीं रख पायी। दल के सभी लोगों को बता दिया। हीरामणि ने ईर्ष्या से मुँह बिचकाया था, लेकिन कुसुम अभिमान से मुँह फुला बैठी।

कुसुम ने कहा, "साहब, मैं एक्टिंग नहीं करती, सिर्फ गाना गाती हूँ, इसी-लिए न मैं विलायती नाटक देखने नहीं जाऊँगी!"

चम्पा बोली, "कुसुमदी चलें न। बाक्स में क्या जगह नहीं होगी ?"

लेबेदेव ने बाक्स में चम्पा को जरा एकान्त में पाना चाहा था, किन्तु कुसुम के सामने चम्पा के प्रस्ताव को ठुकरा नहीं पाया। इसके अलावा कुसुम भी ठहरी अच्छी गायिका, नाटक का पहला इण्डियन सेरिनेड्। कुसुम भारतचन्द्र का गान गायेगी। उसे उत्साहित करना ही है। उसे भी खुश रखना जरूरी है।

"क्यों नहीं होगी जगह ?" लेबेदेव ने कहा, "अच्छा ही है, कुसुम भी चले न !"

दोनों बहुत ही खुश। हीरामणि का मुंह और भी लटक गया।

सन्ध्या होते-न-होते ही कुसुम सज-धजकर आ गयी। वह सुनहरे काम की नीली बनारसी साड़ी पहने थी। उसका गोरा रंग धप्धप् कर रहा था। पूरे शरीर पर गहने। हाथ में चूड़ियाँ, बाला, बाजूबन्द, गले में तीन लड़ियोंवाला मुक्ताहार, अशर्फियों की माला, नाक में नाकछवि, कानों में झुमके, माथे पर टिकुली। नितम्ब का चन्द्रहार झीने वस्त्र को पारकर झलक रहा था। और चम्पा ने बहुत ही सीधे-सादे ढंग से अपने को सजाया था। उसने आज नयी गुलाबी रेशमी साड़ी पहनी थी जो कुछ दिन पहले लेबेदेव ने उसे खरीद दी थी। हाथ में कुछ चूड़ियाँ, गले में काँच के मोतियों की माला।

कुसुम बोली, "तेरा यह कैसा साज है गुलाबी ? हाथ-गला जैसे सूना-सूना-सा है। जानती कि तू ऐसा सादा सजकर आयेगी तो मैं ऐसी भड़कीली सजधज नहीं करती।"

चम्पा बोली, "मैं क्या तुम्हारी तरह अमीर हूँ कुसुमदी ? गरीब औरत, इतना सोना-हीरा कहाँ पाऊँगी ?"

कुसुम ने व्यंग्य करते हुए लेबेदेव से कहा, "तुम्हारा नेह-छोह किस तरह का है साहब ? गुलाबी को एक जोड़ा सोने का कंगन भी नहीं गढ़ा दे पाये ?"

चम्पा झटपट बोल उठी, "जानती हो कुसुमदी, यह रेशमी साड़ी साहब ने चीनाबाजार से खरीदकर मुझे दी है।"

"दुर् बुद्धू लड़की," कुसुम ने चम्पा के गाल पर ठुनकी मारते हुए कहा, "सिर्फ साड़ी को लेकर खुश है ! साहब से सोना-हीरा वसूल ले। ओह भई, तेरा गला बड़ा खाली-खाली लग रहा है। यह मोतियों की तीन लड़ियाँ पहन ले। तेरे साँवले रंग पर मोती खूब खिल उठेंगे।"

चम्पा के गले में मुक्ताहार पहनाते-पहनाते कुसुम बोली, "मगर आज ही रात यह मुझे लौटा देना। गहनों के प्रति मुझे बड़ा मोह है।"

लेबेदेव ने एक भड़कीली पालकी भाड़े पर ली। गद्दी पर गलीचा बिछा

हुआ। पालकी के बाहरी ढाँचे पर के रंगीन शीशे अन्दर मोमबत्ती जलने पर बाहर से झकमकाते। उड़िया कहार, खूब तगड़े दीखते थे वे। पालकी में तीन-चार जने आसानी से बैठ सकते हैं। लेबेदेव आज कुछ शान-शौकत के साथ कलकत्ता थियेटर जाना चाहता है। इसीलिए पालकी के आगे-आगे आसा-सोंटावाले भी चलेंगे। साथ ही पथ को आलोकित करने के लिए दो मशालची रहेंगे। रूसी बैंडमास्टर लेबेदेव गायिका और नायिका को लेकर थियेटर देखने जा रहा है। रावर्थ का दल देखे, लेबेदेव उन लोगों से बिल्कुल नहीं डरता।

पालकी में दो युवतियों को साथ लिये जाता लेबेदेव खूब अच्छा लग रहा था। कहारों का दल लय के साथ हुहकारी दे रहा था। दुलकी चाल से पालकी चल रही थी। भीतर मोमबत्ती के आलोक में दोनों रमणियाँ मोहक लग रही थीं। कुसुम के सामीप्य की उष्णता लेबेदेव महसूस कर रहा था, लेकिन चम्पा जैसे कुछ अलग-अलग थी। रास्ते के लोग उस शानदार पालकी और उसके विचित्र यात्रियों को उत्सुक आँखों से देखते जाते थे। लेबेदेव को लगता था मानो वह पूरब का नवाब हो। हरम की सुन्दरियों को लेकर विहार करने निकला है।

कलकत्ता थियेटर राइटर्स बिल्डिंग के पीछे है। रात उतर आयी है। इस तरफ ज्यादा भीड़भाड़ नहीं। फिर भी थियेटर के सामने बग्घी, फिटिन, लैण्डो, पालकियों का जमघट था। इसी बीच बहुतेरे दर्शकों ने आना शुरू कर दिया था। थियेटर देखना केवल कोरा मनोरंजन नहीं, इसका एक सामाजिक पहलू भी है। कितने ही लोगों के साथ भेंट-मुलाकात। साज-पोशाक, गहने-हैसियत देखना और दिखाना, गपशप करना, निन्दा-शिकायत, नये-नये गोपन रहस्यों का उद्‌घाटन —ये सारी बातें थियेटर देखने के बीच चलती हैं। इन सबसे बढ़कर पहली रात का अभिनय देखने के पीछे एक निखालिस अहंकार भी सिर पर सवार हो उठता है। इसीलिए थियेटर शुरू होने से काफी पहले ही अनेक यूरोपीय दर्शक आ उपस्थित हुए थे।

अच्छे-खासे आडम्बर के साथ लेबेदेव अगल-बगल दो रमणियों को साथ लिये थियेटर-भवन में दाखिल हुआ। थियेटर-भवन के पश्चिम तरफ आने-जाने के आम रास्ते हैं। दो फाटक। नियम था कि पुराने किले की तरफ अर्थात् दक्षिणी फाटक से पालकीवाले कहार प्रवेश करेंगे और आँगन में आकर उत्तरी फाटक से बाहर निकलेंगे। मुख्य फाटक के पास लेबेदेव की पालकी रुकी। यूरोपीय द्वाररक्षक ने आदर के साथ तीनों को पालकी से उतार लिया। लेबेदेव को आशंका थी कि रावर्थ का दल किसी तरह की अभद्रता दिखायेगा। वह आशंका

निर्मूल सिद्ध हुई।

अनेक परिचित चेहरे। कइयों को कौतूहल। इन सबको अनदेखा कर वे सीधे निर्दिष्ट बाक्स में आ बैठे। छोटे-से कक्ष में मखमल-मढ़ी चार सुनहरी कुर्सियाँ। मोमबत्ती के मद्धिम आलोक में बाक्स में बैठने में कोई असुविधा नहीं। देखते-देखते सामने की सीटें भर गयीं, बाक्स भी खाली नहीं रहे। लेबेदेव बीच में बैठा, उसके दोनों ओर दोनों संगिनियाँ बैठीं।

कुसुम बोली, "री मैया, क्या गजब का दृश्य! ठीक जैसे नवाब का दरबार।"

चम्पा चारों ओर देखकर बोली, "कितने बड़े-बड़े झाड़-फानूसवाले लैम्प हैं! बरामदे में शीशे के रोशनदानों में मोमबत्तियाँ कैसे टिमटिमा रही हैं! ठीक जैसे दीपावली।"

कुसुम बोली, "अरी गुलाबी, लोग कितने हैं, देख!"

चम्पा बोली, "लेकिन मुझे तो डर लगता है यह सोचकर कि इतने लोगों के सामने मुझे भी एक्टिंग करनी होगी।"

लेबेदेव ने आश्वस्त करते हुए कहा, "वैसा कुछ नहीं। पहले-पहल सभीको डर लगता है। जिस दिन म्युजिक हॉल में पहले-पहल वायलिन बजायी थी, मुझे भी डर लगा था। स्टेज पर उतरते ही वह डर दूर हो जाता है।"

चम्पा बोली, "अच्छा, हमारा थियेटर भी क्या ऐसे ही सजाया जायेगा?"

लेबेदेव ने कहा, "नहीं, नहीं, विलायती नकल नहीं करूँगा। अपना थियेटर हम बंगाली कायदे से सजायेंगे। आम के पल्लव झूलेंगे, फूलमालाएँ होंगी, कदलीस्तम्भ और मंगलघट रहेंगे। गुलाबजल छिड़क देना होगा। इत्र और धूप-धुएँ की गन्ध से थियेटर-भवन मद-मस्त हो उठेगा।"

संगिनियाँ खुश होकर बोलीं, "खूब अच्छा, खूब अच्छा!"

इधर आर्केस्ट्रा शुरू हो गया। मशालचियों ने मंच के पर्दे के सामने की बत्तियों को जला दिया।

इस बार पर्दा उठा। मंच से जुड़ा दृश्यपट, मद्धिम आलोक में भी वह जगमगा रहा था। सचमुच जोसफ बैटल् महान् चित्रशिल्पी है। उसे चाहे जैसे भी फोड़ लाना होगा।

संगीत-आयोजन—'दि पुअर सोल्जर'। कलकत्ता थियेटर में यह कई बार हो चुका है। तब भी अच्छा ही रहा। कुसुम ने कहा, "वाद्यसंगीत खूब अच्छा है किन्तु आउँ-माउँ करके क्या तो गाता है, बाबा, कुछ समझ नहीं पाती।"

चम्पा परिहास करते हुए बोली, "साहब से अच्छी तरह सीख ले न वह

हाउँ-माउँ गाना, तब तो साहबों की जमात में सिर्फ तेरे ही गाने की माँग होगी, कुसुमदी!"

कुसुम बोली, "तेरी बात गलत है क्या? साहब लोग तो मानो हमारा गाना सुनने के लिए ही बुलाते हैं।"

बगलवाले बाक्स से किसी ने जैसे 'सी-सी' की आवाज करके चुप रहने को कहा।

लेबेदेव ने घूमकर देखा। निकट के बाक्स में एक यूरोपीय, साथ में एक श्वेतांगिनी। मोमबत्ती के आलोक में वह मेम रक्तहीन-सी लगती है, भूरी आँखों में चमक नहीं। लेकिन दूरवाले बाक्स में एक बंगाली बाबू रमणियों के साथ बैठा है। रमणियों का साँवला रंग स्वास्थ्य से समुज्ज्वल, आँखों की चमक में प्राणों की प्रचुरता। कुसुम लेबेदेव से देह सटाकर बैठी, मगर चम्पा जैसे कैसी तो अलग-थलग है।

तालियों की गड़गड़ाहट के साथ गान का कार्यक्रम समाप्त हुआ। पर्दा गिरा। हॉल में शोरगुल।

कुसुम खिलखिलाकर हँसती हुई बोली, "हाय-हाय, गुलाबी, वह बायीं तरफ बीचवाली जगह में कैसी भारी-भरकम मेम है! माँ री, इतनी मोटी मेमसाहब भी होती है!"

"जानती हो कुसुमदी," चम्पा बोली, "हमारे ठीक सामने की कतार में जो नीली पोशाकवाली मेम बैठी है, उसने अभी-अभी अपना मुंह घुमाया था। उसकी नाक के नीचे मैंने मूंछों की रेखा देखी।"

अच्छी लगी थी उनकी निन्दा-वार्त्ता। लेबेदेव जानता है कि कलकत्ता शहर में विलायती मेम दुर्लभ हैं। यहाँ अगर चार हजार साहब होंगे तो मेमें कुल दो-ढाई सौ। अपने देश से मेम को बंगाल लाने में प्रति मेम पर प्रायः पाँच हजार रुपये लग जाते हैं। विलायत से इण्डिया आने के लिए जो छंटी-बची मेमें राजी की जाती हैं, वे ही आम तौर पर इस देश में आती हैं। एडिनबरा का नाम ही है भारतीय विवाह-हाट के लिए जिस्म का बाजार। छः मास के भीतर ही मेमें इच्छानुसार पति बदल लेती है। वे स्थिर हो बैठ नहीं पाती, दास-दासियों का दल उनके पीछे खटता रहता है। नौ बजे वे नींद से जागती हैं, डेढ बजे खाना खाती हैं, उसके बाद चार-पाँच बजे तक सुखनिद्रा। शाम को हवाखोरी, डिनर-भोज में गयी रात तक नाच। यही हुई उनकी दिनचर्या। मेम पालना [illegible] हाथी पालना! जब कि प्रतिमास मात्र चालीस-पचास रुपये खर्च करके देसी रखैल रख सकते है। साहब बेचारे करें क्या!

कुछ देर वाद प्रहसन शुरू हुआ—'ट्रिक अपॉन ट्रिक'। लेवेदेव ने फिर जोसफ वैंटल् द्वारा अंकित दृश्यपट की तारीफ की। दृश्यपटों में अंकन-चातुर्य इतना कि दूर से वे दृश्यपट नहीं लगते। जैसी उनकी रंगयोजना, वैसी ही भावगरिमा।

नाटक शुरू से ही जम उठा। संगिनियाँ अच्छी तरह समझ नहीं पातीं, किन्तु प्रहसन में घटना-संयोजन ऐसा कि उसी में वे दर्शकों के साथ-साथ हँस पड़तीं। कलकत्ता शहर के थियेटर में प्रहसन ही खूब जमते हैं। लेवेदेव ने इसीलिए अपने थियेटर के लिए भी प्रहसन पसन्द किया है।

फिर हँसी का रेला। मोटा अभिनेता जो मसखरी कर रहा था! अभिनेत्री ही कैसे पीछे रहती? चम्पा की आँखें हर्ष से उज्ज्वल। वह हँसी के बीच भी एकाग्र भाव से अभिनय की बारीकियों को लक्ष्य करती जा रही थी।

फिर हँसी का तूफान। कुसुम हँसते-हँसते लेवेदेव के शरीर पर ढुलक पड़ी थी। चम्पा भी खुलकर हँसी थी। लेवेदेव ने भी उनकी हँसी में योग दिया।

उसी हँसी के बीच कभी लेवेदेव ने चम्पा के हाथ को अपने हाथ की मुट्ठी में जकड़ लिया है। थोड़ा रुखड़ा किन्तु उष्ण-कोमल चम्पा का हाथ। अनमना-सा होकर लेवेदेव ने पता नहीं कब चम्पा के उस हाथ को अपनी छाती पर खींच लिया है। दोनों ही के मुँह की हँसी एक साथ मिल गयी है। लेवेदेव के हृदय की धड़कन ने जैसे चम्पा के हाथ में सिहरन भर दी है। लेवेदेव की आँखों में निस्सीम वासना।

एक क्षण!

चम्पा ने धीरे-धीरे लेवेदेव की मुष्टि-कारा से अपने हाथ को निकाल लिया।

चम्पा करुण भाव से हलका-हलका हँसी, उसके बाद लेवेदेव के कान के पास मुँह ले जाकर चुपके-चुपके बोली, "साहब, मुझे क्षमा करो, मेरे ऊपर क्रोध न करना। मैं मेरिसन को चाहती हूँ।"

छः

मैं मेरिसन को चाहती हूँ! मैं मेरिसन को चाहती हूँ!! यही सरल वाक्य लेवेदेव के लिए दुर्बोध हो उठा। जिस मेरिसन ने कापुरुष की भाँति अत्या-

चार किया, मिथ्या अभियोग से नहीं बचाया, बिना प्रतिवाद किये कठिन सजा को भुगतते देखा, फिर ऊपर से अकारण सन्देहवश मार-पीट की, उसी मेरिसन को चम्पा चाहती है ! चाहे, भले ही चाहे। उससे लेबेदेव का क्या आता-जाता है ? वह केवल देखना चाहता है कि इस अनबूझ प्रेम के चलते उसके अभिनय को क्षति नहीं पहुँचे । तब भी वह स्थिर नहीं रह पाया।

एक दिन चुपचाप उसने स्फिनर को बुलाया। स्फिनर का हाव-भाव जैसे कुछ बदल गया है। रिहर्सल के समय प्रायः ही वह चम्पा की ओर देखते हुए क्लारियोनेट बजाता है। चम्पा जब नाटक के संवाद बोलती है, स्फिनर दूर से एकटक ताकता रहता है। ताकते रहने की बात ही है। लड़की के सुपुष्ट शारीरिक गठन में, स्वास्थ्योज्ज्वल काया में, सुन्दर शोभामय मुखाकृति में जो एक आकर्षण है, उसे उपेक्षित कर जाना किसी पुरुष के लिए सहज नहीं।

"मिस्टर स्फिनर," लेबेदेव ने पूछा, "तुम तो मिस गुलाब की खोज-खबर रखते हो।"

"यू मीन मिस चम्पा ?"

स्फिनर उसका असली नाम जानता है। वस्तुतः जानने की ही तो बात है। स्फिनर काफी दिनों से गोलोकनाथ दास के निर्देश से चम्पा की देखरेख करता था।

"हाँ-हाँ, मैं मिस गुलाब, इसका मतलब है मिस चम्पा, की ही बात कह रहा हूँ।"

"हाँ मिस्टर लेबेदेव, मैं उसकी खोजखबर रखता हूँ। फिर भी रिहर्सल के बोझ के चलते ज्यादा देख-सुन नहीं पाता।"

"लड़की मेरे थियेटर की एक मुख्य अभिनेत्री है। उसका बुरा-भला देखना हमारा कर्त्तव्य है।"

"यह तो ठीक है सॅर !"

"उसका पहलेवाला मर्द मिस्टर मेरिसन क्या उसके घर जाता है ?"

"नहीं, सॅर।"

"तुमने किस तरह जान लिया ? तुम तो कहते हो कि ज्यादा देख-सुन नहीं पाते तुम !"

"यह ठीक है। तब भी मेरा एक आदमी है। वह भी देखता-सुनता है।"

"यू मीन स्पाइंग ?"

"ठीक वैसा नहीं। मिस्टर डिसूजा, मिस चम्पा के घर के निचले तल्ले में रहता है। उसी से पता कर लेता हूँ। मिस्टर मेरिसन कई बार मिस चम्पा

के घर में घुसने गया था, लेकिन मिस चम्पा ने घुसने नहीं दिया। इसको लेकर दोनों में खींचतान हुई। मिस्टर मेरिसन तब भी मिस चम्पा के घर में नहीं घुस पाया।"

"मेरिसन ने कोई मारपीट तो नहीं की ?"

"उस तरह की खबर तो मुझे मिस्टर डिसूजा से नहीं मिली।"

"जो भी हो, तुम लड़की पर जरा नजर रखा करो।"

"बड़ी खुशी से रखूँगा, सॅर !"

स्फिनर चला गया। लेबेदेव को कुछ अजीब लगा। चम्पा ने कहा था कि वह मेरिसन को चाहती है, किन्तु उसे बढ़ावा जरा भी नहीं देती। प्रेम की रीति किसी रीति को नहीं मानती। तो भी लेबेदेव सुनकर आश्वस्त हुआ कि मेरिसन चम्पा के घर नहीं आता।

प्रथम अभिनय-रात्रि आगे आ रही थी। इस कारण यह उत्कण्ठा स्वाभाविक थी कि बँगला थियेटर को लेकर वह एक नया प्रयोग करने जा रहा है। लेबेदेव का भविष्य बहुत-कुछ उसकी सफलता पर निर्भर करता था। अनिश्चित आशंका उसके मन को हिला रही थी। अभी तक हताश होने की कोई बात नहीं। गोलोकनाथ दास की अनुकूलता से अभिनय की अच्छी तैयारी हुई थी। दल में कुछ हद तक ऐक्यभाव स्थापित हो चुका था। वाद्यसंगीत के मामले में भयभीत होने की कोई बात नहीं। वादक के रूप में लेबेदेव की ख्याति जमी हुई है। देशी और विदेशी वाद्यों का सम्मिश्रण चित्त को आकर्षित करता है। कुसुम का गाना अच्छा ही हुआ। थियेटर-भवन की दीवारें और छत तैयार हो चुकी हैं। गॅलरी का काम खत्म कर कारीगर लोग अब स्टेज को बना-सँवार रहे हैं। सीन-स्क्रीन, आलोक-व्यवस्था, साज-सज्जा, प्रत्येक छोटी-मोटी वस्तुओं की तरफ दृष्टि रखनी पड़ी थी। जगन्नाथ गांगुलि ने ठेकेदार के रूप में अवश्य ही काम खराब नहीं किया है। आश्चर्य क्या ! उसे थियेटर बनाने की और जानकारी नहीं, इसलिए हर तरह की छोटी-मोटी बातों पर लेबेदेव को ध्यान देना पड़ा था। समय नहीं। समय नहीं। आजकल भाषातत्त्व की चर्चा बन्द, अनुवाद का काम आगे बढ़ नहीं पाता। लेबेदेव के सामने अभी एक लक्ष्य है। बँगला थियेटर। राबर्थ और प्रमुख अंग्रेजों को वह दिखा देगा कि कलकत्ता शहर में जो कभी नहीं हुआ वही एक रूसी करने चला है। बँगला थियेटर। सारे कलकत्ता शहर को चौंका देगा। बंगाली अभिनेता-अभिनेत्री नाटक खेलेंगे। यह क्या मामूली बात है। अवश्य ही गोलोक बाबू की सहायता न मिलती तो इस थियेटर के काम में लगना सम्भव नहीं होता। आदमी खूब है। किस तरह मुँह नीचे

झुकाये अपना काम किये जाता है !

विज्ञापन का मसौदा तैयार करना होगा। गोलोक बाबू ने हौदा-कसे हाथी पर गाजे-बाजे के साथ हाट-बाजार में जाकर थियेटर की घोषणा करने की बात कही थी, लेकिन लेबेदेव उसके लिए राजी नहीं हुआ। हाट-बाजार के लोग भीड़ लगाकर यात्रागान सुनेंगे। थियेटर की मोटी 'दिखाई' देने की सामर्थ्य कहाँ ? लेबेदेव यदि थियेटर-प्रवेश की कीमत आधी ही कर दे तो भी उसे चुकाने की क्षमता जनसाधारण में नहीं। लेबेदेव की दृष्टि मुख्यतः यूरोपीय जमात पर है। उन्हें यदि रुचिकर लगे, तभी उनकी देखादेखी एशियाई धनी-मानी संरक्षण देने के लिए आगे आयेंगे। लेबेदेव ने तय किया कि कलकत्ता गजट में ही आकर्षक विज्ञापन देना है। वह विज्ञापन शहर के धनी लोगों की नजर से छिपा नहीं रहेगा।

माननीय बड़े लाट बहादुर द्वारा अनुमति प्रदान किये जाने की बात विज्ञापन में पहले ही देनी होगी। वह एक पंक्ति ही रावर्थ की देह में आग लगा देगी। उसका नाम तो शहर की रसिक-मण्डली के लिए अपरिचित नहीं। नाम के बल पर वह विज्ञापन दृष्टि को आकर्षित करेगा।

स्त्री-पुरुष अभिनय करेंगे। बँगला थियेटर कहने से ऐसा नहीं कि यात्रा-पार्टी की तरह पुरुष लोग दाढ़ी-मूँछ मुँडाकर जनाना हाव-भाव की नकल करेंगे। देशी-विलायती वाद्यसंगीत की बात भी लिखनी होगी। भारतचन्द्र राय का गान प्रस्तुत किया जायेगा। यह भी लिखना नहीं भूलना होगा। इस देश में कवि भारतचन्द्र की बड़ी कदर है। बैठे-बैठे लेबेदेव ने अपने हाथ से अंग्रेजी में विज्ञापन लिखा और काटा, लिखा और काटा, अन्त में एक विज्ञापन मनोनुकूल हुआ, जिसमें अनावश्यक लफ्फाजी नहीं बल्कि यथेष्ट आकर्षण है। उसने उसे कलकत्ता गजट के कार्यालय में भेज दिया। ताकीद के साथ कि जिससे दो-एक दिन में ही वह प्रकाशित हो जाये।

एक दिन एक आकस्मिक झमेले ने उन्हें उलझा दिया। बात यों हुई : कुछ दिन हुए, लेबेदेव के हॉल से छोटी-मोटी कीमती वस्तुएँ चोरी चली जाती थीं। आज चाँदी की पनडिब्बी, दो दिन बाद सोने-मढ़ी चाँदी की मुखनली। एक दिन छोटी पीकदानी, दूसरे दिन जरदा की डिब्बी। वस्तुओं की कीमत वैसे बहुत ज्यादा नहीं, किन्तु अक्सर चोरी चले जाना भी अच्छा लक्षण नहीं। लेबेदेव के साथ जो लोग काम करते थे, वे प्राय. पैर पकड़कर कहते, "हुजूर, माँ-बाप हैं। हुजूर के साथ नमकहरामी नहीं करूँगा। हमने चोरी नहीं की। हुजूर के पास कितने ही तरह के लोग आते हैं, दो-तीन घण्टे रहते हैं। उनसे पूछिए।"

लेवेदेव ने वात को दवा देना चाहा था। लेकिन एक दिन सवेरे रिहर्सल के समय गोलोक दास ने ही दल के सामने वात उठायी। वहाँ सभी उपस्थित थे। अभिनेता-अभिनेत्रीगण, कण्ठीराम और सरस्वती। कुसुम और वादक-मण्डली।

गोलोक दास ने कहा, "वात यह विल्कुल ही अच्छी नहीं। घर में से इस तरह चीजें चोरी चली जायें, यह हो ही नहीं सकता।"

हीरामणि फुफकार उठी, "हो सकता है। ऐसा होना स्वाभाविक है। साहव अगर अव भी लुट नहीं जाता तो उसमें भी काली माई की दया है।"

गोलोक वोला, "इसका मतलव ?"

"मतलव साफ है।" हीरामणि क्रूर हँसी हँसते हुए वोली, "घर में चोर पालने पर घरेलू वस्तुएँ चोरी जायेंगी, यह क्या कोई नयी वात है ?"

"चोर पालना ?" गोलोक वोला, "तुम क्या कहना चाहती हो, साफ-साफ कहो।"

"और धूल मत झोंको गोलोक वावू।" हीरामणि हनहना उठी, "तुम तो जैसे जानते नहीं कि हमारे वीच चोर कौन है !"

"वोल ही दो न।" गोलोक ने कहा।

हीरामणि चम्पा की ओर अंगुली उठाकर वोली, "यही चोर है।"

हीरामणि के आकस्मिक आक्रमण से सभी स्तब्ध।

गोलोक वोला, "क्या अनाप-शनाप वोलती हो, हीरामणि !"

"अनाप-शनाप ही वोलती हूँ, गोलोक वावू," हीरामणि ने कहा, "जिसको तुम लोग गुलाव कहते हो, वह चम्पा है। एक दागी चोर, देखोगे, देखो ··"

हीरामणि ने हठात् चम्पा की पीठ पर से कपड़ा हटा दिया। उसकी कोमल पीठ पर विचित्र हो-उठे जख्मों के लम्वे-लम्वे निशान। हॉल में एक दवी आवाज उभरी।

हीरामणि विजयिनी की भाँति वोली, "कहो, उसने चोरी नहीं की ! 'खांचा-रथ' में वैठकर शहर का चक्कर नहीं लगाया ! लालवाजार में हाट के लोगों के वीच वेंत नहीं खायी ?"

चम्पा मूर्तिवत वैठी रही। कुसुम ने सीधे आकर चम्पा की पीठ पर का कपड़ा उठा दिया। वोली, "अच्छा किया है उसने चोरी की है। हीरामणि, तेरा धन तो चुराया नहीं। जिसका चुराया है वही दोष लगाये। क्या कहते हो साहव ?"

लेवेदेव निरुत्तर।

हीरामणि व्यंग्य करते हुए बोल उठी, "साहब अब क्या बोलेगा? यह तो औरत का ढलमलाता चेहरा और छलछलाती आँख देखकर ही मस्त हो गया है, वह क्या अब साहब है—भड़ुए का भड़ुआ। नहीं तो इस तरह चोर को पालता!"

लेबेदेव ने कहा, "नहीं, मिस चम्पावती ने चोरी नहीं की।"

"तुम क्या जानते हो, साहब?" हीरामणि बोली, "मेरिसन साहब ने मुझे खुद बताया है कि उसने चोरी की है।"

"मेरिसन!" लेबेदेव ने कहा, "मेरिसन ने तुमसे कहा है! तुम मेरिसन को जानती हो क्या?"

"तो क्या जानूंगी नहीं?" हीरामणि गर्व से बोली, "कलकत्ता शहर में तुम्हीं एक साहब नहीं हो, मेरिसन भी साहब है, असली विलायती साहब। वह मेरे लिए जान छिड़कता है। उसी ने तो मुझे सब बताया। यह औरत चोर है, दागी चोर।"

हठात् चम्पा खड़ी होकर दृढ़ स्वर में बोली, "मैं चोर नहीं, मैं चोर नहीं!"

"तो फिर तेरी पीठ पर बेंत का दाग क्यों है री औरत?" हीरामणि चीख उठी।

"वह तुम नहीं समझोगी।" कहकर चम्पा तेजी से बगलवाले कमरे मे जाने लगी, लगता है अपने रुदन को छिपाने के लिए।

गोलोक दास दृढ़ स्वर में बोला, "नतिनी, ठहरो, जाओ मत!"

चम्पा खड़ी हो गयी।

गोलोक ने कहा, "आज मिस्टर लेबेदेव के घर की चोरी का कोई फैसला हो जाये। आज हम चोर को पकड़ेंगे ही। इस घर से कोई एक कदम भी आगे नहीं बढ़ायेगा। मैं कापालिक तान्त्रिक को साथ लेकर ही आया हूँ, वह बाहरवाले घर मे प्रतीक्षा कर रहा है। जाग्रत काली माँ के सामने उसने मन्त्र पढ़े हैं, मन्त्रित चावल साथ ले आया है। उस मन्त्रित चावल को इस घर के सभी लोग खायेंगे। जो चोर नहीं, उसे कुछ नहीं होगा। किन्तु जो चोर है, उसके चोरी नहीं कबूलने पर मुंह से खून गिरेगा और वह यहीं मर जायेगा। मिस्टर लेबेदेव, तुम अपने नौकरो-चाकरों को बुलाओ। वे भी आयें।"

वे लोग कौतूहल से घर के आसपास ही ताक-झांक कर रहे थे। बुलाते ही वे सातो-आठो जने घर में आकर खड़े हो गये। उनके मुख भी पीले पड़ गये हैं।

हीरामणि ने प्रतिवाद किया, "मैंने चोरी नहीं की। मैं क्यों मन्त्रित चावल

खाने जाऊँ ?"

कण्ठीराम सूखे मुंह से बोला, "बाबू, मैं तो यही कल-परसों यहाँ आया हूँ, मैं ही क्यों मन्त्र-पढ़ा चावल खाऊँ ?"

गोलोक दास धमकी दे उठा, "तुम सभी लोग खाओगे। मैं भी खाऊँगा। जो चोर नहीं, उसे कुछ नहीं होगा। जो चोर है, वह नहीं कबूलने पर रक्त उगलेगा, यहीं गिरकर मर जायेगा। तान्त्रिक महाराज, अब इस कमरे में आओ।"

एक वीभत्स चेहरेवाले कापालिक ने घर में प्रवेश किया। माथाभर धूल-धूसरित जटाएँ, दाढ़ी-मूंछ-भरा चेहरा, लाल-लाल जलती आँखें और ललाट पर लाल सिन्दूर का बड़ा-सा टीका जो लाल वस्त्र के साथ मिलकर दपदपा रहा था। उसके हाथ में एक खप्पर।

"जय माँ, जय माँ," कहकर कापालिक चीख उठा, सभी जैसे आतंकित हो उठे, कण्ठीराम मारे डर के रोने लगा।

कापालिक ने धमकी दी, "अय, चुप रह !"

पति को जकड़कर सरस्वती काँपने लगी।

कापालिक कर्कश स्वर में गा उठा—

"माँ कालीर किरे।
चोर जावे ना फिरे॥
एक कणा चाल पड़ा।
खेलेइ धरा छाड़ा॥
जे करेछे चुरि।
तार पूचवे जारिजुरि॥

"जय माँ श्मशानकालिके, नरमुण्डमालिके! ओउम् ह्रिं क्लिं क्लिं फट् स्वाहा। जय माँ, जय माँ !"

गोलोक बोला, "तान्त्रिक महाराज, पहले मुझे दो मन्त्रित चावल।"

"ले बेटा।" कापालिक ने खप्पर से मन्त्रित चावल निकालकर गोलोक दास को दिये, गोलोक ने खा लिये। कापालिक ने उसकी ओर कठोरता से ताका। गोलोक के मुंह से रक्त नहीं निकला।

अबकी बार चम्पा आगे आयी। मन्त्रित चावल माँगा। कापालिक ने दिया। चम्पा ने खाया, कापालिक ने कठोरता से ताका। चम्पा का भाव सहज। कमरे में स्तब्ध सभी लोग उत्सुक। कुछ क्षण। चम्पा पर कोई विपत्ति नहीं आयी।

हीरामणि अस्फुट स्वर में बोली, "सब झूठ, सब ढोंग।"

"अरी ओ, चुप रह," कापालिक कर्कश स्वर में धमकी दे बैठा, "किसने कहा मिथ्या ? अरी ओ, चुप रह !

"माँ कालीर किरे।
चोर जावे ना फिरे॥
एक कणा चाल पड़ा।
मेलेइ धरा छाड़ा॥
जे करेछे चुरि।
तार पूचवे आरिजुरि॥"

फैली तो एक अवांछित नीरवता। मन्त्रित चावल कुसुम ने खाया। हीरामणि ने खाया। कापालिक अब कण्ठीराम के सामने आ खड़ा हुआ। उसकी पत्नी फफककर रो उठी। कण्ठीराम का मुख और भी विवर्ण।

कापालिक ने हाँक लगायी—

"जे करेछे चुरि।
तार पूचवे आरिजुरि॥"

"ले बेटा, खा," कापालिक चिल्ला उठा।

कण्ठीराम ने मन्त्रित चावल हाथ मे लिया। सरस्वती किसी भी तरह उसे खाने नही देगी, कण्ठीराम चावल फेंककर लपका सीधे लेबेदेव की तरफ। उसके पाँव जकड लिये उसने, फफकते-फफकते बोला, "हुजूर, मुझे मारकर नही फेंकें। मैं चोर हूँ, मैंने आपकी चीजें चुरायी हैं।"

कापालिक अपनी सफलता पर ठठाकर हँस पडा, सरस्वती चीख मारकर रो उठी। हीरामणि का चेहरा फक्। कुसुम ने चम्पा को कसकर पकड लिया। चम्पा की आँखों से आँसू झर रहे थे, किन्तु मुख पर लाछन के मिटने की चरम तृप्त हँसी।

कण्ठीराम ने अपना दोष कबूल किया। वह छोटी जात का है। बहुत ही गरीब। बाजीगरी दिखाने से भी दो वक्त का भात नही जुटता। हाथ की सफाई का उसे अभ्यास है। चोरी करना उसका स्वभाव। कीमती वस्तु देखते ही चुराने के लिए हाथ खुजलाने लगता है। कितनी ही बार पकडा गया, लोगों के हाथ से मार खायी। एक बार थाना-पुलिस मे पडा। दारोगा को बाजीगरी दिखाकर सन्तुष्ट करने पर सिर्फ कुछ बेंत खाकर बच गया। इस बार का माल रहा नहीं। माल को वह घर में नही रखता, क्योंकि घर का कोई ठिकाना नही, बाजीगरी दिखाने के लिए वह घूमता रहता है। माल हाथ मे आते ही उसने एक दूकान में बेच दिया था। दूकानदार साला ज्यादा दाम नही देता। चोर के ऊपर

वटमार। पानी के भाव माल को वेच देना पड़ा।

लेवेदेव ने कहा, "कण्ठीराम, तुम्हें अगर पुलिस के हाथ में दे दूं ?"

"मर जाऊँगा हुजूर," कण्ठीराम गिड़गिड़ाकर वोला, "गोरा साहव के नालिश ठोकने पर वे लोग गंगाघाट पर नाव से लटकाकर फाँसी दे देंगे।"

"तुम वाजीगरी दिखाने पर फाँसी से छूटकर नहीं आ सकते ?"

"गोरे सिपाही की फाँसी का फन्दा वज्र है।" कण्ठीराम हाँफते हुए वोला, "वे लोग न व्राह्मण समझते हैं, न चाण्डाल समझते हैं, न शाप को मानते हैं। वाजीगरी को भी नहीं मानते। देखा नहीं, उन्होंने व्राह्मण महाराजा नन्दकुमार को फाँसी पर लटका दिया! राज्य के लोगों का शाप उस फाँसी के फन्दे की गाँठ को ढीला नहीं कर पाया।"

सरस्वती पूरे सुर में रोते-रोते वोली, "हुजूर हमारे धरमवाप हो। मैं तुम्हारी गरीव वेटी हूँ, हुजूर, मेरे अभागे मर्द को गोरे पुलिसवालों के हाथ में मत दो। इतना रोकती हूँ तो भी अभागा चोरी करके ही रहता है। हुजूर, यदि उसको गोरे पुलिसवालों के हाथ में दे दोगे तो वेटी का सिन्दूर पुँछ जायेगा। तव वेटी उसी फाँसी के गढ़े में माथा पटककर मरेगी। हुजूर, हुजूर···!"

लेवेदेव ने विरक्त होकर डाँटा, "आह, चुप रह! घनघना मत। वोल साले, और करेगा चोरी ?"

"तुम्हारा कुछ नहीं चुराऊंगा, हुजूर!" कण्ठीराम वोला, "अगर तुम्हारा कुछ चोरी करूँ तो माता के कोप से मरूँ, माँ शीतला की कसम।"

"जा, आज तू जा।"

कण्ठीराम और सरस्वती ने लेवेदेव के चरणों में साष्टांग प्रणाम किया।

लेवेदेव ने कहा, "देख, ठीक समय से काम पर आना। काम में नागा करने पर मैं ही तुझे गोली मार दूंगा।"

"जरूर हुजूर।" वे वोले।

"सुन," लेवेदेव ने कहा, "तुम लोगों की तनख्वाह डवल कर दी है। समझे ? खवरदार, फिर चोरी नहीं करना।"

वे लोग तेज कदमों से चले गये।

गोलोक चकित होकर वोला, "साहव, चोर को छोड़ दिया ?"

लेवेदेव ने कहा, "आदमी गुणवाला है। हाथ की सफाई उसकी अच्छी है। जाने दो।"

लेवेदेव ने कापालिक को खुश करके दक्षिणा दी। वह आदमी जाते समय एक वोतल वढ़िया विलायती लाल पानी माँग वैठा। वह लाल 'कारणवारि'

उत्सर्ग करने पर माँ बहुत खुश होगी। लेबेदेव ने उसे एक बोतल पुरानी क्लॉरेट दी, वह आशीर्वाद देते हुए चला गया।

उत्तेजना शान्त होने पर रिहर्सल आरम्भ हुआ। आज रिहर्सल जैसे जमा नहीं।

फिर भी लेबेदेव के मन से एक भारी बोझ उतर गया। चम्पा के पूर्व परिचय की बात खुल गयी, खुल जाये। हीरामणि का अभियोग जो मिथ्या प्रमाणित हुआ, वही बड़े सन्तोष की बात है।

काफी परिश्रम के बाद उस दिन देह-मन क्लान्त था। कालीपूजा। अँधेरी रात दीपमालाओं से झलमला रही थी, मन ने जरा ताजा होना चाहा। रिहर्सल का विशेष दबाव नहीं था। पर्व के उपलक्ष्य में अभिनेत्रीदल ने छुट्टी ली थी। लेबेदेव के हॉल में आये हुए थे गोलोकनाथ दास और चम्पा। आज की नीरवता में गोलोक ने चम्पा को विशेष रूप से शिक्षा दी थी। आज्ञाकारिणी छात्रा की भाँति चम्पा ने पाठ सीखे थे। लेबेदेव ने उनसे रिहर्सल बन्द करने को कहा। ज्यादा अभ्यास से एकरसता आयेगी।

लेबेदेव ने कहा, "दीपावली की रात। आतिशबाजी छूट रही है। चम्पा, चलो तुम्हें घर छोड़ आता हूँ। घूमना भी होगा, आतिशबाजी देखना भी होगा।"

"तुम भी चलो, दादू," चम्पा बोली, "तुमने भी बहुत परिश्रम किया है।"

गोलोक आना नहीं चाहता था, लेकिन चम्पा ने छोड़ा नहीं। लेबेदेव अच्छी तरह समझ गया कि उसको दूर रखने के लिए चम्पा ने यह चालाकी की है। ठीक वही, बग्घीगाड़ी पर उसने गोलोक दास को लेबेदेव के पास ठेल दिया। वह खुद गाड़ी के एक छोर पर बैठी।

टिरेटी बाजार में आलोक ही आलोक था। दूकानों में दीपों और मोमबत्तियों की कतारें सजी हुई थीं। हल्की हवा में दीपशिखाएँ काँप-काँप उठती थीं। कितने ही घरों की छतों पर आकाशदीप और किसी-किसी पर चीनी लैम्प झूल रहे थे, रंगबिरंगे झलमलाते हुए। एक मकान की छत पर आतिशबाजी के आलोक का फुहारा छूट रहा था। कान के पास ही एक पटाखा आवाज करते हुए फूट पड़ा, घोड़ा भड़ककर एक आदमी के कन्धे पर पैर रखने लगा। गनीमत हुई कि वह बाल-बाल बच गया। सड़क पर लोगों की भीड़-ही-भीड़। इसी बीच एक पागल अपना प्रलाप किये जा रहा था। बाबू लोग पत्नियों के साथ गाड़ियों और पालकियों में घूमने निकले थे। यूरोपीय लोग भी अलग नहीं थे। वे भी सपत्नीक-सपरिवार दीपावली और आतिशबाजी देखने निकल पड़े हैं। माथे पर से हुम् करके उड़ते हुए एक 'आकाशतारा' ने आकाश में जाकर 'तारे'

बरसाये।

वे तीनों चुपचाप जा रहे थे, बाहर की आतिशबाजियों का आर्तनाद उनकी नीरवता को और भी गम्भीर बना रहा था।

गाड़ी के लालबाजार के पास पहुँचने पर गोलोकनाथ दास ने कहा, "लेबेदेव साहब, मैं यहीं उतर जाता हूँ। चम्पा मलंगा में रहती है, मैं चितपुर में। बिल्कुल उल्टा रास्ता। इस भीड़ में घर पहुँचते-पहुँचते बहुत देर हो जायेगी।"

चम्पा जैसे कुछ बोलने जा रही थी। बोल नहीं पायी।

गोलोकनाथ दास उतर गया।

चम्पा जिस तरह एक छोर पर बैठी थी, उसी तरह बैठी रही। दोनों के बीच खाली जगह।

लेबेदेव बोला, "तुमने गोलोक बाबू को क्यों बुला लिया?"

चम्पा बोली, "यों ही।"

"क्या मुझसे डर लगता है तुम्हें?"

"नहीं।"

"तो फिर इतना हटकर क्यों बैठी हुई हो?"

"यों ही।"

फिर दोनों ही चुप। गाड़ी बैठकखानावाले मार्ग के पास आ गयी। इस तरफ कुछ सुनसान-सा है। एक फूस का घर आतिशबाजी के आ गिरने से जल रहा है। लगता है, लेबेदेव का अन्तर भी धधक रहा है। अग्नि के आलोक में मार्ग के किनारे एक पेड़ के नीचे बग्घीगाड़ी दिखायी पड़ी। गाड़ी में और कोई नहीं, मेरिसन खुद है और—और हीरामणि! चम्पा की भी नजर उधर गयी। हीरामणि ने भी उन्हें देखा। उसने लाज से जैसे कुछ परे हटना चाहा, लेकिन मेरिसन ने उसको कसकर पास खींच लिया। मेरिसन के एक हाथ में ह्विस्की की बोतल थी। दूसरा हाथ पागल की तरह राह चलनेवालों के सामने ही हीरामणि की देह से छेड़खानी करने लगा। लेबेदेव की बग्घी उस खड़ी बग्घी के पास से गुजरने लगी तो हठात् मेरिसन अपनी बग्घी पर खड़ा होकर चीख उठा, "यू ब्लडी ब्लैक होर्!" चम्पा की तरफ 'थूः' करके उसने थूक दिया। थूक के छींटे चम्पा के गाल पर आ पड़े। उसके दो-चार छींटे लेबेदेव के हाथ पर आ गिरे। घृणा से लेबेदेव ने उन्हें पोंछ डाला, किन्तु चम्पा पत्थर की मूर्ति की तरह बैठी रही।

फूस का घर उस समय भी जल रहा था। जल रहा था लेबेदेव का अन्तर। चित्रमयी चम्पा की ओर देखकर गाड़ी को उसने जोर से दौड़ा दिया। बहूबाजार

के आगे एक मोड़ लेकर गाड़ी मतंगा की गली में घुसी। दोनों ही मौन थे, चम्पा के घर के सामने बग्घी रुकी तो चम्पा उतरने के लिए उठ खड़ी हुई।

लेबेदेव ने मृदु स्वर मे पूछा, "तुम अब भी मेरिसन को चाहती हो ?"

"हाँ।"

"तो फिर मेरिसन को घर मे घुसने क्यों नही देती हो ?"

"यों ही।"

चम्पा तेज कदमों से गाड़ी से उतरकर घर के अन्धकार में विलीन हो गयी।

दो-एक दिन बाद स्फिनर ने चुपके-चुपके लेबेदेव को जो सूचना दी वह कुछ रहस्यमय थी : मिस्टर डिसूजा अर्थात् चम्पा के पड़ोसी किरायेदार ने बताया है कि इस बीच एक दिन साँझ को दो यूरोपीय और एक बंगाली बाबू चम्पा के घर गये थे। वे कौन थे ? डिसूजा ठीक-ठीक कह नहीं सका, चेहरे मोहरे का विवरण ठीक से मिल नही पाया। दोनों यूरोपीय प्रौढ़ आयु के थे, बंगाली बाबू कृष्णकाय और तोंदियल। विवरण सुनकर लेबेदेव को पहले ही जगन्नाथ गांगुलि की बात याद आयी। लेकिन वह क्यों दो यूरोपीय लोगों को साथ लेकर रात्रि के अन्धकार में चम्पा के घर जायेगा ? क्या बातें हुईं, कुछ पता नही चला। मालूम हुआ, एक दीपक थामे चम्पा उन्हे दुतल्ले पर ले गयी, खातिरदारी करके बैठाया और धीमे स्वर मे बातचीत की, लगभग आधा घण्टा बाद वे लोग चले गये। जाने के समय चम्पा नही आयी, उसकी बूढ़ी दाई उन्हें द्वार तक पहुँचा गयी। उन लोगो में क्या मेरिसन था ? निश्चित ही नहीं, क्योंकि मिस्टर डिसूजा मेरिसन को पहचानता है। अलावा इसके मेरिसन युवक है। दोनों यूरोपीय प्रौढ़ थे। कौन चम्पा के घर जा सकता है ? चम्पा तो कुछ बताती नही। और बतायेगी ही क्यों ? स्वाधीन युवती है। किसके साथ बात करेगी, किसके साथ मेलजोल रखेगी—इसकी कैफियत क्षण-भर के साथी को देने क्यों आयेगी ?

स्फिनर ने कहा, "गाड़ी में बैठते समय एक यूरोपीय ने अंग्रेजी मे कहा था, 'औरत को राजी कर पाने पर इस आदमी को एक धक्के मे धराशायी किया जा सकता है।' दूसरे ने कहा, 'अभी तो राजी हुई नहीं, बाबू, तुम राजी करो।' बाबू बोला, 'रुपये के लोभ से सारा तेज फीका पड जायेगा।' "

टुकड़ी-टुकड़ी बात। किस बात के लिए राजी ? कौन है वह आदमी जिसका भाग्य चम्पा के राजी होने पर निर्भर था ? तेज ? किसलिए ? लेबेदेव कुछ भी समझ नहीं पाया।

अधिक चिन्ता करने का समय भी नहीं। यही कुछ दिन बाद ही प्रथम अभिनय की रात आयेगी, सारी तैयारियों में घड़ी के काँटे पर नजर रखते हुए बढ़ना होता है।

वह बोला, "मिस्टर स्फिनर, तुमने सूचना देकर बहुत अच्छा किया है। अवश्य ही ऐसा नहीं कि मुझे बहुत ज्यादा कौतूहल है। फिर भी वह हमारे थियेटर की अभिनेत्री है, उसके हित-अहित पर नजर रखना हमारा कर्त्तव्य है। तुम जरा और खोज-खबर लो। है न?"

कौतूहल लेबेदेव के मन में खूब ही था। कौन थे वे दोनों यूरोपीय, कौन था वह बाबू? किस विषय को लेकर उनकी बातें हुई? सबकुछ ही मानो रहस्यमय।

चम्पा से सीधे पूछ लेना कैसा रहेगा? लेबेदेव के मन को कुछ अधिक संकोच हुआ। तो भी वह स्थिर नहीं रह सका।

थियेटर की नयी पोशाकें तैयार होकर दर्जी के यहाँ से आयीं। सबने पहन-कर देखा। पोशाक पहनते ही लेबेदेव को दिखाने के लिए चम्पा दौड़ी आयी। जिस पोशाक में वह कभी दर्शकों के सामने उपस्थित होगी, वही। पुरुषवेशिनी चम्पा, अब उसका नाम सुखमय। ठीक जैसे युवा तरुण। जिसका ढलढलाता जनाना चेहरा, सीधी-लम्बी स्वस्थ काया। बाल जैसे कटे-छँटे, माथे पर पगड़ी, शरीर पर पूरे आस्तीन की फीतेवाली मिरजई। नीचे का पहनावा चौंचेदार महीन धोती, पैरों में चप्पल।

लेबेदेव के कमरे में बड़े आईने के सामने खड़ी हो चम्पा खिलखिलाकर हँस पड़ी। बोली, "माँ री, देखो तो क्या गजब! खुद को ही खुद पहचान नहीं पाती, देखो, देखो, छोकरा आईने में मेरी ओर देखते हुए किस तरह हँसता है! दूर कलमुँहे, लाज नहीं आती तुझे? किन्तु मेरा तो उसके साथ प्रेम करने को जी चाहता है।"

इन तरल क्षणों में सुयोग पाकर लेबेदेव ने कहा, "आईने का पुरुष मेरिसन नहीं है क्या?"

चम्पा बोली, "अहा, वह ललमुँहा यदि आईनावाले पुरुष के समान होता तो क्या मैं तुम्हारे यहाँ काम करने आती?"

लेबेदेव ने कहा, "तुम्हारे तो चाहनेवाले बहुत हैं।"

कुछ सकपका गयी चम्पा। वह बोली, "इसका मतलब?"

"कितने ही लोग जाते हैं तुम्हारे घर, तुम्हें राजी करने।"

"तुम क्या कहना चाहते हो, साहब, मैं समझ नहीं पाती।"

"तुम उनकी बात से राजी क्यों नहीं हुई ?"

"साहब, क्या मैं इतनी बेईमान हूँ !" चम्पा रुलाई से रुद्ध स्वर में बोली, लालबाजार की सडक से तुम एक दागी चोर को उठा लाये, उसे सिखाया-ढाया, स्नेह-प्रेम दिया, सम्मानित स्थान दिया। और मैं अन्तिम घड़ी मे तुम्हारी नाव को उलट दूँगी ? वह मैं नहीं कर सकूँगी। टुकड़े-टुकड़े मेरे कर दिये जायें तब भी नहीं कर सकूँगी।"

चम्पा तेजी से वहाँ से बाहर चली गयी।

जगन्नाथ सिर झुकाये खड़ा था।

लेबेदेव गरज उठा, "तुम झूठे, फरेबी, धूर्त और विश्वासघाती हो। क्यों, क्यों मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र करने पर तुल गये तुम ? मैं क्या तुम्हें रुपये नही देता, तुम्हारे साथ काम-कारोबार नहीं करता ?"

जगन्नाथ लज्जित नही हुआ, वह बोला, "तुम विदेशी रूसी हो, शहर कलकत्ता मे तुम और कितने दिन कारोबार करोगे ? अंग्रेज यहाँ रहेंगे, मुझे उनके साथ आजीवन कारोबार करना होगा।"

"इसीलिए तुम मेरा सर्वनाश करोगे, जिसने किसी भी दिन तुम्हारी क्षति नहीं की।"

"सर्वनाश-तर्वनाश नहीं जानता," जगन्नाथ विनभाव से बोला, "हम कारबारी आदमी हैं। जहाँ सुविधा देखेंगे, वहीं चक्कर लगायेंगे। इसके अलावा नस्पर्धा सभी व्यवसायों में है। तुम्हारे थियेटर-व्यवसाय में भी है। मिस्टर वेंगा क्या अन्याय करता है अगर वह उस छोकरी को तुम्हारे थियेटर मे चाहता है ? तुम भी क्या जोसफ बैटल् को अपने थियेटर में फोड़

ह की ?"

"सब झूठी बातें हैं।" जगन्नाथ जीभ काटते हुए बोला, "उफ्, कैसा सफेद झूठ बोल सकती है यह लड़की ! मैं भला कब दो साहबों को लेकर उसके घर गया ? कलकत्ता शहर में क्या सुन्दर स्त्रियों का अभाव है कि मैं, श्रीयुत् बाबू जगन्नाथ गांगुलि, उन्हें लेकर दाई के घर जाऊँगा ?"

जगन्नाथ बहुत अधिक विरोध जता रहा है, बातचीत भी कैसी तो जैसे सन्देहजनक।

"कौन थे वे दोनों साहब ?" तेज स्वर में लेबेदेव बोला, "राबर्थ और बैटल् !"

"लगता है उस छोकरी ने यह सब कहा है ?" जगन्नाथ गरज उठा, "उसे हम देख लेंगे।"

जगन्नाथ चले जाने को हुआ।

लेबेदेव ने कहा, "ठहरो।" उसने पुकारा, "चम्पा, मिस चम्पा !"

चम्पा फिर आयी। उसने अपना थियेटरी वेश बदल दिया था, अपनी साड़ी पहने वहाँ उपस्थित हुई। जगन्नाथ को देखकर वह दरवाजे के पास ही खड़ी हो गयी। सिर नीचा किये हाथ की उँगलियाँ कुरेदने लगी।

"चम्पा," लेबेदेव उत्तेजनारहित स्वर में बोला, "जगन्नाथ ने सब कबूल किया है, उस दिन राबर्थ और बैटल् तुम्हारे घर गये थे।"

चम्पा बोली, "साहबों को पहचानती नहीं, नाम भी याद नहीं, हाँ, जगन्नाथ बाबू साथ थे।"

लेबेदेव ने कहा, "तुमने तेज दिखाया था। क्या उनकी बात से राजी नहीं हुई तुम ?"

"नहीं।"

"बात क्या थी ?"

"थियेटर के दिन सन्ध्यावेला में तुम्हें बताये बिना चम्पत हो जाना।"

"अर्थात् मेरे प्रथम दिन के अभिनय को व्यर्थ कर देना। तुम नायिका हो। तुम्हारे पार्ट का जोड़ मिलना सम्भव नहीं, अतएव पहली ही रात को इतने कष्ट से आयोजित अभिनय व्यर्थ।"

"ठीक यही।"

"तो फिर जरा देर पहले तुमने झूठी बात क्यों कही ?"

"विवश होकर, वे धमका गये थे, मैं यदि सारी बातें खोल दूँगी तो वे तुम्हारा और मेरा सर्वनाश कर देंगे।"

"तुम उनकी बात से राजी क्यों नहीं हुई ?"

"साहब, क्या मैं इतनी बेईमान हूँ !" चम्पा रुलाई से रुद्ध स्वर में बोली, "लालबाजार की सड़क से तुम एक दासी चोर को उठा लाये, उसे लिखना-पढ़ाया, स्नेह-प्रेम दिया, सम्मानित स्थान दिया। और मैं अन्तिम घड़ी में तुम्हारी नाव को उलट दूँगी ? यह मैं नहीं कर सकूँगी। टुकड़े-टुकड़े मेरे कर दिये जायें तब भी नहीं कर सकूँगी।"

चम्पा तेजी से वहाँ से बाहर चली गयी।

जगन्नाथ सिर झुकाये खड़ा था।

लेबेदेव गरज उठा, "तुम झूठे, फरेबी, धूर्त और विश्वासघाती हो। क्यों, क्यों मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र करने पर तुम गये तुम ? मैं क्या तुम्हें रुपये नहीं देता, तुम्हारे साथ काम-कारोबार नहीं करता ?"

जगन्नाथ लज्जित नहीं हुआ, वह बोला, "तुम विदेशी व्यक्ति हो, शहर कलकत्ता में तुम और कितने दिन कारोबार करोगे ? अंग्रेज यहाँ रहेंगे, मुझे उनके साथ आजीवन कारोबार करना होगा।"

"इसीलिए तुम मेरा सर्वनाश करोगे, जिसने किसी भी दिन तुम्हारी क्षति नहीं की।"

"सर्वनाश-सर्वनाश नहीं जानता," जगन्नाथ विनभाव से बोला, "हम कारबारी आदमी हैं। जहाँ सुविधा देखेंगे, वहीं चक्कर लगायेंगे। इसके अलावा प्रतिस्पर्धा सभी व्यवसायों में है। तुम्हारे थियेटर-व्यवसाय में भी है। मिस्टर रावर्थ वैसा क्या अन्याय करता है अगर वह उस छोकरी को तुम्हारे थियेटर से फोड़ लेना चाहता है ? तुम भी क्या जोसफ बैटल को अपने थियेटर में फोड़ ले आना नहीं चाहते ?"

एक नाजुक जगह पर चोट की उस चतुर व्यवसायी ने। लेबेदेव कुछ भी जवाब नहीं दे पाया, सिर्फ चीख उठा 'गेट आउट, गेट आउट, यू चीट्।"

जगन्नाथ क्रूर हँसी हँसकर बोला, "बाहर ही जाता हूँ, किन्तु मेरे अढ़ाई सौ रुपये झटपट चुका देना। नहीं तो फिर कोर्ट-कचहरी करनी होगी। अच्छा हो।"

सात

बँगला थियेटर
२५ न० डोमतला
मिस्टर लेबेदेव
सम्मानसहित घोषणा करता है
उपनिवेश की भद्रमहिलाओं और भद्रमहोदयों से
कि उनका
थियेटर
खुल रहा है
आगामी कल, शुक्रवार, २७ तारीख को
एक सुखान्त नाटक के साथ
जिसका नाम है
डिस्‌गाइस
अभिनय ठीक आठ बजे शुरू होगा
उसका टिकट थियेटर में मिलेगा

बाक्स एवं पिट	...	आठ रुपया
गैलरी	...	चार "

यह विज्ञापन कलकत्ता गजट के २६ नवम्बर १७९५ के अंक में अंग्रेजी में प्रकाशित हुआ। लेबेदेव ने अखबार को कई बार उलट-पुलटकर देखा। उसका थियेटर! पढ़ते हुए अच्छा लगा। उसका थियेटर! कैसा तो एक गम्भीर आत्मसन्तोष का भाव मन में उमड़ रहा था। इस बार के विज्ञापन में थियेटर के नाम को स्पष्ट किया गया, 'बँगला थियेटर'। क्यों नहीं करेगा वह? जो लोग उसके साथ खटे, जिन्होंने अनुप्रेरणा दी, जिन्होंने अभिनय में भाग लिया, उनके नाम पर ही लेबेदेव ने अपने थियेटर का नामकरण किया है।

पूर्वपरिकल्पना के अनुसार थियेटर को बंगाली कायदे से सजाया गया था। बाहरी द्वार पर आम्रपल्लव, दोनों ओर कदलीस्तम्भ और मंगलघट के ऊपर नारिकेल। हॉल के ऊपर छत के नीचे विलक्षण रंगों का चँदोवा और वहाँ से लटकते मोमबत्तियोंवाले बेशकीमती झाड़-फानूस। द्वारों और खिड़कियों पर टँगे ढाकाई मलमल के पर्दे। मंच ठीक ठाकुरवाड़ी के दालान की तरह। नीले कपड़े पर सोले की सफेद चाँदमाला पवित्र शुभ्रता से समुज्ज्वल। मंच के सामने

नीचे की तरफ पवित्र अल्पना। नीचे दीवाली की तरह जगमगाती दीपों की माला। यवनिका विशेष रूप से शान्तिपुरी धोती की पट्टियों से तैयार की गयी थी। दृश्यपट खूब अच्छे नहीं होने पर भी आँखों को लुभाते थे। कलकत्ता शहर और लखनऊ के विलक्षण प्रतिरूप थे वे। मंच के सामने कुछ निचाई पर वाद्यमण्डली के बैठने का स्थान था। वहाँ सितार, इसराज, सारंगी, बाँसुरी, वीणा, तबला-मृदंग के साथ रखे हुए थे वायलिन-चेलो, बैंजो, मैण्डोलिन, क्लारियोनेट और अन्य विलायती वाद्य। रजनीगन्धा की सजावट, धूप-अगरु की गन्ध, सबकुछ मिलकर एक सुहावना परिवेश।

ड्रेस-रिहर्सल हो चुका है। दल के लोगों में प्रगाढ़ उत्साह है, नवीनता का एक उन्माद-जैसा कुछ था जो उन्हें जीवन्त किये हुए था। पहले-पहल बँगला अभिनय। हालाँकि वह मूल नाटक का संक्षिप्त रूप—एकांकी है। बँगला थियेटर, बंगाली अभिनेता-अभिनेत्री। नाटक अंग्रेजी से बँगला में अनूदित, परिकल्पना एक भाषा-शिक्षक बंगाली की, लेकिन निर्देशन एक रूसी आदमी का।

एक रूसी आदमी! भारत में ही कैसा लगता है! सचमुच ही एक रूसी आदमी। देश बंगाल, मालिक दिल्ली का बादशाह, शासक अंग्रेज, लेकिन प्रथम बँगला थियेटर का प्रतिष्ठाता एक रूसी आदमी!

लेकिन आज दल के सारे ही लोग जैसे जाति-धर्म-वर्ण को भूल गये थे। बाबू गोलोकनाथ दास ने स्वयं कालीबाड़ी में पूजा चढ़ा आने के बाद केले के पत्ते पर रखे सिन्दूर का लाल टीका, हिन्दू-ईसाई का भेद किये बिना, सबके ललाट पर लगा दिया। नीलाम्बर बैण्डो ने कोट-पतलून पहने ही बहूबाजार के शिव-मन्दिर में साष्टांग प्रणाम करके सबको प्रसाद-बिल्वपत्र बाँटे। मिस्टर स्फिनर सवेरे ही गिरजाघर में प्रार्थना कर आया। कुसुम ने नारायण-शिला के पास कीर्तन का आयोजन किया था, इसीलिए सबको बताशे बाँटे। हीरामणि पीछे रहनेवाली नहीं, उसने भी क्षणिक कलह भुलाकर पीपलवृक्ष पर चढ़ायी गयी मालाएँ सबके गले में पहना दीं। और, और चम्पा खुद सिन्दूर-लगी देवी दुर्गा की तस्वीर लेबेदेव के माथे से छुला गयी। बोली, "साहब, बड़ा भय होता है। इतने लोगों के सामने, इतने साहब-मेम लोगों के सामने हँसी-मसखरी करनी होगी, सोचने से भी जैसे कलेजा काँप उठता है। इसे पास ही दीवाल पर टाँग दूँगी। अभिनय के समय जब भय का अनुभव होगा तो तभी दुर्गा की छवि को निहार लूँगी। माँ मन को साहस देगी, मेरा डर ही जाता रहेगा।"

थियेटर के टिकटों की इतनी माँग होगी, यह लेबेदेव ने सोचा नहीं था। विज्ञापन के प्रकाशित होने के साथ-साथ टिकट खरीदने के लिए लोगों

सात

वँगला थियेटर

२५ न० डोमतला

मिस्टर लेवेदेव

सम्मानसहित घोषणा करता है

उपनिवेश की भद्रमहिलाओं और भद्रमहोदयों से

कि उनका

थियेटर

खुल रहा है

आगामी कल, शुक्रवार, २७ तारीख को

एक सुखान्त नाटक के साथ

जिसका नाम है

डिस्‌गाइस

अभिनय ठीक आठ वजे शुरू होगा

उसका टिकट थियेटर में मिलेगा

वाक्स एवं पिट	...	आठ रुपया
गैलरी	...	चार "

यह विज्ञापन कलकत्ता गजट के २६ नवम्बर १७९५ के अंक में अंग्रेजी में प्रकाशित हुआ। लेवेदेव ने अखवार को कई वार उलट-पुलटकर देखा। उसका थियेटर! पढ़ते हुए अच्छा लगा। उसका थियेटर! कैसा तो एक गम्भीर आत्मसन्तोप का भाव मन में उमड़ रहा था। इस वार के विज्ञापन में थियेटर के नाम को स्पष्ट किया गया, 'वँगला थियेटर'। क्यों नहीं करेगा वह? जो लोग उसके साथ खटे, जिन्होंने अनुप्रेरणा दी, जिन्होंने अभिनय में भाग लिया, उनके नाम पर ही लेवेदेव ने अपने थियेटर का नामकरण किया है।

पूर्वपरिकल्पना के अनुसार थियेटर को वंगाली कायदे से सजाया गया था। वाहरी द्वार पर आम्रपल्लव, दोनों ओर कदलीस्तम्भ और मंगलघट के ऊपर नारिकेल। हॉल के ऊपर छत के नीचे विलक्षण रंगों का चँदोवा और वहाँ से लटकते मोमवत्तियोंवाले वेशकीमती झाड़-फानूस। द्वारों और खिड़कियों पर टँगे ढाकाई मलमल के पर्दे। मंच ठीक ठाकुरवाड़ी के दालान की तरह। नीले कपड़े पर सोले की सफेद चाँदमाला पवित्र शुभ्रता से समुज्ज्वल। मंच के सामने

नीचे की तरफ पवित्र अल्पना। नीचे दीवाली की तरह जगमगाती दीपों की माला। यवनिका विशेष रूप से शान्तिपुरी धोती की पट्टियों से तैयार की गयी थी। दृश्यपट खूब अच्छे नहीं होने पर भी आँखों को लुभाते थे। कलकत्ता शहर और लखनऊ के विलक्षण प्रतिरूप थे वे। मच के सामने कुछ निचाई पर वाद्यमण्डली के बैठने का स्थान था। वहाँ सितार, इसराज, सारंगी, बाँसुरी, वीणा, तबला-मृदंग के साथ रखे हुए थे वायलिन-चेलो, बैंजो, मैण्डोलिन, क्लारियोनेट और अन्य विलायती वाद्य। रजनीगन्धा की सजावट, धूप-अगरु की गन्ध, सबकुछ मिलकर एक सुहावना परिवेश।

ड्रेस-रिहर्सल हो चुका है। दल के लोगों में प्रगाढ़ उत्साह है, नवीनता का एक उन्माद-जैसा कुछ था जो उन्हें जीवन्त किये हुए था। पहले-पहल बँगला अभिनय। हालाँकि वह मूल नाटक का संक्षिप्त रूप—एकांकी है। बँगला थियेटर, बंगाली अभिनेता-अभिनेत्री। नाटक अंग्रेजी से बँगला में अनूदित, परिकल्पना एक भाषा-शिक्षक बंगाली की, लेकिन निर्देशन एक रूसी आदमी का।

एक रूसी आदमी! भारत में ही कैसा लगता है! सचमुच ही एक रूसी आदमी। देश बंगाल, मालिक दिल्ली का बादशाह, शासक अंग्रेज, लेकिन प्रथम बँगला थियेटर का प्रतिष्ठाता एक रूसी आदमी!

लेकिन आज दल के सारे ही लोग जैसे जाति-धर्म-वर्ण को भूल गये थे। बाबू गोलोकनाथ दास ने स्वयं कालीबाड़ी में पूजा चढ़ा आने के बाद केले के पत्ते पर रखे सिन्दूर का लाल टीका, हिन्दू-ईसाई का भेद किये बिना, सबके ललाट पर लगा दिया। नीलाम्बर वैण्डो ने कोट-पतलून पहने ही बहूबाजार के शिव-मन्दिर में साष्टांग प्रणाम करके सबको प्रसाद-बिल्वपत्र बाँटे। मिस्टर स्पिनर सवेरे ही गिरजाघर में प्रार्थना कर आया। कुसुम ने नारायण-शिला के पास कीर्तन का आयोजन किया था, इसीलिए सबको बताशे बाँटे। हीरामणि पीछे रहनेवाली नहीं, उसने भी क्षणिक कलह भुलाकर पीपलवृक्ष पर चढ़ायी गयी मालाएँ सबके गले में पहना दीं। और, और चम्पा खुद सिन्दूर-लगी देवी दुर्गा की तस्वीर लेबेदेव के माथे से छुला गयी। बोली, "साहब, बड़ा भय होता है। इतने लोगों के सामने, इतने साहब-मेम लोगों के सामने हँसी-मसखरी करनी होगी, सोचने से भी जैसे कलेजा काँप उठता है। इसे पास ही दीवान पर टाँग दूँगी। अभिनय के समय जब भय का अनुभव होगा तो तभी दुर्गा की छवि को निहार लूँगी। माँ मन को साहस देगी, मेरा डर ही जाता रहेगा।"

थियेटर के टिकटों की इतनी माँग होगी, यह लेबेदेव ने सोचा नहीं था। विज्ञापन के प्रकाशित होने के साथ-साथ टिकट खरीदने के लिए लोगों

की भीड़ उमड़ने लगी। पिट-बाक्स और गैलरी में जितने लोग आ सकते थे, उससे कहीं ज्यादा लोग टिकट की माँग करनेवाले। क्रेता केवल यूरोपीय लोग नहीं, हिन्दू धनीवर्ग से भी काफी लोग। बहुतेरों को निराश करना पड़ा। प्रथम अभिनय-रात्रि। कलकत्ता गजट के प्रतिनिधियों को छोड़ा नहीं जा सकता। टाउन-मेजर कर्नल किड और उसकी एशियाई सहधर्मिणी, बैरिस्टर जान थॉ और उसकी हिन्दुस्तानी उपपत्नी, मिस्टर जस्टिस और मिसेज हाइड, मुख्य न्यायाधीश सर राबर्ट और लेडी चेम्बर्स—इस तरह के जिन सम्माननीय लोगों ने अनेक तरह से लेबेदेव को संरक्षण-सहायता दी, उन्हें भी आमन्त्रित करना पड़ा। दर्शकों के बैठने की जगह को लेकर लेबेदेव परेशान हो उठा। कुछ फालतू कुर्सियों की उसने पहले से ही व्यवस्था कर रखी थी, इसीलिए लाज रह गयी। तो भी भीड़ के कारण जाड़े की रात में भी हॉल खूब गर्म हो उठा था। आमन्त्रित लोग आने लगे थे। दर्शकगण भी धीरे-धीरे जमा होने लगे। उनकी अभ्यर्थना के लिए दूसरे लोग तैनात कर दिये गये थे। लेबेदेव खुद अभी यह काम नहीं कर सकता। गोलोक दास भी साज-सज्जा-कक्ष में व्यस्त था। सारे साज-सामान की व्यवस्था उसने खुद की थी। फिर भी लेबेदेव ने पर्दे के किनारे एक छोटे-से फाँक से हॉल में नजर दौड़ायी। आलोक में झलमला रहा था हॉल, विविध रंगों का मेला। उसी में अनेक जातियों के नर-नारी। अंग्रेज, अर्मीनियाई, पुर्तगाली, मूर, सिख, जेंटू—दर्शकों का अपूर्व सम्मिश्रण। वहाँ कौन तो बैठे हैं? रावर्थ, स्विज और बैटल्। वे लोग टिकट कटाकर आये हैं। कुछ भी गोलमाल तो नहीं करेंगे? विशिष्ट व्यक्तियों के बीच इतना साहस अवश्य ही उन्हें न होगा। अरे, अरे! पिट में पिछली कतार में वह मेरिसन तो नहीं? हाँ, वही है। मेरिसन भी टिकट कटाकर देखने आया है! किसकी करतूत है, चम्पा की या हीरामणि की? मिसेज मेरिसन तो बगल में नहीं है। निश्चय ही वह आना नहीं चाहती। दर्शकगण धीमे-धीमे बोल रहे हैं। आँखें नचा-नचाकर थियेटर की सज्जा पर गौर करते हैं और फिर आपस में टीका-टिप्पणी करते हैं।

मिस्टर स्फिनर ने सूचना दी, अब सिर्फ पाँच मिनट बाकी हैं। वादकगण सबके-सब तैयार हैं। पर्दे पर कुंजवन का दृश्य है। उसी कुंजवन में खड़ी होकर कुसुम भारतचन्द्र का गीत गायेगी। अभिसारिका के वेश में कुसुम। महीन नीलाम्बरी साड़ी में उसका गौरवर्ण दीप्त हो उठा है। नयनों को लुभानेवाला उसका रूप जैसे सौ गुना खिल गया है। कुसुम ने कुंजवन का आश्रय लिया है।

सहसा अभिनेत्री चम्पा कहीं से लपकी आयी और लेबेदेव के पाँव पर हाथ

रखकर उसने प्रणाम किया। जरा हँसकर बोली, "साहब, नाट्यगुरु तुम्हीं हो। इसलिए तुम्हें प्रणाम करती हूँ।"

आठ बजने में एक मिनट बाकी है। मंच के दोनों छोरों से मंगल-शंख-ध्वनि हुई। साथ-ही-साथ रंगशाला का कलगुंजन शान्त हुआ। एक नीरव प्रतीक्षा। मंच के दोनों पार्श्ववर्ती द्वार खुल गये। लेबेदेव के नेतृत्व मे वादकदल ने एक ही पोशाक मे रंगालय में प्रवेश किया। लेबेदेव ने बीच मे खड़े होकर दर्शकों की ओर रुख किया और भावहीन चेहरे से नीचे झुककर अभिवादन किया। लम्बी तालियों की गड़गड़ाहट रंगशाला मे गूँज उठी। लेबेदेव घूमकर खड़ा हुआ, वाय-लिन की गज हाथ मे ली, साथ-ही-साथ दूसरे वादकों ने अपने-अपने वाद्ययन्त्र को सँभाला। घण्टे पर पड़ी एक चोट ने रंगशाला को चंचल कर दिया। यव-निका खिसक गयी। सामूहिक वाद्यसंगीत के साथ-साथ अभिसारिकावेशिनी कुसुम ने प्रिय कवि भारतचन्द्र का गान छेड़ दिया।

गान पर गान। सुर और स्वर का कर्णविमोहक सम्मिलन। सुरूपा कुसुम के उत्तेजक कटाक्ष, दृश्यपट का वर्ण-वैचित्र्य, सबने मिलकर एक ऐसे रस का संचार किया जिसकी कलकत्ता के रंगमंचों पर कल्पना नहीं हो सकती थी। भारतीय सेरिनेड् के समाप्त होते-न-होते तालियाँ और 'फिर से' 'फिर से' का शोर। कुसुम ने प्रशंसकों की ओर देखकर और भी गीत गाये। लम्बी तालियों के बीच आयोजन के पहले चरण की समाप्ति हुई। तालियों के बीच ही निकट के द्वार से लेबेदेव ने सदलबल पर्दे के भीतर प्रवेश किया। वह सीधे बढ़ा। कुसुम को जैसे उसी की अपेक्षा थी। कुसुम को देख पाते ही लेबेदेव ने असीम आनन्द से उसे जकड़ लिया।

नाटक से पहले चटनी के रूप मे जादूगरी के खेल का आयोजन था। कण्ठी-राम और सरस्वती ने विचित्र पोशाकें पहन रखी थीं। उन्होंने मंच पर आश्रय लिया। यवनिका उठते ही तालियों के बीच उन्होंने करतब दिखाने शुरू किये। पहले लपका-लपकी या उछालने और पकड़ने का खेल। फिर शीशे चबाना, मुँह से आग बरसाना। एक के बाद एक जादूगरी। दर्शकों को सिर्फ विविधता देने के लिए। किन्तु इस बार की तालियों में वह जोर नहीं। पर्दा गिरा।

इसके बाद बँगला नाटक शुरू हुआ। 'दि डिस्गाइज' अथवा काल्पनिक छद्मवेश। प्रथम दृश्य या अंकवाले नाटक-अंश के अनुसार अलग-अलग पोशाक और मुखौटे मे कुछ वादक मंच पर रह गये।

एक पथ का दृश्य। लेबेदेव के नेतृत्व में मूल वादकदल ने पूर्ववत् रंगशाला में अपना-अपना स्थान ग्रहण किया। अधीर प्रतीक्षा के बीच घण्टे पर चोट की

आवाज गूंज उठी। पर्दा उठते ही दिखायी दिया कि वातायन के नीचे वादक लोग अन्तरवर्ती संगीत बजा रहे हैं। कुछ क्षणों के वाद्यसंगीत के बाद सुखमय की सहचरी माल्यवती के रूप में अतर बाई ने अपना पहला संवाद वादकों से कह सुनाया। अतर ने कहा, "सज्जनो, यह भली स्वामिनी सुनकर सन्तुष्ट हुई हैं। और, उन्होंने हम लोगों से जाने को कहा है—मंगल हो !"

नहीं, अतर उतनी अच्छी तरह बोल नहीं पायी। चम्पा इससे कहीं अच्छा बोलती है, लेबेदेव ने सोचा। चम्पा के सम्भाषण में कहीं शिथिलता नहीं, उच्चारण स्पष्ट, स्वर तेज किन्तु कर्कश नहीं। पुरुषवेश में वह एक शिष्ट-सौम्य प्राणवान युवक की तरह लगेगी। प्रथम संवाद से ही वह जमा देगी। पूरे नाटक में चम्पा को मोहनचन्द्र बाबू के छद्मवेश में सुखमय की भूमिका देकर ही नाटक आरम्भ करना होगा। वादक लोग चले गये। उसके बाद नाटिका का घटनाक्रम लबालब नदी की धारा की तरह आगे बढ़ा। सेवक रामसन्तोष की भूमिका में हरसुन्दर खूब अच्छा उतरा। उसकी उठी हुई मूंछें। बदन पर मिरजई, टोपी पन्नीदार। घूंघटवाली अपनी स्त्री को परस्त्री समझकर उसने अत्यन्त नाटकीय संगीत द्वारा प्रेमनिवेदन किया। वह बोला, "प्राणेश्वरी, मेरी मीठी छुरी ! यह देखो तुम्हारा महाबली और पराक्रमी राजपूत तुम्हारे पैरों तले पड़ा हुआ है।" प्रथम रात्रि की उस छोटी नाटिका में दल के लोग जैसे उत्तेजना के साथ अभिनय कर रहे थे। उनकी भाषा, सम्भाषण, गतिविधि, हाव-भाव, हास्य-लास्य—सबने जैसे दर्शकों के मन को प्रफुल्ल बना दिया। कभी हलकी हँसी, कभी जोर की हँसी, कभी अट्टहास ने समुद्र-तरंगों की तरह पूरे प्रेक्षागार को हिल्लोलित कर दिया। और हिल्लोल उठा लेबेदेव के मन में भी। सफल, सफल, सफल ! पहला दृश्य सफलता के साथ पूरा हुआ। दर्शकों के बीच भी उसकी प्रतिक्रिया खूब अच्छी रही। दूसरे दृश्य में चम्पा ऊपर के बरामदे से अभिनय करेगी। मंच पर उतरने से पहले उसने दुर्गा के चित्र से माथा लगाया, गोलोक को प्रणाम किया। उसके बाद उसका सहज-मुक्त अभिनय ! नायक भोलानाथ के वेश में विश्वम्भर था। प्रेमपागल नायक ने नायिका को दासी कहने की भूल की। नाटिका जम उठी। इस दृश्य के समाप्त होने पर चम्पा दौड़ी आयी। जाड़े की रात में भी उत्तेजना से बदन पर पसीना-ही-पसीना, ओठ पर अभी भी पसीने की बूंदें जमी हुई थीं। उसने कहा, "माँ री, पहले-पहल तो मुझे डर लगा था, लेकिन उसके बाद जरा भी डरी नहीं। इस तरफ देख पायी कि मेरिसन भी आया है। साहब, तुमने उसको आमन्त्रित किया था क्या ?"

हीरामणि पास ही थी, बोल उठी, "साहब क्यों आमन्त्रित करेंगे ? वह

ललमुंहा मेरा नाच-रंग देखने के लिए टिकट खरीदकर आया है।"

चम्पा बोली, "हीरादीदी, तू उधर खूब अच्छी तरह आँख मार-मारकर रँगरेली करती है, क्यों ?"

तीसरे दृश्य मे बीच-बीच में हास-परिहास का पुट लिये नाटिका की सुखान्त परिणति आ गयी। अभिनय पूरा होने के बाद पर्दा उठा। लेबेदेव को बीच में रखकर अभिनेता-अभिनेत्रियो ने दर्शकों का अभिवादन किया। दर्शकों ने देर तक तालियाँ बजाकर अपनी गुणग्राहकता का परिचय दिया। दर्शकों में मे किसी ने फूलों के गुच्छे मंच की ओर फेंक दिये।

बाहर मंच के द्वार के पास उत्साही दर्शकों का दल अभिनेता-अभिनेत्रियों साथ अन्तरंग होना चाहता है। चुन-चुनकर कुछ लोगों को भीतर आने दिया गया। टाउन-मेजर स्वयं उपस्थित। लेबेदेव को अपने हाथ से गुलदस्ता भेंट किया। सर रावर्ट चेम्बर्स ने भी फूल भेजे है।

किन्तु लेबेदेव ने सभी अभिनेता-अभिनेत्रियों के लिए उसी रात खास तरह के उपहार जुटा रखे थे। सोना-चाँदी के तरह-तरह के आभूषण—अंगूठी, कंगन, बाजूबन्द आदि। प्रसन्न मन से लेबेदेव एक-एक कर सबको वह उपहार देने लगे। रमणियों में से हीरामणि ने कर्णफूल, अतर ने बाजूबन्द, कुसुम ने कंगन पाये। और सबसे अन्त मे चम्पा के लिए उपहार। बक्स खोलकर लेबेदेव ने एक सोने का मटरमाला (तुलसीदाना) निकाला। चम्पा के गले में उसे डालते हुए वह बोला, "इसे लेकिन अपना रुपया देकर ही गढवाया है। यह चोरी का माल नहीं है।"

चम्पा ने मटरमाला को अपने हाथ मे छाती पर दबा लिया।

वे सभी लोग अपनी साज-सज्जा बदलने में व्यस्त हो गये थे। ऐसे समय में स्टेज के बाहरी द्वार पर कोलाहल सुनायी दिया। कोई साहब दरबान के साथ बुरी तरह उलझ रहा था। साहब सज्जा-कक्ष मे घुसना चाहता था, लेकिन वह रोक रहा था। एक कार्यकर्त्ता ने दौड़कर खबर की। लेबेदेव ने निर्देश किया कि वह पता लगाये—कौन साहब है ? क्या चाहता है वह ?

कार्यकर्त्ता ने कुछ देर बाद सूचित किया, "साहब फूलों का गुलदस्ता किसी महिला को देना चाहता है।"

"क्या नाम है ?"

"साहब का नाम मेरिसन है, महिला का नाम बताया नहीं।"

हीरामणि बोली, "अहा, आने दो, आने दो।"

मेरिसन जरा बाद ही हाजिर। चेहरे और आँखों पर उल्लास-भरा कौतू-

हल। हाथ में एक बड़ा-सा फूलों का गुलदस्ता। सज्जा-कक्ष की विचित्रता से वह कुछ स्तम्भित-सा हुआ, फिर लेबेदेव को देख सहृदयता से बोला, "कांग्रेच्यु-लेशन्स मिस्टर लेबेदेव। दि शो वाज मारवेलस !"

अपना हाथ उसने बढ़ा दिया मिलाने के लिए। लेबेदेव ने खुशी-खुशी हाथ मिलाया।

मेरिसन ने कहा, "फूलों का गुलदस्ता सजाकर आने में कुछ देर हो गयी। अपनी पसन्द के अनुसार इसे भेंट करने की तुम्हारी अनुमति क्या मुझे मिल सकती है ?"

लेबेदेव ने प्रसन्नता के साथ कहा, "अवश्य, अवश्य !"

हीरामणि उत्सुक हो उठी।

किन्तु मेरिसन ने एक बार उसकी ओर देखकर आँखें फिरा लीं। बोला, "कहाँ है वह शोख लड़की जिसका नाम सुखमय है ?"

चम्पा जरा ओट में ही थी। उसे ढूँढ़ पाते ही वह उल्लास से चीख उठा, "देयर शी इज्। डार्लिंग, दिस इज फॉर यू !"

काँपते हाथों से चम्पा ने फूलों का गुलदस्ता ले लिया।

मेरिसन अस्फुट स्वर में बोला, "यह, सिर्फ यह अपने रुपये से खरीदकर लाया हूँ। चोरी का माल नहीं।"

चम्पा आवेगवश थरथराकर काँपने लगी।

सहसा सबके सामने ही चम्पा को जकड़कर मेरिसन ने चूम लिया। चम्पा ने कोई भी बाधा नहीं दी। फूलों का गुलदस्ता उसके हाथ से पास ही गिर गया। हीरामणि और स्थिर नहीं रह पायी। धरती पर गिरे फूलों के गुलदस्ते पर बार-बार लात मारकर तेज कदमों से वह वहाँ से चली गयी।

प्रथम अभिनय की सफलता ने पूरे शहर के रसिक-समाज में तहलका मचा दिया था। दर्शकों की चर्चा से सुख्याति जनसाधारण तक फैल गयी थी। टिकट की माँग करनेवाले इतने थे कि लेबेदेव को लगा, और भी बड़ा थियेटर-भवन तैयार कर पाता तो अच्छा होता। सिर्फ तीन सौ लोग किसी तरह बैठ सकते हैं। पहली अभिनय-रात्रि में इतने दर्शक आये थे कि कई लोगों को बैठने की सुविधा नहीं मिली। इसको लेकर दबी चर्चा सुनी गयी थी। तो भी उसने जोर नहीं पकड़ा, इसलिए कि देखने-सुनने की बातें चित्त को लुभानेवाली थीं। हँसी के हिलोर में लोगों ने शारीरिक असुविधा का ख्याल ही नहीं किया। द्वितीय अभिनय के समय इस बात को दृष्टि में रखना आवश्यक हो गया। दूसरी बार लेबेदेव पूरे नाटक का अभिनय करायेगा—बंगला, मूर और अंग्रेजी भाषाओं

में। पात्रों की संख्या भी अधिक। मंच और भी लम्बा रहने पर अच्छा होता।

किन्तु और भी बड़े प्रेक्षागृह की मुख्य बाधा थी आर्थिक खींचतान। केवल निज के रुपये लगाकर और ऋण लेकर एक अच्छे थियेटर का निर्माण करना एक दुस्साध्य काम है। फिर भी उसने इस बड़ी आशा से इसमें हाथ डाला कि गवर्नर जनरल शायद उसे अंग्रेजी थियेटर की अनुमति दे देंगे। लेकिन वह अनुमति अभी तक प्राप्त नहीं हुई। लेबेदेव को मिस्टर जस्टिस हाइड से सूचना मिली कि पहली रात के अभिनय की सुख्याति गवर्नर जनरल के कान तक गयी है। किन्तु अंग्रेजी थियेटर से सम्बद्ध अनुमति के मामले में वह अभी तक कुछ तय नहीं कर पाये हैं। एक खास प्रभावशाली दल इसका विरोध कर रहा है। देखें कहाँ का पानी कहाँ पहुँचता है!

और जगन्नाथ गांगुलि का असहयोग जरा भयकारक है। लेबेदेव ने उस दिन उस बाबू को जरा कठोरता से ही गालियाँ सुनायी थी। ऐसी मीठी-कड़वी बातें पहले भी हो चुकी हैं। हाँ, जगन्नाथ गांगुलि उन सब बातों को लेता नहीं। लेकिन उस दिन उसके झूठ के पकड़ में आने के बाद से वह आया ही नहीं, लेबेदेव ने यद्यपि उसके पास निमन्त्रण-पत्र भी भेजा था। वह नालिश करने की धमकी दे गया था। सचमुच कुछ रुपये उसके बाकी हैं, लेबेदेव को भी उससे कुछ मिलने हैं। उसने मुंशी के पास से खाता मँगवाकर देखा। सच ही जगन्नाथ महाजन है। किन्तु महाजन और भी अनेक हैं। ठेकेदार, ईंट-लकड़ी पहुँचाने वाले, कपड़े के दूकानदार, स्वर्णकार—और भी कई, खासा कई हजार रुपये का ऋण। सभी लोग थियेटर की सफलता की ओर मुँह किये चुप लगाये हुए थे। दो-चार लेनदारों ने इसी बीच तकाजे शुरू कर दिये थे, किन्तु प्रथम अभिनय-रात्रि में जो आय हुई, ऋण चुकाने के लिए बिल्कुल ही पर्याप्त नहीं थी। लेबेदेव ने अलेक्जेण्डर किड, ग्रेनविल आदि साहबों को अच्छी-खासी रकम कर्ज दी थी, लेकिन कर्ज देना भी मुसीबत बुलाना है। प्रभावशाली अंग्रेज अफसर अगर सचमुच नजर बदल लें तो लेबेदेव किसके भरोसे रावर्थ के साथ संघर्ष करेगा? ऐसी अवस्था में जगन्नाथ गांगुलि का मामूली-सा ऋण एक बड़ा बोझ है।

और हृदय की आकुलता! लेबेदेव की आयु उसे सहने योग्य हो चुकी है। आयु लगभग छियालिस वर्ष, लम्बे समय तक गर्म देश में रहने से उसके चेहरे पर प्रौढ़त्व की छाप जरा जल्दी आयी थी। कान के पास बालों को सफेदी पकड़ चुकी थी। सिर के ऊपर बाल पतले हो चुके थे। कामना के प्रवाह में मन्थरता दिखायी दे रही थी। नयी तरुणाई रहने पर वह निस्सन्देह चम्पा के

साथ इतना संयत व्यवहार नहीं रख पाता। उस दिन उसकी आँखों के सामने मेरिसन ने चम्पा को चूम लिया, दस वर्ष पूर्व होता तो इस अवस्था में वह शायद प्रतिद्वन्द्वी को घूँसे मार ही बैठता।

लेकिन मिस्टर स्फिनर ने एक दिन मेरिसन को घूँसे मारे थे। रावर्थ के विफल अभियान के बाद किसी विपत्ति की आशंका से लेबेदेव ने चम्पा पर कड़ी निगरानी रखने का निर्देश स्फिनर को दिया था। तब से स्फिनर ही चम्पा को साथ ले आता और पहुँचा देता। इससे मेरिसन को चम्पा के साथ बात-चीत करने का सुयोग न मिलता। एक दिन सन्ध्या में घर के अन्दर दाखिल होते समय सहसा मेरिसन ने आकर चम्पा का हाथ पकड़ लिया। चम्पा ने एक झटके से हाथ छुड़ा लिया।

इसको लेकर स्फिनर के सामने उनमें कहा-सुनी छिड़ गयी। चम्पा बोली, "तुम बेमतलब मुझे परेशान मत करो। मुझे तुम पा नहीं सकते।"

मेरिसन ने कहा, "तो फिर फूलों का गुलदस्ता हाथ में लेकर मुझे चुम्बन क्यों दिया तूने ?"

"वह मेरी मर्जी !" कहकर चम्पा तेजी से घर के दरवाजे में घुसने लगी।

मेरिसन ने उसे बाधा दी।

चम्पा बिगड़कर बोल उठी, "मिस्टर स्फिनर, तुम इस जान खा रहे आदमी को संभालो !"

दूसरे ही क्षण स्फिनर उन दोनों के बीच आकर खड़ा हो गया। मेरिसन घृणा से मुँह बिचकाकर बोला, "क्या एक चिचि से मेरा अपमान कराना चाहती है ?"

'चिचि' हुआ ईस्ट इंडियन, अर्थात् दोगली जाति के सम्बन्ध में एक अपमान-जनक शब्द।

चिचि शब्द सुनकर स्फिनर के माथे पर आग चढ़ गयी, वह अपने को संयत नहीं रख पाया। मेरिसन को तड़ाक से एक घूँसा मारते हुए बोला, "टेक दिस यू ब्लडी लैंड आफ ए चिचि !"

मेरिसन भी छोड़नेवाला जीव नहीं। दोनों के बीच भारी मुष्टियुद्ध शुरू हुआ। रास्ते पर भीड़ जमा हो गयी। राहगीरों की सहानुभूति स्फिनर पर थी। एक मामूली फिरंगी एक साहब के साथ मारा-मारी कर रहा था। उसी दृश्य का उस झुटपुटे में वे मजा ले रहे थे। जीतता अन्त में मेरिसन ही अगर फिरंगी को पस्त होते देख पास के दो लोग बलपूर्वक उन्हें छुड़ा न देते।

संकट देखकर चम्पा कब घर में जा घुसी थी, इसका ख्याल ही योद्धाओं

को नहीं हुआ।

स्फिनर ने इस घटना का विवरण देते हुए कहा, "वेल, मिस्टर लेबेदेव, पता है क्यों मिस चम्पा ने मिस्टर मेरिसन को घर में घुसने दिया ?"

"क्या जानूं ? नारी के मन को समझना कठिन है।"

चम्पा ने खुद ही अपने मन की बात खोलकर बतायी। घटना इस प्रकार थी : कई दिनों के विश्राम के बाद फिर रिहर्सल के लिए जमात जुटी थी। प्रथम अभिनय-रात्रि के बाद यह पहला जमाव था। ज्यादा देर वे गपशप ही करते रहे। लेबेदेव अपने आफिसवाले कमरे में खजांची के साथ बैठकर लेनदारों से निबट रहा था। देनदारी अधिक। धीरे-धीरे चुकायी जा रही थी। इधर द्वितीय अभिनय-रात्रि के लिए फिर तैयारी होनी है। इस बार का पूरा नाटक मोहनचन्द्र बाबू के छद्मवेश में सुखमय-रूपी चम्पा के द्वारा ही शुरू होगा। बँगला, मूर और अंग्रेजी भाषाओं का मिला-जुला अभिनय। अभ्यास-रिहर्सल खूब अच्छा ही कराना होगा। लगातार नियमित अभिनय नहीं होने पर ख्याति मलिन पड़ जायेगी। ऐसे ही समय, बिना कोई अनुमति लिये, मेरिसन सीधे आफिस के कमरे में आ घुसा।

"मिस्टर लेबेदेव," मेरिसन स्वाभाविक स्वर में बोला, "अपने खजांची से जाने को कहो, मुझे कुछ गोपनीय बातें कहनी है।"

खजांची चला गया।

"लुक, मिस्टर लेबेदेव," मेरिसन ने कहा, "तुम एक यूरोपीय हो, मैं भी एक यूरोपीय, तुम इस तरह काले आदमियों के सामने मुझे क्यों अपमानित करवाते हो ?"

"मैं अपमान करवाता हूं ?"

"तो क्या, नहीं ? तुम्हारा बढ़ावा नहीं रहे तो क्या वह काली छोकरी मुझे दुत्कार देने का साहस कर सकती है ? तुम पीछे नहीं रहो तो क्या वह कमबख्त चिचि मुझ पर हाथ छोड़ने की हिमाकत कर सकता है ?"

"विश्वास करो, मैं इन सबके पीछे नहीं। मैं थियेटर करता और कराता हूँ। मैं इश्क का सौदागर नहीं हूँ। लेकिन तुम इतनी स्त्रियों के रहते उस अधमैली स्त्री के पीछे क्यों फिर रहे हो ?"

"वही तो समझ नहीं पाता। उस ब्लैक छोकरी में एक ऐसा आकर्षण है जिसे मैं व्यक्त नहीं कर सकता। कितनी ही स्त्रियों का साथ किया, किन्तु उसके साथ के लिए छटपटाता रहता हूँ। सच बताओ तो, तुमने उसके साथ रात बितायी है ?"

"नहीं।"

"लो देखो, जरूर वह तुम्हें नाक में रस्सी देकर नचाती है।"

"किसने कहा ? मुझे क्या दूसरे काम नहीं ?"

"दूसरे सारे काम भूल जाओगे अगर उसके सहवास का स्वाद एक बार पा लो। नहीं पाया ?"

"कहता तो हूँ, नहीं।"

"बरजोरी से भी नहीं ?"

"नहीं, मैं जानता हूँ कि वह तुम्हें चाहती है।"

"सच ?"

"हाँ, मुझसे अनेक बार उसने कहा है।"

"सरासर झूठी बात।"

"हो सकता है। उससे पूछो।"

"कैसे पूछूं ? मुझे तो वह पास ही नहीं फटकने देती।"

"मैं बुलाता हूँ, मेरे सामने पूछो।"

"तुम बुलाओगे ? बुलाओ।"

लेबेदेव ने सेवक को बुलाया, कहा, "मिस चम्पा से कहो, साहब ने सलाम भेजा है।"

'जो हुक्म' कहकर सेवक चला गया। मेरिसन प्रतीक्षा में छटपट करने लगा।

कुछ ही देर में चम्पा आयी। मेरिसन को देखने पर उसके मुख से किसी भी तरह का भाव परिलक्षित नहीं हुआ।

"मिस चम्पावती," लेबेदेव ने कहा, "मिस्टर मेरिसन तुम्हारे साथ बात करना चाहते हैं। गोपनीय बात, मैं बगलवाले कमरे में जाता हूँ।"

"नहीं साहब," चम्पा बोली, "तुम रहो।"

एक विचित्र भावबोध ! दोनों एक ही नारी से याचना करते हैं, एक मूक-भाव से और दूसरा प्रकटतः। वह दुर्ज्ञेया नारी क्या आज उत्तर देगी ?

मेरिसन का रूप नये प्रेमी-सा है। आवेगरुद्ध कण्ठ, अस्फुट स्वर में उसने कहा, "चम्पा, माइ स्वीटी, तू जानती है कितना चाहता हूँ मैं तुझे ! तब भी तू क्यों मुझे ठुकरा देती है ? सचमुच मैंने तुझ पर अन्याय किया है। तुझसे क्षमा चाहता हूँ। तुझे पाये बिना मैं झुलसता रहता हूँ। इतनी स्त्रियों के साथ मैं मेलजोल रखता हूँ, लेकिन तेरा अभाव मैं किसी भी तरह भुला नहीं पाता। चम्पा, माइ डार्लिंग, क्यों तू मुझे अपने पास नहीं आने देती ?"

मेरिसन की बातों में आन्तरिकता की ध्वनि थी। उसने चम्पा का हाथ पकड़ लिया, किन्तु वह जड़ प्रतिमा की तरह खड़ी रही, कुछ भी उत्तर नही दिया।

मेरिसन कहता गया, "जानती है, तेरे कारण पत्नी के साथ मेरी बनती भी नहीं! तेरे लिए मैं अपनी पत्नी को छोड़ बैठा हूँ। बोल, तुझे फिर कब पाऊँगा?"

चम्पा अपना हाथ छुड़ाते हुए घूमकर खड़ी हो गयी, बोली, "मिस्टर राबर्ट मेरिसन, तुम मुझे उसी दिन पाओगे जिस दिन गिरजाघर में धर्मपत्नी के रूप मे मुझे स्वीकार करोगे।"

चम्पा की इस निष्कम्प वाणी ने कमरे की नीरवता को खण्ड-खण्ड कर दिया। जिस दिन तुम गिरजाघर में धर्मपत्नी के रूप में मुझे स्वीकार करोगे! धर्मपत्नी के रूप में स्वीकार करोगे! धर्मपत्नी के रूप मे स्वीकार करोगे!

"असम्भव," मेरिसन ने कहा, "यह असम्भव शर्त है। अपनी पत्नी के रहते मैं कैसे तुझे धर्मपत्नी के रूप मे स्वीकार करूँ?"

"मेरी सिर्फ यही एक शर्त है।"

"चम्पा, डियरेस्ट हार्ट, तू अनजान मत बन। जानती है तू कि मैं हिन्दू नहीं, मैं हिन्दू पुरुषों की तरह पचास-साठ शादियाँ नही कर सकता।"

"लेकिन अनेक रखैलें रख सकते हो तुम लोग, और रखैल बनने की मेरी साध नहीं। बॉब मेरिसन, अब साध तुम्हारी धर्मपत्नी होने की है।"

"चम्पा डार्लिंग, मैंने क्या तुझे कुछ नहीं दिया? प्रणय-सुख नहीं दिया, आनन्द नहीं दिया, पुत्र के रूप में सन्तान नहीं दी?"

"हाँ, दी है" चम्पा रुद्ध कण्ठ से बोली, "लेकिन जारज सन्तान दी है। अपमान और अपवाद दिया है, अवज्ञा, लाछना और सजा दी है।"

चम्पा ने हठात् अपनी पीठ पर से कपड़ा हटा दिया और नंगी पीठ को मेरिसन की ओर कर दिया। उसकी कोमल पीठ पर लम्बे-लम्बे क्षत-चिह्न विचित्र लग रहे थे।

चम्पा बोली, "बॉब साहब, तुम जब इन क्षत-चिह्नों को हाथ से सहलाओगे तो मेरा सारा शरीर ज्वाला से झुलसा करेगा, तब तक जब तक कि मैं तुम्हारी रखैल रहूँगी। वह ज्वाला तभी शान्त होगी जब मैं तुम्हारी धर्मपत्नी बनूँगी।"

चम्पा धीरे-धीरे किन्तु दृढ कदमों से वहाँ से चली गयी, अवाक् मेरिसन विस्मय के साथ उसके जाने के पथ को निहारता रहा।

उसके बाद बोला, "विच्! समझता हूँ मैं, मिस्टर लेबेदेव, क्या तुम्हीं ने इस औरत का माथा खराब कर रखा है? मैं अपनी गोरी पत्नी को डाइवोर्स

करके इस काली औरत से व्याह करूँगा ? समाज में मुंह कैसे दिखाऊँगा ?"

मेरिसन गुस्से में बाहर चला गया।

आठ

सन् १७९५ का क्रिसमस आ गया। कलकत्ता शहर के साहबों के समाज में महोत्सव है। गिरजाघर में प्रार्थना के लिए आम तौर पर आधा दर्जन पालकियाँ भी नहीं हाजिर होतीं, किन्तु क्रिसमस का उत्सव धूमधाम से होता है। यहाँ पर देशी प्रभाव पड़ा है। साहबों के घरों के फाटक पर दोनों तरफ केले के पौधे गाड़े जाते हैं, फूलों और पत्तों से फाटक को अच्छी तरह सजाया जाता है। बड़े लाट जाने-माने लोगों को प्रातःकालीन नाश्ते पर आमन्त्रित करते हैं। लालदीघी से दनादन तोप दागे जाते हैं। दोपहर में शानदार भोज। लम्बे पात्रों में लाल मदिरा ढाल-ढालकर सभी लोग पूरे वर्ष-भर का दुःख-शोक धो डालते हैं। सन्ध्या से लेकर सारी रात चलता है नाच-गान।

लालदीघी के कमान ने सुबह से ही अनेक तोप दागे। उसके धमाके की आवाज ने कलकत्ता शहर को एक छोर से दूसरे छोर तक कँपा दिया। सुबह से ही लेबेदेव ने भेंट की अनेक डालियाँ दीं और लीं। उपहारों का पारस्परिक लेन-देन उत्सव का अंग है। प्रभावशाली अंग्रेजों के यहाँ लेबेदेव ने डालियाँ भेजीं। फल-फूल, भाँति-भाँति की मदिराएँ। मिस्टर और मिसेज हे की डाली विशेष रूप से दर्शनीय थी। मिस्टर हे अंग्रेजी सरकार के एक प्रमुख सचिव हैं। मिसेज एलिजाबेथ हे संगीतरसिक है। उनके यहाँ से एक गुप्त लिखित सन्देश आया—"मित्र, हताश नहीं होना, आवेदनपत्र अभी तक अस्वीकृत नहीं हुआ है।"

बड़े लाट सर जान शोर के पास अंग्रेजी थियेटर की मंजूरी के लिए लेबेदेव ने जो आवेदन किया था, वह अभी तक मंजूर या नामंजूर नहीं हुआ है। लेबेदेव के दिल में आशा बँधी।

नववर्ष का नूतन उपहार आया—गवर्नर जनरल की अनुमति। महामहिम सर जान शोर ने प्रसन्न मन से अनुमति दी है कि गेरासिम लेबेदेव कलकत्ता शहर में अंग्रेजी नाटक का अभिनय करा सकते हैं।

कलकत्ता शहर में गेरासिम लेबेदेव अंग्रेजी थियेटर खोलेगा! सुनो स्विज,

सुनो जोमफ बॅटल्, तुम लोगों के- जी-तोड बाधा डालने पर भी तुम्हारे ही प्रधान शासक ने एक विदेशी रूसी को तुम लोगों की भाषा में नाटक खेलने की अनुमति दी है। जो बंगाली अभिनेता-अभिनेत्रियों के द्वारा बँगला भाषा में अभिनय कराकर नाटक को जमा सकता है, वही विदेशी अब अंग्रेजी नाटक में कलकत्ता शहर के यूरोपीय समाज को मात कर देगा।

उत्सव मनाओ, उत्सव। लेबेदेव का मन खुशी से लबालब है। बात-की-बात में उसने किरानी को बुलाकर हुक्म दिया—"भागीरथी में नौका-विहार की व्यवस्था करो, इसी समय!"

बात-की-बात में पाँच-छ: बजरे भाड़े पर ले लिये गये। शीतकालीन हवा में विचित्र निशान फहरा उठे। प्रत्येक को फूलों और लता-पत्रों से सजाया गया। बजरे की छत पर मेज-कुर्सियों की कतारें लगायी गयीं। एक बजरे पर स्वयं लेबेदेव और उसकी मुख्य सहचरियाँ। तीन बजरों पर वादक-दल—गंगा के वक्ष को गीतवाद्य से मुखरित करने के लिए। दो बजरों पर भोजन-पान की सामग्री लेकर सेवकगण रहेंगे। लेकिन इस आनन्दोत्सव में गोलोकनाथ दास ने योग नहीं दिया। अंग्रेजी थियेटर के बारे में वह बाबू उदासीन है, इसीलिए शायद इस उत्सव में उसका उत्साह नहीं। और, योग नहीं दिया चम्पा ने। वह बोली कि उत्सव का समय लम्बा है। उतनी देर तक शिशु पुत्र को घर में छोड़े रखना उसके लिए सम्भव नहीं। सन्ध्या के आनन्दोत्सव में चम्पा की अनुपस्थिति लेबेदेव के मन को बार-बार खटकती रही। तो भी कुसुम, हीरामणि, सौदामिनी आदि के सान्निध्य, बातचीत, हास्यगान, चुहलबाजी ने नौका-विहार को जमा दिया।

सूर्य अस्त हुआ। कागज से बने रंगबिरंगे चीनी फानूसों की कतारों में मशालची ने मोमबत्तियाँ जला दीं, अन्धकार में गंगा के वक्ष पर वे खूब सुन्दर लग रही थीं। तटवर्ती पालवाले जहाजों पर भी प्रदीपमालाएँ थीं। कुहासे के बीच होकर तैरता आ रहा था मधुर वाद्यस्वर।

थोड़ी देर बाद कुसुम बोली, "माथा भारी है। मैं जरा नीचे के कमरे में जाती हूँ।"

वह चली गयी, काफी देर होने पर भी आयी नहीं। किसी ने कहा, "विद्या-सुन्दर का गान होता तो ठीक था।"

"मिस कुसुम, मिस कुसुम!" वे लोग आवाज देने लगे।

कोई भी संकेत नहीं मिला। हीरामणि बोली, "कुसुम जरूर सो गयी है।"

लेबेदेव प्रसन्न मन से बोला, "ठहरो, उसे मैं गोद में उठा ले आता हूँ!"

हीरामणि ने नशे के झोंक में कोई अश्लील बात कह दी।

लेबेदेव बजरे के कमरे में गया, खूब सुसज्जित कमरा। गद्दीदार बिछी फर्श, तकिये पर माथा रखे शिथिल पड़ी हुई थी कुसुम। अस्तव्यस्त वेश। मोमबत्ती के आलोक में अस्पष्ट शरीर और भी रमणीय हो उठा था। लेबेदेव को चम्पा की याद आयी। जाने दो उसे।

"कुसुम," निद्रिता का हाथ पकड़कर लेबेदेव ने पुकारा, "कुसुम, उठो।"

कुसुम ने ताका, लेबेदेव को देखकर उसने उठने की चेष्टा नहीं की, बोली, "बैठो।"

लेबेदेव बैठ गया, बोला, "क्या तुम्हारी तबीयत बहुत खराब है ?"

"शरीर नहीं, मन।" कुसुम बोली।

"आज आनन्द के दिन मन खराब ! क्यों, क्यों ?"

"तुम लोगों को छोड़कर जाना होगा, इसलिए।"

"इसका मतलब ?"

"जगन्नाथ गांगुलि अब और तुम लोगों के पास आने नहीं देगा।"

"जगन्नाथ गांगुलि के साथ तुम्हारा क्या सम्बन्ध है ? उसकी बात ही तुम क्यों सुनोगी ?"

"मैं उसकी रखैल हूँ।"

"कब से ?"

"उसी दुर्गापूजोत्सववाले बहू-नाच के बाद से। मेरे लिए उसने शोभाबाजार में एक घर भाड़े पर ले रखा है। खूब खर्च करता है। सिर्फ नाचने-गाने और अजाने-अचीन्हे लोगों के साथ रहना अच्छा नहीं लगता। उम्र बीतती जा रही, मन कुछ स्थिरता चाहता है। साहब, तुम तो मुझे रख ही सकते थे !"

लेबेदेव बोला, "मुझे कौन रखे, इसका ठिकाना नहीं !"

"जानती हूँ, तुम्हारा मन चम्पा की ओर है। लेकिन वह बड़ी तेज औरत है, उसे तुम नहीं पा सकते। उसका मन मेरिसन पर टिका है।"

लेबेदेव ने प्रसंग को बदलने के लिए कहा, "तो क्या तुम सचमुच हमारे दल को छोड़ जाओगी ?"

"जाने की इच्छा नहीं" कुसुम बोली, "इसको लेकर बाबू से झगड़ा होता है। लगता है अन्त में जाना ही होगा। सिर्फ एक बात कहे जाती हूँ, तुम आदमी अच्छे हो किन्तु चालाक नहीं हो। वही अंग्रेजी थियेटरवाले इस बार तुम्हारे साथ जोर आजमा रहे हैं। बातों ही बातों में बाबू से यह खबर जान ली है। ठेकेदारी के लोभ से बाबू उन लोगों के साथ जा चिपका है, सावधान !"

किस तरफ से सावधान रहे, लेबेदेव कुछ भी समझ नहीं पाया। यही कि रावर्थ का दल लाल-पीला होगा। और दल को तोड़ने की चेष्टा को छोड़ और कुछ भी नहीं करेगा। कुसुम शायद चली जायेगी। गोलोकनाथ दास के साथ इस विषय पर चर्चा हुई थी। कुसुम के जाने को लेकर उतनी चिन्ता नहीं। ऐसी गायिका को खोज निकालना उतना कठिन नहीं जो विद्यासुन्दर का गान गा सके। अभिनेता भी सम्भवतः मिल जायेंगे। किन्तु अभिनेत्रियों को नये सिरे से सिखा-पढा लेना मुश्किल है। लेबेदेव ने रिफनर से चम्पा पर कड़ी निगाह रखने को कह दिया।

इधर अंग्रेजी थियेटर के लिए तैयारी करनी पड़ी थी। नये-नये अभिनेताओं और अभिनेत्रियों की तलाश हुई। यहाँ भी वही समस्या। अभिनेता मिलते हैं, अभिनेत्री नदारद। सेल्वी नाम के एक अंग्रेज तरुण ने दल में भाग लिया। तरुण की बातचीत अच्छी। अभिनय करने की धुन सवार है उस पर। एक-दो बार शौकिया अभिनय किया था। माँग भी कोई विशेष नहीं। जो लेबेदेव देगा उसीमें सन्तुष्ट। नीलाम्बर वैण्डो तो बेहद खुश है, अंग्रेजी थियेटर में उसको बेयरा-खानसामा का पार्ट देने पर भी वह हँसते-हँसते काम करेगा। उसने फिर कहा, "नेकी-नेकी ब्लैकी गर्ल के साथ अभिनय में मजा नहीं, मोम-जैसी मेम रहे तो अभिनय में सुविधा हो।"

रुपया चाहिए, आदमी चाहिए। कलकत्ता थियेटर के साथ होड़ लेना लड़कों का खेल तो नहीं। बँगला थियेटर में नवीनता की रौनक है। थोड़ी-बहुत कसर रह जाने पर भी लोग त्रुटियों का ख्याल नहीं करते। लेकिन अंग्रेजी थियेटर का मानदण्ड बहुत ऊँचा है। कलकत्ता थियेटर से अच्छा कर दिखाना चाहिए। रुपया चाहिए, आदमी चाहिए। रुपया चाहिए, आदमी चाहिए।

लेबेदेव ने द्वितीय अभिनय-रात्रि निश्चित कर दी। मार्च १७९६। उस बार दर्शकों की बड़ी भीड़ थी। इससे बहुत-से लोगों को असुविधा हुई थी। इसीलिए इस बार उसने टिकट बेचने की व्यवस्था बदल डाली। थियेटर-भवन में सीधे टिकट बिक्री न कर उसने अग्रिम चन्दे उगाहने की प्रथा चालू की। टिकट का मूल्य भी इस बार बढा दिया। चार रुपये और आठ रुपये न करके सारे टिकट के शुल्क की दर एक मोहर कर दी अर्थात् सोलह रुपये। दर्शक-सीटों में भी उसने कमी कर दी। इस बार सिर्फ दो सौ व्यक्तियों के लिए व्यवस्था, किन्तु प्रसन्नता की बात यह कि देखते-देखते नाट्यरसिक लोग शुल्क भेज-भेजकर टिकटें ले जाने लगे। केवल एक दिन कलकत्ता गजट में विज्ञापन निकला। बात-की-बात में सारे टिकट खत्म हो गये। इतने जनसमादर से उसका

लेबेदेव को

वेहद उल्लसित होना स्वाभाविक था।

लेकिन विना मेघ के ही वज्रपात।

द्वितीय प्रदर्शन के एक दिन पहले सन्ध्या समय वँगला थियेटर रिहर्सल जोरों से चल रहा था। कुसुम थी, चम्पा थी, हीरामणि, सौदामिनी, नीलाम्वर और सभी अभिनेता-अभिनेत्री थे। अच्छा आनन्दमय वातावरण था। ऐसे ही समय मिस्टर डिसूजा, चम्पा का पड़ोसी, जो संवाद लेकर आया उससे सभी स्तम्भित हो उठे।

डिसूजा ने उत्तेजित अवस्था में जो सूचना दी उसका आशय यह था :

सन्ध्या के कुछ ही वाद एक हिन्दुस्तानी ने दरवाजे की साँकल खटखटायी। एक चिराग लिये डिसूजा ने दरवाजा खोल दिया। साथ-ही-साथ माथे पर एक भारी वस्तु के आघात से डिसूजा चित हो गया।

जव होश आया तो आँख खोलकर उसने देखा कि उसकी पत्नी उत्सुक आँखों से चेहरे को निहार रही है। उसके माथे पर गीली पट्टी। दासी ताड़ के पत्ते के पंखे से हवा कर रही थी। लालटेन लिये और भी अनेक पड़ोसी। उस तरफ शोरगुल शुरू हो गया था। वातें तैरते-तैरते कानों में आ रही थीं—चोर, डाकू भाग गया।

डिसूजा कुछ स्वस्थ हो उठ वैठा, "क्या वात है ?" मिसेज ने कहा, "भयंकर काण्ड ! चार-पाँच लोग डिसूजा को वेहोश कर सीधे ऊपर चले गये थे, मिस चम्पावती के घर में। ऊपर पैरों की धम-धम आवाज सुनकर मिसेज डिसूजा को आशंका हुई। उठकर वाहर आते ही अचेत डिसूजा को देखा। मिसेज तो भय से चीखने लगी। चीख सुनकर मुहल्ले के लोगों ने हल्ला मचाया, उसी वीच वे लोग दौड़कर नीचे उतर आये। काले-काले सपाट चेहरे, कौपीन के अलावा शरीर पर वस्त्र का एक टुकड़ा तक नहीं। आधे अंधेरे में वे पहचाने नहीं जा सके, सिर्फ उनकी नग्नप्राय देह चिपचिपाती हुई लगी। दो-एक के हाथ में गठरियाँ थीं। पड़ोसी उन्हें पकड़ने के लिए लपके थे, किन्तु उन आगन्तुकों ने सारे शरीर पर तेल मल रखा था। वे फिसलकर भाग गये, गली के मोड़ पर अन्धकार में खो गये।

डिसूजा चलकर ऊपर गया। साथ में मिसेज और कुछ जिज्ञासु पड़ोसी थे। ऊपर जाकर उन्होंने वीभत्स काण्ड देखा। आततायियों ने चम्पा की वूढ़ी दाई-माँ को वेहोश करके मुख-हाथ-पैर वाँधकर छोड़ दिया था। घर-द्वार अस्तव्यस्त। थोड़े ही समय में वे लोग सारे साज-सामान उलट-पुलट गये हैं; कीमती चीजें जो जैसी थीं सव ले गये हैं।

चम्पा ने आशंकित हो पूछा, "मेरा बच्चा ?"

"नहीं है।"

"बच्चा नहीं है ?"

"वे लोग उसे भी चुरा ले गये हैं।"

"मेरा बच्चा नहीं है !" चम्पा आर्त्तस्वर में चीख उठी। दूसरे ही क्षण वह संज्ञा खो बैठी।

समय नष्ट करने का नहीं। मूर्छिता की देखरेख की व्यवस्था करके लेबेदेव उसी क्षण डिसूजा, स्किनर और गोलोकनाथ दास को साथ लेकर चम्पा के घर की तरफ निकला। बग्घीगाड़ी पर लदकर उसी मलंगा की ओर हाँका। मशालची मशाल लेकर साथ-साथ दौड़ नहीं पा रहा था। जब वे मलंगा आये तो देखा, गली में भीड़ उस समय भी लगी हुई है। थाने से एक पुलिसमैन और एक अफसर आये थे, पूछताछ करने और तलाशी लेने के बाद चले गये।

डिसूजा ने जो विवरण दिया था, चम्पा के घर की हालत ठीक वैसी ही थी। बक्स-पिटारे टूटे हुए, कुर्सी-बेंच उलटे-पुलटे पड़े हुए। बिछावन की चादर छिन्न-विच्छिन्न, चारों तरफ गड्ड-मड्ड। शिशु की शय्या पर शिशु नहीं, सिर्फ पालतू काकातूआ चीख रहा था—'वेलकम।' और उसके साथ-साथ स्वर मिलाकर बूढ़ी दाई मेरिसिन को अनाप-शनाप कोसे जा रही थी।

गोलोक दास ने कहा, "थाने पर जाने से पहले मेरिसिन की खबर लेना ठीक होगा।"

लेबेदेव बोला, "वही अच्छा, वह आदमी तो धमकी दे ही गया था कि बच्चे को उठा ले जायेगा। हो सकता है उसी के घर में बच्चा हो।"

स्किनर और डिसूजा वहीं उतर गये, गोलोक दास चम्पा को धीरज बँधाने के लिए थियेटर को लौट गया। लेबेदेव बग्घी को हाँककर बैठकखाने की तरफ ले गया। मेरिसिन का घर ढूँढ़ने में कुछ असुविधा हुई। घर अगर मिला भी तो पता चला कि दरवाजा खुलना ही मुश्किल है। उस इलाके में डाकुओं का भय है। देर तक आवाज लगाने पर लकड़ी के फाटक की एक फाँक से एक नौकर ने कहा कि साहब घर में नहीं है।

आगन्तुक लेबेदेव को विश्वास नहीं हुआ। उसने कहा, "मेम साहब हैं ? उन्हें सलाम बोलो, गेरासिम लेबेदेव मिलना चाहता है।"

बहुत देर की प्रतीक्षा से ऊबकर वह अस्थिर हो उठा। यह देरी बहुत ही सन्देहजनक है। फिर आवाज लगाने पर नौकर ने इस बार फाटक खोला, लेबेदेव ने मेरिसिन के घर में प्रवेश किया। नौकर उसको बैठकखाने में ले गया।

जरा देर बाद ही मिसेज मेरिसन आयी, मोमबत्ती के प्रकाश में दिखायी पड़ा—उसके स्वास्थ्य में कुछ सुधार हुआ है।

"क्या बात है? इतनी रात को?" मिसेज मेरिसन ने जानना चाहा।

"मिस्टर मेरिसन कहाँ है?" लेबेदेव ने पूछा।

"पता नहीं।"

"इसका मतलब?" लेबेदेव को उत्सुकता हुई।

"मेरिसन ने तो कुछ दिनों से घर आना प्रायः छोड़ ही दिया है।" मिसेज मेरिसन ने कहा, "मैं उसे उस डाइन के चंगुल से छुड़ा नहीं पायी। आप भी नहीं।"

"मिस्टर मेरिसन रहता कहाँ है?"

"पता नहीं। जॉन, तुम जानते हो वॉब कहाँ रहता है?"

"जॉन नाम का साहब बगल के कमरे से आकर बोला, "कसाईटोला के रोजवड् टैवर्न में। बिल्कुल ही विकट बदनाम जगह, कोई भी भद्र पुरुष वहाँ नहीं रह सकता।"

प्रौढ़ और भारी-भरकम जॉन, चेहरा दपदप लाल। मिसेज मेरिसन ने कहा, "मिस्टर लेबेदेव, तुम्हारे साथ डाक्टर जॉन ह्विटनी का परिचय करा दूं। पटना में डाक्टरी करते थे। गर्मी बरदाश्त नहीं कर पाये। कलकत्ता भाग आये। एक पार्टी में भेंट हो गयी। इन्होंने ही मेरी जीवनरक्षा की है। इनकी चिकित्सा से अब मैं काफी अच्छी हो गयी हूँ।"

लेबेदेव बोला, "मिलकर प्रसन्न हुआ। आपका चेम्बर कहाँ पर है?"

डाक्टर ह्विटनी ने कहा, "अभी तक चेम्बर लगाने के लिए सुविधाजनक घर मिला नहीं है। अभी मिसेज मेरिसन के ही घर में हूँ।"

शिष्टाचार की बातों के लिए यह समय नहीं। लेबेदेव ने उन लोगों से विदा ली, बग्घी लेकर कसाईटोला के रोजवड् टैवर्न की खोज में निकला।

रात्रि के अन्धकार में भी रोजवड् टैवर्न को ढूंढ़ निकालने में असुविधा नहीं हुई। उस इलाके की प्रसिद्ध जगह है। डाक्टर ह्विटनी ने ठीक ही कहा था, विकट बदनाम जगह। देश-देश के नाविकों की वहाँ भीड़ लगी रहती है। टूटी-फूटी मेज-कुर्सियाँ, सस्ती देशी मदिरा की बार। निम्न वर्ग की कृष्णकाया वारांगनाएँ, मत्त पियक्कड़ों की चीख-पुकारें, गन्दी गाली-गलौज, जल्दबाजों का हो-हुल्लड़—इन सबने परिवेश को नारकीय बना डाला था।

मेरिसन मिल गया। कोने की ओर एक मेज पर एक बोतल से देशी शराब पीते-पीते वह नशे में बुत्त होकर बैठा था। नशे की झोंक में वह लेबेदेव को

पहचान ही नहीं पाया। काफी देर तक आवाज लगाने का भी कोई नतीजा नही निकला तो टैवर्न के एक छोकरे ने नशा टूटने की एक सहज व्यवस्था कर दी। हाथ के पास एक गिलास में गन्दा पानी था। उसी को मेरिसन के माथे पर उँड़ेल दिया। खूब गाली-गलौज करने के बाद उसका नशा कुछ फीका पड़ा। अबकी वह लेबेदेव को पहचान पाया। उसने हार्दिकता से स्वागत किया, उसकी पीठ पर धौल जमाते हुए वही देशी मदिरा पीने का आह्वान किया। लेबेदेव ने औपचारिकता निभाते हुए सीधे प्रश्न किया, "मिस्टर मेरिसन, तुमने अपने बच्चे को कहाँ खिसका दिया है ?"

प्रश्न का अर्थ समझने में मेरिसन को कुछ वक्त लगा। उसने सन्दिग्ध भाव से पूछा, "मैंने ? अपने बच्चे को खिसका दिया है ? तुम क्या कहते हो मिस्टर लेबेदेव ?"

लेबेदेव ने संक्षेप में शाम की घटना को स्पष्ट किया। मेरिसन का नशा तब तक टूट चुका था। वह आशंकित होकर बोला, "कैसा सर्वनाश ! किस कुत्ते की औलाद ने मेरे डार्लिंग ब्वाय को चुरा लिया ?"

लेबेदेव ने पूछा, "क्या तुम कहना चाहते हो कि तुम अपने बच्चे को नहीं उठा लाये हो ?"

"ईश्वर की दुहाई," मेरिसन ने कहा, "मैं इसके बारे में कुछ भी नहीं जानता। आवेश में एक दिन कहा था कि लड़के को उठा लाऊँगा, किन्तु माँ की गोद छुड़ाकर उसको रखूँगा ही कहाँ ? देखते हो कि मेरा खुद ही अपना ठिकाना नही, इस नरककुण्ड मे पड़ा हुआ हूँ।"

"क्यो पड़े हुए हो ?" लेबेदेव ने जिज्ञासा की, "बैठकखाना में तुम्हारा वैसा घर है।"

"मेरी पत्नी का घर," मेरिसन ने कहा, "बहुत दिन हुए, वह घर छोड़ आया हूँ।"

"वहाँ जाते नही ?"

"नही, वह असह्य लगता है। इसीलिए इस नरककुण्ड मे पड़ा हुआ हूँ। देशी मदिरा निगलता हूँ और अपनी काली होर् का सपना देखता हूँ।"

"लेकिन तुम्हारे बच्चे की खोज के बारे में क्या होगा ?"

"वही तो," सोच लेने के बाद मेरिसन बोला, "चलो, थाने पर चलें।"

थोड़ी ही देर में दोनों जने थाना आये। उन लोगों की सारी बातें सुनकर दारोगा शिकायत दर्ज करने को तैयार नही हुआ। साफ-साफ बोला, "चोर को पकड़ ले आने पर हम सजा देते हैं, लेकिन हमारे द्वारा चोर को पकड़ना

सम्भव नहीं। कलकत्ता शहर में इस तरह की घटनाएँ हमेशा होती ही रहती हैं। कुछ दिन पहले ही चौरंगी-जैसी जगह से चार आदमियों ने एक मुसलमान के घर पर हमला बोलकर नारी का अपहरण किया।"

मेरिसन के जोर देने पर दारोगा ने कहा, "आप लोगों को किस पर सन्देह होता है?"

लेबेदेव मृदु स्वर में बोला, "कलकत्ता थियेटर के मालिक मिस्टर टामस रावर्थ पर।"

दारोगा चमक उठा, कहा, "आप पागल हो गये हैं? वह एक गण्यमान्य व्यक्ति हैं, वह एक बच्चे को चुराने जायेंगे? लगता है आप लोगों ने मदिरा की मात्रा बहुत ज्यादा ले ली है।"

"आप विश्वास नहीं करना चाहते तो नहीं करें," लेबेदेव ने कहा, "मैं अपने ढंग से सन्देह का कारण बताता हूँ। अपहृत शिशु की माँ मेरे बँगला थियेटर की अभिनेत्री है। कुछ दिन पहले मिस्टर रावर्थ ने मिस चम्पावती से अनुरोध किया था कि मेरे थियेटर से वह सम्बन्ध तोड़ ले। मिस चम्पावती राजी नहीं हुई। मिस्टर रावर्थ उसको धमकी दे आये कि उसे अच्छा सबक सिखायेंगे। कल ही सन्ध्या समय मेरे थियेटर की द्वितीय अभिनय-रात्रि का आयोजन है। इतने दिन रहते आज ही सन्ध्या में शिशु की चोरी हो गयी, इतने शिशुओं के रहते चुन-छाँटकर चम्पावती का ही शिशु चोरी चला गया। सन्देह का यह कारण क्या तर्कसंगत नहीं?"

"आपने जो कहा, वह हो सकता है," दारोगा ने कहा, "मैं उससे भी बड़े सन्देहजनक पात्र को जानता हूँ।"

"कौन? कौन?"

"हमारे सामने बैठे हुए हैं, यही मिस्टर मेरिसन।"

मेरिसन ने प्रतिवाद किया, "आप कहना चाहते हैं कि मैंने अपने बच्चे की चोरी की है?"

"ठीक यही," दारोगा बोला, "इन्स्पेक्टर पड़ोसियों से सुन आया है। अपनी स्त्री के साथ आपकी बनती भी नहीं, उसे सजा देने के लिए आपने बच्चे को उड़ा लिया है। बच्चे की माँ अगर नालिश करे तो मैं आपको इसी समय गिरफ्तार कर सकता हूँ। अभी अच्छे-भले खिसक जाइए।"

हताश होकर वे लोग थाने से चले आये, पुलिस की कोई सहायता उपलब्ध नहीं हुई। बल्कि व्यर्थ ही उधर से विपत्ति की आशंका थी।

अन्तिम चेष्टा के रूप में लेबेदेव ने कहा, "चलो, सीधे रावर्थ को जा पकड़ते

हैं। उसकी खुशामद करके बच्चे का उद्धार करें।"

लेकिन वहाँ भी तनिक भी सुविधा नहीं हुई। मिस्टर रावर्थ ने मुलाकात नहीं की। दरबान के मारफत कहला दिया कि जिसे जरूरत हो वह दूसरे दिन सन्ध्या आठ बजे कलकत्ता थियेटर में मिले।

दूसरे दिन सन्ध्या आठ बजे लेबेदेव के नाटक का द्वितीय प्रदर्शन शुरू होने की बात है। मनमानी असुविधा पैदा करने के लिए रावर्थ ने वही समय दिया था। क्या उसने सोच रखा था कि आनेवाले कल को बँगला थियेटर में अभिनय बन्द रहेगा? कोई आश्चर्य नहीं। हो सकता है आखिरी समय में अभिनय को रोक देना पड़े। नाटक की नायिका यदि इस गहरे शोक में अभिनय नहीं कर पाये तो थियेटर को बन्द करने के सिवा और कोई चारा नहीं। सद्य-पुत्रवंचिता जननी कैसे अभिनय करेगी, विशेष रूप से हास्य का अभिनय? कैसा सहज-सरल चक्र है! अभिनय के ठीक एक दिन पहले की सन्ध्या में नायिका की सन्तान को उठा लिया गया, नायिका शोक में डूबी है, इतने थोड़े समय में दूसरी कोई व्यवस्था सम्भव नहीं, खासकर स्त्रीभूमिका में। इसलिए अभिनय बन्द! दर्शकों के सम्मुख माथा नत! अपमान! अर्थदण्ड! चामत्कारिक व्यवस्था! रावर्थ ने एक ऐसा रास्ता अपनाया जिससे सन्देह किसी भी तरह उसे छू न पाये, सन्देह करें भी तो उसके लम्पट और मद्यप पिता पर। रावर्थ की चतुराई इतने नीचे जा गिरेगी, इसकी आशंका लेबेदेव ने नहीं की थी। उसकी धारणा थी कि रावर्थ की दृष्टि चम्पा पर ही है। किन्तु एक युवती के अपहरण से शिशु का अपहरण और भी सहज काम है।

लेबेदेव बंगला थियेटर में लौट आया। मेरिसन ने साथ नहीं छोड़ा। वह चम्पा से मिलना चाहता है। थियेटर में सभी लोग होंगे तब भी वह उत्सुक हो बैठा था। लेबेदेव के लौट आते ही सभी लोगों ने समाचार जानना चाहा। उसके मुख पर निराशा के भाव देखकर वे लोग बहुत ही स्तब्ध रह गये।

चम्पा की चेतना काफी देर पहले लौट आयी थी। वह गोलोक दास के पास बैठी थी, उसकी वेदनासिक्त लाल-लाल आँखें, खोया-खोया-सा चेहरा! मेरिसन को देखकर वह जरा उत्तेजित होकर बोली, "तुम—तुम ही इसके लिए उत्तरदायी हो।"

मेरिसन ने प्रतिवाद नहीं किया, कहा, "मैं—मैं ही इसके लिए उत्तरदायी हूँ।"

सभी अचम्भित ! यह आदमी कहता क्या है ? मेरिसन बोला, "हाँ चम्पा डार्लिंग, मैं ही इसके लिए उत्तरदायी हूँ । मैं पिता होकर भी पुत्र की रक्षा नहीं कर पाया । किन्तु मैं अभी जान पाया हूँ कि किसने उसका अपहरण किया है ।"

"किसने ? किसने ?"

"कुत्ते की औलाद राबर्थ ने ! मुझे जरा भी सन्देह नहीं, उसी ने यह काम किया है ।"

लेबेदेव ने कहा, "मुझे भी इसके बारे में कोई भी सन्देह नहीं ।"

"शैतान," मेरिसन गरज उठा, "हमारे साथ भेंट तक नहीं की उसने । मैं उसको अच्छा सबक सिखाऊँगा । मैं उसे द्वन्द्व-युद्ध के लिए ललकारूँगा ।"

गोलोक बोला, "मिस्टर मेरिसन, व्यर्थ उत्तेजित मत हो ।"

मेरिसन रुद्ध कण्ठ से बोला, "क्या कहूँ बाबू ? उत्तेजित नहीं होऊँगा ! उसने मेरे डार्लिंग सन् की चोरी करायी, तुम कहते हो उत्तेजित मत हो । मैं नशेबाज हूँ, मैं लम्पट हूँ, मैं अभागा हूँ, किन्तु मैं भी अंग्रेज की औलाद हूँ, मैं भी मर्द हूँ । गुड्नाइट, डियरेस्ट ! डुयेल (द्वन्द्व-युद्ध) के बाद यदि जिन्दा रहा तो फिर भेंट होगी ।" मेरिसन ने नाटकीय मुद्रा में प्रस्थान किया ।

लेबेदेव ने कहा, "डर की बात नहीं, वह जितना गरजता है उतना बरसता नहीं ।"

लेबेदेव ने संक्षेप में खोज की कहानी कह डाली । गहरी निराशा से उसका स्वर भारी हो उठा, पुलिस की ओर से कुछ भी सहायता नहीं मिली । कल वह स्वयं न्यायाधीश सर रावर्ट चेम्बर्स के द्वार पर उपस्थित होगा, यह इच्छा उसने जतायी । चाहे जितना भी रुपया लगे, वह मिस चम्पावती के पुत्र की खोज करायेगा ही ।

किन्तु चम्पा कातर स्वर में बोली, "कुछ भी होने का नहीं साहब, इस देश में जो जाता है वह लौटकर आता नहीं । मैं भी एक दिन खो गयी थी, आठ-नौ वर्ष की लड़की । घर में बीमार माँ, कलसी लेकर पोखर से पानी लाने गयी । झाड़ी की ओट से दानव का हाथ निकल आया—मोटा, काला, रोयेंदार ! उसके बाद मैं भी खो गयी, कहाँ ठिकाना ? कहाँ घर ? कहाँ पिता ? कहाँ माँ ? इस देश में जो जाता है वह फिर लौटकर नहीं आता ।"

गोलोक ने कहा, "तुम दुखी मत हो, नतिनी !"

चम्पा बोली, "जिसके जीवन में दुख-ही-दुख हो, वह फिर दुख क्या करे बाबा ?"

हीरामणि विरक्त होकर बोली, "मुझे यह सब लन्द-फन्द सुनने का समय

नहीं बाबू, कितनी देर से बैठी-बैठी थक गयी हूँ और इन्तजारी अब सही नहीं जाती। साफ कह दो बाबू, कल तुम लोगों का नाटक होगा या नहीं ?"

बोलने की भगिमा अप्रीतिकर होने पर भी बात थी मतलब की। लेबेदेव क्या उत्तर दे ? वह जरा सकपकाने लगा। गोलोक दास ने कहा, "नाटक होगा क्यों नहीं ? इतनी दूर आगे आ गये हैं, उसके टिकट बिक चुके हैं ! नाटक नहीं होने पर नुकसान उठाना पड़ेगा।"

"लेकिन मिस चम्पावती क्या कल अभिनय कर पायेगी ?" लेबेदेव ने प्रश्न किया।

चम्पा चुप लगाये रही।

गोलोक ने कहा, "चम्पा नहीं कर सकती, हीरामणि तो है। वह क्या चला नहीं पायेगी ?"

हीरामणि टनकार देते हुए बोली, "मैं तो शुरू से ही कहती रही हूँ कि सुखमय का पार्ट निभा सकती हूँ। कितनी बार कितनी तरह के वेश सजाकर अभिनय कर चुकी हूँ और यह नहीं कर सकती ? किन्तु साहब को यह पसन्द हो तभी।"

लेबेदेव ने इस बार कोई भी राय नहीं जाहिर की।

गोलोक ने कहा, "कल की बात कल देखी जायेगी। आज सबको विश्राम की जरूरत है, क्योंकि अचानक यह आँधी-वर्षा आ गयी।"

वही अच्छा। क्लान्त और चिन्तित लेबेदेव ने क्षणिक चैन की साँस ली। वह बोला, "कल हम सभी लोग नौ बजे यहाँ उपस्थित होंगे।"

गोलोकनाथ दास जीवट का आदमी है। आज के थियेटर को किसी भी हालत में ठप्प नहीं होने देगा। इसीलिए नौ बजने से काफी पहले वह पालकी करके हीरामणि को बँगला थियेटर में ले आया। और भी एक पुतुल नाम की नयी लड़की को भी। पुतुल वारांगना-कन्या है। बहुत-से पुरुषों को उसने देखा है, पुरुषों से वह नहीं डरती। गोलोक दास का आशय था कि चम्पा यदि वास्तविक शोक में डूबी रहने के कारण अभिनय नहीं कर सकेगी तो हीरामणि उस भूमिका को कर लेगी और हीरामणि की भूमिका में उतरेगी पुतुल। हीरामणि की अपनी भूमिका उतनी बड़ी नहीं। पुतुल को सिखा-पढ़ा देने पर इस रात का काम वह चला देगी।

लेकिन लेबेदेव हताश हो उठा। सुखमय की भूमिका में बिलकुल बेजान लगती है हीरामणि। वह अपनी मोटी काया लेकर हावभाव के साथ जब सुखमय के संवाद बोलने लगी तो हँसी के बदले जैसे करुणा उमड़ने लगी। पहले

ही से यह हालत ! गोलोक दास ने अनेक बार सुधारने की चेष्टा की, किन्तु हीरामणि की विफलता ने महज करुणरस की सृष्टि की। होपलेस् ! सुखमय की सारी सत्ता ने मानो हीरामणि को सिमटा देना चाहा। लेवेदेव दो-एक बार बोलने का ढंग बताने गया, किन्तु हीरामणि हनहना उठी, "मेरा स्वर साहब के कानों में मधु नहीं ढाल सकता तो ढाले विष ही ! यह क्या मिस चम्पावती का गला है जो स्याह-काली रात में कानों में अमृत ढाले ? मैं जो कर सकती हूँ वही बहुत, इससे अधिक मुझसे नहीं होगा। यह कहे देती हूँ।"

कैसी तो एक वितृष्णा होती है इस स्त्री की खुरदुरी बातों से। चम्पा हमेशा सीखने को उत्सुक रहती है, और यह स्त्री, कितना अन्तर, कितना अन्तर !

लेवेदेव और भी गरम हो बोला, "मिस हीरामणि, तुम क्रोध क्यों करती हो ? अच्छा तो, जैसा चाहो वैसा ही बोलो।"

हीरामणि उसी तरह बोलने लगी, अच्छे-बुरे का विचार नहीं किया, जैसा जी चाहा वैसा ही बोलने लगी। सुखमय के संवाद उसे कण्ठस्थ थे। इसी ने आफत खड़ी कर दी। कहीं वह धड़ाधड़ बोलती जाती, कहीं याद गड़बड़ाती तो टुकुर-टुकुर देखने लगती, पार्श्ववाचक के स्वर पर कान ही नहीं देती।

दस बज गये। चम्पा अभी तक नहीं आयी, इस तरह कभी नहीं हुआ। वह बराबर निर्दिष्ट समय से कुछ पहले आती है और रिहर्सल के अन्त तक मौजूद रहकर अपना काम निबटा जाती है।

अब सन्देह नहीं, वह जरूर आज की सन्ध्या के अभिनय में भाग नहीं ले पायेगी। लेवेदेव ने एक आदमी को चम्पा के घर भेजा था। वह आदमी अभी तक वापस नहीं आया। लेवेदेव का मन निराशा के गहरे अवसाद से भर उठा।

थोड़ी देर बाद ही चम्पा थियेटर के सज्जाकक्ष में आ गयी। विगत रात्रि का वह सूनेपन का भाव उसके चेहरे पर नहीं है। उसके पीछे-पीछे मेरिसन भी घुसा। उस युवक के रक्त-सने माथे पर पट्टी बँधी है। चेहरे पर जमा हुआ रक्त, गर्दन के पास कटा-कटा कुछ झूलता हुआ। फिर भी पूरे चेहरे पर गर्व का एक भाव। बात क्या है ? सभी लोगों ने जानना चाहा।

मेरिसन ने सगर्व जो बताया वह संक्षेप में इस प्रकार है। सारी रात मेरिसन सो नहीं पाया। बेसब्री के साथ वह रात-भर रावर्थ के घर के सामने टहलता और प्रतिहिंसा की आग से जलता रहा था। साहस करके रात में वह घर में नहीं घुसा, क्योंकि रावर्थ के कुत्ते खुले हुए थे और भौंके जा रहे थे। सुबह होने पर रावर्थ का खानसामा कुत्तों को लेकर हवाखोरी के लिए चला गया। मौका

देखकर मेरिसन उस घर में घुस गया। रावर्थ सपरिवार नींद से जागकर बरामदे में खड़ा अँगड़ाई ले रहा था। ऐसे ही समय अचानक मरने-मारने पर आमादा एक श्वेतकाय युवक को देखकर वह डर गया। मेरिसन ने जानना चाहा, "कहाँ पर मेरे बच्चे को छिपा रखा है, जल्दी बोल ?" रावर्थ ने कुछ भी न जानने का भाव जताया। मेरिसन ने उसे ड्युएल के लिए चैलेंज किया, किन्तु रावर्थ ने युवक की धमकी को हँसकर उड़ा दिया। फिर तो मेरिसन झपट पड़ा रावर्थ पर। न सुनने योग्य गाली-गलौज, लात-घूँसे, कुछ भी बाकी नहीं रखा। आकस्मिक आक्रमण से रावर्थ घबरा गया। वह भूमि पर गिरकर रक्षा के लिए चिल्लाने लगा। उसकी चीख-पुकार सुनकर उसके नौकर-चाकर दौड़े आये। लेकिन गोरे युवक पर हाथ छोड़ने का साहस वे नहीं कर सके। मेरिसन का साहस बढ़ा, उसने रावर्थ को तड़ातड़ मारना-पीटना शुरू किया। मालिक की दुर्दशा देखकर वे स्थिर नहीं रह सके। फूलों का एक छोटा गमला मेरिसन के माथे को लक्ष्य करके फेंक दिया। गमला ठीक माथे पर नहीं लगा, उसके कोने से लगकर मेरिसन का माथा कट गया और टपाटप रक्त झड़ने लगा। इसी बीच रावर्थ खड़ा हुआ, उसने भी प्रत्याक्रमण कर दिया। उसकी देखादेखी नौकर-चाकर हिम्मत करके आगे आये। लेकिन स्थिति बिगड़ती देख मेरिसन तुरन्त ही खिसक गया।

मेरिसन गर्वित भाव से बोला, "कुत्ते की औलाद की आँख पर जो निशान छोड़ आया हूँ वह एक महीने में भी दूर नहीं होगा। हरामजादा अन्त में अपनी बीवी की स्कर्ट पकड़कर छुटकारा पा गया।

गोलोक ने विज्ञ की भाँति कहा, "इस सारी मारपीट से लाभ क्या हुआ ?"

मेरिसन तमककर बोला, "बाबू, तुम लोगों का भात-खाया शरीर है, मारपीट से क्या लाभ होता है यह साँड के पुट्ठे का गोश्त खाये बिना समझ नहीं सकोगे।"

चम्पा जरा हँसकर बोली, "दादू, उसकी बात जाने दो। हमारा बच्चा चोरी चला गया है, दुख से कलेजा फटा जाता है, तो भी यही खुशी होती है कि बॉब साहब आज हम लोगों के लिए लड़ आया है।"

"क्या पता, नतिनी ?" गोलोक दास बोला, "तेरे मन की थाह पाना है कठिन है। तू क्या आज रात अभिनय करेगी ?"

"अवश्य करूँगी, दादू," चम्पा बोली, "जानती हूँ बहुत कष्ट होगा, फिर भी हार नहीं मानूँगी। वे शैतान लोग मना रहे हैं कि मैं शोक से टूट जाऊँ, अभिनय बन्द हो और उनके प्राण खुलकर हँसें। लेकिन मैं उन लोगों [illegible]

नहीं दूँगी। मैं अभिनय करूँगी। यही मेरा प्रतिशोध है।"

वह कैसा अभिनय ! सद्यःपुत्रवंचिता जननी, किन्तु यह कौन कहेगा उसके अभिनय को देखकर ? उस रात के अभिनय में बोलचाल, हावभाव और हास्य-लास्य से चम्पा ने सबको मुग्ध कर दिया। यह जैसे सहज अभिनय हो। जो वास्तविक वह नहीं। वही तो अभिनय है ! प्रारम्भ से ही तन्मय भाव से उसने पुरुष-वेश में शुरू किया, "महानुभावो, यह भली भद्र महिला सुनकर सन्तुष्ट हुई हैं और उन्होंने हम सबसे जाने को कहा है।" उसी तल्लीन भाव से वह अभिनय करती गयी। कोई दर्शक क्षण-भर के लिए भी सन्देह करेगा कि यह पुरुषवेशिनी नारी सद्यःपुत्रवंचिता वियोगिनी है ? कौन-से लोग उस शिशु को घर से छीन ले गये हैं कि उसे चैन नहीं ! शिशु को फिर कभी वापस पाया जा सकेगा कि नहीं, यह बात भी अनिश्चित ! चम्पा बार-बार मंच के बगल की दीवार से टँगी दुर्गा-छवि को देखती और अभिनय करती जाती है। अभिनय के बीच-बीच में विश्राम के क्षण में उसकी आँखें भर आती हैं। वह आँखों का जल पोंछकर अधरों पर हँसी ले आती है और अगले अंश के अभिनय के लिए प्रस्तुत होती है। चम्पा आज नूतन प्रतिशोध की आग से जल रही है। वह हार नहीं मानती, वह हार नहीं मानेगी। वह दर्शकों को हँसायेगी किन्तु अपहरणकर्त्ताओं को नहीं हँसने देगी। किसी भी तरह हँसने नहीं देगी।

रावर्थ आज थियेटर देखने नहीं आया। जरूर वह मेरिसन के हाथ से मार खाकर शारीरिक व्यथा से बिस्तर पर पड़ा है। किन्तु उसका सहकारी स्विज आया है। चम्पा के अपूर्व अभिनय से जब पूरे प्रेक्षागार में हँसी की लहरें फूट रही हैं, स्विज मुँह लटकाये बैठा हुआ है। सभी दर्शक चम्पा के अभिनय से हँसेंगे, लेकिन शिशु का अपहरण करनेवाले हँस नहीं सकेंगे। क्रोध, ईर्ष्या और हताशा से उनकी छाती झुलस जायेगी, तब भी वे कुछ बोल नहीं सकेंगे। अभिनव प्रतिशोध है चम्पा का।

उसकी विलक्षण अभिनय-कुशलता ने जैसे आज पूरे दल को प्रभावित किया है। सभी अपनी-अपनी भूमिका का दक्षता के साथ अभिनय करते जाते हैं। पूरे वातावरण के उत्साह ने हीरामणि को भी उत्साहित किया है, वह अपनी ईर्ष्या की मलिनता को क्षण-भर के लिए भूल गयी है। नीलाम्बर बैण्डो ने लेबेदेव के समक्ष स्वीकार किया है कि सभी ब्लैक गर्ल ऐसा-वैसा अभिनय नहीं करतीं। कम-से-कम चम्पा नहीं। मोम की पुतली नहीं हो, क्षीर की पुतली के

साथ अभिनय करने में भी आनन्द है अगर वह क्षीर की पुतली इसी तरह से सजीव हो उठे। नीलाम्बर बँण्डो भी आज अभिनय में दक्ष सहयोगी है।

दो दृश्यों के बीच-बीच में कण्ठीराम भी मानो नये उत्साह से अचम्भित कर देनेवाले करिश्मे दिखाता जाता है।

लाग् भेलकी लाग्।
कण्ठीरामेर ताग् ॥
भोज राजार खेला।
भानुमतीर खेला ॥

"लाग्—लाग्—लाग्।" कण्ठीराम चिल्लाता है और खेल दिखाता है। बीच-बीच में रसभरी टिप्पणी करता है और सारे दर्शक हँसी से लहालोट हो उठते हैं।

दूसरा दृश्य लम्बी तालियों के बीच समाप्त हुआ। यह परीक्षा सिर्फ चम्पा की नहीं, लेबेदेव के भाग्य की भी। आज का अभिनय सफल होने पर लेबेदेव की योजना की ख्याति जम उठेगी। केवल एक दृश्य और। तृतीय और अन्तिम।

तृतीय दृश्य से पहले कण्ठीराम चिल्लाता है, "लाग् भेलकी लाग्, कण्ठीरामेर ताग्। बाबू हो, साहब हो, और माँ-मणि और मेम-मणि हो, आज नया करिश्मा दिखाऊँगा, नया कौतुक। यह जो मेरी घरनी को देखते हैं, महाशयो, मेरी ब्याहता घरनी। दूसरे की घरनी नहीं, मेरी अपनी घरनी।"

"मर गयी," सरस्वती ने मुँह बिचका दिया, "अरे मर्दुआ, तेरे कितनी घरवालियाँ हैं रे ?"

'देखा न साहबो," कण्ठीराम ने कहा, "पूरे घर-भर के स्त्री पुरुषों के बीच *मसखरी करते लाज न आयी साली को ! घरवाली नहीं मानो नारद मुनि है।* कहता हूँ तेरे प्यार के यार कितने हैं री औरत ?"

"क्यों मुझ पर सन्देह करता है बनरमुँहे ?" सरस्वती ने नकल में मुँह बना दिया, "तेरे मुँह में आग झोंकूँगी। मैं सती-सावित्री सीता…"

"तू अगर सीता है तो अग्निपरीक्षा दे।" कण्ठीराम ने कहा।

"जला न आग," सरस्वती बोली, "तुझे लेकर चिता पर चढ़ जाऊँगी।"

नकली डर दिखाते हुए कण्ठीराम ने कहा, "ओ बाब्बा, चिता की *आग बहुत* तेज होती है, बदन पर बड़े-बड़े फफोले पड़ जायेंगे। समझा न बाबू *लोगो, साहब* लोगो, मेरी बीस-पचास गण्डे घरवालियाँ हैं, अग्निपरीक्षा में *क्यों दूँगा ?"*

"क्यों रे बनरमुँहे," सरस्वती बोली, "*क्या* बक-बक करता *है ?"*

"देख," कण्ठीराम बोला, "वह अग्निपरीक्षा रहने दे,

हो जायेगी। उससे अच्छा है कि तुझे टोकरी से दबा रखूँ।"

"मैया री, मैं मुर्गी हूँ क्या ?" नाक फुलाकर सरस्वती बोली, "मैं टोकरी के नीचे दबी नहीं रहूँगी।"

"तू टोकरी के नीचे दबी क्यों नहीं रहेगी, री औरत ?" कण्ठीराम ने कहा, "जरूर तेरे मन में डर समा गया है। जरूर तेरे पाप का भण्डा फूटेगा।"

"मैं नहीं दबी रहूँगी।"

"हाँ, तू रहेगी।"

"नहीं, मैं नहीं रहूँगी।"

"हाँ, तू रहेगी, रहेगी, रहेगी।" कण्ठीराम एक बर्छी उठाकर बोला, "यह देख बर्छी, टोकरी के नीचे नहीं दबी रहने पर तुझे बर्छी से गाँथ दूँगा।"

"तब रहूँगी," सरस्वती नकली भय से बोली, "मुर्गी की तरह टोकरी के नीचे दबी रहूँगी।"

सरस्वती मंच पर बैठ गयी। कण्ठीराम ने बेंत की एक बड़ी टोकरी से उसे ढक दिया, उसके बाद एक कपड़े से टोकरी को ढक दिया। वह टोकरी को दबाकर खुद ही उस पर बैठ गया और पूछा, "क्यों री घरवाली, है तो ?"

"हाँ, हूँ रे मर्दुए।" टोकरी के भीतर से सरस्वती ने जवाब दिया।

जरा बाद फिर कण्ठीराम ने कहा, "क्यों री घरवाली, किसी बाबू के घर तो नहीं जाती ?"

"नहीं रे मर्दुए, नहीं।" सरस्वती ने जवाब दिया।

"क्यों री घरवाली, किसी साहब के घर तो नहीं जाती ?"

टोकरी के भीतर सरस्वती चुप।

"क्यों री, भीतर से कुछ बताती क्यों नहीं ?"

टोकरी के भीतर से कुछ भी उत्तर नहीं आया।

कण्ठीराम ने भयंकर क्रोध का अभिनय किया। उसके बाद नकली गुस्से से टोकरी के भीतर बर्छी घुसाकर इधर-उधर घुमाया, साथ ही सरस्वती का मृत्युसूचक कातर आर्त्तनाद।

कण्ठीराम ने बर्छी बाहर निकाल ली। उसके चमचमाते फलक से ताजा लहू टपकने लगा! पूरा प्रेक्षागार स्तब्ध-विस्मित!

कण्ठीराम भी मानो लहू देखकर अवाक्!

दुख-भरे स्वर में वह बोला, "क्यों री घरवाली, मर गयी क्या ?"

टोकरी निरुत्तर।

"सचमुच मर गयी! हाँ," कण्ठीराम चीख उठा, उसने टोकरी को उलट

दिया।

दर्शकमण्डली ने बड़े ही आश्चर्य से देखा—मंच सूना! सरस्वती का चिह्न तक नहीं। कण्ठीराम ने तब टोकरी को उलट-पुलटकर दिखाया, टोकरी का भीतर भी खाली!

कण्ठीराम ने नकली रोना शुरू कर दिया, "मेरी घरवाली कहाँ चली गयी···। मेरी वैसी जवान घरवाली कहाँ चली गयी रे···अरी तू लौट आ री, जहाँ भी जैसी अवस्था में है, लौट आ री!"

सहसा प्रेक्षागार में दर्शकों के पीछे से सरस्वती का कण्ठस्वर सुनायी दिया, "यहीं तो मर्दुए, अभी आयी।"

दर्शकों के पीछे के दरवाजे से ठमकती हुई आ घुसी सरस्वती। उसकी गोद में एक शिशु। वह शिशु को लिये मंच पर जा चढ़ी।

प्रेक्षागार चकित तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा।

तालियों का सिलसिला कम होने पर कण्ठीराम ने पूछा, "गोद में किसका बच्चा है री?"

"मेरा।" सरस्वती बोली।

"कहाँ, देखूँ।" कण्ठीराम ने शिशु पर ओढ़ाये गये कपड़े को हटा दिया। दिखायी पड़ा उसका धपधप करता गोरा रंग। खिला-खिला-सा शिशु, उसके माथे के स्पहले केश प्रदीप के आलोक में चमचमाने लगे।

कण्ठीराम ने फिर पूछा, "सच बोल, किसका बच्चा है?"

सरस्वती ने उत्तर दिया, "कहती तो हूँ, मेरा और उस मेरिसन साहब का।"

हँसी का रेला फूट पड़ा प्रेक्षागार में। केवल मिस्टर स्विज ने हड़बड़ाकर सीट छोड़ दी और दनदनाता हुआ बाहर चला गया। और मेरिसन वादकों के निकट से मंच पर फाँद गया, अपने शिशु को छीन लिया और दौड़ा चला गया। सज्जाकक्ष की ओर जहाँ चम्पा थी।

जोरों के अट्टहास के बीच कण्ठीराम की जादूगरी पर पर्दा गिरा।

लेकिन असली नाटक का अभिनय समाप्त होने के बाद ही उस रात सज्जाकक्ष में उसकी जादूगरी पर से पर्दा उठा। अपूर्व थी यह जादूगरी, अवास्तविक, अविश्वसनीय।

मंच पर की जादूगरी के पीछे जो दाँव था उसे कण्ठीराम ने खोल दिया। *पिछले दिन अंग्रेजी थियेटर के मालिक ने उसे बुला भेजा था, बँगला थियेटर में घुसते समय।* दूत साक्षात् यमदूत-जैसा था जिसे देख पति-पत्नी उस मालिक के पास जाने को बाध्य हुए। ललमुँहे अंग्रेज मालिक ने कहा, "खबरदार, कल

बँगला थियेटर में जादूगरी दिखाना मत। ले पचास रुपये।" एक साथ इतने रुपये उसने देखे नहीं थे। रुपये को वह खूंट में बाँधने लगा, ऐसे ही समय उसने सुना कि साहब उस गुण्डे को हिन्दुस्तानी में कह रहा है, "औरत बड़ी तेज-तर्रार है, ऐसा मौका नहीं मिलेगा। आज शाम ही उसके घर में लूट-पाट मचाकर बच्चे को उड़ा लो। फिर तो औरत थियेटर में भाग नहीं ले पायेगी। मर्द का भेष बनाकर मसखरी करना भूल जायेगी।" कण्ठीराम ने सुनते ही समझ लिया कि वे चम्पा दीदी की ही बात कर रहे हैं। लूटपाट की बात सुनकर उसका हाथ कुलबुलाने लगा। उसने साहब से कहा, "साहब, मैं हाथ की सफाई दिखाता हूँ और हाथ साफ करता हूँ। चोरी करना मेरा नशा है, मैं उन लोगों के साथ चोरी करने जाऊँगा।" साहब ने कहा, "शाबाश!" कण्ठीराम उन लोगों के साथ चोरी करने गया। धर्मतला में ताल के किनारे एक बूढ़े बरगद के नीचे जमा होकर चोरों के दल ने कपड़े उतारे। उन्हें सरस्वती के जिम्मे किया। उन्होंने कौपीन पहन लिये। सारे बदन पर तेल मल लिया जिससे किसीके द्वारा पकड़ लिये जाने पर फिसलकर चम्पत हुआ जा सके। चोरी की घटना सभी को मालूम थी। चोरी के बाद वे लोग फिर धर्मतला में ताल के किनारे जमा हुए। चुराये गये बच्चे को देखकर सरस्वती बोली, "लूट का माल तुम लोग लो, मुझे यह बच्चा दे दो।" गुण्डे खुशी-खुशी लूट का हिस्सा लेकर, बच्चे का बोझा उतारकर चलते बने।

"तुम लोगों ने उसी रात बच्चे को पहुँचा क्यों नहीं दिया?" लेबेदेव ने पूछा।

"साहब, डर हुआ कि कहीं वे गुण्डे यमदूत की तरह इस तरफ उपद्रव न कर बैठें। इसीलिए सोचा कि कल ही लौटा दिया जायेगा। गोरा बच्चा एक रात मौसी के साथ पेड़-तले सोया। घरवाली ने कहा, 'बड़े साहब भले आदमी हैं, तेरी चोरी पकड़ी जाने पर भी तुझे जेल नहीं भिजवाया। उनके साथ बेई-मानी मत कर। कल का खेल हम जरूर दिखायेंगे।' तभी मेरे दिमाग को दाँव सूझा। मैं उस गोरे बच्चे को लेकर खेल दिखाऊँगा और सभी को अचम्भित कर दूँगा। बेंत की टोकरी के नीचे से चुपके से खिसककर मेरी घरवाली पिछ-वाड़े से निकली और सामने के रास्ते पर आ गयी। वहाँ मेरा एक साथी कपड़े में लिपटे गोरे बच्चे को लिये खड़ा था, उसे लेकर मेरी घरवाली बड़े हॉल में घुसी।"

वे सारे लोग एक स्वर में प्रशंसा करने लगे। चम्पा सरस्वती से लिपट गयी। उसकी आँखों से झरझर आँसू झड़ने लगे।

मेरिसन ने कहा, "चल, थाने में गवाही दे आ।"

कण्ठीराम बोला, "माफ करो, साहब, वे लोग मुझे ही चोर बताकर चालान कर देंगे। मैं दागी चोर हूँ, मेरी बात पर कौन विश्वास करेगा? जो बख्शीश देनी हो, इसी समय दे डालो। इतनी देर में बाहर कहीं वे गुण्डे घात न लगाये हुए हों।"

मोटी बख्शीस लेकर कण्ठीराम अपनी स्त्री के साथ खुशी-खुशी चला गया। जाते समय कह गया कि वे लोग उस देश को छोड़कर जा रहे हैं, नहीं तो गुण्डे उन्हें खत्म कर देंगे।

लेबेदेव उस समय कृतज्ञ मन से इसी उधेड़बुन में था कि लड़की को किस तरह सुखी बनाऊँ। कृतज्ञता जताने के लिए धन, वस्त्र, आभूषण कितना कुछ दे डाला उसने चम्पा को, किन्तु उससे भी उसका मन नहीं भरा। वह चम्पा को वास्तविक रूप से सुखी करना चाहता था। उसका उपाय एक ही है—मेरिसन के साथ चम्पा के विवाह की व्यवस्था करना। किन्तु क्या वह सम्भव है? मेरिसन को चम्पा गहराई से प्यार करती है, लेकिन वह पूरी सामाजिक मर्यादा के साथ मेरिसन की सहधर्मिणी होना चाहती है। इस आकांक्षा में न्यायपूर्ण तर्क है। जिस पुरुष ने नारीत्व की अवहेलना की है उसे नारी-मर्यादा की स्वीकृति तभी मिलेगी जब वह उसे धर्मपत्नी के रूप में ग्रहण कर लेगा। प्रेमातुरा किन्तु दृढ़ संकल्पवाली इस देशी रमणी के प्रति लेबेदेव की श्रद्धा उमड़ती है। किन्तु यह सामाजिक मिलन कैसे सम्भव होगा?

मेरिसन सचमुच चम्पा को चाहता है। क्या यह महज यौन-आकर्षण है! अगर यही होता तो चम्पा से ठुकराये जाने के बाद मेरिसन क्यों घर छोड़ देता और मदिरा और वेश्याओं के साथ अपने-आपको भुलाये रखना चाहते पर भी भुला नहीं पाता? क्या अवैध पुत्र-सन्तान ही के लिए उसका मोह है? पुत्र के अपहरण से चिन्तित मेरिसन ने वेहिचक थाना-पुलिस की दौड़धूप की, रायर्व के घर पर हमला भी किया और सरस्वती की गोद से पुत्र को छीनकर सारे दर्शकों के सामने उसका पिता होना जाहिर किया। पितृत्व की स्वीकृति! जो मेरिसन अभियुक्ता चम्पा को मुक्त करने नहीं गया, उसी ने रंगमंच पर सबके सामने अपनी अवैध सन्तान को स्वीकार करने में द्विविधा का अनुभव नहीं किया! *मेरिसन क्या अब भी चम्पा से विवाह करना अस्वीकार करेगा?*

मुक्त क्रीतदासी चम्पा, दाई चम्पा, दागी ग्रासामी चम्पा, अभिनेत्री चम्पा, नेटिव चम्पा—वह कितनी ही शोभामयी और सुदर्शना युवती क्यों न हो, गोरे साहबी समाज की नजर में एक ब्लैक वूमन है। उसके साथ साहबों का सहवास

चल सकता है, उसे रखैल की तरह रखा जा सकता है। शायद विवाह करना भी चल सकता है, लेकिन गोरी पत्नी के रहते वह असम्भव। विवाह-विच्छेद बहुत दुस्साध्य है। वारेन हेस्टिंग्स ने मैडम इम्होफ को ब्याहा था, उसके पूर्व-पति से विवाह-विच्छेद कराने के बाद। कलकत्ता शहर में विवाह-विच्छेद सम्भव नहीं हुआ। किसी जर्मन शासक के निर्देश पर पहले का विवाह टूट सका। मैडम इम्होफ तभी वारेन हेस्टिंग्स से विवाह कर सकी। इसको लेकर साहबी समाज में कितनी तरह की बातें उठीं, कितनी निन्दा, कितनी कुत्सा! फिलिप फ्रान्सिस मैडम ग्रैण्ड के साथ प्रेमलीला में मग्न हुआ। मिस्टर ग्रैण्ड ने सुप्रीम कोर्ट में नालिश कर दी। कलंक-कथा! मोटा मुआवजा देने पर फ्रान्सिस ने छुटकारा पाया। विवाह-विच्छेद के बाद मैडम ग्रैण्ड ने फ्रान्सिस के घर में आश्रय लिया। लेकिन पुर्न-विवाह सम्भव नहीं हुआ।

विवाह-विच्छेद तो रुपये का खेल है। फिर वह भी साहब-मेमों के बीच ही सीमित। किसने कब सुना है कि किसी गोरे पुरुष ने गोरी पत्नी को तलाक देकर एक काली रमणी से धर्मानुसार विवाह किया? कलकत्ता शहर का साहबी धर्म इतना उदार नहीं है। लेबेदेव ने बात-ही-बात में एटर्नी जान मैकनर से विवाह-विच्छेद के बारे में पूछा था, लेकिन हँसकर ही मैकनर ने उड़ा दिया। लेबेदेव ने किसी का नाम नहीं लिया, सिर्फ समस्या बतायी थी। लेकिन मैकनर ने कहा कि अंग्रेजों के धर्म के अनुसार पूर्ण विवाह-विच्छेद सम्भव नहीं, चर्च उसे स्वीकार नहीं करता। मजबूरी में पति-पत्नी को अलग-अलग रहने की अनुमति मिल जाती है, किन्तु उनमें से कोई पुनर्विवाह नहीं कर सकता। एकमात्र पार्लियामेंट ही विशेष स्थिति में विवाह-विच्छेद की अनुमति दे सकती है। उसमें बहुत समय और व्यय लगता है। लेकिन गोरी पत्नी को छोड़कर काली स्त्री से विवाह करने की बात का समर्थन श्वेत-समाज में कोई नहीं करेगा।

अर्थात् मेरिसन और उसकी पत्नी के चाहने पर भी विवाह-विच्छेद सहज-सम्भव नहीं, बल्कि इसे असम्भव ही कहा जा सकता है। एकमात्र गवर्नर जन-रल के राजी होने पर ही विवाह टूट सकता है।

चम्पा के साथ मेरिसन के विवाह का एक ही उपाय है—मिसेज मेरिसन की मृत्यु।

नहीं—नहीं। लेबेदेव लूसी मेरिसन की मृत्यु की कामना नहीं करता। वह सुखी-स्वस्थ रहे। लेबेदेव को याद आया, मिसेज मेरिसन अब काफी स्वस्थ हो गयी है। साथ रहनेवाले डाक्टर की देखरेख में उसका स्वास्थ्य सुधर चला था।

हारमोनिक टैवर्न के बाल-डान्स में लेबेदेव की लूसी मेरिसन से फिर मुला-

बात हुई। आर्केस्ट्रा के साथ सगीत के लिए लेबेदेव को अच्छी रकम मिली थी। नाच के बाद जब लूसी मेरिसन लेबेदेव के पास आयी तब वाद्य का बजना बन्द था। लेबेदेव ने बुलाया, उसे साथ लेकर वह पास के एकान्त बरामदे में आया। लूसी मेरिसन का बनाव बहुत अच्छा था। उसके सुनहरे रंग पर गहरा रूज-लिपस्टिक खूब चटक रहा था, माथे का जूड़ा मानो आकाश को छूता हुआ। उसके साज-सिंगार की अतिशयता में रुचिसम्पन्नता बिल्कुल ही नहीं थी। लूसी मेरिसन के साथ लेबेदेव को चम्पा का स्वत. स्मरण हो आया। घिसे तांबे की तरह रंग होने पर भी उसमें यौवन की स्निग्ध दीप्ति है, सौम्य-सुन्दर उसके चेहरे का सौन्दर्य है। लेबेदेव ने सोचा, चम्पा पर मेरिसन का आकर्षण अकारण बिल्कुल नहीं।

मिसेज मेरिसन ने आरोप किया, "मिस्टर लेबेदेव, तुम ही सारे अनर्थ के मूल हो।"

"मेरा अपराध ?" लेबेदेव ने पूछा।

"उस ब्लैक होर् को तो मैंने बेंत खाने की सजा दिलायी थी, चोर की तरह शहर में घुमाया था। मेरिसन फिर उसके पीछे नही लग पाता। किन्तु तुमने छोकरी को अभिनेत्री बनाकर विख्यात कर दिया, रसिक-समाज में उसके अभिनय-कौशल की ख्याति है। मेरिसन अब फिर उसके प्यार में गोते लगा रहा है। पता है मेरे पति ने मुझे छोड़ दिया है ! मेरी दूकान में जाता नही, मेरे घर में आता नहीं। रात-दिन एक सस्ते टैवर्न में पडा रहता है ! रोजगार-धन्धा नही। जुआ खेलता है और दो पैसे पाता है, उसी से दिन गुजारता है।"

"इसमें क्या मेरा दोष है मिसेज मेरिसन ?" लेबेदेव ने कहा, 'आप यदि अपने पति को पकड़े नही रख पाती तो मैं उसे क्या करूँ ?"

"ठीक कहते हो," मिसेज मेरिसन बोली, "मेरा ही दोष है। मैंने क्यों उसे अपना मन-हृदय दे डाला ? मेरा पहला पति मुझे चाहता था। वह मुझसे कही अधिक महान् था। यूरोप के जहाज में जिस दिन और नारी स्त्रियों के साथ कलकत्ता शहर आ पहुँची, श्वेत-कुमारी के दल की भीड लग गयी थी। 'होम' से रमणियाँ आयी है, चिल्ला उठे थे उल्लास में वे लोग। सिसकारी दी, गीत गा उठे। चर्च में वधुओं की हाट लगी। वृद्ध-प्रौढ़-तरुण साहबों का दल हाट में अपनी-अपनी पसन्द की चुनने गया। मेरिसन नहीं गया, उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी। एक प्रौढ़ गंजे सिरवाले साहब ने मुझे पसन्द किया। उसकी एक शराब की दूकान थी। अच्छी-खासी स्थिति, बैठकखाना में घर। मैं भी मनचाहे पति का इन्तजार नही कर पायी। कई पौण्ड खर्च करके पति और घर-गृहस्थी के लिए

कलकत्ता शहर आयी। रूप न सही, रुपया तो है। इधर-उधर नहीं करके विवाह की सम्मति दे दी। मेरिसन मेरे पति की दूकान में युवा कर्मचारी था। उस युवक के प्रेम में विभोर होकर अपने पति के साथ मैंने विश्वासघात किया था। लगता है इसीलिए गॉड ने मुझे यह सजा दी है। मेरिसन, मेरे प्रियतम दूसरे पति ने एक ब्लैक होर् के मोह में पड़कर मुझे छोड़ दिया है। लेकिन मैं हार नहीं मानूंगी, अपने पति को लौटा ही लाऊँगी।"

"किस प्रकार?"

"अभी नहीं बताऊँगी। कल सन्ध्या समय तुम्हारे घर में आऊँगी। तुम्हें आपत्ति तो नहीं?"

"यू आर वेलकम, मिसेज मेरिसन!"

लूसी मेरिसन भाव में डूबी-सी जैसे नाचती हुई हॉल में लौट गयी।

दूसरे दिन अपराह्न में वह लेबेदेव के घर में आ उपस्थित हुई। दिन के आलोक में वह बिलकुल ही अच्छी नहीं लगती थी। गड्ढे में धँसी आँखें, रक्त-हीन रूखी काया, असमय बुढ़ापे की छाया मानो लूसी मेरिसन के सर्वांग पर।

नम्रतासूचक शब्दोच्चारण के बाद लूसी मेरिसन काम की बात पर उतर आयी। पूछा, "मिस्टर लेबेदेव, तुमने नया अंग्रेजी थियेटर खोला है?"

"हाँ।"

"मुझे उसी थियेटर में अभिनय का सुयोग दो। देखते हो मैं नाच सकती हूँ। घण्टों नाचती हूँ। मैं गा भी सकती हूँ। सुनोगे गाना··· ?"

लूसी ने एक कड़ी गाना शुरू किया। उसका तीखा बेसुरा स्वर कानों को कष्ट देने लगा।

लूसी बोलती गयी, "मैं अभिनय भी कर सकती हूँ। देश के स्कूल में ओफेलिया करती थी। अभी भी याद है। सुनोगे?"

नीरस और हास्यास्पद सम्भाषण। असुन्दर उसका हावभाव। लेबेदेव के मन में आया, लूसी मेरिसन सिर्फ एक पार्ट का अच्छा अभिनय कर सकती है, मैकबेथ की डाइन का पार्ट!

"क्यों, पसन्द नहीं आया?" लूसी ने हताश भाव से पूछा।

"वैसा नहीं," लेबेदेव ने शिष्टाचार की खातिर कहा, "मैं अभी शौकिया अभिनेत्री नहीं चाहता। प्रशिक्षित पेशेवर अभिनेत्री चाहिए। कलकत्ता थियेटर के साथ स्पर्धा करने की बात है। दक्ष अभिनेत्री नहीं होने पर उसके साथ कैसे होड़ ले सकूँगा?"

"लेकिन वह ब्लैक होर् क्या दक्ष अभिनेत्री थी?"

"नहीं, लेकिन नेटिवों में अभिनेत्री मिलती ही नहीं। यह बात निश्चित जानो। इसीलिए चम्पा को तैयार करना पड़ा। खैर जो भी हो, तुम अभिनय क्यों करना चाहती हो ?"

बालिका की तरह करुण स्वर में मेरिसन बोली, "अपने पति को समझा देना चाहती हूँ कि मैं भी अभिनय कर सकती हूँ। उस ब्लैक होर् से भी अच्छा अभिनय कर सकती हूँ।"

"किन्तु यह स्पर्धा बेकार है," लेबेदेव ने सलाह दी, "तुम्हारा पति इससे भुलावे में नहीं आयेगा।"

"क्यों, क्यों ?"

"वह चम्पा को सचमुच चाहता है।"

"जानती हूँ, उस डाइन ने उस पर जादू कर दिया है।" दबे आक्रोश से लूसी मेरिसन बोली, "नेटिव छोकरी-छोकरे जादू की विद्या में दक्ष होते हैं। कलकत्ता शहर न होकर यदि यह 'होम' होता तो डाइन को आग में जलाकर मारने की व्यवस्था करती। लेकिन इस देश में तो वह हो नहीं सकता, मुझे दूसरा रास्ता अपनाना होगा।"

"कौन-सा रास्ता ?"

"विष से विष का नाश।"

"इसका मतलब है तुम विष देकर चम्पा की हत्या करोगी। उससे तुम्हें फाँसी होगी और मेरिसन को भी पा नहीं सकोगी।"

"मैं तो कहना नहीं चाहती, मिस्टर लेबेदेव," लूसी ने चुपके-चुपके कहा, "मैं भी जादू की विद्या शुरू करूँगी। मेरे मशालची की बीवी क्षान्तमणि वशीकरण जानती है। उसका एक उस्ताद है। सुना है, उस उस्ताद के पास से बाघ का नख धारण करने और किसी पौधे की जड़ खाने से प्रेमी वश में आ जाता है। क्षान्तमणि ने वशीकरण से उस मशालची को वश में कर रखा है। मैं भी वशीकरण करूँगी।"

"तुम इन सबमें विश्वास करती हो ?"

"बता सकते हो कि मैं किस पर विश्वास करूँ ?" कहते-कहते लूसी मेरिसन फफक पड़ी। रोते-रोते उसने कहा, "मैं क्या जानती नहीं कि मेरा शरीर टूट गया है, मेरा यौवन चला गया है, मैं बदसूरत हूँ, बेडौल बुढ़िया ! मैं किस बूते पर मेरिसन को पकड़े रहूँ ?"

प्रेतिनी की तरह रोने लगी मिसेज मेरिसन, आँखों के जल से गाल का रंग धुल जाने पर वह और भी वीभत्स लगने लगी।

दुख की अधिकता से लेबेदेव परेशान हो उठा, समझ नहीं पाया कि कैसे इस अभागिनी को सान्त्वना दे।

उसने नरमी से पूछा, "तुम मिस्टर मेरिसन को चाहती हो ?"

"खूब, खूब, खूब।"

"तुम उसका भला चाहती हो ?"

"वह तो चाहती ही हूँ।"

"तब तुम उसे छोड़ दो, पकड़े रखने की चेष्टा मत करो। विवाह-विच्छेद की व्यवस्था करो। तुम सतायी गयी स्त्री हो, गोरी ललना और सम्पन्न हो, चेष्टा करने पर पार्लियामेण्ट से भी विवाह-विच्छेद की कानूनी अनुमति ला सकती हो तुम।"

लूसी मेरिसन दुःखावेग से तड़प उठी, "तुम क्या हो, मिस्टर लेबेदेव ? तुम मेरे मित्र हो या शत्रु ? मेरे विवाह-विच्छेद करा लेने पर मेरिसन खुशी-खुशी ब्लैक होर् से विवाह कर लेगा।"

"वे दोनों सुखी होंगे, और अगर सचमुच तुम मेरिसन को चाहती हो तो तुम्हें भी सुख मिलेगा।"

"लगता है उस ब्लैक होर् ने तुम्हें वकील नियुक्त किया है ?" घृणा-भरे स्वर में लूसी बोली, "मैं जीते-जी मेरिसन को छुटकारा नहीं दूंगी। मैं वशीकरण से मेरिसन को भेड़ बनाकर अपने कदमों पर ले आऊँगी। तुम देख लेना। अभी अलविदा।"

लूसी मेरिसन चली गयी। उसके लिए लेबेदेव के मन में दुख था। लेकिन प्रेम की इस प्रतियोगिता में उसके लिए स्थान कहाँ है ?

चम्पा—लूसी—मेरिसन की त्रिकोणात्मक समस्या को लेबेदेव सहज ही भूल गया जब अयाचित भाव से चित्रकार जोसफ बैटल् स्वयं उससे मिलने आया। सिर्फ मिलने नहीं, एक अप्रत्याशित सुखद प्रस्ताव लेकर वह आया।

यही प्रस्ताव। जोसफ बैटल् और कुछ मंच-शिल्पियों के साथ टामस राबर्थ का मनमुटाव हो गया था। बैटल् ने राबर्थ के साथ गाली-गलौज की। आदमी वह धूर्त और दगाबाज है। कलकत्ता थियेटर में वह सबके साथ दुर्व्यवहार करता था। यहाँ तक कि जोसफ बैटल् जैसे कलाकार को अपशब्द कह देता था। जहाँ-तहाँ अपमान। राबर्थ कंजूस है। रुपये-पैसे मार लेता है। इस तरह के और भी कितने ही अभियोग हैं। इसीलिए बैटल् और कुछेक लोगों ने कलकत्ता थियेटर छोड़ दिया है। वे खुद ही अपना थियेटर खोलना चाहते हैं, किन्तु स्थान का अभाव है। सरकारी अनुमति मिलने में भी समय लगेगा। अगर लेबेदेव अपने

प्रस्तावित अंग्रेजी थियेटर में उन्हें ले ले तो वे लोग खुशी-खुशी शरीक हो सकते हैं। वैटल् ने मुक्तकण्ठ से लेबेदेव को सराहना की। जैसी पारंगतता उसकी संगीत में है, वैसी ही उसकी नाट्यप्रयोग में कुशलता। कुछ नेटिव लड़के-लड़कियों को लेकर उसने एक ऐसी रसमयी कला प्रस्तुत कर दी जो सचमुच अप्रतिम है। इसी लिए चारों ओर लेबेदेव की वाहवाही गूँज उठी है। अगर वैटल् और उसके दल को लेबेदेव अपने प्रस्तावित थियेटर में ले लेगा तो वे लोग उस धोखेबाज टामस रावर्थ को उचित शिक्षा दे देंगे।

प्रतिशोध की सम्भावना और आत्मसन्तोष की अधिकता के कारण लेबेदेव सिर्फ वैटल् को लेने के लिए ही तैयार नहीं हुआ, उसने एकबारगी उसे व्यवसाय के अन्यतम भागीदार के रूप में भी स्वीकार कर लिया।

जरा भी समय बर्बाद किये बिना एटर्नी के यहाँ से पक्का कागज बनवाकर दोनों पक्षों के हस्ताक्षर के साथ भागीदारी के व्यवसाय को उसने कबूल कर लिया। नये प्रयास से लेबेदेव ने अंग्रेजी थियेटर की कानूनी व्यवस्था बनायी।

नीलाम्बर वैण्डो खुश हुआ। अब छुई-मुई ब्नैकी गर्ल के साथ उसे अभिनय नहीं करना होगा। गाडेम-लाइक मेम के इर्द-गिर्द खानसामा के रूप में चहल-कदमी करते हुए वह आगे आयेगा।

गोलोकनाथ दास प्रसन्न नहीं हुआ। उसने लेबेदेव से साफ-साफ पूछा, "साहब, क्या तुम आखिर में बँगला थियेटर को गड्ढे में डाल दोगे?"

जरा संकोच के साथ लेबेदेव ने कहा, "वैसा क्यों? बँगला थियेटर भी बीच-बीच में चलेगा, किन्तु अंग्रेजी थियेटर को नियमित करना होगा। बाबू, मैं व्यवसाय करने आया हूँ। बहुत रुपया लगाया है, बहुत कर्ज-उधार किया है। बँगला थियेटर के द्वारा उसे चुका नहीं सकूँगा। तुम्हारी बँगला भाषा में नाटक कितने हैं? मैं खुद कितने नाटक अंग्रेजी से अनुवाद करूँगा? दो दिन बाद जब बँगला थियेटर का नयापन खत्म हो जायेगा तब हमें थियेटर का फाटक बन्द करना होगा। इससे बढ़कर, कलकत्ता थियेटर को शिकस्त देकर अगर मेरा अंग्रेजी थियेटर जम उठे तो उसके मुनाफे की रकम से सिर्फ वही थियेटर चलेगा सो नहीं, कभी-कभी बँगला थियेटर भी दिखा सकेंगे।"

गोलोकनाथ दास प्रसन्न नहीं हुआ, बोला, "साहब, तुम्हारा थियेटर है। तुम जो अच्छा समझोगे, करोगे। किन्तु बँगला थियेटर जम उठा था। चम्पा, कुसुम, हीरामणि, नीलाम्बर—ये सभी लोग प्राण देकर तुम्हारे थियेटर को जमाये रखते। तुमने तो और भी एक नाटक का अनुवाद किया है। मैंने संशोधन किया है। वही नाटक होता। अभी काफी दिन चल जाता। उसमें तुम्हारा नाम होता।

अंग्रेजी थियेटर कितने अच्छे-अच्छे हुए हैं। अंग्रेजी थियेटर से तुम्हें पैसा मिलेगा, किन्तु क्या इतना सुनाम मिलेगा ?"

"जोसफ बैटल्-जैसा कलाकार मिला है, उसके द्वारा सुन्दर-सुन्दर सीन अंकित करवाऊँगा। मेरे अंग्रेजी नाटक में अभिनय जम उठेगा।"

गोलोक सन्देह के स्वर में बोला, "लेकिन वह बैटल् साहब तो धूर्त रावर्थ साहब का दाहिना हाथ था न ? बैटल् साहब के सम्मान में कलकत्ता थियेटर में विशेष अभिनय होने पर क्या मोटी रकम की थैली शिल्पी के हाथ में नहीं थमा दी गयी थी ? मुझे तो लेकिन यह सब बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।"

"तुम लोगों की जाति बड़ी भीरु है बाबू," लेबेदेव ने कहा, "मैं सुदूर रूस से सिर्फ साहस पर भरोसा करके आया हूँ। कन्धे पर दायित्व लेना जानता हूँ।"

गोलोक ने क्षोभ के साथ कहा, "जो अच्छा समझते हो, करो। मैं शिक्षक ठहरा, इतनी वहत्तर बुद्धि मैं नहीं जानता न! केवल भय है कि फिर कहीं धूर्त रावर्थ के फन्दे में न जा पड़ो।"

"कोई परवाह नहीं। डरो मत।" लेबेदेव ने तब जोर से कह तो दी यह बात, लेकिन उसके मन को एक खटका लग गया। इस तरह अचानक जोसफ बैटल् ने दलबल के साथ लेबेदेव का साथ दिया, यही रहस्यमय है। तो क्या गोलोक बाबू ने ठीक कहा कि इस सबके पीछे रावर्थ की चालबाजी है ?

लेबेदेव जरा सावधान रहेगा।

भागीदारी के कागज पर हस्ताक्षर होने के दो-चार दिन बाद से ही जोसफ बैटल् के व्यवहार में कुछ परिवर्तन लक्ष्य किया गया। कैसा तो एक मालिकाना अक्खड़पन। नया नाटक पसन्द करने के मामले में उसकी असहनीय खींचतान। अनेक प्रकार के नाटक लेकर लेबेदेव ने विचार-विमर्श किया, कोई भी बैटल् को जँचा नहीं। बात-ही-बात में वह कह बैठा, "माइण्ड यू, गेरासिम, मैं भी एक पार्टनर हूँ, मुझे भी कुछ हक है।" बैटल् ने सीधे-सीधे निर्देश दिया कि उनका जो साझा थियेटर है, उसमें बँगला नाटक का अभिनय नहीं चलेगा। अपने ही थियेटर में अपने मनचाहे नाटक का अभिनय नहीं होगा, यह जानकर लेबेदेव मन-ही-मन खिन्न हो उठा। गोलोकनाथ दास को बुलाकर उसने प्रस्ताव रखा, "कलकत्ता में कहीं और सिर्फ हिन्दुओं और मूरों के लिए नाटक का अभिनय करने से कैसा रहेगा ? उस नाटक से अंग्रेजी जबान को बिल्कुल हटा देना होगा।" गोलोक ने प्रसन्न मन से सहमति दी। लेबेदेव ने नये सिरे से विज्ञापन लिखा, लेकिन बैटल् की जिद के चलते तीसरी बार का अभिनय आगे नहीं बढ़ पाया।

नये दृश्यपटों के अंकन की योजना की बात लेबेदेव ने उठायी। बैटल् ने उस बात को उड़ाते हुए थियेटर के सज्जाकक्ष में मनमाना छवि-अंकन शुरू किया। भीगे वस्त्र में हीरामणि को घण्टों खड़ी किये रहा, माडल के रूप में। कलसा बगल में रखे बंगललना की देहभंगिमा, पुष्ट यौवन का तीव्र उभार, भीगे वस्त्र में झाँकती देहलालिमा—चलती हुई तूलिका से कैनवास पर खिल उठी। उल्लसित और आत्मविभोर शिल्पी ने माडल को दूर नहीं रखना चाहा। प्रसन्न हीरामणि भी प्रतिदान में पीछे नहीं रही। लेबेदेव ने खुले अभद्र व्यवहार का प्रतिवाद किया। बैटल् ने उसे हँसी में उड़ा दिया।

मेरिसन को लेकर एक नया गोलमाल हुआ।

एक दिन दोपहर में टिरेटी बाजार के चौराहे पर खूब भीड़ जमी थी। बुलबुल की लड़ाई। हाथ की छड़ों पर डोर से बँधी लड़ाकू बुलबुलें लिये कुछ लोगों का एक दल बैठा हुआ था। खुली जगह में धूल-माटी पर बुलबुलें लड़ रही थीं। चंगुल में बँधे नन्हे अस्त्र से वे प्रतिद्वन्द्वी को जख्मी कर रही थीं। केवल आनन्द नहीं, कइयों ने दाँव लगा रखे थे।

लेबेदेव ने दूर से देखा कि उनमें मेरिसन भी है। मैला-फटा पैण्ट-शर्ट उसका पहनावा, गाल पर बढ़ी हुई दाढ़ी, बिखरे हुए बाल। नेटिवों के साथ मिलकर मेरिसन जुए में मत्त हो उठा था। सहमा लगा जैसे कोई बड़ा दाँव वह हार गया। जेब में कुछ था नहीं, नेटिव लोग रुपये के लिए उसकी खींच-तान करने लगे। लेबेदेव को देख आश्वस्त हो मेरिसन दौड़ा आया, पाँच रुपये उधार माँग बैठा। रुपये नहीं देने पर नेटिव लोग उसका अपमान करेंगे। लेबेदेव ने कहा, "दे सकता हूँ एक शर्त के साथ।"

"कौन-सी शर्त ?"

"इसी समय मेरे साथ चले आना होगा।"

"कैसे जाऊँ ? आज एक बार भी नहीं जीता। जीते बिना खाऊँगा क्या ?"

"मेरे अतिथि हुए तुम।" लेबेदेव ने रुपये देकर कहा, "चले आओ।"

नेटिव लोगों को रुपये चुकाकर मेरिसन ने लेबेदेव का अनुसरण किया।

"मिस्टर मेरिसन," लेबेदेव ने कहा, "दिनोंदिन तुम कितने नीचे गिरते जा रहे हो, इसका ख्याल रखते हो ?"

"किसने कहा कि नीचे जा रहा हूँ ?" मेरिसन ने भीगे स्वर में कहा, "मैं आकाश के पक्षी की तरह मुक्त, स्वाधीन हूँ।"

"बाजपक्षी की चोट खाये उस पंछी की तरह छटपटा रहे थे तुम, उन जुआरी पावनेदारों के हाथ।"

"स्वाधीनता का सुख भी है। दुख भी है। मैं जंजीर में बँधे पक्षी की तरह नहीं रहना चाहता।"

"लगता है इसीलिए शराब की दूकान छोड़ दी ?"

"स्त्री के धन से धनी होने की इच्छा नहीं है।"

"जूठनवृत्ति की इच्छा क्यों ? काम करके जीविका नहीं चला सकते ?"

"सुविधाजनक काम नहीं मिलता। पूंजी नहीं जो व्यवसाय करूँ।"

"मेरे थियेटर में काम करोगे ? मैं अंग्रेजी नाटक कर रहा हूँ। सज्जाकक्ष की जिम्मेवारी तुम पर रहेगी। राजी हो ?"

"हाँ, हूँ।"

लेवेदेव मेरिसन को साथ लिये सीधे थियेटर में उपस्थित हुआ। जोसफ बैटल् उस समय तैलचित्र में सिक्तवसना हीरामणि का शेष आँचल खींचने में व्यस्त था। लेवेदेव ने मेरिसन की नियुक्ति का प्रस्ताव किया। चित्रकारी में विघ्न पाकर बैटल् का मूड पूरा बिगड़ गया था। पागल कौए-जैसा मेरिसन का चेहरा देख वह चीखता हुआ फट पड़ा, "भूल मत जाओ, इस थियेटर का मैं एक भागीदार हूँ। इस थियेटर में आवारों के लिए जरा भी स्थान नहीं। उस आदमी के प्रति अगर कुछ दया हो तुम्हें तो उसे अपने अस्तबल में साईस बनाकर रख सकते हो, इस अंग्रेजी थियेटर के सज्जाकक्ष में नहीं।"

"तुम कहते क्या हो, जोसफ ?" लेवेदेव ने कहा, "मिस्टर मेरिसन को अस्तबल का साईस बनाकर रखूं ! यह क्या एक अंग्रेज जेण्टिलमैन नहीं ?"

"जेण्टिलमैन !" बैटल् बोला, "अरे छिः, उसके सिर से पैर तक भद्रता का लेश भी नहीं, और वह अंग्रेज-समाज का कलंक है। जो एक ब्लैक होर् के लिए अपनी अंग्रेज वाइफ का त्याग करे, घर-भर के लोगों के सामने बास्टार्ड को अपनी सन्तान घोषित करे, वह हरामजादा न अंग्रेज है न जेण्टिलमैन। ऐसे नरक के कीड़े को हमारे इस थियेटर में जगह देने पर यह भी नरककुण्ड हो जायेगा।"

इतनी देर के बाद मेरिसन ने मुँह खोला, "मिस्टर बैटल्, तुम्हारे मूली-जैसे दाँतों को कुछ घूंसों से उखाड़ फेंकने की शक्ति मेरी मुट्ठी में है। लेकिन मिस्टर लेवेदेव के तुम भागीदार हो, सिर्फ इसीलिए तुम्हें छोड़ दिया है। मैं अंग्रेज हूँ। मेरी धमनियों में अंग्रेजी रक्त प्रवाहित है। मैं अपनी स्त्री के साथ कैसा व्यवहार करूँ, अपनी रखैल से कैसा सम्बन्ध रखूं, अपनी पुत्र-सन्तान को कैसी स्वीकृति दूं—ये मेरे व्यक्तिगत मामले हैं। मैं इन मामलों में किसी के सामने कैफियत नहीं दूंगा, खास तौर से तुम्हारी तरह के एक ऐसे आदमी के सामने जो मेरी ही

जूठन उस औरत का उपभोग करता है।"
    वैंटल् ने कहा, "व्हाट डू यू मीन ?"
    "वह जो हीरामणि है, जिसको गीले कपड़े पहनाकर तुम चित्र बनाते हो, जिसके साथ सहवास के लिए लालायित हो, वह मेरी उपभोग की हुई है—उच्छिष्ट, परित्यक्त। तुम चले हो मुझे सच्चरित्रता का उपदेश देने ?"
    हीरामणि अपना नाम सुनकर चकित हुई। वह हनहना उठी, "क्या कहता है मेरा नाम लेकर यह साहब-मर्दुआ ?"
    मेरिसन ने कहा, "तुम्हें मैंने छोड़ दिया है, तुम मिस्टर वैंटल् के साथ मौज करो।"
    "जान निछावर," हीरामणि बोली, "मेरा वैंटल् साहब ही अच्छा है।"
    सबके सामने हीरामणि आगे बढ़कर जोसफ वैंटल् के गले में झूल गयी। वैंटल् ने जबरन अपने को छुड़ा लिया, मेरिसन की ओर झपटते हुए बोला, "कुत्ते की औलाद, आइ विल टीच यू ए लेसन !"
    वैंटल् लपका मेरिसन की ओर। उसके जरा-सा हटते ही वेग न सँभाल पाने के कारण वैंटल् मुँह के बल जा गिरा। मेरिसन हँस पड़ा, उपहास करते हुए बोला, "फिर भेंट होगी। मैं अभी बहुत नीचे जा पड़ा हूँ, भाग्य को फिर लौटा लाऊँगा। तब तुम्हें अपना पोर्ट्रेट बनाने की मजूरी दूंगा, बाइ-बाइ !"
    मेरिसन दरवाजे की तरफ आगे बढ़ा। लेबेदेव ने कहा, "मिस्टर मेरिसन, क्या तुम जा रहे हो ? मेरे थियेटर में काम नहीं करोगे ?"
    मेरिसन ने कहा, "नहीं मिस्टर लेबेदेव, मैं दुखी हूँ, तुम्हारे उदार प्रस्ताव को मैं स्वीकार नहीं कर पाया। इसके बाद जब तुम्हारे साथ मुलाकात होगी तब देखोगे कि मैंने जीवन में प्रतिष्ठा अर्जित कर ली है, अपने प्रयास से, अपनी शक्ति से। तुम विदेशी रूसी हो, किन्तु मेरे सजातीय इंग्लिशमैन से तुम हजार गुना अच्छे हो। तुम्हारा मंगल हो।"
    मेरिसन चला गया।

दिन पर दिन बीतते गये। अंग्रेजी नाटक की योजना फिर भी आगे नहीं बढ़ी। बहुत-से नाटक लेकर लेबेदेव ने चर्चा की, किन्तु भागीदार जोसफ वैंटल् ने किसी पर सम्मति नहीं दी। सीन-स्टेज को लेकर उसने अनेक उलट-पलट किये, किन्तु सुधारने का कोई प्रस्ताव नहीं पेश किया। बल्कि लेबेदेव थियेटर के दल को बैठे-बिठाये वेतन देता रहा। आय नहीं, व्यय प्रचुर। संचित साधारण-सी रकम

ख़त्म हो गयी। उधार लो। बैटल् से रुपये माँगने पर उसने कहा, "रुपये देने की बात नहीं। मैं शिल्पी हूँ। मेरी तूलिका के स्पर्श से जो दृश्यपट खिल उठेंगे, वही मेरी पूँजी है। मैं उससे अधिक एक पैसा नहीं दे सकता।"

"तो फिर जल्दी-जल्दी सीन बना डालो।"

"मैं आर्टिस्ट हूँ," बैटल् ने कहा, "चित्र बनाना या नहीं बनाना मेरे मूड पर निर्भर करता है।"

"तो क्या बैठा-बैठाकर लोगों को वेतन दूँ ?"

"नहीं दे सकते तो वे चले जायेंगे।" बैटल् ने कहा, "तनख्वाह नहीं पाने पर वे तुम्हारा भालूवाला चेहरा देख-देख बेगार नहीं खटेंगे।"

"क्या मतलब है तुम्हारा ?" हताश हो लेबेदेव ने पूछा।

"बहुत सीधा।" बैटल् बोला, "ऐसा एक प्रोडक्शन करो जिससे कलकत्ता शहर चार्म्ड हो। सुपर्ब प्रोडक्सन, रावर्थ की आँखें कपाल पर जा चढ़ेंगी। सोचेगा कि इस जोसफ बैटल् को दुत्कारकर उसने गलत ही तो किया था !"

"किन्तु प्रोडक्शन का प्रयास तो नहीं हो रहा।"

"कहाँ से होगा ?" बैटल् ने कहा, "रुपये लगाओ, रुपये लगाकर स्टेज को नये सिरे से बना डालो। होम से माल-मसाला मँगाओ। तभी तो सभी कुछ ढंग से किया जायेगा ? नहीं तो क्या तुम्हारे द्वारा अंकित इस रद्दी सीन पर इंग्लिश थियेटर होगा ? आज पचास रुपये दो, सीन का कपड़ा ख़रीद लाना होगा।"

"रुपया नहीं है," लेबेदेव ने कहा, "जो कपड़ा है उसी से काम चलाओ।"

"तो जाये भाड़ में," बैटल् बोला, "रुपये का जोगाड़ करो तब काम में हाथ लगाऊँगा। अभी मिस्टर स्विज के अखाड़े पर जाता हूँ, फेन्सिंग का प्रैक्टिस करने। लौटकर देखूँ कि सीन चित्रित करने का कपड़ा मौजूद है।"

बैटल् तो फरमाइश करके चला गया, किन्तु काम चाहिए। लेबेदेव ने सोचा, कल्पनाशील शिल्पी है। उसको हाथ में रखने की जरूरत है। लेबेदेव ने कैशबक्स को उलट-पलटकर देखा, दो सौ के करीब रुपये हैं। वही देकर सीन आँकने का कुछ कपड़ा खरीद लाने के लिए सरकार को टिरेटी बाजार भेज दिया।

थियेटर के स्टेज पर खड़ा हो गया लेबेदेव। जनशून्य मंच। मन में आया कि कितना विशाल है ! अपने-आपको बहुत अकेला महसूस किया। मन को लगा जैसे सूने प्रेक्षागार में सूने मंच पर अभिनय किये जा रहा है। उद्देश्यहीन भाव से दृश्यपट

खड़े हैं। पादप्रदीप में आलोक नहीं। पिट और बाक्स की कुर्सियाँ खाली। कब फिर आलोक जलेगा, दर्शक आयेंगे, संगीत-मूर्च्छना उठेगी, अभिनेता-अभिनेत्रियों की मधुर स्वरलहरी ध्वनित होगी, तालियों से प्रेक्षागृह मुखरित होगा—कौन जानता है? लेबेदेव की छाती को मथती हुई एक दीर्घ श्वास छूटी।

प्रेक्षागार के धुँधले आलोक में वह जैसे खो गया। अंग्रेजी थियेटर की मरीचिका, तृषातुर आशा ने उसको भटका-भटकाकर परिश्रान्त कर डाला है।

मंच पर एक हल्की-सी आहट। "कौन है वहाँ?"

"मैं चम्पा।"

"तुम अचानक यहाँ?"

"बहुत दिनों से बुलाया नहीं। इसलिए खुद ही देखने आ गयी।"

सचमुच बहुत दिनों से इन लोगों की बुलाहट नहीं हुई।

चम्पा बोली, "इस रंगमंच से कैसा तो एक मोह हो गया है।"

"और रंगमंच के मलिक से घृणा।"

"क्या तो कहते हो! तुम पर श्रद्धा करती हूँ," चम्पा ने कहा, "मुचन क्रीतदासी, दाई, अत्यन्त साधारण स्त्री जो चोरी की बदनामी के साथ जानी जाती है, उसीको तुमने रंगमंच पर स्थान दिया, मुग्गे की तरह अभिनय करना सिखाया। मर्यादा दी, आत्मविश्वास दिया—और मैं तुमसे घृणा करूँ? करती हूँ श्रद्धा और भक्ति।"

"मैं श्रद्धा नहीं चाहता, भक्ति नहीं चाहता, चाहता हूँ जरा-सी सहानुभूति, जरा-सा प्यार।" लेबेदेव कातर कण्ठ से बोला, "मैं बहुत एकाकी हूँ—एकाकी।"

"मैं भी।"

"सो क्या! तुम्हारे तो सन्तान है। प्रेमी है।"

"मेरिसन नहीं है।"

"इसका मतलब?"

'वह कहीं चला गया है, उसका कोई पता नहीं।"

"कहाँ गया है? कुछ बताया नहीं?"

"नहीं, उसने कहा, 'चम्पा डार्लिंग, भाग्य को लौटाने जाता हूँ। अगर भाग्य को लौटा पाया तो फिर भेंट होगी। दिस इज ए सैड बैड वर्ल्ड। यहाँ रुपये से मनुष्य का मूल्य आँका जाता है। मुझे यदि रुपया रहे तभी समाज में प्रतिष्ठा, नहीं तो घृणा।'

मैंने कहा, 'रुपया चाहिए? मेरे पास कुछ रुपये जमा हैं, तुम ले लो।'

'वह रुपया नहीं चाहिए।' उसने कहा, 'बाबू निमाइचरण मल्लिक से कुछ

रुपये उधार लिये हैं। बाबू चालाक आदमी है, लेकिन उदार है। उसके घर पूजा-पर्व में, बाई-नाच में अच्छी-अच्छी मदिरा दी है। मेरा विश्वास करता है, इसी लिए एक बात पर, रुक्के पर, कुछ उधार दे दिया। उस रुपये से भाग्य को लौटाऊँगा। तब कलकत्ता शहर लौटूँगा।'

'तुम मत जाओ।' मैंने कहा।

उसने सुना नहीं।

मैं रो पड़ी, कातर स्वर में बोली, 'तुम मुझसे विवाह मत करो, हर्ज नहीं, लेकिन मुझे छोड़कर नहीं जाओ। छोटे मुँह से बड़ी बात कहती हूँ। दासी होकर राजरानी होने का स्वप्न देखती हूँ। मेरा स्वप्न टूट गया है। तुम मत जाओ। अपना दरवाजा खोल रखा है। तुम आओ, तुम आओ। पहले की तरह ही मेरे साथ रहो।'

उसने सुना नहीं।

मैंने उसके पाँव जकड़ लिये, रो-रो बेहाल हुई।

उसने सुना नहीं, बोला, 'माइ हार्ट, मैं अंग्रेज की औलाद हूँ। भाग्य की खोज में समुद्र लाँघकर आया हूँ। इतने दिन केवल आहार-विहार किया, भाग्य-लक्ष्मी की आराधना नहीं की। इस बार करूँगा। अलविदा डियरेस्ट।

मैंने अपनी सन्तान, पुत्र को उसके हाथ में थमा दिया, बच्चे का मोह होगा तो जा नहीं पायेगा। उसने बच्चे को दुलार लिया। उसके बाद हँसकर बोला, 'इसके लिए भी मुझे जाना होगा। इसको आदमी बना पाने के लिए अपने भाग्य को लौटाना ही होगा।'

जाते समय उसने कहा, 'चम्पा डियरेस्ट, क्या तुम मेरे लिए प्रतीक्षा नहीं करती रहोगी?'

'युग-युग तक प्रतीक्षा करूँगी।' मैंने कहा।

वह चला गया। कहाँ गया, कितने दिनों के लिए गया, कुछ नहीं जानती। उसके लिए सोचते-सोचते आकुल हो उठती हूँ। आशंका होती है कि क्या वह लौट आयेगा!"

लेबेदेव ने मन-ही-मन मेरिसन से ईर्ष्या की। भाग्यशाली है मेरिसन। दो नारियाँ उसका ध्यान करती हैं। एक उसकी धर्मपत्नी और दूसरी उसकी प्रेमिका। एक उसको कानूनी दावे के जोर से पाना चाहती है, दूसरी का सम्बल केवल प्रेम है। एक उसकी स्वजातीया है, दूसरी विदेशिनी। किन्तु एक स्थल पर दोनों मिलती हैं। दोनों ही मेरिसन के लिए सोचती हैं। लेकिन लेबेदेव के लिए सोचनेवाली कोई नहीं। देश-विदेश में उसने ख्याति और सम्मान पाया है,

आशा-निराशा के झूले पर वह झूला है। किन्तु उसके लिए सोचे, ऐसी किसी को नहीं पाया। भाग्यशाली मेरिमन!

लेबेदेव ने चम्पा को धीरज बँधाया, "मेरिमन आयेगा, निश्चय ही लौट आयेगा। मैं जानता हूँ वह तुम्हें चाहता है। एकान्त भाव से चाहता है। तुम्हारे लिए उसने अपने सुख का विसर्जन कर दिया है। सामाजिक लांछना की उपेक्षा की है। वह जरूर लौट आयेगा, चम्पा!"

"उसी आशा से दिल को कड़ा किये हुए हूँ।" चम्पा ने कहा, "उसके लौट आने की आशा लेकर मैं युग-युग तक प्रतीक्षा करूँगी।"

लेकिन जिसके आने की राह क्षण-भर भी नहीं देखी, वह था जोसफ बैटल्। उसके साथ दो और भी लोग थे। क्या पता इस चम्पा को लक्ष्य करके बैटल् थियेटर में कहीं लंकाकाण्ड न रच दे।

मिस्टर स्विज के तलवारबाजी के अखाड़े से बैटल् सीधे थियेटर को लौट आया। कमर में उस समय भी तलवार झूल रही थी। उसने अच्छी-खासी मदिरा पी ली थी। दोनों आँखें लाल-लाल, जबान भी लड़खड़ाती हुई। उसके साथियों के पैर लड़खड़ा रहे थे। उनके हाथ में मदिरा की बोतल थी। बैटल् उखड़े स्वर में यह कहते-कहते घुसा, "कम ग्रान ब्वायज, वी विल मेक मेरी एट दिस हेल् ऑफ ए प्लेस।"

मंच पर प्रवेश करते ही लेबेदेव और चम्पा पर उसकी नजर पड़ी।

"बाइ जोव्, गेरासिम," एक पूरी हँसी हँसते हुए बैटल् ने कहा, "तुम इस सुन्दर काली स्त्री से प्रेम करते हो।"

लेबेदेव लज्जित होकर बोला, "क्या बकवास करते हो, जोसफ! तुम इसको पहचानते नहीं? यही चम्पा उर्फ गुलाब है। मेरे बँगला थियेटर की हिरोइन।"

"यही तो!" जोसफ उत्फुल्ल होकर बोला, "मेकअप छूट जाने से इसको पहचान नहीं पाया। स्टेज की अभिनेत्री से भी अधिक सुन्दर लगती है यह, अपूर्व। क्या फीगर है, जैसे ब्रौंज की एक जीवित अप्सरा। गेरासिम, इतने दिनों से इस सुन्दरी को कहाँ छिपा रखा था?"

लेबेदेव ने कहा, "बँगला थियेटर का रिहर्सल होता नहीं, इसलिए इसके आने का प्रयोजन नहीं हुआ।"

"प्रयोजन है," जाँघ ठोकते हुए बैटल् बोला, "अलबत्ता प्रयोजन है। मैं इसका एक चित्र बनाऊँगा। यह मेरी मॉडल है। वह हीरामणि एक भद्दी औरत है। यह एक स्त्री-रत्न है। क्या कहता है, डिलो!"

डिलो नामक एक अनुचर ने कहा, "यह औरत अलबत्ता एक रत्न है।

ल मेक ए गुड न्यूड । क्या कसा हुआ गठन है ! जस्ट हैव ए लुक ए
स्ट !"

"ठीक कहता है," वैटल् ने कहा, "देखता हूँ तुझे भी आर्टिस्ट की आँखें
सचमुच इस औरत का नग्न चित्र बूढ़ों को भी जवान बना देगा । कम आन
लिंग, मैं आज ही तुम्हारा एक न्यूड-स्केच खींचूँगा । कम इन टु दि ग्रीन-
म ।"

वैटल् चम्पा का हाथ खींचने लगा । चम्पा ने जबरन अपना हाथ छुड़ा
लिया ।

लेबेदेव विरक्त हो बोला, "जोसफ, लड़की को तंग मत करो ।"

"व्हाई, पार्टनर," वैटल् ने कहा, "मैं क्या तुम्हारे थियेटर के अर्धांश का
मालिक नहीं ? तो फिर अपने थियेटर की अभिनेत्री पर आधा अधिकार देने
में तुम्हें क्यों आपत्ति है ? तुमने तो इतने दिन उपभोग किया, अब मेरी पारी
है ।"

लेबेदेव ने कहा, "जोसफ, सुनो, चम्पा उस तरह की औरत नहीं ।"

"बिल्कुल हिन्दू सती-साध्वी !" वैटल् ने व्यंग्य किया, "तुम इस बात पर
यकीन करते हो ?"

"चम्पा मेरिसन को चाहती है। एकमात्र मेरिसन के प्रति वह अनुरक्त है ।"
लेबेदेव ने कहा ।

घृणा के लहजे में वैटल् बोला, "वह नरक का कीड़ा ! वह दोगला ! तब
तो मैं पहले ही उस कुत्ते के पास से औरत को छीन ले जाऊँगा । कम आ
डार्लिंग । कम इन टु दि ग्रीन-रूम ।"

वैटल् फिर चम्पा का हाथ पकड़ने बढ़ा । चम्पा ने हाथ उठाकर पूरी शक्ति
वैटल् के गाल पर तमाचा मारा । उसका गाल लाल हो उठा । वैटल् क्रो
फट पड़ा । वह गरजा, "यू डर्टी ब्लैक बिच । तेरी हिमाकत कम नहीं
जेण्टिलमैन पर हाथ उठायेगी ? तुझे मैं अच्छा सबक सिखाऊँगा । यही
सबके सामने विवस्त्र करके तेरी इज्जत लूटूँगा ।"

हिंसक उत्तेजना के साथ चम्पा को पकड़ने के लिए वैटल् लपका,
लेबेदेव ने तेजी से सामने आकर बाधा डाली ।

"हट जाओ, पार्टनर," गरज उठा वैटल्, "हट जाओ । मैं यहीं प
उपभोग करूँगा ।"

"नहीं ।" लेबेदेव ने कहा, 'मेरे थियेटर में यह सब बेअदबी नहीं च

"अकेले तुम्हारा थियेटर ?"

"हाँ, यह थियेटर मेरा है—मेरा—मेरा ! तुम्हें भागीदार बनाया है सिर्फ सीन चित्रित करने के लिए। तुम केवल पग-पग पर बाधा की सृष्टि करते हो। आज से हमारी साझेदारी खत्म। समझे ?"

"कह देने से ही साझेदारी खत्म ?" बैंटल् ने विरोध किया, "क्या कानून-अदालत नहीं है ?"

"तो कानून-अदालत ही देखो," लेबेदेव ने कहा, "बाहर निकलो। मेरे इस थियेटर से बाहर निकल जाओ। दरबान, खानसामा, मशालची—कौन कहाँ है ? इधर आ जाओ।"

साथ-साथ थियेटर के कर्मचारी दल बाँधकर हाजिर हुए। लेकिन मरने-मारने पर उतारू दो साहब मालिकों को देख स्तम्भित खड़े रह गये वे लोग।

बैंटल् ने कहा, "तू दरबान के द्वारा मुझे धक्के दिलायेगा ? तो देख, जाने से पहले तेरे नरक को गुलजार कर जाता हूँ।"

कहते-कहते वह तेजी के साथ तलवार से एक सीन को काटने-फाड़ने लगा। उसके साथी मंच की चीजों को तोड़ने-फोड़ने और तहस-नहस करने लगे। पूरे मंच पर पल-भर में जैसे आँधी बहने लगी।

"रोको, रोको यह ध्वंसलीला !" लेबेदेव चिल्ला उठा।

किन्तु कौन किसकी बात सुनता है ? विद्युत्गति से बैंटल् के हाथ की तलवार चलने लगी। तेज तलवार के गहरे आघात से एक-एक कर कीमती सीन बरबाद हो गये। बैंटल् के उन्मत्त साथियों के हमले से मंच का कठघरा भी क्षतिग्रस्त हुआ। यवनिका नीचे गिरकर नष्ट-भ्रष्ट हो गयी।

लेबेदेव चीख उठा, "ओ दरबान, बन्द करो यह सब काण्ड !" लेकिन देशी सेवकगण साहब लोगों का रंगढंग देखकर मूरत की तरह खड़े रहे। उस पर सामने तलवारधारी मदमत्त साहब। सेवकगण एक कदम भी आगे नहीं बढ़े। बैंटल् के एक साथी ने जलती मोमबत्ती से सीन के एक हिस्से में आग लगा दी। आग धाँय-धाँय कर जल उठी।

बैंटल् के दल को रोकने के लिए लेबेदेव खुद ही आगे बढ़ा, किन्तु बैंटल् के दूसरे साथी ने लेबेदेव के माथे पर मदिरा की बोतल दे मारी। लेबेदेव अचेत हो टूटे रंगमंच पर गिर पड़ा।

जब होश हुआ, लेबेदेव ने देखा कि वह सज्जाकक्ष में एक मेज पर लेटा है। बहुत-सारे लोगों की भीड़। सामने उत्सुक नेत्रों से निहारती चम्पा। कुसुम भी

थी। एक झालरवाले पंखे से वह लेबेदेव के सिर पर हवा कर रही थी। लेबेदेव के माथे में असह्य पीड़ा। माथा पट्टी से बँधा हुआ। गोलोकनाथ दास जानकार की तरह लेबेदेव की नाड़ी देख रहा था। उसने आश्वस्त करते हुए कहा, "कोई भय नहीं, साहब, माथे पर जोर से लगी थी। जरा-जरा कट गया है, जल्द ही ठीक हो जायेगा। चोट के चलते जब जाड़ा-बुखार नहीं आया, तो अब कोई भय नहीं।"

लेबेदेव को याद आयी बैटल् और उसके साथियों की निर्मम ध्वंसलीला की बात। लेबेदेव हैरान हुआ। क्यों यह काण्ड? लेबेदेव तो सिर्फ चम्पा के सम्मान की रक्षा के लिए गया था। उसके लिए बैटल् सारे मंच, दृश्यपट आदि का तहस-नहस कर डालेगा, क्यों? क्यों?

गोलोक बोला, "डाक्टरों को विदा कर दिया गया है। चोट खाकर तुम्हारे गिरते ही चम्पा की चीख से अभागे दरबान और नौकरों-चाकरों को होश आया। असली मालिक को मार खाते देख वे पागल हो उठे। जिसने जो हाथ में पाया उसीसे बैटल् और उसके साथियों को मारने लगा। बैटल् की तलवार की खोंच से मशालची का कन्धा कट गया है, भय की बात नहीं। दरबान वगैरह भी दल में तगड़े थे। उन्होंने तलवार छीन ली, बैटल् अन्त में अपनी जान बचाने के लिए मैदान छोड़कर भाग गया। सेवकों के हाथ से उसने भी कम मार नहीं खायी। बड़े कष्ट से कर्मचारियों ने आग को बुझाया।"

"स्टेज की क्या हालत है?" लेबेदेव ने पूछा।

"वह बात नहीं पूछो वही अच्छा।" गोलोक ने कहा, "सबको फिर नये सिरे से बनाना होगा।"

चम्पा दुख के साथ बोली, "मैं पापिन अभागिनी हूँ। मेरे कारण ही यह सब काण्ड हुआ।"

कुसुम बोली, "तू मिथ्या दुख मत कर, चम्पा! तेरा कुछ भी दोष नहीं। दोष सोलह आने मेरा है।"

चम्पा बोली, "तुम्हारा दोष कैसे, कुसुमदी?"

"मैंने तो आज सवेरे ही बाबू से सुना था," कुसुम ने कहा, "आज ही बँगला थियेटर में कोई काण्ड होगा।"

चम्पा ने पूछा, "जगन्नाथ बाबू कैसे पहले ही जान गये?"

"उस अंग्रेजी थियेटर के ललमुँहों के साथ आजकल बाबू का खूब मेल-जोल है। वहीं बाबू ने सुना कि बँगला थियेटर को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया जायेगा। यह बात जान लेने पर यदि उसी समय दौड़ी आकर साहब को सचेत कर देती

तो यह काण्ड ही नहीं होता । मैं क्या जानती थी कि इतनी जल्दी एक लंका-काण्ड घटित हो जायेगा ?"

लेबेदेव ने उत्सुक होकर पूछा, "क्या कलकत्ता थियेटर में यह कुचक्र चला था कि बँगला थियेटर नष्ट-भ्रष्ट हो जाये ?"

"वही तो सुना साहब," कुसुम ने कहा, "वह जो तुम्हारा भागीदार है, वही असली शिखण्डी है । उसको सामने रखकर उन लोगों का बड़ा साहब तुमसे लड़ रहा है । बाबू बोला कि उन लोगों में झगड़ा-झंझट होने की बात झूठ है । सिर्फ तुम्हें चकमा देने का यह षड्यन्त्र है ।"

क्या ही क्रूर मगर सहज षड्यन्त्र ! लेबेदेव ने मन-ही-मन अपने को धिक्कारा—क्या सचमुच ही वह निरा बेवकूफ है ! क्यों उसने बिना जाने-समझे झूठी आशा में पड़कर बैटल् और उसके दल-बल पर विश्वास कर लिया, उत्साह के साथ अपने भागीदार के रूप में स्वीकार कर लिया ? गोलोक बाबू ने मना किया था, लेकिन लेबेदेव ने उसकी बातों पर कान नहीं दिया । सफल षड्यन्त्र !

कुसुम बोली, "मैंने सोचा, सन्ध्या समय साहब को जरा एकान्त रहेगा । उसी समय क्यों न षड्यन्त्र की बात कह आऊँ ! ओफ्, यदि मैं पहले ही भागी आकर बता देती, वैसा होने पर यह काण्ड तो नहीं हो पाता !"

लेबेदेव उठ बैठा ।

गोलोक ने बाधा दी, बोला, "उठते क्यों हो, साहब ? थोड़ा और विश्राम लेने में शरीर चंगा हो उठेगा ।"

"विश्राम ?" लेबेदेव ने कहा, "नहीं, मुझे विश्राम नहीं । नीच-कमीने लोग कैसा सर्वनाश कर गये, मुझे यह देखना होगा ।"

वह खड़ा होने लगा । माथा उस समय भी धमधम कर रहा था । तो भी मंच पर वह जायेगा ही । चम्पा और कुसुम के कन्धे पर भार देकर वह काँपते कदमों से मंच की तरफ बढ़ गया । गोलोक पीछे-पीछे चला ।

उन लोगों की आँखों के सामने बीभत्स दृश्य । लग रहा था जैसे एक आँधी-वर्षा मंच के ऊपर से बह गयी है । माल-असबाब अस्त-व्यस्त, कटघरा उलटा-पलटा पड़ा हुआ है । सीन-दृश्यपट सारे चिथड़े-चिथड़े, यवनिका फट-चिट गयी है । पादप्रदीप और लैम्प आदि चूर-चूर, फूटी लालटेनों के शीशे इधर-उधर बिखरे हुए । जगह-जगह आग से जली हुई । मोमबत्ती के आलोक की छाया में मंच के ध्वस्त स्तूप ने विकट रूप धारण कर लिया था ।

हताशा, घृणा, क्षोभ, प्रतिहिंसा के नाना भावों के मन्थन में लेबेदेव का

मन उफनने लगा। आँखों के सामने तिल-तिलकर निर्मित एक मायालोक जैसे आज श्मशानभूमि बन गया है। हजारों रुपये बर्बाद हो गये। बहुत-सी वस्तुएँ मरम्मत के सर्वथा अयोग्य। नये सिरे से तैयार करने के लिए हजारों रुपये चाहिए। रुपये कहाँ हैं! आँखों के सामने जो ताण्डव हो गया, उसके लिए कोई भी दैवी दुष्प्रकोप उत्तरदायी नहीं। उत्तरदायी है नीच मनुष्य का कुटिल कुचक्र। कैसा भीषण कपटजाल, कैसा घृणित विश्वासघात!

लेवेदेव गर्जन कर उठा, "कलकत्ता शहर में क्या कानून-अदालत नहीं है? मैं उन्हें सही सबक सिखाऊँगा।"

लेकिन व्यर्थ ही था उसका संकल्प। आहत लेवेदेव दूसरे दिन परामर्श के लिए सीधे एटर्नी डान मैकनर के आफिस में उपस्थित हुआ। मैकनर ने बहुत ही उदासीनता के साथ उसे बैठने को कहा। संक्षेप में लेवेदेव ने घटना की जानकारी दी, किन्तु मैकनर ने उसे बढ़ावा बिल्कुल ही नहीं दिया। उसने कहा, "मिस्टर लेवेदेव, जोसफ बैटल् ने मुझे पहले ही सारी सूचना दे दी है, दोष तुम्हारा है। बैटल् तुम्हारा भागीदार है। उसके काम में बाधा डालना ठीक नहीं हुआ।"

"कौन-सा काम?" लेवेदेव विरक्ति के साथ बोला, "थियेटर के सज्जाकक्ष में एक अभिनेत्री का सर्वनाश कर डालना?"

"बैटल् ने सिर्फ नग्नचित्र आँकना चाहा था।" मैकनर ने कहा, "औरत भी सती-साध्वी नहीं। आग क्यों लग गयी तुम्हारे सर्वांग में?"

"मैं—मैं उस स्त्री को पसन्द करता हूँ।"

"यह मैं जानता हूँ," मैकनर बोला, "उस चोर स्त्री के लिए तुम मुझे लालबाजार के लॉकअप में ले गये थे। तुम्हारे बँगला थियेटर की वही नायिका है। उस तरह की देशी स्त्री पैसा देने से ही मिल जाती है। उसको लेकर भागीदार के साथ कलह करना शोभनीय नहीं।"

"लाख रुपये देकर भी चम्पा-जैसी स्त्री को खरीदा नहीं जा सकता।" लेवेदेव ने कहा।

मैकनर हो-हो करके हँस पड़ा। बोला, "लगता है तुम उस काली औरत के प्रेम में पड़ गये हो।"

"वह बात रहने दो।" लेवेदेव ने कहा, "जोसफ बैटल् ने मेरी बहुत-सारी चीजें तहस-नहस कर डाली हैं। उसका क्या उपाय है?"

"तुम्हारी चीजें नहीं," मैकनर ने कहा, "दोनों की चीजें। साझी सम्पत्ति। बैटल् तुम्हारा भागीदार है।"

"भागीदार व्यवसाय का," लेबेदेव बोला, "थियेटर के भवन और माल-असबाब का नहीं। खुद अपने ही द्वारा तैयार किये गये पार्टनरशिप-डीड की शर्तों को भूल गये हो तुम?"

"सम्पत्ति के अधिकार पर तर्क हो सकता है," मैकनर ने कहा, "लेकिन तुमने बैटल् को सीन आँकने के लिए कहा नहीं, मंचसज्जा को बेहतर बनाने के लिए कहा नहीं।"

"उसने सब चौपट कर दिया है।"

"वह कहता है कि रद्दी माल को नष्ट किये बिना नये माल का निर्माण नहीं होता।"

"वह सब बेकार की बातें मैं सुनना नहीं चाहता। मैं नालिश करूँगा।"

"लम्बा मुकदमा चलेगा। कितना पैसा है तुम्हारे पास? बैटल् से तुम लड़ सकोगे, रावर्ट उसकी पीठ पर है?"

"कितना खर्च होगा?"

"ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता। मुकदमा चलने पर बहुत रुपये लगेंगे। कई हजार रुपये। भागीदार के विरुद्ध साझी सम्पत्ति को नष्ट करने का अभियोग सिद्ध होगा या नहीं, सन्देह है। कुछेक हजार रुपये निकाल सकते हो?"

"कुछेक हजार?" लेबेदेव ने कहा, "तुम लोगों की अदालत में निर्धन को न्याय नहीं मिलता?"

"हमारी न्याय-पद्धति की त्रुटियाँ मत निकालो," मैकनर ने विरक्त होकर कहा, "तुम विदेशी रशियन हो, हमारी दया से कलकत्ता शहर में खाते-पीते हो। अपनी हैसियत भूलो मत। नालिश करना चाहते हो तो कम-से-कम पाँच सौ रुपये अग्रिम मेरे आफिस में जमा करा जाओ। उसके बाद तुम्हारा कागज-पत्र तैयार करूँगा।"

"पाँच सौ रुपये!" लेबेदेव ने कहा, "मिस्टर मैकनर, कुछ कम से नहीं हो सकता?"

"यह मेरा आफिस है।" मैकनर बोला, "यह मछली की हाट नहीं, मुकदमे को लेकर मछली का मोलभाव नहीं होता।"

"इतने रुपये मेरे पास नहीं हैं। और ऋण लेकर उसकी व्यवस्था करना सम्भव नहीं।"

"तो मुकदमे की आशा छोड़ दो।"

परामर्श देने के बदले कुछ फीस लिये बिना मैकनर ने नहीं माना। लेबेदेव हताश हो मैकनर के आफिस से बाहर निकल गया। अदालत के फाटक के पास

बैरिस्टर जान शॉ से भेंट हुई। शॉ ने सहानुभूति जतायी किन्तु मुकदमा नहीं करने की सलाह दी। लेबेदेव पर जिद सवार थी। रुपया कहाँ मिल सकता है? वह कर्नल किड के बँगले पर हाजिर हुआ। किड ने कई हजार रुपये उससे उधार ले रखे हैं। किसी भी तरह से हाथ नीचे नहीं करता। इस बार भी नहीं किया। सिर्फ पीठ थपथपाकर कहा, "डरो मत। मैं रावर्थ और बैटल् को धमका दूँगा जिससे वे तुमको और परेशान न करें। क्यों व्यर्थ मामला-मुकदमा करोगे? मुकदमे में हार-जीत के बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। बल्कि मैं कोशिश करूँगा कि बैटल् से कुछ रुपये तुम्हें बतौर मुआवजा दिला दूँ।"

लेकिन लेबेदेव दया का भिखारी नहीं। वह भीख माँगकर कुछ रुपये-पैसे जेब में भर लेना नहीं चाहता। वह अपने अधिकार के बल पर क्षतिपूर्ति का दावा करना चाहता है। निरुपाय हो वह न्यायाधीश सर रावर्ट चेम्बर्स के घर उनसे मिलने गया। लेडी चेम्बर्स एक संगीतज्ञ महिला हैं। वह लेबेदेव की गुणग्राहिका हैं। न्यायाधीश पार्टी में गये हुए थे। लेडी चेम्बर्स ने सहृदयता से सारी बातें सुनीं, किन्तु बोलीं कि वह स्वयं कुछ करने की क्षमता नहीं रखतीं। लेबेदेव चाहे तो पत्र द्वारा न्यायाधीश को जानकारी दे दे।

पत्र लिखने का संकल्प लेकर जब लेबेदेव घर लौट आया तो देखा कि कई लोग उसकी बाट जोह रहे थे। ये सब लोग लेनदार थे।

उन्हें कहीं पता चल गया था कि साहब का थियेटर ध्वस्त हो चुका है, इसलिए वे दौड़े आये थे रुपये वसूलने। लेबेदेव अपने देनदारों से एक पैसा भी वसूल नहीं कर पाया, मगर उसके लेनदार वसूली के लिए मुस्तैद हैं। किसी एक विलियम होर्थ ने लेबेदेव का काम कर देने की मजदूरी के रूप में कई सौ रुपये का दावा किया है। उस आदमी को वह पहचानता तक नहीं, काम देने की बात तो दूर रही। झूठा है, जरूर इसके पीछे भी रावर्थ की साजिश है। कर्मचारी सेल्बी से लेबेदेव ने उस चिट्ठी का उपयुक्त उत्तर लिखने देने को कहा। अन्य वास्तविक लेनदारों को आश्वासन दिया। कहा, "अपना सर्वस्व तक देकर मैं तुम लोगों का बकाया यथाशक्ति चुका दूँगा।"

बहुत ही तेज लेनदार हरिराम। उसने कहा, "यथाशक्ति क्या साहब? मेरी पूरी रकम नहीं मिलने पर छोड़नेवाला नहीं मैं। आपको जरूर यह पता होगा कि देनदार को जेल की हवा खिलाने का कानून है।"

तर्क करने लायक हालत शरीर और मन की नहीं। लेबेदेव खीजकर बोला, "तुम्हारी जो मर्जी हो करो। मैं एक कानी कौड़ी भी तुम्हें नहीं दूँगा।"

हरिराम बोला, "तो फिर अदालत में भेंट होगी। लालबाजार की पुलिस-

चौकी अवश्य ही श्वसुर का घर नहीं।"

दूसरे लोगों ने शोर मचाया, "साहब, हमारे रुपये का क्या होगा ?"

"मिलेगा, मिलेगा, जरूर मिलेगा।"

एक आदमी बोला, "साहब, मीठी बातों से कुछ नहीं बनता। मिलेगा-मिलेगा तो बहुत दिन से कहते रहे हो। कितने दिन में दोगे, साफ-साफ कह दो।"

"सात दिन," आवेश में आकर लेबेदेव ने कहा, "सात दिन के अन्दर तुम लोगों के रुपये चुका दूंगा।"

कुछ लोग अविश्वास से हँसे। एक आदमी ने टिप्पणी जड़ दी, "साहब के थियेटर में लालबत्ती जलती है, कानून-अदालत किये बिना कानी कौड़ी भी नहीं मिलने की।"

विरक्त हो लेबेदेव कह बैठा, "उस थियेटर की ईंट-लकड़ी, खिड़की-दरवाजे बेचकर भी तुम लोगों के बकाये चुका दूंगा। मैं रूसी हूँ। मैं फरेबी नहीं।"

दूसरे दिन अभिनेता-अभिनेत्रियों को साथ लेकर गोलोकनाथ आया। सभी ने मिलकर जोर दिया, "साहब, आओ हम लोग फिर बँगला थियेटर चलायेंगे।" चम्पा बोली, "मैं एक भी पैसा नहीं लूंगी।" कुसुम भी बिना पैसा लिये काम करने को राजी। उसने जगन्नाथ गांगुलि को छोड़ दिया था। आदमी बड़ा भारी कंजूस है। इसके अलावा लेबेदेव के साथ सम्पर्क रखने की बात को लेकर कुसुम से उसकी खटपट प्राय: चलती ही रहती थी। कुसुम जगन्नाथ से कहीं ऊँचे स्तर के धनी-मानी व्यक्ति की अंकशायिनी हो गयी थी। उसके नये बाबू हृषीकेश मल्लिक ने खुशी-खुशी उसे थियेटर में गाने की अनुमति दी थी। इससे बाबू की सामाजिक प्रतिष्ठा बहुत बढ़ जायेगी। नीलाम्बर बैण्डों का अंग्रेजी थियेटर का स्वप्न टूट चुका था। उसने कहा, "आप मेरे रिलीजियन फादर हैं, साहब! हमारी नेकी-नेकी-नेकी गर्ल ही अच्छी। उन मोम-जैसी मेमों का दल गलकर बह गया है। जायें, अच्छा ही हुआ। आइए, हम लोग एक बार और संघर्ष करें। लाल मूलियों को देख हमें हिम्मत हुई है।"

लेकिन लेबेदेव का मन टूट गया था। वह राजी नहीं हुआ। कहने से ही थियेटर चलाना नहीं हो जाता। उसने जो ऊँची प्रयोगकुशलता का परिचय दिया था, उसके अनुरूप अभिनय-आयोजन नहीं हो पाये तो अपयश ही हाथ आयेगा। ख्याति के शिखर पर अवकाश ले लेना ही उचित है। नहीं तो जो आज प्रशंसा में पंचमुख हैं, वे ही निन्दा में शतमुख होकर डराने को आयेंगे। इसके अतिरिक्त आर्थिक सम्बल अति सामान्य। बौखलाये लेनदारों के तकाजे। नये सिरे से उधार मिलना सम्भव नहीं। नये सिरे से सीन आँकना, नये सिरे से रंग-

मंच बनाना कैसे होगा ? थियेटर एक अकेले आदमी का काम नहीं। मंच, दृश्यपट, प्रकाश, वाद्य, अभिनय, नाटक, प्रायोजना—सबको मिलाकर थियेटर होता है। किसी एक की नीरसता से सारा मजा जाता रहेगा। नहीं—अब थियेटर नहीं।

एकमात्र आशा है—प्रधान न्यायाधीश सर राबर्ट चेम्बर्स को पत्र लिखा जाये। सारी बातें लेबेदेव ने संक्षेप में लिखीं। कर्नल किड और मिस्टर ग्लैड-विन के पास मोटी रकम होने की बात लिखी। वही रुपया वसूल होने पर सारी कर्ज चुकायी जा सकती है।

पत्र का उत्तर आया। देनदारी के मामले में न्यायाधीश कुछ नहीं कर सकते। प्रधान न्यायाधीश ने कानून का संकेत किया, किन्तु वह खुद गैर-कानूनी काम कर चुके हैं, यह बात क्या अब साहबी समाज में अजानी है ? किसी एक बाजार में बेनामी से उन्होंने एक भाग हड़प लिया है। उस बाजारवाले मामले की सुन-वाई उन्होंने खुद की है। बाजारवाले मामले पर विचार करने के लिए न्यायाधीश हाइड को वह रोगशय्या से बेंच पर खींच ले आये। न्याय नहीं प्रहसन ! सभी लोग छिः-छिः करते हैं। वही अब लेबेदेव को कानून का सहारा लेने के लिए कहते हैं।

नहीं, कानून-अदालत वह नहीं करेगा। प्रभु मसीह ने कहा है : अगर कोई तुम्हारे कोट के लिए दावा करे तो उसे कमीज भी दे डालो। नहीं तो कानूनजीवी लोग आकर तुम्हारी शर्ट उतार लेंगे।

लेबेदेव ने सात दिन के अन्दर ऋण चुकाने का वादा किया था। रुपये कहाँ हैं ? उस थियेटर की ईंट-लकड़ी, खिड़की-दरवाजे बेचकर वह रुपये जुटायेगा।

लेबेदेव के बंगला थियेटर में नयी भीड़ जमा हो गयी है। भारी तादाद में लोग, लेकिन इस बार दर्शकों की भीड़ नहीं। रसग्राही श्रोताओं की भीड़ नहीं। ईंट-लकड़ी-पत्थर के नीरस खरीदार लोगों की भीड़ है। तोड़नेवाले मजदूरों के साबल की चोट से चूना-सुर्खी की परतें झड़ने लगीं। एक-एक कर ईंटें बाहर आने लगीं। उत्तम कोटि की अच्छी-अच्छी ईंटें। झाड़-फानूसवाले लैम्प क्रेताओं की दृष्टि को आकर्षित करते हुए भूमि पर पड़े थे। सीन के फ्रेम, मंच की लकड़ी, दीवार से उखड़े हुए खिड़की-दरवाजे, अभिनेता-अभिनेत्रियों की पोशाक-सज्जा, वायलिन के ढाँचे, कुर्सी-बेंच और अनेक तरह के वाद्ययन्त्र अस्तव्यस्त गिरे-पड़े थे। जिस थियेटर को एक-एक दिन करके लेबेदेव ने अपनी देखरेख में तैयार

करवाया था, उसी थियेटर को आज अपनी देखरेख में ही उसने तोड़कर गिरा दिया है।

टामस राबर्थ ने दलाल भेजकर थियेटर को खरीद लेने का प्रस्ताव रखा था, लेकिन लेबेदेव ने घृणा के साथ उस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। प्रवंचक, स्वार्थी, कमीने, कुचक्रियों के साथ वह किसी भी प्रकार का सम्पर्क नहीं रखेगा। उसके अपने हाथों निर्मित उस आकांक्षित थियेटर में कलकत्ता थियेटर के मालिक लोग नये सिरे से थियेटर चलायें; उनके नृत्य-गीत, अभिनय, वाद्यसंगीत और तालियों से प्रेक्षागार मुखरित हो—इस अपमान को लेबेदेव सह नहीं पायेगा। युद्ध में वह पराजित हुआ है, किन्तु अपने ही राज्य में शत्रुओं को युद्ध जीतने का फल नहीं चखने देगा। सब-कुछ को गिराकर मटियामेट कर देगा। शत्रु लोग विजय का आनन्द मना लेने पर भी भोग के आनन्द से वंचित रहेंगे। युद्धशास्त्र की इस नीति का सबको पता है। लेबेदेव उसी मटियामेटवाली नीति का अनुसरण करेगा। इसीलिए बिना समय गँवाये उसने अपने द्वारा निर्मित थियेटर-भवन की एक-एक ईंट निकालकर सबको पानी के मोल बेच दिया था। हाँ, पानी के मोल ही। उसकी मुसीबत के दिन से फायदा उठाने का मौका देख चालाक व्यवसायी लोगों ने सारी मूल्यवान वस्तुएँ पानी के मोल खरीद लेने के लिए भीड़ लगा रखी थी।

सिर्फ सात दिन का समय है। लेनदारों के रुपये चुका देने का उसने वादा किया है। सिर्फ सात दिन के भीतर वह सारी सम्पत्ति बेचकर अपने को ऋण-मुक्त करेगा। कर्नल किड, ग्लैडविन आदि जैसे प्रतिष्ठित लोगों पर यद्यपि उसके काफी रुपये निकलते हैं, मगर वादों के बावजूद उन्होंने एक दमड़ी तक नहीं चुकायी। लेकिन लेबेदेव अपने लेनदारों को नहीं टरकायेगा। और टर-काना चाहने पर भी वे लोग क्यों छोड़ देंगे? लेबेदेव के लिए लालबाजार के जेलखाने का द्वार तो खुला है, एक ही दरख्वास्त और देनदार को जेल।

गोलोकनाथ दास ने परामर्श दिया, "ग्लैडविन के विरुद्ध नालिश ठोक दो।" लेकिन वह असम्भव है। मोटी रकम की नालिश में मोटी फीस देनी होगी। लेबदेव के पास तो एक छदाम तक नहीं।

तोड़ो, तोड़ो, हाथ चलाओ। थियेटर की इमारत को तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दो, ईंट-लकड़ी-पत्थर, खिड़की-दरवाजे उखाड़-उखाड़कर पानी के मोल बेच दो। शावेल की ठाँय-ठाँय आवाज हो रही थी, हड़हड़ाकर बालू-सुर्खी गिरी जा रही

मंच बनाना कैसे होगा ? थियेटर एक अकेले आदमी का काम नहीं। मंच, दृश्यपट, प्रकाश, वाद्य, अभिनय, नाटक, प्रायोजना—सबको मिलाकर थियेटर होता है। किसी एक की नीरसता से सारा मजा जाता रहेगा। नहीं—अब थियेटर नहीं।

एकमात्र आशा है—प्रधान न्यायाधीश सर रावर्ट चेम्बर्स को पत्र लिखा जाये। सारी बातें लेबेदेव ने संक्षेप में लिखीं। कर्नल किड और मिस्टर ग्लैडविन के पास मोटी रकम होने की बात लिखी। वही रुपया वसूल होने पर सारी कर्ज चुकायी जा सकती है।

पत्र का उत्तर आया। देनदारी के मामले में न्यायाधीश कुछ नहीं कर सकते। प्रधान न्यायाधीश ने कानून का संकेत किया, किन्तु वह खुद गैर-कानूनी काम कर चुके हैं, यह बात क्या अब साहबी समाज में अजानी है ? किसी एक बाजार में बेनामी से उन्होंने एक भाग हड़प लिया है। उस बाजारवाले मामले की सुनवाई उन्होंने खुद की है। बाजारवाले मामले पर विचार करने के लिए न्यायाधीश हाइड को वह रोगशय्या से बेंच पर खींच ले आये। न्याय नहीं प्रहसन ! सभी लोग छिः-छिः करते हैं। वही अब लेबेदेव को कानून का सहारा लेने के लिए कहते हैं।

नहीं, कानून-अदालत वह नहीं करेगा। प्रभु मसीह ने कहा है : अगर कोई तुम्हारे कोट के लिए दावा करे तो उसे घड़ी भी दे डालो। नहीं तो कानूनजीवी लोग आकर तुम्हारी शर्ट उतार लेंगे।

लेबेदेव ने सात दिन के अन्दर ऋण चुकाने का वादा किया था। रुपये कहाँ हैं ? उस थियेटर की ईंट-लकड़ी, खिड़की-दरवाजे बेचकर वह रुपये जुटायेगा।

लेबेदेव के बँगला थियेटर में नयी भीड़ जमा हो गयी है। भारी तादाद में लोग, लेकिन इस बार दर्शकों की भीड़ नहीं। रसग्राही श्रोताओं की भीड़ नहीं। ईंट-लकड़ी-पत्थर के नीरस खरीदार लोगों की भीड़ है। तोड़नेवाले मजदूरों के साबेल की चोट से चूना-सुर्खी की परतें झड़ने लगीं। एक-एक कर ईंटें बाहर आने लगीं। उत्तम कोटि की अच्छी-अच्छी ईंटें। झाड़-फानूसवाले लैम्प क्रेताओं की दृष्टि को आकर्षित करते हुए भूमि पर पड़े थे। सीन के फ्रेम, मंच की लकड़ी, दीवार से उखड़े हुए खिड़की-दरवाजे, अभिनेता-अभिनेत्रियों की पोशाक-सज्जा, बाक्स के ढाँचे, कुर्सी-बेंच और अनेक तरह के वाद्ययन्त्र अस्तव्यस्त गिरे-पड़े थे। जिस थियेटर को एक-एक दिन करके लेबेदेव ने अपनी देखरेख में तैयार

करवाया था, उसी थियेटर को आज अपनी देखरेख में ही उसने तोड़कर गिरा दिया है।

टामस रावर्थ ने दलाल भेजकर थियेटर को खरीद लेने का प्रस्ताव रखा था, लेकिन लेबेदेव ने घृणा के साथ उस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। प्रवंचक, स्वार्थी, कमीने, कुचक्रियों के साथ वह किसी भी प्रकार का सम्पर्क नहीं रखेगा। उसके अपने हाथों निर्मित उस आकांक्षित थियेटर में कलकत्ता थियेटर के मालिक लोग नये सिरे से थियेटर चलायें; उनके नृत्य-गीत, अभिनय, वाद्यसंगीत और तालियों से प्रेक्षागार मुखरित हो—इस अपमान को लेबेदेव सह नहीं पायेगा। युद्ध में वह पराजित हुआ है, किन्तु अपने ही राज्य में शत्रुओं को युद्ध जीतने का फल नहीं चखने देगा। सब-कुछ को गिराकर मटियामेट कर देगा। शत्रु लोग विजय का आनन्द मना लेने पर भी भोग के आनन्द से वंचित रहेंगे। युद्धशास्त्र की इस नीति का सबको पता है। लेबेदेव उसी मटियामेटवाली नीति का अनुसरण करेगा। इसीलिए बिना समय गँवाये उसने अपने द्वारा निर्मित थियेटर-भवन की एक-एक ईंट निकालकर सबको पानी के मोल बेच दिया था। हाँ, पानी के मोल ही। उसकी मुसीबत के दिन से फायदा उठाने का मौका देख चालाक व्यवसायी लोगों ने सारी मूल्यवान वस्तुएँ पानी के मोल खरीद लेने के लिए भीड़ लगा रखी थी।

सिर्फ सात दिन का समय है। लेनदारों के रुपये चुका देने का उसने वादा किया है। सिर्फ सात दिन के भीतर वह सारी सम्पत्ति बेचकर अपने को ऋण-मुक्त करेगा। कर्नल किड, ग्लैंडविन आदि जैसे प्रतिष्ठित लोगों पर यद्यपि उसके काफी रुपये निकलते हैं, मगर वादों के बावजूद उन्होंने एक दमड़ी तक नहीं चुकायी। लेकिन लेबेदेव अपने लेनदारों को नहीं टरकायेगा। और टरकाना चाहने पर भी वे लोग क्यों छोड़ देंगे? लेबेदेव के लिए लालबाजार के जेलखाने का द्वार तो खुला है, एक ही दरख्वास्त और देनदार को जेल।

गोलोकनाथ दास ने परामर्श दिया, "ग्लैंडविन के विरुद्ध नालिश ठोक दो।" लेकिन वह असम्भव है। मोटी रकम की नालिश में मोटी फीस देनी होगी। लेबदेव के पास तो एक छदाम तक नहीं।

तोड़ो, तोड़ो, हाथ चलाओ। थियेटर की इमारत को तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दो, ईंट-लकड़ी-पत्थर, खिड़की-दरवाजे उखाड़-उखाड़कर पानी के मोल बेच दो। शावेल की ठाँय-ठाँय आवाज हो रही थी, हड़हड़ाकर बालू-सुर्खी गिरी जा रही

थी। लाल धूल ने आकाश का रंग दिया था। लेकिन लेबेदेव के मन में रंग का नाम तक नहीं था। हृदय को कड़ा किये ईंट-लकड़ी की कठोरता से वह अपना कारबार किये जा रहा था। सिर्फ नुकसान उठाने का कारबार। अपनी समझ के अनुसार इज्जत बचाने का यही एक रास्ता है। डूबते जहाज से यात्री अपनी प्रिय वस्तुएँ समुद्र में फेंककर हल्का होना और अपने प्राण बचाना चाहता है। लेबेदेव उसी तरह अपनी प्रतिष्ठा बचाने को बेचैन है।

सिर्फ सात दिन का समय। दिन पर दिन बीतने लगे। जैसे-जैसे रुपये की आमद होती है, वैसे-वैसे लेबेदेव लेनदारों के बकाये चुकाता जाता है। थियेटर-भवन मिट्टी में मिल गया। सिर्फ मिट्टी और ईंट के ढेर। और रहा ही क्या? कुछ भी नहीं। लेकिन ऋण का अन्त नहीं हुआ।

सिर्फ दो सौ सत्ताइस रुपये का दावा करते हुए हरिराम ने परवाना जारी करवाया। लेबेदेव लालबाजार के फाटक में बन्द हो गया।

जेलखाने में समय-ही-समय। समय मानो निश्चल पहाड़ हो। भारी बोझ बनकर समय मन के अन्दर बैठा रहता है। लेबेदेव साधारण दागी आसामियों के साथ है, वही जो एक रूसी नागरिक, सुप्रसिद्ध वादक, प्रथम बँगला थियेटर का नियामक, भाषातत्त्वविद, बुद्धिजीवी और संस्कृति का संवाहक है। लालबाजार में साधारण कैदियों के साथ वह रहता है। कई मास पूर्व वह एक बार इस जेल में आया था। उस समय शहर के नामी वादक के रूप में उसने ख्याति भी पा ली थी। एक देसी रमणी की मुक्ति की टोह में वह आया था। 'खाँचा रथ' में वह रमणी शहर की परिक्रमा कर आयी थी। लेबेदेव के मन में उसे मुक्त करने की इच्छा थी। लेकिन अब वह खुद ही फाटक के अन्दर है। रमणी चोर नहीं थी, फिर भी चोरी के अभियोग में सजा पायी। लेबेदेव अकिंचन नहीं, तब भी अकिंचन की भाँति साधारण कैदियों के जेल में अटका पड़ा है। किड और ग्लैडविन अगर कुछ भी रुपया चुका देते तो लेबेदेव सारे ऋण चुकाकर नया जीवन शुरू कर पाता। लेकिन दूसरे के हाथ में धन गया तो गया—पर हस्ते गतं धनम्! वार्डर को बख्शीश का लोभ देकर लेबेदेव ने कागज-कलम मंगायी और बैरिस्टर जान शॉ को एक चिट्ठी लिखी—सिर्फ मामूली-सी रकम का दावा है, वह दावा भी आधाररहित, अविलम्ब जमानत की व्यवस्था करो

बैरिस्टर जान शॉ आदमी बुरा नहीं, देसी स्त्री के साथ घर बसाये हुए है, मसाले के व्यवसाय को लेकर डचों के इलाके में सट्टे खेलता है, हाथ में रुपया

रहने पर दरियादिल की तरह खर्च करता है। सम्भव है वह लेबेदेव की जमानत के लिए खड़ा हो जाये।

दो दिनों तक नरक की यन्त्रणा भोग लेने के बाद लेबेदेव मुक्त हुआ। जेलर ने कहा, "आप मुक्त हैं। जिस ऋण के दावे के चलते फाटक के अन्दर रहना पड़ा, वह चुका दिया गया है।"

"तो क्या अब जमानत नहीं ?"

"नहीं, ऋण चुका दिया है।"

लेबेदेव का मन कृतज्ञता से भर उठा। जान शॉ ने सचमुच एक महान् मित्र-जैसा काम किया है। सिर्फ जमानत की व्यवस्था नहीं, ऋण ही बिल्कुल चुकता कर दिया है।

जेल के फाटक के पास सेल्वी और गोलोकनाथ दास प्रतीक्षा कर रहे थे। इन दुख के दिनों में उनसे छोड़ा नहीं जाता। लेबेदेव को घर ले जाने के लिए वे भाड़े पर गाड़ी ले आये थे।

गाड़ी के अन्दर प्रतीक्षा कर रही थी चम्पा।

"नहीं, ऐसा अब क्यों ?" लेबेदेव ने कहा।

"मैं भुक्तभोगी हूँ," चम्पा बोली, "मैं जानती हूँ कि फाटक के अन्दर की यन्त्रणा कैसी होती है।"

"मिस्टर जान शॉ की कृपा से मुक्ति मिली," लेबेदेव ने कहा, "उसको चिट्ठी लिखी थी, उसीने ऋण चुकाने की व्यवस्था करके मुक्ति दिलायी।"

सेल्वी बोला, "नहीं, मिस्टर शॉ ने कुछ नहीं किया। आपकी चिट्ठी पाकर मुझे बुला भेजा। खेद जताते हुए उन्होंने कहा कि इच इलाकेवाले व्यवसाय में उन्हें भारी नुकसान हुआ है, वह जमानत की कोई भी व्यवस्था नहीं कर पायेंगे। हम लोगों से ही व्यवस्था करने को कहा।

"क्या व्यवस्था की ?" लेबेदेव ने पूछा, 'किसने फिर उधार दिया ?"

सेल्वी ने हिचकिचाहट दिखायी, फिर बोला, "मुझे बोलने की मनाही थी, लेकिन आपसे छिपाना अन्याय होगा। ये···ये रुपये मिस चम्पा ने दिये हैं।"

"चम्पा ! तुमने एक साथ इतने रुपये दे दिये ?" लेबेदेव ने कहा।

"यह फिर मैंने किया ही क्या है !" चम्पा बोली, "मैं फाटक के अन्दर रहने की यन्त्रणा जानती हूँ।"

"छि-छि, तुम ये रुपये देने क्यों गयी ?"

"रुपये तुम्हारे ही थे, साहब," चम्पा ने कहा, "तुमने जो सौं

दाना मुझे उपहार में दिया था, उसी को वेचकर तुम्हारी मुक्ति की व्यवस्था की है!"

लेवेदेव की आँखें सहसा अश्रुसिक्त हो उठीं।

दुःखेस्वनुद्विग्नमना सुखेपु विगत स्पृहः। वीतरागभयक्रोध स्थितधी मुनिरुच्यते ॥

शिक्षक गोलोकनाथ दास गीता पाठ कर रहा था और लेवेदेव तन्मय होकर सुन रहा था। दुख में जिसका मन उद्विग्न न हो। सुख में जिसकी स्पृहा नहीं, जिसे अनुराग-भय-क्रोध नहीं, वैसे ही स्थिर मनवाले मनुष्य को मुनि कहते हैं। गोलोक ने अनुवाद किया। लेवेदेव ने सन्दर्भ के लिए उन्हें लिख लिया।

नहीं, लेवेदेव हिन्दुओं का मुनिपद पाने योग्य कभी नहीं हो सकेगा। दुख से उसका मन उद्विग्न है। स्वार्थी और कुचक्री अंग्रेजों के षड्यन्त्र के चलते कलकत्ता शहर का सुप्रसिद्ध वादक, प्रथम वँगला थियेटर का प्रतिष्ठाता और सूत्रधार आज एकाएक सर्वस्वहीन हो चला है। भविष्य तो दूर की वात है, वर्तमान का निर्वाह कैसे होगा—यह भी अनिश्चित। थियेटर नष्ट हो गया। वादकदल टूट गया, अव सिर्फ साहवों-अफसरों और देशी धनी-मानी लोगों की पार्टियों और समारोह के अनिश्चित वुलावों पर निर्भर रहना होगा। भग्नहृदय लेवेदेव की पुरानी वायलिन से स्वरों का उच्छावास नहीं उभर पाता। वह सुख चाहता है, सुख को प्राणों में भर लेना चाहता है। अंग्रेजी समाज में यह विदेशी अव सुख-सुविधा नहीं प्राप्त कर सकता, यह वात निश्चित है। इसीलिए लेवेदेव ने शिक्षक गोलोकनाथ दास की देखरेख में संस्कृत और वँगला भापा के साहित्य में अपने-आपको तल्लीन कर दिया। भारतचन्द्र राय की रचना 'विद्यासुन्दर' वस्तुतः सुन्दर है! क्या ही उसकी शव्दयोजना! लेवेदेव ने रूसी भाषा में उसका अनुवाद किया। घण्टे पर घण्टे, दिन पर दिन वह रससागर में डुवकी लगाने लगा। संस्कृत और रूसी भापाओं में कैसी समदृश्यता! साम्राज्यलोभी अंग्रेज वनिये संस्कृत भापा का रसमाधुर्य क्या समझ पायेंगे? उनका लक्ष्य है—शासन और शासन! इसी उद्देश्य से देशी भापा जितना सीखने की जरूरत है, उतना ही ये लोग सीखेंगे! सर विलियल जोन्स विद्वान व्यक्ति थे। किन्तु संस्कृत-लिपि के वारे में उन्होंने जो मत व्यक्त किया था उसे लेवेदेव स्वीकार नहीं कर सकता। लेकिन लेवेदेव की मान्यता अंग्रेजी विद्वत्समाज में ग्राह्य नहीं। विदेशी होने के कारण ही क्या उसकी मान्यता को उन लोगों ने उड़ा दिया है? लेवेदेव ने प्राच्य भापा का एक नया व्याकरण लिखा है। उसे प्रकाशित करना होगा।

कई वर्ष पहले एक पुस्तकाकार रचना मास्को से रूसी भाषा में प्रकाशित हुई थी। व्याकरण को अंग्रेजी भाषा मे प्रकाशित करना होगा। ताकि उसकी विद्वत्ता अंग्रेजी समाज में प्रतिष्ठित हो, लोग समझें कि लेबेदेव केवल वादक नहीं विद्वान भी है।

किन्तु भाषा-साहित्य के रससागर मे डुबकी लगाने पर भी लेबेदेव को सुख कहाँ ? जो आदमी कलकत्ता शहर में वर्षों से लगभग पाँच हजार रूबल के बराबर कमा लेता था, वह आज प्राय कौडी-कौडी का मुहताज है। सम्पत्ति चाहिए। भाग्यान्वेषी अंग्रेजों ने पूरब के देशों में छल-बल और कौशल से लाखों मुद्राएँ अर्जित की हैं। अपने देश लौटकर शेष जीवन वे नवाबी भोग-विलास में बिता रहे हैं। केवल उच्च पदस्थ राजकर्मचारी नही, साधारण अंग्रेजों तक ने बेहिसाब धन कमाया है। और लेबेदेव थियेटर के मादक आकर्षण में अपना उपर्जित धन दोनों हाथो से लुटाकर सर्वस्वहीन हो चुका है। अगर कुटिल अंग्रेजों के षड्यन्त्र मे उसका सर्वनाश नही होता तो उसी थियेटर से वह फिर धनी हो जाता। जोसफ बैटल और उसके दल के लोग अपना मतलब पूरा कर फिर रावर्थ के साथ जा मिले हैं, कलकत्ता थियेटर फिर इस गौरव के साथ चालू हो गया है कि उसकी होड लेनेवाला अब कोई नही। नहीं, लेबेदेव अपने भाग्य को बदलेगा ही। मेरिसन की बात याद आयी। छोकरे की कोई खोज-खबर नहीं। नारी-शरीर का लोलुप और मद्यप वह अंग्रेज युवक अपने भाग्य की खोज में सब-कुछ छोडकर निकल पडा है। कहाँ गयी उसकी लोलुपता ? कहाँ गया उसका चटोरपन ? लेबेदेव भी भाग्य को बदलकर रहेगा। वह संस्कृत श्लोक तो कहता है—लक्ष्मी उद्योगी पुरुष-सिंह का ही वरण करती है, सोये हुए सिंह के मुख में मृग नही प्रवेश कर जाता। लेबेदेव ने लन्दन-स्थित रूसी राजदूत महामहिम काउण्ट वोरोनसोव के नाम, सहायता का अनुरोध करते हुए, एक पत्र 'राइलेल सारलट' नामक जहाज के एक नाविक के हाथ भेज दिया है। उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा है। विलायत से पत्राचार मे कई मास लग जाते हैं।

कई दिनों से हाथ प्रायः खाली था। मिसेज लूसी मेरिसन के यहाँ से वायलिन बजाने का बुलावा आया। मिसेज मेरिसन लिखती है—उसके विवाह की वर्षगाँठ के अवसर पर लेबेदेव यदि वायलिन बजाये तो उचित पारिश्रमिक वह देगी। विवाह की वर्षगाँठ ! जिसके एक विवाह को मृत्यु ने चौपट कर दिया और दूसरा विवाह सिर्फ नाम-भर का है, उसीके विवाह की वर्षगाँठ में वायलिन

बजाने का आमन्त्रण ! पारिश्रमिक वह नहीं लेगा, लेबेदेव ने सोचा । किन्तु इतनी हार्दिकता दिखाने योग्य आर्थिक अवस्था नहीं । लेबेदेव ने आमन्त्रण को स्वीकार कर लिया ।

मिसेज मेरिसन का बैठकखानावाला घर लेबेदेव का देखा-जाना है । सन्ध्या के घनीभूत होने पर वह वायलिन हाथ में लिये वहाँ हाजिर हुआ । विवाह की वर्षगाँठ की पार्टी । किन्तु और लोग कहाँ हैं ? बाहर घोड़ागाड़ियाँ भी नहीं खड़ी हैं । भीतर से भी आमन्त्रितों की बातचीत सुनायी नहीं पड़ती । तो क्या दिन और समय की भूल हुई ? कोट की जेब से निमन्त्रणपत्र को धुँधले प्रकाश में आँखों के निकट ले जाकर देखा, पढ़ा—कोई भूल हुई नहीं । अन्धकार में घर को पहचानने में भी उसने भूल नहीं की । ठीक जगह पर वह आया था । तो फिर ?

फाटक भिड़ा हुआ था । कुण्डी खटखटाने पर भी कोई संकेत नहीं मिलते देख लेबेदेव खुद ही द्वार को ठेलकर भीतर घुसा । और दिन आगन्तुकों की भेंट पहले नौकर से होती थी, किन्तु आज घर में मानो कोई मनुष्य नहीं । केवल एक खिड़की से अति धीमे प्रकाश पर नजर गयी ।

"कोई है !" लेबेदेव ने पुकारा । कोई आहट नहीं । क्या यह विवाह के वर्षगाँठ की पार्टी है ? अतिथियों का समागम नहीं, नृत्य का आयोजन नहीं, भोज की व्यवस्था नहीं, आलोक का उजाला नहीं । सन्दिग्ध मन से उसने मुख्य कक्ष में प्रवेश किया ।

"बेयरा ?"

आहट नहीं ।

"कोई है ?"

आहट नहीं ।

"मिसेज मेरिसन !" लेबेदेव ने अबकी पुकारा ।

"कम इन, मिस्टर लेबेदेव ।" मिसेज मेरिसन की तेज आवाज सुनायी पड़ी, बगल के आलोकित कमरे से ।

लेबेदेव ने उस आवाज का अनुसरण करते हुए बगलवाले कमरे के दरवाजे पर ठक-ठक की ।

मूसी फिर बोली, "कम इन ।"

लेबेदेव कमरे में घुसा । कमरे का धीमा प्रकाश धुँधला और रहस्यमय । सुसज्जित कक्ष, मोटा गलीचा, सोफा-कुर्सी-बेंच-मेज से भरा, सुनहले फ्रेम-लगे बड़े-बड़े आईने, दीवारों पर छोटे-बड़े-मँझोले तैल-चित्र जिनके विषय-भाव दुर्बोध, छत की कड़ी से लटकता झाड़-फानूसवाला लैम्प जिसमें प्रकाश का नाम

नहीं। दरवाजे-खिड़कियों पर भारी पर्दे। एक मेज पर बड़ी-सी घड़ी, जिसे स्वर्णजटित दो नग्न नारी-मूर्तियाँ हाथों में थामे हुए थीं। पूरे कमरे का रहस्य-मय धुँधलका सिर्फ एक मोमबत्ती के आलोक में तरल हो उठा था।

लेकिन कहाँ है लूसी मेरिसन ?

लेबेदेव ने चकित होकर पुकारा, "मिसेज मेरिसन ? कहाँ हो तुम ?"

दरवाजे का पर्दा हिल उठा। कुछ सरसराहट की आवाज, पर्दा हटाकर लूसी मेरिसन ने प्रवेश किया। विवाहवाला शुभ्र वस्त्र उसका पहनावा। सिर पर सफेद ओढ़नी, छाती पर उजले लेस, कमर से नीचे फैली हुई श्वेत गाउन भूमि का स्पर्श कर रही थी। हवा में तैरते श्वेत मेघ की भाँति लूसी मेरिसन ने कमरे में प्रवेश किया। मोमबत्ती के आलोक में वह अवास्तविक लग रही थी। उसने जरा झुककर भद्रता जतायी।

"क्या बात है, मिसेज मेरिसन ?" लेबेदेव ने पूछा, "आज तुम्हारे विवाह की वर्षगाँठ है ! कहाँ है आलोक, कहाँ हैं और लोग, कहाँ है समारोह ?"

"आलोक मेरे मन में है," लूसी बोली, "लोगों में तुम हो, और तुम्हारी वायलिन का स्वर ही समारोह है।"

"नहीं, नहीं, बात मैं समझ नहीं पा रहा हूँ।" लेबेदेव ने कहा।

"सारे नौकरों को खिसका दिया है। और तुम्हें एक ऐसे क्षण में बुलाया है जब प्रियतम के साथ मेरा मिलन होगा।"

कुछ सन्दिग्ध होकर लेबेदेव ने प्रश्न किया, "क्या तुम किसी और की प्रतीक्षा कर रही हो ?"

"अवश्य।"

"किसकी ?"

"अपने प्रियतम की। विवाह की वर्षगाँठ क्या प्रियतम के बिना पूरी होती है ?"

"तो क्या आज मिस्टर मेरिसन आ रहा है ?"

"अवश्य। उसको आज आना ही होगा। इसीलिए तो मेरा यह अभिसारिका का रूप है।"

लेबेदेव ने हाथ की वायलिन को नीचे रख दिया। लगता है पति-पत्नी में फिर मेल हो गया है ! अच्छा, अच्छा है। लेकिन। लेकिन चम्पा की बात याद आयी। उस अभागिनी का क्या होगा ? लेबेदेव का मन विषाक्त हो उठा। सभी धूर्त। सभी प्रवंचक। जाते समय क्या मेरिसन ने चम्पा से नहीं पूछा था, 'तुम मेरी खातिर प्रतीक्षा करोगी ?' क्या चम्पा ने नहीं कहा था कि युग-युग तक

प्रतीक्षा करेगी ? और भाग्य का उदय होने के बाद वह गोरा युवक काली प्रेमिका को मँझधार में छोड़कर गोरी पत्नी के पास लौट आयेगा। ये सभी धूर्त हैं, सभी प्रवंचक हैं—लेबेदेव ने सोचा।

"लगता है तुम्हें विश्वास नहीं होता क्या ?" लूसी बोली, 'यह विश्वास नहीं होता कि बॉब, मेरा पति, मेरे पास लौट आयेगा ? मैं उस ब्लैक होर् से उसका पीछा ही नहीं छुड़ा सकी। तुम भी नहीं छुड़ा पाये। किन्तु आखिर उसने पीछा छोड़ा तो ! कहो, तुम तो सारी खबर रखते हो, कहो क्या मेरा पति अब उस काली औरत के घर जाता है ?"

"नहीं।"

हँस पड़ी लूसी मेरिसन। एक अस्वाभाविक हँसी।

"मेरा पति उस काली औरत के घर नहीं जाता।" लूसी गर्व से भरकर बोली, "क्यों ? क्यों ? मैंने तुम्हारे दरवाजे पर धरना दिया था, अभिनेत्री बनकर प्रतियोगिता में उस औरत को डराने के लिए ! तुम राजी नहीं हुए। लेकिन मैंने हार नहीं मानी। उस ब्लैक होर् को अब अपने पति के कन्धे पर से उतार दिया है।"

"कैसे ?"

फिर हँसी। बन्द कमरे में हँसी की खनखनाहट लोट-पोट होने लगी।

"और कैसे ?" लूसी बोली, "वशीकरण करके।"

"वशीकरण करके ?"

"हाँ, मिस्टर लेबेदेव, हाँ," लूसी मेरिसन विश्वास के साथ बोली, "बैठकखानावाले बरगद के तले एक सिद्ध योगी रहता है। कितने ही लोग उसके पास जाते हैं। किसी का ब्याह नहीं हो पाता, किसी को लड़का नहीं होता, किसी का प्रेमी नहीं रीझता। मेरी आधी कामना उसने पूरी कर दी है, उसीने मेरे प्रियतम को ब्लैक होर् के चंगुल से छुड़ाया है। शेष कामना आज पूरी होगी। विवाह की इसी शुभ वर्षगाँठ के अवसर पर मेरा पति मेरे पास लौट आयेगा।"

"तुम इन सब पर विश्वास करती हो ?"

"अवश्य," लूसी कुछ उत्तेजित हो उठी, "विश्वास करूँगी नहीं ? सर्वज्ञ योगी, सबकुछ करने की क्षमता है उसको, मुझे तो मेरे खानसामे की पत्नी ने उसके बारे में बताया। पालकी करके उसके पास गयी। कितने ही लोग जाते हैं। हिन्दू-मुसलमान, हाँ, क्रिश्चियन। कोई विफल होकर नहीं लौटता। मैं भी नहीं लौटूँगी। यह देखो, योगी ने मुझे क्या पहनने को दिया है ?"

लूसी ने अपनी छाती पर से ताँबे की एक बड़ी-सी ढोलकी (तावीज) बाहर

निकाली। काले सूत से बँधी वह ढोलकी गले से झूल रही थी। लूसी ने उसे हाथ में लेकर कहा—'क्या है यह, जानते हो ?"

"क्या ?"

"मगर का दाँत। सुन्दरवन का मगर, एक बार उसकी पकड़ में आने पर किसी को छुटकारा नहीं। वही दाँत आज मेरे पति पर गड़ा है। वह आज सरसराता हुआ आयेगा।"

लूसी मेरिसन का माथा ठीक तो है ? लेबेदेव को आशंका हुई। इस देश में तावीज-ढोलकी, कवच-डोरा, झाड़-फूँक खूब चलते हैं। लोग विश्वास करते हैं। तो क्या इसीलिए श्वेत रमणी भी विश्वास करेगी ? लेबेदेव सोचने लगा।

"अब भी अविश्वास ?" लूसी ने कहा, "क्या समझ लूँ कि इसीलिए तुम मौन हो ? सात बजेंगे, घड़ी टन-टन करके सात बजायेगी। साथ-ही-साथ मेरा पति आयेगा। और साथ ही तुम अपनी वायलिन पर मीठा सुर छेड़ोगे, उत्तेजक सुर, मदहोश कर देनेवाला सुर। छेड़ोगे न ?"

"जरूर छेड़ूंगा। लेकिन बजा है कितना ?"

लूसी ने घड़ी को देखा, उत्तेजित हो बोली, "नहीं, और दस मिनट बाकी हैं। मिस्टर लेबेदेव, अब समय नहीं। तैयार हो जाओ। अपनी वायलिन बाहर निकालो, सुर दो, जिससे शुभ मुहूर्त व्यर्थ न जाये।"

लूसी चंचल होकर छटपट करने लगी। एक बार दरवाजे के पास गयी। फिर जँगले के पास, फिर सोफे पर बैठी और फिर उठकर आईने के सामने खड़ी हुई। मुख-नाक-केश पर पाउडर मल दिया। कैसा तो एक अस्वाभाविक बहका-बहका-सा भाव।

लेबेदेव ने वायलिन निकालकर टेयों-टेयों बजाया। गज से सुर दिया। बहुत-सी जगहों मे, बहुत-सी अवस्थाओं में उसने बजाया है, किन्तु इस तरह का रहस्यमय परिवेश उसके लिए बिल्कुल नया है। झाड-फूँक-तावीज-कवच में वह विश्वास नहीं करता, किन्तु इस श्वेत रमणी के विश्वास का तो अन्त नहीं। शायद पतिमिलन-अभिलाषिणी का यह निरा पागलपन है।

कमरे के वातावरण मे उमस थी। भारी-भारी माल-असबाब, खिड़की-दरवाजे पर टँगे पर्दे, अन्धकार जैसे दम घोंटे दे रहा हो।

"बत्ती जलाने से नहीं होगा ?" लेबेदेव बोला।

"नहीं।" दृढ स्वर था लूसी मेरिसन का, "नहीं, वह घर को आलोकित करता आयेगा। मोमबत्ती का आलोक अब नहीं।"

लूसी मेरिसन घड़ी के सामने खड़ी हुई। स्तब्ध-बन्द कमरे में घड़ी की टिक-

टिक आवाज साफ-साफ कानों में आती है। काँटा सात की तरफ बढ़ा जाता है। लूसी मेरिसन स्तब्ध हो उठी। वह कान लगाकर सुनने लगी।

लेवेदेव ने वायलिन के तार पर एक बार गज फेरी।

लूसी तेज स्वर में बोल उठी, "बन्द करो वायलिन की आवाज। वह आ रहा है, उसके आने की पगध्वनि सुनने दो।"

किसी दूसरे समय में इस प्रकार की कड़ी बात सुनकर लेवेदेव जरूर ही क्षुब्ध होता, किन्तु आज नहीं हुआ। उस हिस्टीरियाग्रस्त प्रौढ़ा रमणी का विरोध करना व्यर्थ था।

घर की स्तब्धता जैसे गहरा उठी। घड़ी की टिक्‌टिक् आवाज और बढ़ गयी। लूसी कान खड़े किये रही, कौतूहलवश लेवेदेव भी।

घड़ी का काँटा दिखायी पड़ता है।

टन् टन् टन् टन् टन् टन् टन्।

कैसा आश्चर्य, भारी बूटों की आवाज!

लेवेदेव विस्मित।

लूसी अस्फुट स्वर में बोली, "वह आता है, वह आता है!"

लूसी ताँबे की ढोलकी को बार-बार चूमने लगी।

लेवेदेव पहले कही गयी बात के अनुसार वायलिन कन्धे पर रखकर बजाने के लिए तैयार हो गया।

लूसी ने द्वारपथ पर दृष्टि जमा दी।

बूट की आवाज दरवाजे के पास आयी। और भी पास। दरवाजे का पर्दा हट गया।

पर्दा हटाकर घुसा मेरिसन नहीं, एक श्वेतकाय प्रौढ़। चेहरा दप्‌दप् लाल, गोल-मटोल! लेवेदेव ने वायलिन नहीं बजायी।

साथ ही लूसी मेरिसन आर्त्त स्वर में चीत्कार कर उठी और अचेत होकर मेज पर लुढ़क गयी।

आगन्तुक ने तेज कदमों से आकर लूसी मेरिसन को अपने बलिष्ठ हाथों में उठा लिया, सोफे पर लिटा दिया।

"मिस्टर लेवेदेव," आगन्तुक ने कहा, "मेहरबानी करके कुछ मोमबत्तियाँ जला देंगे?"

हुक्म के अनुसार कार्य। कमरे में अनेक मोमबत्तियों के जल उठने पर ही लेवेदेव आगन्तुक को पहचान पाया। यह आदमी वही डाक्टर जान ह्लिटनी है। लूसी मेरिसन ने ही इसी कमरे में परिचय कराया था। क्षण-भर का परिचय,

इसीलिए कमरे के धुंधले प्रकाश में इसे पहचाना नहीं जा सका।

डाक्टर ह्विटनी ने स्मेलिंग साल्ट की हरी शीशी मूर्छिता की नाक से लगा रखी थी। वह लज्जित होकर बोला, "मैं बहुत दुखी हूँ, मिस्टर लेबेदेव, तुम्हें ऐसे एक रहस्यमय परिवेश में लाकर पटक दिया गया है।"

"नहीं, नहीं, उससे क्या हुआ?" लेबेदेव ने कहा, "मिसेज मेरिसन अच्छी हैं न?"

"हाँ, उत्तेजना की स्थिति में आशाभंग होने पर अचेत हो गयी है। अभी उसकी संज्ञा लौट आयेगी। यदि कुछ अन्यथा नहीं सोचो तो पर्दे हटाकर खिड़कियों को खोल दो, ताजी हवा से उसकी चेतना जल्दी लौट आयेगी।"

लेबेदेव आदेशपालन के लिए तत्पर हो गया।

"सारी बातें जानकर जरूर तुम्हें कौतूहल हुआ है?" डाक्टर ने प्रश्न किया।

"कहने की बात नहीं।"

"मामला बहुत सीधा है।" डाक्टर ने कहा, "लूसी मिस्टर मेरिसन को पाने के लिए व्याकुल हो उठी थी। लेकिन तुम जानते हो कि मेरिसन उस काली छोकरी को अलग नहीं कर पाता। लूसी ने पति को वश में करने के लिए नाना प्रकार के देसी टोने-टोटके किये। जड़ी-बूटी खाने लगी। मैंने इधर उसके स्वास्थ्य की देख-भाल की। मेरी मनाही पर कान नहीं देती थी। मैंने विपत्ति की आशंका की। कभी कोई जहरीली चीज खाकर यह औरत मर तो नहीं जायेगी? मैंने खानसामे की घरवाली के द्वारा उसे उसी योगी के पास भेजा। मोटी बख-शीश देने पर उसने मेरे कहने के अनुसार निर्देश दिये। महज मनोवैज्ञानिक मामला। ठीक सात बजे मेरिसन के बदले मैं आया। यह रहस्यमय व्यापार किये बिना किसी भी तरह से लूसी के मन का दाग नहीं मिटा पाता।"

"क्या तुम कहना चाहते हो कि सारा खेल तुम्हारा रचा हुआ है?"

"हाँ। मैं उसे एक मिथ्या मोह से मुक्त करना चाहता हूँ। जिसे वह पा नहीं सकती उसके पीछे दीवानी है। मैं उसको चाहता हूँ।"

कमरे में फिर स्तब्धता। लूसी मेरिसन के सफेद चेहरे पर धीरे-धीरे रक्त-संचार हुआ। उसके दोनों होंठ थरथरा रहे थे। आँखों की पलकें हिल उठीं। डाक्टर ने उसके कान के पास मुंह ले जाकर बड़े प्यार से अस्फुट स्वर में पुकारा, "लूसी, लूसी डार्लिंग।"

लूसी ने आँखें खोलीं, कमरे में चारों ओर देखा। धीरे-धीरे उठ बैठी। लेबेदेव को उसने लक्ष्य नहीं किया। उसकी दृष्टि डाक्टर पर पड़ी।

"लूसी डार्लिंग," डाक्टर ने कहा, "माइ पेट्, माइ डोव, माइ डियरेस्ट हार्ट।"

"जॉन डियर," लूसी बोली, "तुमने मुझे डरा दिया था। तुम कमरे में घुसे, मैंने सोचा शायद बॉब आया।"

"यह सब बेकार की चिन्ता है।" डाक्टर ने कहा, "टॉम, तुम्हारा पहला पति, तो बहुत दिन पहले चल बसा। उसकी कब्र पर नियम से फूल रखना है। वह कहाँ से आयेगा?"

"लेकिन बॉब तो जिन्दा है," लूसी अबकी फफककर रो पड़ी, "वह क्यों नहीं आया?"

"डियर, डियर," डाक्टर ने कहा, "यों ही मत रो। तुम्हारा रूज नष्ट हो रहा है। वह नहीं आया तो नहीं आया, मैं तो आ गया हूँ।"

"लेकिन योगी ने कहा था, वह आयेगा।"

"कौन आयेगा?"

"मेरा पति।"

"मैं ही तो तुम्हारा पति हूँ! मतलब, मैं तुम्हारा पति होना चाहता हूँ। तुम मुझसे विवाह करोगी?"

"तुम? लेकिन योगी ने कहा था..."

"योगी ने मुझे भेज दिया। उसने कहा, तुम जाओ। लूसी मेमसाब पति की प्रतीक्षा कर रही है। तुम उससे विवाह करो, वह सुखी होगी, तुम भी सुखी होगे।"

"क्या सचमुच योगी ने तुम्हें भेज दिया?"

"अवश्य, विश्वास नहीं होता क्या?" डाक्टर ने कहा, "तो फिर सुनो, योगी के साथ तुम्हारी क्या-क्या बातचीत हुई थी।"

डाक्टर ने विवाह-वर्षगांठ की सारी घटना की पृष्ठभूमि संक्षेप में बता दी।

लूसी मेरिसन सीधी होकर बैठ गयी, बोली, "लो, तुम इतना सबकुछ कैसे जान गये? आश्चर्य की बात।"

"आश्चर्य कुछ भी नहीं।" डाक्टर ने कहा, "योगी ने मुझे सबकुछ बता दिया है और तुमसे विवाह करने के लिए कहा है। तुम्हें लेकर होम लौट जाने के लिए। योगी ने कहा है कि तुम सुखी रहोगी।"

"कहा है कि मैं सुखी रहूँगी?"

"हाँ, मैं तुम्हें सुखी रखूंगा। लूसी, मैं तुम्हें चाहता हूँ।"

"तब वही हो।" दूसरे ही क्षण लूसी सन्दिग्ध होकर बोली, "लेकिन अपने दूसरे पति के रहते क्या मैं विवाह कर सकूँगी ?"

डाक्टर ने कहा, "उसकी व्यवस्था पहले ही कर रखी है। गवर्नर जनरल के पास दरख्वास्त पेश करके इस विवाह को रद्द कराना होगा। उसके बाद हम विवाह करके होम लौट जायेंगे। डिवनशायर के अपने गाँव में एक छोटा-सा कॉटेज बनाकर हम दोनों जने सुख से रहेंगे। कहो लूसी, राजी हो ?"

"राजी हूँ," लूसी मेरिसन ने जैसे नवीन आशा का आलोक देख लिया, बोली, "जान, तुम्हारे ऊपर मैंने अत्याचार किया है, तुम्हारे मूक प्यार पर मैंने ध्यान नहीं दिया। इसीलिए तुम मानो मेरे पहले पति के वेश में आ गये हो। उसके साथ मैंने विश्वासघात किया था, उस कम्बख्त युवक के प्रेम में पड़कर। योगी की दया से आज मेरी आँखें खुल गयी हैं। आज तुम्हारे रूप में सिर्फ तुम्हें नहीं, अपने पहले पति को भी पा रही हूँ। बॉब मेरिसन दूर चला जाये। विदा ले। मैं प्यार तुम्हें करूँगी। तुम्हें प्यार करते हुए मैं अपने प्रथम पति के प्रति किये गये विश्वासघात का प्रायश्चित्त करूँगी। जॉन, मुझे चुम्बन दो, चुम्बन से अपने मिलन को सार्थक करूँगी।"

डाक्टर ने कमर में हाथ डालकर लूसी को खड़ा कर दिया, उसके अधरों पर चुम्बन आँक दिया। मुग्धा लूसी ने गले में बाँहें डालकर जॉन ह्विटनी को मारे चुम्बनों के अस्थिर कर दिया।

प्रौढ़-प्रौढ़ा के इस अप्रत्याशित मिलन पर प्रसन्नचित्त हो लेबेदेव ने वायलिन का सुर छेड़ दिया। प्रौढ़ प्रेमीयुगल की सलज्ज हँसती हुई दृष्टि ने जैसे वादक के प्रति कृतज्ञता अर्पित की।

बैठकखाना के बरगद-तलेवाले अज्ञात योगी का वशीकरण मन्त्र अन्ततः एक आदमी के लिए कारगर हुआ। वह था डाक्टर जॉन ह्विटनी। लूसी मेरिसन थोड़े ही समय में भावी तृतीय पति के प्रति प्रेम से परिपूर्ण हो उठी। उसमें भविष्य का निश्चित आश्रय पाकर वह आश्वस्त हुई। उनके विवाह की कानूनी बाधा दूर होने में कुछ दिन का समय लगा। राबर्ट मेरिसन लापता है। उसका अता-पता कोई नहीं दे पाया। विवाह रद्द किये जाने की दरख्वास्त की संक्षिप्त नोटिस सरकारी गजट में प्रकाशित हुई। दूसरी तरफ से कोई भी अनुरोध या प्रतिवाद नहीं आया। और आता ही कहाँ से ! राबर्ट मेरिसन की लम्पटता और पत्नी के प्रति दुर्व्यवहार की बात सर्वविदित थी। गवर्नर जनरल ने विवाह को रद्द कर दिया।

सेण्ट जॉन के गिरजे में लूसी मेरिसन का तृतीय विवाह सम्पन्न हुआ।

"लूसी डार्लिंग," डाक्टर ने कहा, "माइ पेट्, माइ डोव, माइ डियरेस्ट हार्ट।"

"जॉन डियर," लूसी बोली, "तुमने मुझे डरा दिया था। तुम कमरे में घुसे, मैंने सोचा शायद बॉब आया।"

"यह सब बेकार की चिन्ता है।" डाक्टर ने कहा, "टॉम, तुम्हारा पहला पति, तो बहुत दिन पहले चल बसा। उसकी कब्र पर नियम से फूल रखना है। वह कहाँ से आयेगा?"

"लेकिन बॉब तो जिन्दा है," लूसी अबकी फफककर रो पड़ी, "वह क्यों नहीं आया?"

"डियर, डियर," डाक्टर ने कहा, "यों ही मत रो। तुम्हारा रूज नष्ट हो रहा है। वह नहीं आया तो नहीं आया, मैं तो आ गया हूँ।"

"लेकिन योगी ने कहा था, वह आयेगा।"

"कौन आयेगा?"

"मेरा पति।"

"मैं ही तो तुम्हारा पति हूँ! मतलब, मैं तुम्हारा पति होना चाहता हूँ। तुम मुझसे विवाह करोगी?"

"तुम? लेकिन योगी ने कहा था…"

"योगी ने मुझे भेज दिया। उसने कहा, तुम जाओ। लूसी मेमसाब पति की प्रतीक्षा कर रही है। तुम उससे विवाह करो, वह सुखी होगी, तुम भी सुखी होगे।"

"क्या सचमुच योगी ने तुम्हें भेज दिया?"

"अवश्य, विश्वास नहीं होता क्या?" डाक्टर ने कहा, "तो फिर सुनो, योगी के साथ तुम्हारी क्या-क्या बातचीत हुई थी।"

डाक्टर ने विवाह-वर्षगाँठ की सारी घटना की पृष्ठभूमि संक्षेप में बता दी।

लूसी मेरिसन सीधी होकर बैठ गयी, बोली, "लो, तुम इतना सबकुछ कैसे जान गये? आश्चर्य की बात।"

"आश्चर्य कुछ भी नहीं।" डाक्टर ने कहा, "योगी ने मुझे सबकुछ बता दिया है और तुमसे विवाह करने के लिए कहा है। तुम्हें लेकर होम लौट जाने के लिए। योगी ने कहा है कि तुम सुखी रहोगी।"

"कहा है कि मैं सुखी रहूँगी?"

"हाँ, मैं तुम्हें सुखी रखूँगा। लूसी, मैं तुम्हें चाहता हूँ।"

याद दाई का काम वह अब और नहीं कर पाती। यहाँ तक कि दूसरे रास्ते भी सरल नहीं। मामूली जमा-पूँजी धीरे-धीरे समाप्त होने को आयी। तब भी चम्पा के चेहरे पर की हँसी गयी नहीं। वह घर में बैठकर मोमबत्तियाँ बनाती और अपने प्रतिपालक दादू गोलोकनाथ दास की सहायता से उन्हें बेचकर थोड़ा-बहुत उपार्जन कर लेती।

उस दिन कुसुम चम्पा के घर आयी थी। लेबेदेव से भी भेंट हुई। कुसुम ने आग्रह के साथ कहा, "साहब, तुम चम्पा को समझाओ। यह बिल्कुल अबूझ है।"

"बात क्या है, मिस कुसुम ?"

कुसुम बोली, "इतना-कुछ कहा, चम्पा किसी भी तरह से बात नहीं सुनती। और दिनों-दिन हाल कैसा होता जा रहा है!"

चम्पा बाधा डालते हुए बोली, "ओफ् कुसुमदी, रहने दे वे सब बातें।"

"लो, रहने क्यों दूँगी ?" कुसुम टनटनाकर बोल उठी, "कहाँ के निकम्मे उस छोकरे साहब के ध्यान में डूबी हुई है यह छोकरी। लेकिन उधर जो राजा-महाराजा पैरों के पास धरना दिये हुए हैं, उसका होश नहीं।"

"हुआ क्या है ?" लेबेदेव ने पूछा।

"मेरिसन साहब का तो पता नहीं," कुसुम बोली, "मगर कुमार चन्द्रनाथ राय ने मुझसे वादा किया है कि वह चम्पा को रख लेगा। घर देगा, गाड़ी देगा, गहने-कपड़े देगा। कुमार इसका अभिनय देखकर मुग्ध हो गया। ऐसी एक स्त्री को रख पाने से समाज में उसकी ख्याति बढ़ेगी। फिर भी छोकरी राजी नहीं होती। बहन, तुझे फिर कहती हूँ राजी हो जा! कुमार तुझे घर देगा, गाड़ी देगा, वस्त्रा-भूषण देगा।"

चम्पा जरा हँसकर बोली, "मुझे उसका नाम-पता दोगी ?"

"इसका मतलब ?"

"मतलब यह कि मुझसे विवाह कर क्या वह अपनी पत्नी के रूप में मेरा परिचय देगा ?"

"वह कभी नहीं होगा। समाज की एक मर्यादा होती है। हिन्दू पत्नियाँ हैं। तीन दुल्हनें घर में हैं। तुझे सबके ऊपर रखेगा, चम्पा!"

"तो फिर रखैल बनाकर रखेगा। विवाह तो करेगा नहीं।"

"वही एक बात तेरी! विवाह और विवाह। विवाह नहीं करने से क्या जन्म व्यर्थ हो जायेगा? कितनी सुन्दर-सुन्दर स्त्रियाँ विवाह किये बिना सुख से घर बसाती हैं। तू यह नहीं कर सकेगी?"

"नहीं, कुसुमदी, रखैल रहकर देख चुकी हूँ। उस पर अब मन नहीं जाता।"

बहुत अधिक धूमधाम से नहीं। डाक्टर ह्विटनी समझदार आदमी है। समारोह में व्यर्थ ही पैसा खर्च करने को राजी नहीं हुआ। दोनों जने की स्वदेश-यात्रा में खर्च काफी होगा। जहाज का भाड़ा ही करीब दस हजार। फिर भी, किफायतसारी के बीच ही, वह लेबेदेव को आमन्त्रित करना नहीं भूला। डचों का इलाका चुँचुड़ा, जहाँ वे दोनों मधुयामिनी मनाने गये। चुँचुड़ा में गंगा के किनारे पर ह्विटनी के एक मित्र का घर है। नये सुख की खोज में वे वहीं चले गये। विलायत लौट जाने में कुछ समय लगेगा। मिसेज ह्विटनी की घर-सम्पत्ति बेचकर रुपये उगाहने होंगे। इस काम का भार टामस रावर्थ पर पड़ा, नीलाम-दारी जिसका व्यवसाय था।

लेबेदेव का एक नया काम हुआ मुकदमा लड़ना। वह खुद नालिश करके अपने देनदारों से रुपये वसूल नहीं कर पाया। लेकिन लेनदारों के हमले से बचने के लिए उसे लड़ना पड़ा। अन्त में जगन्नाथ गांगुलि ने नालिश ठोक दी। बहुत चेष्टा करने पर भी वह अधिक का दावा नहीं कर पाया। सिर्फ कुछेक सौ रुपये का दावा। फिर भी इस बुरे समय में बाजार का वह बोझा भी कम नहीं। लेबेदेव जो फुटकर आय उपार्जित कर लेता था, उसका अधिकांश ही अदालत के खर्च में होने लगा।

महामहिम काउण्ट वोरोनसोव के यहाँ से पत्र का कुछ भी जवाब नहीं आया। लेबेदेव ने उनके पते पर फिर एक पत्र भेजा। वे यदि एक साथ दो या तीन मस्तूलवाले जहाज भेज दें तो लेबेदेव पूर्व की पण्य-वस्तुएँ लादे गंगा से नेवा नदी तक की यात्रा पर निकल पड़ेगा।

अदरक का व्यापारी जहाज की खोज-खबर नहीं रखता। इस देश की यह एक कहावत है। लेकिन लेबेदेव इसको झूठ साबित करना चाहता है। गंगा से नेवा—कलकत्ता शहर से सेण्ट पीटर्सबर्ग। लेबेदेव की कल्पना का पाल उड़ता हुआ वह चला, समुद्र से होकर समुद्र के उस पार।

बहुत दिनों के बाद वह मलंगा में चम्पा के घर हाजिर हुआ। चम्पा का सौन्दर्य दारिद्रय के बीच भी खिला पड़ रहा था। बरामदे का मरशुमी फूल का पौधा पहले की तरह ही हँस रहा था। पालतू काकातुआ पहले की तरह ही 'वेलकम', 'वेलकम' पुकार रहा था। चम्पा विपत्ति में पड़ गयी है। थियेटर के अभिनय के

बाद दाई का काम वह अब और नहीं कर पाती। यहाँ तक कि दूसरे रास्ते भी सरल नहीं। मामूली जमा-पूँजी धीरे-धीरे समाप्त होने को आयी। तब भी चम्पा के चेहरे पर की हँसी गयी नहीं। वह घर में बैठकर मोमबत्तियाँ बनाती और अपने प्रतिपालक दादू गोलोकनाथ दास की सहायता से उन्हें बेचकर थोड़ा-बहुत उपार्जन कर लेती।

उस दिन कुसुम चम्पा के घर आयी थी। लेबेदेव से भी भेंट हुई। कुसुम ने आग्रह के साथ कहा, "साहब, तुम चम्पा को समझाओ। यह बिल्कुल अबूझ है।"

"बात क्या है, मिस कुसुम ?"

कुसुम बोली, "इतना-कुछ कहा, चम्पा किसी भी तरह से बात नहीं सुनती। और दिनों-दिन हाल कैसा होता जा रहा है !"

चम्पा बाधा डालते हुए बोली, "ओफ् कुसुमदी, रहने दे वे सब बातें।"

"लो, रहने क्यों दूँगी ?" कुसुम टनटनाकर बोल उठी, "कहाँ के निकम्मे उस छोकरे साहब के ध्यान में डूबी हुई है यह छोकरी। लेकिन उधर जो राजा-महाराजा पैरों के पास धरना दिये हुए हैं, उसका होश नहीं।"

"हुआ क्या है ?" लेबेदेव ने पूछा।

"मेरिसन साहब का तो पता नहीं," कुसुम बोली, "मगर कुमार चन्द्रनाथ राय ने मुझसे वादा किया है कि वह चम्पा को रख लेगा। घर देगा, गाड़ी देगा, गहने-कपड़े देगा। कुमार इसका अभिनय देखकर मुग्ध हो गया। ऐसी एक स्त्री को रख पाने से समाज में उसकी ख्याति बढ़ेगी। फिर भी छोकरी राजी नहीं होती। बहन, तुझे फिर कहती हूँ राजी हो जा। कुमार तुझे घर देगा, गाड़ी देगा, वस्त्रा-भूषण देगा।"

चम्पा जरा हँसकर बोली, "मुझे उसका नाम-पता दोगी ?"

"इसका मतलब ?"

"मतलब यह कि मुझसे विवाह कर क्या वह अपनी पत्नी के रूप में मेरा परिचय देगा ?"

"वह कभी नहीं होगा। समाज की एक मर्यादा होती है। हिन्दू पत्नियाँ हैं। तीन दुल्हनें घर में हैं। तुझे सबके ऊपर रखेगा, चम्पा !"

"तो फिर रखैल बनाकर रखेगा। विवाह तो करेगा नहीं।"

"वही एक बात तेरी ! विवाह और विवाह। विवाह नहीं करने से क्या जन्म व्यर्थ हो जायेगा ? कितनी सुन्दर-सुन्दर स्त्रियाँ विवाह किये बिना सुख से घर बसाती हैं। तू यह नहीं कर सकेगी ?"

"नहीं, कुसुमदी, रखैल रहकर देख चुकी हूँ। उस पर अब मन नहीं जाता।"

"तो फिर मर तू!" कुसुम विरक्त हो बोली।

"यही अच्छा।" चम्पा ने जवाब दिया।

कुसुम चली गयी। जाते समय कह गयी, कुमार चन्द्रनाथ बिल्कुल उतावला है। एक बार चम्पा के 'हाँ' कहते ही पालकी भेज देगा।

कुमार चन्द्रनाथ राय चौधुरियों का जाना-माना सम्पन्न व्यक्ति है। उसका घर बड़े फाटक के बाजार के समान है। लेबेदेव ने दुर्गापूजा-उत्सव में वहीं वाद्य-वादन किया था।

"तुम राजी क्यों नहीं हुई?" लेबेदेव ने जिज्ञासा की।

"कारण जानते हो।" चम्पा बोली, "उनमें से कोई भी विवाह नहीं करना चाहता। सिर्फ रख लेना चाहता है। तुमसे भी एक बात कहती हूँ। उस दिन तुम्हारा वही सिकदार आया था। देखती हूँ वह भी प्रेमनिवेदन करता है। सिर्फ प्रेम नहीं, वह विवाह भी करने को तैयार है। मैंने कहा, 'जानते ही हो कि मेरा अतीत दुर्भाग्यपूर्ण रहा है। मेरा एक बच्चा है, जिसका जन्म विवाह के बिना ही हुआ।' सिकदार बोला, 'मैं उस लड़के को अपने बेटे की तरह आदमी बनाऊँगा।' लेकिन मैं राजी नहीं हुई। वह दुखी हो बोला, 'तुम भी चित्ति समझकर मुझसे घृणा करती हो!' बात तो सुनो, मैं साधारण नारी हूँ। मैं मनुष्य से घृणा करूँगी! नासमझ की तरह रो-धोकर वह चला गया।"

"मेरा कहना है कि तुम सिकदार से ही विवाह कर लो। तभी शान्ति पाओगी, जैसी शान्ति कुसी ने पायी। गवर्ड मेरिसन पालतू बननेवाला आदमी नहीं। तुम क्या उसके प्रत्यावर्तन पर आस लगाये बैठी हो?"

"नहीं," चम्पा बोली, "उसके प्रेम का लोभ है, उसके नाम का लोभ है। जिस दिन मुझे और मेरे बच्चे को उसका नाम मिलेगा, उस दिन जीवन सार्थक होगा।"

"लेकिन वह है कहाँ?"

"पता नहीं।"

किन्तु एक दिन पता चल गया।

चम्पा एक छोटी चिट्ठी लेकर लेबेदेव के घर हाजिर हुई। मेरिसन ने चिट्ठी में लिखा था कि उसने श्रीरामपुर के डच इलाके में आश्रय लिया है। भाग्यपरि-वर्तन के प्रयास में वह सफल नहीं हुआ है। अतीत के धन्धे में उसने रातोंरात अमीर होना चाहा था। बहुत-सा पैसा भी कमाया था लेकिन उसके साझीदार

टामस पियर्सन ने उसे चकमा दिया है। पियर्सन डच जहाज पर चढ़कर श्रीरामपुर में ईस्ट-इण्डीज भाग गया है। इधर लेनदारों ने मेरिसन के खिलाफ धोखाधड़ी का आरोप करते हुए अंग्रेजी अदालत से वारण्ट जारी करवा दी है। मेरिसन भी भाग जाता लेकिन सिर्फ चम्पा और बेटे के मोह के चलते वैसा नहीं कर पाया। उसके कलकत्ता शहर जाने का उपाय नहीं। जाते ही कारावास। हाँ, पुत्र के साथ चम्पा जरूर श्रीरामपुर के ठिकाने पर चली आये।

चिट्ठी की बात गोलोक बाबू ने भी जान ली।

चम्पा मिलने के लिए जायेगी, किन्तु बच्चे को साथ लेकर नहीं। उसने गोलोक बाबू को साथ लेना चाहा। अजानी जगह। विदेशियों का राज्य। गोलोक बाबू के साथ रहने पर चम्पा को भरोसा रहेगा। गोलोक बाबू ने कहा, "नतिनी इस तरह उतावली जो हो उठी है, आज ही जाऊँगा।" कलकत्ता से श्रीरामपुर अधिक दूर नहीं है। डचों का राज्य। वहाँ अंग्रेजों का कानून नहीं चलता। अनेक अपराधी अंग्रेजी इलाके से भागकर वहाँ आश्रय लेते हैं। नदी के रास्ते से जाने में समय ज्यादा लगता है। उससे अच्छा हो कि घोड़ागाड़ी में बैरकपुर जाकर गंगा को पार किया जाये और जल्दी-जल्दी श्रीरामपुर पहुँचा जाये। चम्पा समय नष्ट करना नहीं चाहती।

बाद में लेबेदेव ने गोलोक बाबू से श्रीरामपुर की घटना सुनी। उन्हें श्रीरामपुर पहुँचने में कई घण्टे लगे। ठिकाने पर मेरिसन को खोज पाने में असुविधा नहीं हुई।

गोलोक दास कहता गया, "मिस्टर मेरिसन तो पहचान में ही नहीं आता। वह क्षीणकाय हो चला है, गड्ढे में धँसी आँखें और रक्तहीन चेहरे पर बढ़ी हुई खुरदरी दाढ़ी। उसका भाग्यपरिवर्तन तो हुआ है, लेकिन और भी बदतर। एक देशी होटल के अँधेरे तंग कमरे में उसका बसेरा है। डाक्टर को दिखाने के लिए पैसा नहीं। वैद्य की औषधि उसे जीवित रखे हुए है।

चम्पा को देखकर मेरिसन बच्चे की तरह बिलख पड़ा। कातर स्वर में बोला, "मैं सिर्फ तुम्हें देखने के लिए बचा हुआ हूँ, चम्पा डार्लिंग! मेरा प्यारा पुत्र कहाँ है?"

"वह कलकत्ता शहर में है।" चम्पा ने कहा।

"उसे क्यों नहीं ले आयी? मरने से पहले एक बार उसको देख तो पाता!"

"तुम मरोगे क्यों?" चम्पा बोली, "छिः-छिः, ऐसी अशुभ बात नहीं बोलते, मेरी सेवा में तुम स्वस्थ हो उठोगे।"

हुआ भी वही। गोलोक बाबू कलकत्ता लौट आया। चम्पा श्रीरामपुर में

"तो फिर मर तू !" कुसुम विरक्त हो बोली।

"वही अच्छा।" चम्पा ने जवाब दिया।

कुसुम चली गयी। जाते समय कह गयी, कुमार चन्द्रनाथ बिल्कुल उतावला है। एक बार चम्पा के 'हाँ' कहते ही पालकी भेज देगा।

कुमार चन्द्रनाथ राय जोड़ासाँको का जाना-माना सम्पन्न व्यक्ति है। उसका घर बड़े लाट के प्रासाद के समान है। लेबेदेव ने दुर्गापूजा-उत्सव में वहाँ वाद्य-वादन किया था।

"तुम राजी क्यों नहीं हुई ?" लेबेदेव ने जिज्ञासा की।

"कारण जानते हो।" चम्पा बोली, "उनमें से कोई भी विवाह नहीं करना चाहता। सिर्फ रख लेना चाहता है। मजे की एक बात कहती हूँ। उस दिन तुम्हारा वही स्फिनर आया था। देखती हूँ वह भी प्रेमनिवेदन करता है। सिर्फ प्रेम नहीं, वह विवाह भी करने को तैयार है। मैंने कहा, 'जानते ही हो कि मेरा अतीत दुर्भाग्यपूर्ण रहा है। मेरा एक बच्चा है, जिसका जन्म विवाह के बिना ही हुआ।' स्फिनर बोला, 'मैं उस लड़के को अपने बेटे की तरह आदमी बनाऊँगा।' लेकिन मैं राजी नहीं हुई। वह दुखी हो बोला, 'तुम भी छिछि समझकर मुझसे घृणा करती हो !' बात तो सुनो, मैं साधारण नारी हूँ। मैं मनुष्य से घृणा करूँगी ! नासमझ की तरह रो-धोकर वह चला गया।"

"मेरा कहना है कि तुम स्फिनर से ही विवाह कर लो। तभी शान्ति पाओगी, जैसी शान्ति लूसी ने पायी। रावर्ट मेरिसन पालतू बननेवाला आदमी नहीं। तुम क्या उसके भाग्यपरिवर्तन पर आस लगाये बैठी हो ?"

"नहीं," चम्पा बोली, "उसके प्रेम का लोभ है, उसके नाम का लोभ है। जिस दिन मुझे और मेरे बच्चे को उसका नाम मिलेगा, उस दिन जीवन सार्थक होगा।"

"लेकिन वह है कहाँ ?"

"पता नहीं।"

किन्तु एक दिन पता चल गया।

चम्पा एक छोटी चिट्ठी लेकर लेबेदेव के घर हाजिर हुई। मेरिसन ने चिट्ठी में लिखा था कि उसने श्रीरामपुर के डच इलाके में आश्रय लिया है। भाग्यपरिवर्तन के प्रयास में वह सफल नहीं हुआ है। अफीम के धन्धे में उसने रातोंरात अमीर होना चाहा था। बहुत-सा पैसा भी कमाया था लेकिन उसके भागीदार

टामस पियर्सन ने उसे चकमा दिया है। पियर्सन डच जहाज पर चढ़कर श्रीरामपुर में ईस्ट-इण्डीज भाग गया है। इधर लेनदारों ने मेरिसन के खिलाफ धोखाधड़ी का आरोप करते हुए अंग्रेजी अदालत में वारण्ट जारी करवा दी है। मेरिसन भी भाग जाता लेकिन सिर्फ चम्पा और बेटे के मोह के चलते वैसा नहीं कर पाया। उसके कलकत्ता शहर जाने का उपाय नहीं। जाते ही कारावास। हाँ, पुत्र के साथ चम्पा जरूर श्रीरामपुर के ठिकाने पर चली आये।

चिट्ठी की बात गोलोक बाबू ने भी जान ली।

चम्पा मिलने के लिए जायेगी, किन्तु बच्चे को साथ लेकर नहीं। उसने गोलोक बाबू को साथ लेना चाहा। अजानी जगह। विदेशियों का राज्य। गोलोक बाबू के साथ रहने पर चम्पा को भरोसा रहेगा। गोलोक बाबू ने कहा, "नतिनी इस तरह उतावली जो हो उठी है, आज ही जाऊँगा।" कलकत्ता से श्रीरामपुर अधिक दूर नहीं है। डचों का राज्य। वहाँ अंग्रेजों का कानून नहीं चलता। अनेक अपराधी अंग्रेजी इलाके से भागकर वहाँ आश्रय लेते हैं। नदी के रास्ते से जाने में समय ज्यादा लगता है। उससे अच्छा हो कि घोड़ागाड़ी से बैरकपुर जाकर गंगा को पार किया जाये और जल्दी-जल्दी श्रीरामपुर पहुँचा जाये। चम्पा समय नष्ट करना नहीं चाहती।

बाद में लेबेदेव ने गोलोक बाबू से श्रीरामपुर की घटना सुनी। उन्हें श्रीरामपुर पहुँचने में कई घण्टे लगे। ठिकाने पर मेरिसन को खोज पाने में असुविधा नहीं हुई।

गोलोक दास कहता गया, "मिस्टर मेरिसन तो पहचान में ही नहीं आता। वह क्षीणकाय हो चला है, गड्ढे में धँसी आँखें और रक्तहीन चेहरे पर बढ़ी हुई खुरदरी दाढ़ी। उसका भाग्यपरिवर्तन तो हुआ है, लेकिन और भी बदतर। एक देशी होटल के अँधेरे तंग कमरे में उसका बसेरा है। डाक्टर को दिखाने के लिए पैसा नहीं। वैद्य की औषधि उसे जीवित रखे हुए है।

चम्पा को देखकर मेरिसन बच्चे की तरह बिलख पड़ा। कातर स्वर में बोला, "मैं सिर्फ तुम्हें देखने के लिए बचा हुआ हूँ, चम्पा डार्लिंग! मेरा प्यारा पुत्र कहाँ है?"

"वह कलकत्ता शहर में है।" चम्पा ने कहा।

"उसे क्यों नहीं ले आयी? मरने से पहले एक बार उसको देख तो पाता!"

"तुम मरोगे क्यों?" चम्पा बोली, "छिः-छिः, ऐसी अशुभ बात नहीं बोलते, मेरी सेवा से तुम स्वस्थ हो उठोगे।"

हुआ भी वही। गोलोक बाबू कलकत्ता लौट आया। चम्पा श्रीरामपुर में

रह गयी। यहाँ तक कि बच्चे तक को अपने साथ नहीं ले गयी, कहीं सेवा-सुश्रूषा में बाधा न हो। चम्पा की बूढ़ी दाई-माँ बच्चे को देखती-भालती है। गोलोक बीच-बीच में श्रीरामपुर जाता है, उनकी खोज-खबर रखता है। गोलोक से पता चला, चम्पा की एकनिष्ठ सेवा-सुश्रूषा से मेरिसन कुछ दिनों में स्वस्थ हो उठा। इस बार स्वयं मेरिसन ने चम्पा से विवाह करना चाहा। विवाह श्रीरामपुर में ही हो। उन्हों का एक बड़ा गिरजाघर है। लेकिन चम्पा बोली, "यहाँ नहीं।"

"क्यों चम्पा डार्लिंग ?" मेरिसन ने कहा, "यहाँ हमारे विवाह में बाधा कहाँ है ? लूसी के साथ मेरा विवाह-विच्छेद हो गया है। हम श्रीरामपुर में ही घर बसायेंगे। यहाँ एक टैवर्न खोलूंगा। तुम और मैं, दोनों जने मिलकर उसे एक ऊँचे स्तर का टैवर्न बना देंगे। आओ चम्पा, माइ स्वीट लव, हम गिरजे में चलकर विवाह करें।"

चम्पा बोली, "बॉब साहब, विवाह यहाँ नहीं। तुम्हारे खिलाफ धोखाधड़ी का अभियोग है, तुम भागकर निकले हो, किन्तु तुम्हारे फरार होने से बात नहीं बनेगी। तुम मुकदमा लड़ो। विवाह की बात उसके बाद।"

"लेकिन मुकदमे में हारूंगा ही मैं।" मेरिसन कातर स्वर में बोला, "हालांकि मैं खास दोषी नहीं, फिर भी सजा तो मुझे ही भोगनी होगी। कम्बख्त पियर्सन भागकर बच गया, आखिर मैं जेल मैं जाऊँ ?"

शान्त गम्भीर स्वर में चम्पा ने कहा, "भागते रहकर तुम सुख नहीं पा सकते। बॉब साहब, कब तक भागते रहोगे ? तुम सुख को पाना चाहते तो तुम्हें पकड़ में आना ही होगा। जीवन-भर प्रवंचना-प्रताड़ना तुमने बहुत की। अब समय आया है उनका प्रायश्चित्त करने का। सजा के बीच से तुम नया आदमी बन उठोगे। चलो, कलकत्ता शहर लौट चलो। अदालत में हाजिर हो। सजा भुगतो।"

उन दोनों को कलकत्ता में देख लेबेदेव को विस्मय हो आया था। चम्पा के उस अद्भुत आचरण की बात उसने मेरिसन से सुनी। मेरिसन ने कहा, "मेरी प्रियतमा ने ठीक ही कहा है, मैं चोट खाये कुत्ते की तरह भागता नहीं रहूँगा। मैं लड़ूंगा। मैं सजा भुगतूंगा।"

मुकदमे में मेरिसन को छः महीने की जेल हुई। सुप्रीम कोर्ट के जज साहब ने ज्यादा दोष पियर्सन पर डाल दिया। लेकिन पियर्सन समुद्र के उस पार है। मेरिसन अपने-आप हाजिर हुआ था, इसलिए उसको सजा कम हुई। अदालत से मेरिसन हँसते-हँसते जेल गया। मंगेतर के जेल भेज दिये जाने पर भी चम्पा के चेहरे पर अपूर्व शान्ति थी। वह एक दिन गोलोक को साथ करके मेरिसन को

जेल में देखने गयी थी। मेरिसन ने कहा, "माइ डियरेस्ट, तुम कुछ महीने मेरी प्रतीक्षा करो। ये कुछ महीने देखते-देखते बीत जायेंगे। उसके बाद तुममें द्वितीय मिसेज मेरिसन को देखूंगा। किन्तु हो तुम अद्वितीय। क्या कुछ मास मेरी खातिर बाट नहीं जोहोगी, माइ हार्ट ?"

चम्पा ने कहा था, "युग-युग तक बाट जोहूँगी, बॉब साहब !"

गोलोक दास का मन खुशी से झूम उठा था।

महामहिम काउण्ट वोरोनसोव ने इस बार भी पत्र का कोई उत्तर नहीं दिया, जहाज भेजने की बात दूर रही ! जॉन ह्विटनी और लूसी कलकत्ता शहर के काम निबटाकर जहाज से अपने देश को रवाना हुए। लेबेदेव भी अपने देश लौट जाने को बेचैन हुआ। हताश होकर उसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के जहाज में इंग्लैण्ड तक जाने की अनुमति पाने के लिए गवर्नर जनरल सर जान शोर के पास आवेदन किया।

अनेक आशा-निराशा के बाद लेबेदेव एक दिन सचमुच यूरोप जानेवाले जहाज पर चढ़ा। आखिरी मुलाकात के लिए चाँदपाल घाट पर कितने ही लोग आये थे। बाबू गोलोकनाथ दास आया था, जिसके साथ इसी चाँदपाल घाट पर उसका परिचय हुआ, जिससे देशी भाषाएँ सीखने में उसे सुगमता हुई, जिसकी सहायता से प्रथम बँगला थियेटर का अभिनय सम्भव हुआ। लेबेदेव उसकी बात नहीं भूलेगा। अपनी पुस्तक में वह कृतज्ञ भाव से उसका स्मरण करेगा। नीलाम्बर बैण्डो, सेल्बी, स्फिनर, कुसुम, और भी अनेक आये थे।

आयी नहीं चम्पा। घर पर ही आकर वह लेबेदेव से विदा ले गयी थी।

"तुम मुझे जहाज पर चढ़ाने के लिए चाँदपाल घाट नहीं जाओगी ?"

"नहीं।" चम्पा बोली।

"क्यों ?"

"घाट-भर के लोगों के सामने एक अबोध बच्ची की तरह रो नहीं पाऊँगी।"

"तुम मेरे लिए रोओगी ?"

"अवश्य, तुम्हारे साथ तो फिर भेंट होगी नहीं।"

"केवल इसीलिए रोओगी ?"

"नहीं, सो क्यों ? रोऊँगी तुम्हारे स्नेह की बात को याद कर। मेरे द्वारा प्रतिदान नहीं मिलने पर भी तुमने इस साधारण-सी स्त्री को अपने स्नेह से वंचित नहीं किया।"

चम्पा की आँखें छलछला आयीं। वह कपड़े में लिपटा एक उपहार ले आयी थी, लेबेदेव के हाथ पर उसे खोल कर धर दिया उसने। दुर्गा का चित्र!

चम्पा बोली, "साहब, तुम शायद मानोगे नहीं, दुर्गतिनाशिनी दुर्गा तुम्हारे यात्रापथ को मंगलमय करेंगी।"

स्नेह-दान को लेबेदेव ने पूरे मन से स्वीकार किया।

लेबेदेव ने कहा, "तुम्हारे विवाहोत्सव में वायलिन बजाने की मेरी इच्छा थी। वह पूरी नहीं होगी।"

"किसने कहा कि नहीं पूरी होगी?" चम्पा दृढ़ विश्वास के साथ बोली, "और कोई सुने-न-सुने, तुम्हारी वायलिन का स्वर मेरे कानों में बज ही उठेगा, जब बॉब साहब के साथ मेरे विवाह का वह शुभ क्षण आयेगा।"

चम्पा ने लेबेदेव की पगधूलि ली। लेबेदेव ने उसके माथे पर विदा का चुम्बन अंकित कर दिया।

चम्पा तेजी के साथ वहाँ से भाग गयी, शायद रुलाई को रोकने के लिए।

●●